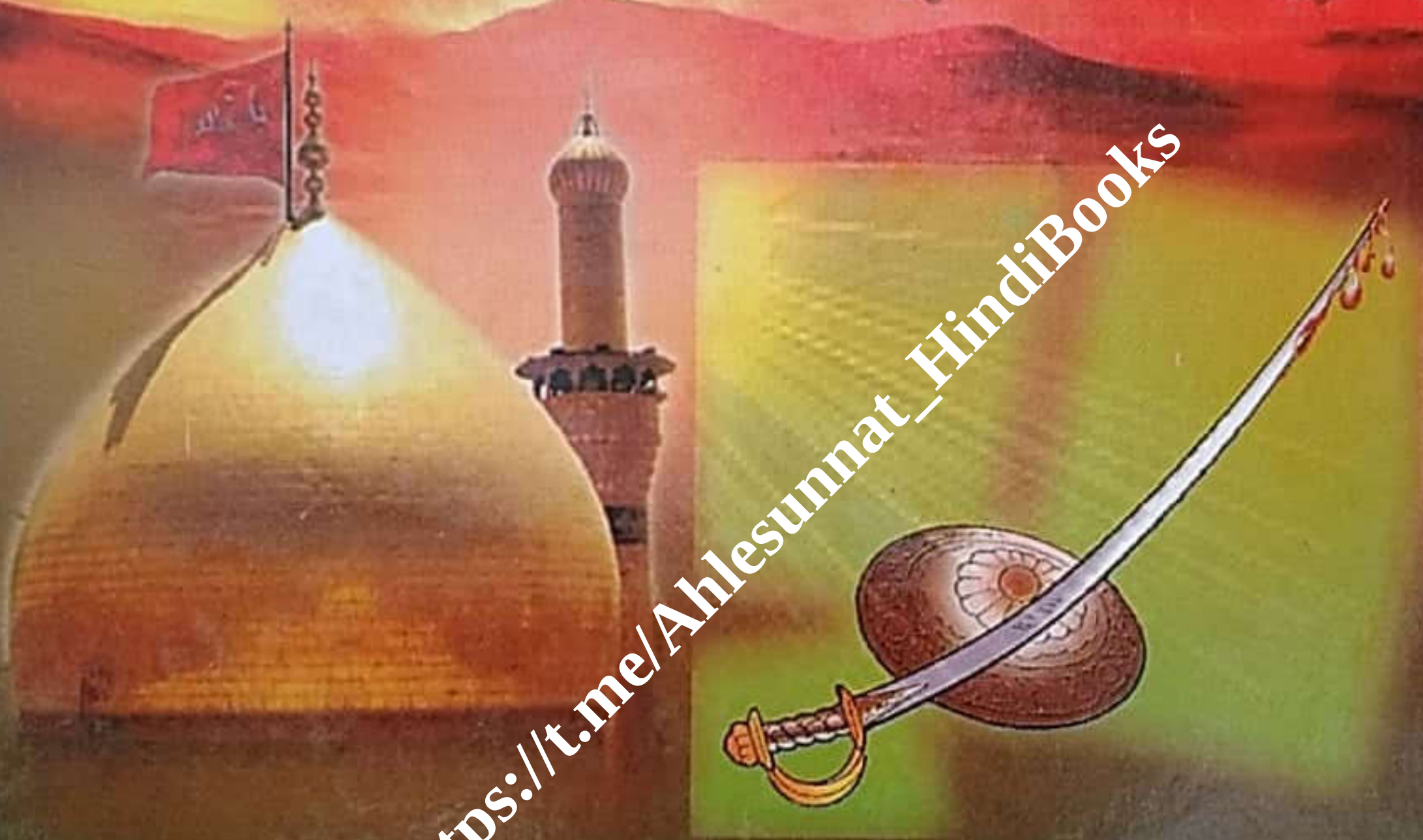


तारीखे क़स्ब ज़ा



मौलाना अमीनूल क़ादरी

रज़वी किताब घर

Bilal

जुहूर अहमद करशी औरंगावादी की रसवाए ज़माना किताब

‘आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें’

का

मुफ़र्रसल, मुदल्लल और मुस्किक्त जवाब

तारीख़े करबला

लेखक

मौलाना मुहम्मद अमीनुल-कादरी रज़वी

प्रकाशक

—रज़वी किताब घर—

425, उर्दू मार्केट, मटिया महल, दिल्ली-110006

Phone : 011 - 23264524

(नोट : नाशिर के बगैर इजाजत किसी भी राफ़ा का अवस लेना क़ानूनन जुर्म है।)

नाम किताब : तारीखे करबला

बजवाब 'आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें'

विषय : शहादते इमाम आली मक़ाम और इब्ने यज़ीद का जवाब

लेखक : मुहम्मद अमीनुल-क़ादरी रज़वी

पहला एडीशन : मुहर्रम सन् 1412 हि. / जुलाई सन् 1991 ई.

दूसरा एडीशन : मुहर्रम सन् 1429 हि. / जनवरी सन् 2008 ई.

बड़हतमाम : हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

नज़रे सानी : मुहम्मद ज़फ़रुद्दीन बरकाती

प्रूफ़-रीडिंग : जमील अख़्तर ख़ाँ

कम्पोज़िंग : अबरार अहमद शाकिर

नाशिर : रज़वी किताब घर, दिल्ली-6

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6

हिन्दी एडीशन : पहली बार **2008**

तादाद : 1100

सफ़हात : 432

कीमत

रज़वी किताब घर

425, मटिया महल,

जामा मस्जिद,

दिल्ली-110006

फ़ोन: नं० : 23264524

महाराष्ट्र में मिलने का पता:

रज़वी किताब घर

114, ग़ैबी नगर, भिवंडी,

ज़िला : थाणा (महाराष्ट्र)

फ़ोन: नं० 02522-220609

न्यू रज़वी किताब घर

वफ़ा कम्पलैक्स, ग़ैबी पीर रोड,

भिवंडी (महाराष्ट्र)

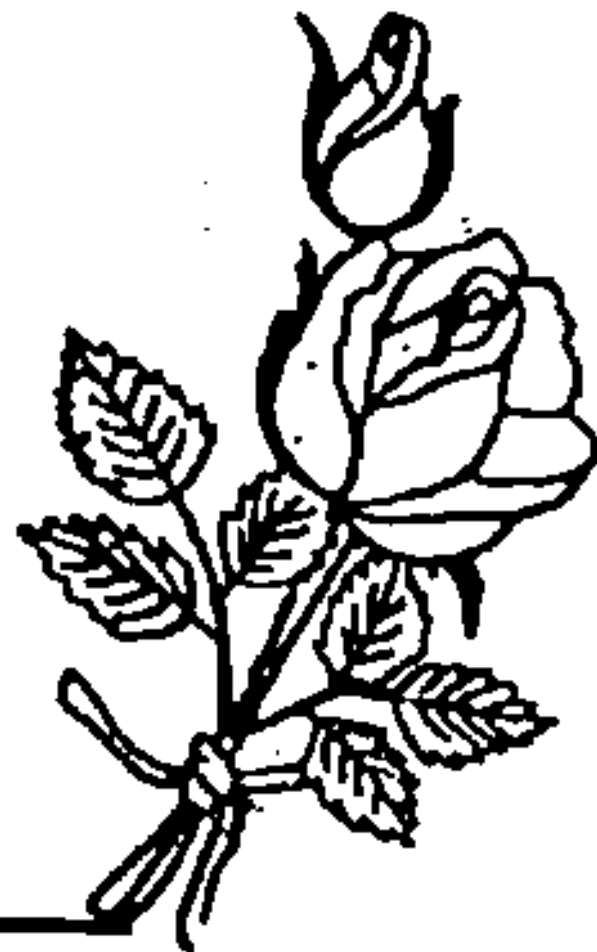
हुसैनु मिन्नी व अना मिन हुसैनिन
अहब्बल्लाहु मन अहब्बा हुसैना।

(तिमिर्जी जिल्द दोम)

शाह अस्त हुसैन, बादशाह अस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन, दी-पनाह अस्त हुसैन
सर दाद, न दाद दस्त, दर दस्ते यजीद
हक्का कि बिनाए ला-इलाहा अस्त हुसैन

(हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अलैहिर्रहमः)

क्या बात रजा इस चमनिस्ताने करम की
जुहरा है कली जिसमें, हुसैन और हसन फूल
(इमाम अहमद रजा कादरी अलैहिर्रहमा)



शर्फे इंतेसाब

मैं अपनी इस काविश को बसद खुलूस व मुहब्बत फरज
 रसूल जिगर गोशए बतूल, ताजदारे करबला हजरत सैय्यद
 इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु और जुमला शुरका व शुहद
 करबला की बारगाह में बतवस्सुते सैय्यदी व मुर्शिदी हुजूर मुफ्ती
 आजम हजरत अल्लामा अलहाज मुस्तफा रज़ा खान अलैहिर्रहम
 पीरे तरीकत हजरत अल्लामा अलहाज मुफ्ती मुहम्मद अख्तर र
 खान साहब किबला अजहरी दामत बर्कातुहुमुल आलिया और
 तरीकत हजरत सैय्यद मुहियुद्दीन सलीमुल्लाह शाह अलहम्दा
 अलकादरी अर्रिफ़ाई मदद जिल्लहुल आलि अल-मारुफ़ (हजर
 सलीम बाबा साहब) सज्जादा नशीन खानकाहे कलां रिफ़ाई
 (सूरत) पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूं।

गर कुबूल उफ़तद जहे इज व शरफ़
 सगे कूच-ए- अहल-बैते नुबुव्वत

मुहम्मद अमीनुलकादरी अर्रजवी माले गांवी
 हजरत मलबारी साहब का टेकरा
 सूरत (गुजरात)

तक्रीजे जलील

हज़रत मौलाना

मुहम्मद नसीम रज़ा रज़वी सलामी

सदर मुदरिस व मुफ़्ती-ए-दारुल-उलूम, ख़ाजा दाना, सूरत, गुजरात

अलहम्दुलिल्लाहि रव्विल आलमीन। वरसलातु वरसलामु अला

सैयदिल-मुरसलीन व अला आलिही व सहविही अजमईन।

जेरे नज़र किताब "हकीकते तारीख़े करबला" हज़रत मौलाना

मुहम्मद अमीनूल-कादरी साहब की अहले-बैते अतहार से मुहब्बत व अकीदत का एक महकता हुआ गुलदस्ता है जिसमें मौसूफ़ ने अहले-बैत की फज़ीलत के तअल्लुक से बहुत-सी किताबों का खुलासा और निचोड़ रख दिया है। साथ ही हज़राते खुलफ़ाए राशिदीन नीज़ हज़रत अमीर मुआविया रज़िअल्लाहु अन्हुम अजमईन की मुख़्तसर सीरत भी पेश की है। चूंकि अहले सुन्नत व जमाअत ही वस्ते उम्मत का मज़हरे अतम हैं। लिहाज़ा उन हज़रात का तज़क़िरा भी अहले-बैत के साथ करते हैं। और किताब चूंकि एक यज़ीद परस्त जुहूर अहमद औरंगाबादी की किताब "आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें" का रद्दे अमल है; यही सबब है कि मौलाना की अकीदत को ठेस पहुंची और उन्होंने सैयदुश्शुहदा की हकीकत का गुलदस्ता सजा कर अकीदतमन्दों को यह दर्स दिया है कि अहले-बैते अतहार के दामने करम से वावस्तगी ही जन्नत का रास्ता है। किताब 'आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें' क्या है? अहले-बैत की दुशमनी और यज़ीद पलीद को ख़लीफ़-ए-बरहक़ अमीरुल-मोमिनीन साबित करने की एक मज़मूम कोशिश है। जिसमें तहकीक के नाम पर इतिहाई ग़ैर मुतहफ़िक़ बातें, कमज़ोर रिवायात की भरमार है। मौलाना अमीन साहब ने किताबे मज़कूर के तअल्लुक से जो सवालात कायम किए हैं और फिर उनके जवाबात तहरीर किए हैं वह इतिहाई मुदल्लल और मुस्कत हैं। नाज़िरीन उन जवाबों को इतिहाई तवज्जह से पढ़ें, खुसूसन हदीस का जवाब जो इतिहाई अक़रेज़ी के साथ मुस्तनद और मोतबर हवालों से गुज़ायन किया गया है।

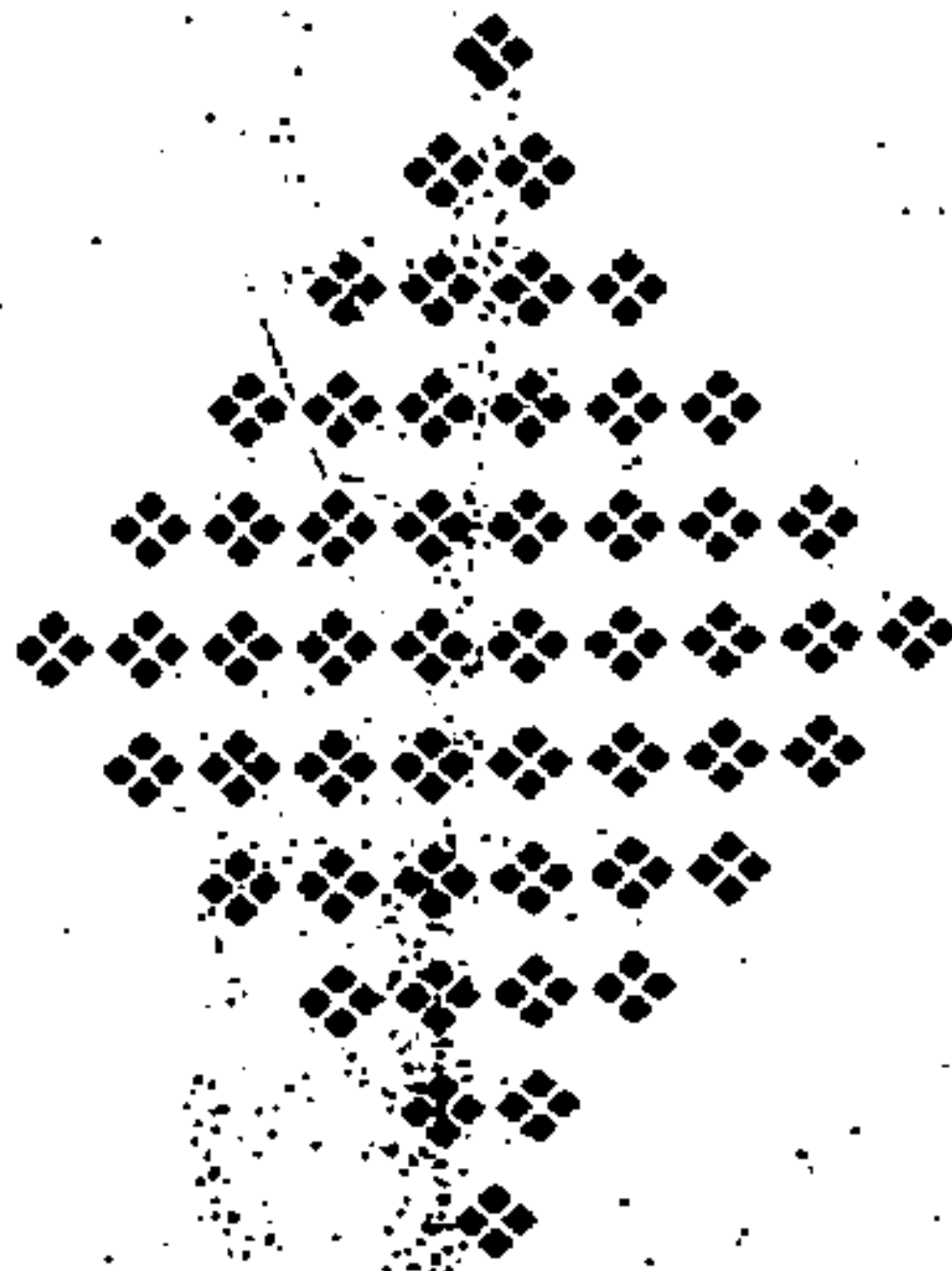
मौला तआला से दुआ है कि वह अपने महबूबे पाक सल्लल्लाहु अलै
वसल्लम के तुफैल किताब को महबूबे आग फरमाए और हम सब
अहले-बैते अतहार की मुहब्बत में जिन्दा रखे और उसी पर खाता
फरमाए! आमीन।

मुहम्मद नसीम रज़ा रज़वी सलामी

सदरुल-मुदरिसीन दारुल-ऊलूम ख्वाजा दाना,

सूरत, गुजरात

7 ज़ीकाद: सन् 1411 हि०



फ़ेहरिस्ते मजामीन

उनवानात

सफ़ा

सबबे तालीफ़,

नाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम.

मनकबत

अहले-बैते नुबुव्वत पाक हैं

आयते ततहीर का शाने नुज़ूल
रिज्स क्या है ?

पन्जतन पाक और आयते मुबाहला

शाने नुज़ूल और तफ़सीली ब्यान

आयते मुबाहला में अब्नाउना से मुराद

मुहब्बते अहले-बैत और कुरआने हकीम

आयते मुवद्दत में कुरबा से मुराद

सखावते अहले-बैत और कुरआने मजीद

अहले-बैत पर दुरूद और कुरआने मजीद

अहले-बैते अतहार और अहादीसे करीमा

कुरआन मजीद और अहले बैत का दामन थामने वाला

अहले-बैत की फ़ज़ीलत पर चालीस हदीसें

अहले-बैत और सहाबए किराम व सुलहाए उम्मत

ताज़ीमे अहले-बैत के चन्द वाकिआत

लफ़्जे 'सैयद' की तशरीह और फ़ज़ाइल

फ़ज़ाइले सहाबा कुरआन व हदीस की रौशनी में

सहाबा-ए-किराम और कुरआने हकीम

सहाबा-ए-किराम और फरमाने नब्वी

फ़ज़ाइले खुलफ़ाए राशिदीन

खलीफ़ाए अव्वल हज़रत अबू-बकर सिद्दीक़

हज़रत सिद्दीक़ अकबर और आयाते कुरआन

हज़रत सिद्दीक़ अकबर और अहादीसे करीमा

हज़रत सिद्दीक़ अकबर की ख़िलाफ़त पर कुरआनी आयात

हज़रत सिद्दीक़ अकबर की ख़िलाफ़त पर अहादीसे करीमा

हज़रत सिद्दीक़ अकबर की ख़िलाफ़त पर इजमाए सहाबा

उनवानात

सिद्दीक व उमर की खिलाफत का इनकार करने वाले

खलीफ़-ए-दोम : हज़रत उमर फ़ारूक़

हज़रत फ़ारूक़े आजम और क़ुरआने हकीम

हज़रत फ़ारूक़े आजम और अहादीसे करीमा

हज़रत फ़ारूक़े आजम और सहाबा व सुलहाए उम्मत

हज़रत फ़ारूक़े आजम की खिलाफ़त

गुस्ताख़ाने सिद्दीक़ व उमर की सज़ाएं

खलीफ़-ए-सोम : हज़रत उस्मान ग़नी

हज़रत उस्मान ग़नी और क़ुरआने हकीम

हज़रत उस्मान ग़नी और अहादीसे करीमा

हज़रत उस्मान ग़नी और सहाबा व सुलहाए उम्मत

हज़रत उस्मान ग़नी की खिलाफ़त

खलीफ़-ए-चहारुम — हज़रत अली मुर्तज़ा

हज़रत अली और क़ुरआने हकीम

हज़रत अली और अहादीसे करीमा

हज़रत अली और सहाबा व सुलहाए उम्मत

ख़ुलफ़ाए सलासा की खिलाफ़त और हज़रत अली

हज़रत अली की खिलाफ़त

फ़जायल ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमतुज्जुहरा

हज़रत फ़ातिमा का निकाह

हज़रत फ़ातिमा और उमूरे ख़ानादारी

हज़रत फ़ातिमा और इबादात

हज़रत फ़ातिमा और अहादीसे करीमा

हज़रत फ़ातिमा का विसाल

फ़जायल सैयदना इमाम हसन

हज़रत इमाम हसन और अह्दए नब्वी

हज़रत इमाम हसन और ख़ुलफ़ाए राशिदीन

हज़रत इमाम हसन और अहादीसे करीमा

हज़रत इमाम हसन की खिलाफ़त से दस्तबदारी

हज़रत इमाम हसन की करामात

हज़रत इमाम हसन की कसरते इज़दवाज

हज़रत इमाम हसन और ज़हर-ख़ुरानी

उनवानात

फज्जाल हजरत अमीर गुआविया
 हजरत अमीर गुआविया की अलालत और वफात
 फज्जाल हजरत सैयदना इमाम हुसैन
 हसनैन करीमैन और अहादीसे करीमा
 शहादते इमाम हुसैन की शोहरत
 यजीद पलीद का तजकिरा
 यजीद : अहादीस और अक्वाले अइम्मा की रौशनी में
 यजीद पलीद की तख्तनशीनी
 हजरत इमाम हुसैन की मदीने से रवानगी
 अहले कूफा के खुतूत और वुफूद की आमद
 इमाम मुस्लिम की कूफा रवानगी
 हजरत इमाम मुस्लिम की तलाश और इब्ने ज़्याद का जासूस
 हजरत इमाम मुस्लिम और इब्ने ज़्याद
 हजरत इमाम मुस्लिम की शहादत
 फरजन्दाने इमाम मुस्लिम की शहादत
 इमाम हुसैन की मक्का से कूफा रवानगी
 करबला जाने वाले अहले-बैत की तादाद
 कासिदे इमाम हजरत कैस की शहादत
 शहादते इमाम मुस्लिम की ख़बर
 मुहर्रम 61 हिजरी : खूनी साल का आगाज़
 इमाम हुसैन का मक़ामे बैज़ा में खुतबा
 इमाम हुसैन का नैनवा और करबला में क़याम
 इमाम हुसैन और असहाब पर पानी बन्द किया जाना
 इमाम हुसैन और अमर बिन सअद की मुलाकात
 दसवीं मुहर्रम के दिलदोज़ वाकिआत
 मैदाने करबला में करामाते इमाम हुसैन
 इमाम के साथियों की शुजाअत व शहादत
 हजरत इमाम हुसैन की शहादत
 हुज़ूर रहमते आलम को सदमा
 वाकिआते बाद शहादत
 अहले-बैत की करबला से कूफा रवानगी
 सरे अनवर दरबारे इब्ने ज़्याद में
 सरे इमाम की कूफा में तशहीर

सरे अनवर दरबारे यजीद में
 अहले-बैत की मदीना मुनव्वरा वापसी
 यजीद पलीद का मदीना मुनव्वरा पर हमला
 यजीद पलीद का मक्का मुकर्रमा पर हमला
 कातिलाने इमाम का इबरतनाक अंजाम
 फ़जाइले आशूरा
 आशूरा और साले नौ की नफ़ल नमाज़ें
 खिचड़ा और सबीले इमाम हुसैन
 मजालिसे मुहर्रम और ताजियादारी
 खुराफ़ाते मुहर्रम
 आशूरा को क्या करना चाहिए?
 जुहूर अहमद की किताब का दन्दौ शिकन जवाब
 मकामे हुसैन और वाकिआते करबला : औरंगाबादी की नज़र में
 नौ अदद सवालात व जवाबात

सबबे तालीफ़

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन। वस्सलातु वस्सलामु अला
खातिमिन्नबीयीन व अला आलिहितैयबीनत्ताहिरीन व असहाविहिल
मुकर्मीन वल मुअज्जमीन वल खुलफ़ाइराशिदीन व अलैना म अ हुम
अजमईन इला यौमिदीन। अम्मा बाद !

सतीजा कार रहा है अज़ल से ता इमरोज़

चिरागे मुस्तफ़वी से शरारे बू-लहबी

बिरादराने इस्लाम! खुदावन्दे कुदूस का लाख-लाख शुक्र और करोड़हा
एहसान है कि जिसने अपने महबूब पाक ताजदारे अंबिया हज़रत सैयदना
मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल इस हकीर फ़कीर
सरापा तकसीर की मुद्दते मुदीद का दिल में मचलने वाली आरजूओं को पूरा
होने का बेशबहा मौका नसीब फ़रमाया। आज मैं अपना यह अकीदत व
मुहब्बत से भरा हुआ नज़राना ब-शकले किताब, सरवरे काइनात सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम और आपके लाडले व नवासे व फ़र्जन्द हज़रत सैयदना
इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हु की बारगाहे आलिया में पेश करने की
सआदत हासिल कर रहा हूँ।

इससे पहले 'फ़ज़ाइले दुरुद व सलाम' और 'इस्लामी महीने और
नूरानी रातें' ज़ेवरे तबअ् से आरास्ता होकर मन्ज़रे आम पर आ चुकी हैं
और अलहम्दुलिल्लाह हर खास व आम में अपनी मक़बूलियत हासिल की
हैं। अब यह तीसरी किताब "तारीखे करबला" तबअ् होकर
हदिया-ए-नाज़ेरीन हैं।

हालांकि वाकिआते करबला को सदियां गुज़र गयीं और इस तवील
अरसे में उम्मत मुस्लिमा के अज़ीम तरीन मुहक्किनीन, मुफ़क्किरीन, फ़ुक़हा
व मुहद्दीसीन, सूफ़ियाए किराम और उलमाए किराम की मुक़द्दस जमाअतें
आयीं जिन्होंने वाकिआते करबला पर बेशुमार किताबें लिखीं और वाकिआते
करबला अज़ अव्वल ता आख़िर को निहायत मुस्तनद व मोतबर हवालजात
की रौशनी में पेश करने की सआदत हासिल फ़रमाई। लेकिन इनमें से
किसी ने भी वाकिआते करबला की असल सूरत को मसख़ करने या उसके

खिलाफ़ कलम उठाने की कोशिश और ज़रारत न की। इतिहाई दुख और अफ़सोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि इधर चन्द सालों में हिन्द व पाक में ऐसे नापाक नाहन्जार ख़ारजी यज़ीदी, पैदा हो गए हैं जो वाकिआले करबला को एक फ़र्ज़ी तारतान साबित करने और शहज़ादा—ए—रसूल, ज़िगर गोशए वतूल हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हुम की शान में नाज़ैबा कलिमात और आपकी ज़ात बावर्क़ात पर रकीक हमले करने का बीड़ा उठा लिया है। यह ख़ारजी यज़ीदी हज़रत इमाम हुसैन को बागी और नाफ़रमान लिखते हैं। यज़ीद जैसे फ़ासिक व फ़ाजिर, शराबी, ज़ानी, दुशमने रसूल व आले रसूल को अमीरुल —मोमिनीन, इमामुल मुत्तकीन और जन्नती मानने के लिए एक नापाक मुहिम शुरू कर रखी है।

ऐसी ही एक कोशिश आज से चन्द साल पेशतर सरज़मीने पाकिस्तान में एक ज़ालिम इब्न—यज़ीद महमूद अब्बासी ने “खिलाफ़ते मुआविया व यज़ीद” नामी किताब लिखकर मुहिब्बाने अहले—बैत के दिल को ठेस पहुंचाई थी। जिस वक़्त यह किताब मन्ज़रे आम पर आयी थी उस वक़्त उलमाए अहले सुन्नत व जमाअत ने उसकी सतर—सतर की धज्जियां उड़ा दी थीं और जिन तारीख़ी किताबों के हवालों से महमूद अब्बासी ने दुशमनीए हुसैन में शर्मनाक बद—दियान्ती की थी उसका पर्दा फ़ाश कर दिया था। अब उसी ख़ब्बीस के नक्शे क़दम पर चलते हुए सरज़मीने औरंगाबाद (महाराष्ट्र) पर एक ख़ब्बीस दुशमने रसूल व आले रसूल ख़ारजी, यज़ीदी, जुहूर अहमद नामी एक शख्स पैदा हुआ है जिसने एक किताब आओ मुहर्रम की हकीक़त तलाश करें तहरीर की है। जो इतिहाई मुस्लिम आज़ार, दिलख़राश, ग़ैर—मुस्तनद, किज़ब व इफ़तरा और तारीख़ी बद—दियान्ती और दुशमनीए इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हु से भरपूर है जिसमें इमाम आली मक़ाम को बागी और बादशाहत के मुतमन्नी और हमलावर लिखा है। करबला के खूनी वाकिआत की पूरी—पूरी जिम्मेदारी हज़रत इमाम हुसैन और आपके रूफ़का पर डाली है। यज़ीद या उसके अहलकारों को उससे बरी करने की नापाक कोशिश की है। नीज़ यज़ीद पलीद को जन्नती साबित करने के लिए इबारती बद—दियान्ती का भी सुबूत दिया है। ऐसा लगता है कि यह सब कुछ एक समझे बूझे मन्सूबे के तहत महज़ अपनी शोहरत कमाने या सऊदी पेट्रो डालर की हिर्स व तमअ में किया जा रहा है।

जुहूर अहमद यज़ीदी की किताब जैसे ही हमारे हाथों में आयी हमने फौरन उस पर नोटिस लिया और उसके मुंह तोड़ जवाब के लिए और जो तारीखी बद-दियान्ती की गई उसका पर्दा-फाश करने के लिए कोशिशें शुरू कर दीं। अलहम्दुलिल्लाह ! उसमें हम किस हद तक कामयाब हुए हैं उसका फैसला कारिर्न को करना है।

हमने इस किताब में इन्तहाई कोशिश और पूरी जद्दो-जेहद से जुहूर अहमद यज़ीदी औरंगाबादी की बद-दियान्ती का दामन मुकम्मल तौर से चाक कर दिया है और मुकम्मल तौर पर निशानदही कर दी है कि इस नंगे ज़माना नाम-निहाद मुअल्लिफ़ ने किस-किस इबारत में किस-किस तरह क़ता व बुरीद करके अ़वामुन्नास को धोखा देने की नापाक कोशिश की है। हमने यज़ीद पलीद के हिमायती के इस खुले फ़रॉड को भी उरयां कर दिया है जो उसने दुशमनीए अहले-बैत के पेशे नज़र यज़ीद की हिमायत में खेला है। यहां तक कि तारीख़ के चेहरे पर डाले जाने वाले धोखे और फ़रेब के तमाम तर नक़ाबों को नोच कर रख दिया है। अब आप का फ़र्ज़ है कि पूरे अज़म व एहतमाम के साथ अर्जे हिन्द व पाक से ख़ारजीयत और यज़ीदियत का नाम व निशान मिटाने की जद्द-व-जेहद में भरपूर किरदार अदा करें और हमारे कांधे से कांधा मिलाकर दुशमनाने इमाम अली मक़ाम का मुकम्मल सफ़ाया कर दें।

अब मौसमे बहार को आवाज़ दीजिए!

ताराज कर चुकी है चमन को खिज़ां बहुत!!

अब हम उन तमाम मुहिब्बाने किराम से, जिनके दिलों में अल्लाह तआला ने ख़ानवादेए रसूले मुअज़्ज़म अलैहिस्सलाम की मुहब्बत व अक़ीदत की शमें रौशन कर रखी हैं, उनकी ख़िदमत में गुज़ारिश करते हैं कि अहले-बैते नुबुव्वत से अपने जोशे अक़ीदत व मुहब्बत को महज़ यहां तक महदूद न रखें कि जब किसी मर्दूद, मलऊन, ख़ारजी, यज़ीदी की शैतनत से भरपूर किताब मार्केट में आए तो वक्ती तौर पर सिर्फ़ सदाए इहतिजाज बुलन्द करके ख़ामोश न बैठें बल्कि उसका मुस्तक़िल हल यह है कि ऐसे दरीदा देहन दुशमने रसूल व आले रसूल मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन की क़लमों पर ब्रेक लगाएं। उनकी शाये कर्दा किताबें और उनकी जायदादें ज़ब्त करायें। अगर आपने यह काम मुनज़्ज़म पैमाने पर इश्के हुसैन से सरशार होकर किया तो इन्शाअल्लाहुल-अज़ीज़ इसके

नताइज यकीकनन मुखत अंदाज में जाहिर होंगे।

आखिर में उन तमाम हजरात का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने इस किताब की इशाअत में मेरा मुकम्मल तआवुन फरमाया। बिल्खुसूस पीरे तरीकत हजरतुरसैयद मुहीयुद्दीन सलीमुल्लाह शाह अलहम्दासी अल-कादरी अरिफ़ाई दामत बर्कातहुमुल आलिया, (सज्जादा नशीन खानकाहे कलां रिफ़ाईया) सूरत का बेहद ममनून व मशकूर हूँ जिन्होंने अपने कीमती और नायाब कुतुबखाने से मुझे इस्तिफ़ादा हासिल करने का पूरा-पूरा मौका इनायत फरमाया। नीज़ अपने जाती खर्च से हिन्द व पाक से किताबें मंगवाकर मुझे इनायत फरमाई। आपके अलावा मेरे बिरादर गिरामी वकार आली जनाब इब्राहीम खान रजवी, हजरत मौलाना सैयद मुहम्मद साहब कादरी, हजरत हाफ़िज़ मुहम्मद रफीक साहब (ख़तीब व इमाम मस्जिद हाशमीया मान दरवाजा, सूरत), मौलाना गुलाम मुस्तफ़ा बरकाती साहब अराकीन व असातज़ा दारुल-उलूम ख़्वाजा दाना, जनाब शमशेर अहमद खान साहब, जनाब सैयद अब्बास अली साहब (पाकिस्तान) जनाब अबदुर्रऊफ़ साहब ख़तीब, जनाब मुहम्मद रफीक ख़तीब (जीलानी पान सेंटर), नजमुद्दीन साहब (करीम पान सेंटर), अबदुस्सलाम टेलर साहब, फख़रुद्दीन बापू, जनाब असगर बापू और अराकीने हजरत पीर मुहम्मद शाह लाइब्रेरी (अहमदाबाद) ने भी मुकम्मल तआवुन फरमाया है। उन तमामी हजरात के लिए मैं खुद भी दुआ करता हूँ। तमाम नाज़रीन से इल्तिजा करता हूँ कि उनके लिए अपने मख़्सूस औकात में दुआएं ख़ैर करते रहें। ऐ मौलाए करीम! उन लोगों को और क़यामत तक आने वाली उनकी नस्लों को शाद व आबाद रखना। हवादिस व आफ़ात से महफूज़ रखना और अपनी रहमते बेग़ायत से हमेशा नवाज़ते रहना और उनसे राज़ी रहना। जुमला अहले इस्लाम को हवारियाने यज़ीद बनने के बजाए गुलामाने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु बनने की तौफ़ीक़ अता फरमाना। आमीन सुम म आमीन। बजाह हबी ब क अलैहिस्सलाम वस्सलाम।

मुहम्मद अमीनुलकादरी

रबीउल-आख़िर 1411 हिजरी मुताबिक 1 नवम्बर सन् 1990 ई०

नाते मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

बरस्ता नहीं देखकर अबे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

मदीने के खित्ते खुदा तुझको रखे
गरीबों फ़कीरों के ठहराने वाले

तू ज़िन्दा है वल्लाह! तू ज़िन्दा है वल्लाह!
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

हरम की ज़मी और क़दम रखके चलना
अरे! सर का मौक़ा है ओ जाने वाले

तेरा खाएं, तेरे गुलामों से उलझें
हैं मुन्क़िर अज़ब खाने गुराने वाले

रहेगा यूँही उनका चर्चा रहेगा
पड़े खाक हो जाएं जल जाने वाले

रज़ा! नफ़्स दुशमन है दम में न आना
कहां तूने देखे हैं चन्दराने वाले

अज़

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहम:

हृदय-ए-तशक्कुर और एतज़ार

हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नसीम रज़ा साहब रजवी सलामी ने किताबे-हाज़ा को अज़ अब्वल ता आख़िर देखा और तसहीह फ़रमाई और अपने मुफ़ीद मशवरों से नवाज़ा। मैं हज़रत क तहे दिल से मशकूर हूँ। किताब की सेहत पर अज़हद तवज्जह दी गयी है ताहम कारिर्इन को कोई ग़लती नज़र आए तो फ़ितरते बशरी पर महमूल फ़रमाते हुए दरगुज़र फ़रमाएं।

मुखलिस

मुहम्मद अमीनुल-कादरी अररज़वी

हज़रत मलबारी साहब का टेकरा,

सग्राम पुरा, सूरत (गुजरात)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहब्बते रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हुजूर की मुहब्बत ऐन ईमान है!

अल्लाह की सर ता ब-क़दम शान हैं यह
इन-सा नहीं इन्सान, वह इन्सान हैं 'यह'
कुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं यह

(आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः)

मुहतरम कारिईन! इस फ़ानी और ज़वाल-पज़ीर दुनिया में फ़ना होने वाली हमारी इस फ़ानी ज़िन्दगी की बका व तहफ़फ़ुज़ के लिए जिस तरह पानी और हवा वगैरह की ज़रूरत पड़ती है और बगैर इसके हमारी ज़िन्दगी बाकी भी नहीं रह सकती। बिल्कुल उसी तरह हमारे ईमान की बका व तहफ़फ़ुज़ के लिए भी हुजूर फ़ख़्रे काइनात ताजदारे अंबिया हज़रत सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत व उलफ़त इससे भी कई गुना ज़्यादा अहम और ज़रूरी है। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत ईमान की जान है। यह बात तर्जुबे से साबित है कि जिसको महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत जितनी ज़्यादा होगी उसी क़दर उसका ईमान मज़बूत और क़वीतर होगा और जिसका दिल मुहब्बते रसूल से ख़ाली होगा, उसका ईमान उतना ही कमज़ोर और ज़ईफ़-तर होगा, इसीलिए मज़हबे इस्लाम ने उस अहम उनवान पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है कि मुसलमान अपने आका व मौला हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत व उलफ़त में इतने सरशार हो जाएं कि आपकी मुहब्बत आलम की तनाम मुहब्बत पर ग़ालिब आ जाए। चुनांचे इरशादे बारी तआला है: क़ुल इन का न आबाउकुम व अबनाउकुम व इख़वानुकुम व अज़वाजुकुम व अशी-र-तुकुम

व अमवालु निकतरफ़ तुमूहा व तिजारतुन तख़शौ न कसादहा व मसाकिनु तरज़ौनहा अहबब ब इलैकुम मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन फी सबीलिही फ़तरब्सू हत्ता यतियल्लाहु बिअमरिह। वल्लाहु ला यहदिल कौमल फ़ासिकीन। (सूरह तौबा प-१०, रु-६)

(ऐ मेरे महबूब)! तुम फ़रमाओ: अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदा जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसंद का मकान—यह चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो। यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए (यानी अज़ाब) और अल्लाह फ़ासिकों को राह नहीं देता। (कन्ज़ुल-ईमान)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह तौर से फ़रमा दिया कि ऐ महबूब! दुनिया वालों को यह बात बतला दो कि तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारी औरतें, तुम्हारे कुंभे, तुम्हारे माल और वह सौदा जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे मकानात — यह तमाम चीज़ें अगर अल्लाह तबारक व तआला और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा प्यारे और महबूब हैं तो अब तुम अल्लाह तआला के अज़ाब का इन्तज़ार करो। इससे पता चलता है कि एक मोमिन के लिए हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत न सिर्फ़ फ़र्ज़ है बल्कि तमाम करीबी रिश्तेदारों और तमाम कीमती मता पर सबसे ज़्यादा होना चाहिए। और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे आली है : ला युमिनु अहदुकुम हत्ता अकू न अहब ब इलैहि मिंव्वालेदिही व वलदिही वन्नासि अजमईन। (बुख़ारी शरीफ़, जिल्द अब्वल) किताबुल-ईमान—सफ़ा १०४) यानी तुममें से कोई मोमिन नहीं जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसके बाप और उसकी औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं। इस हदीस पाक ने तो बिल्कुल साफ़ तौर पर यह वाज़ेह कर दिया कि मोमिने कामिल वही है जिसके दिल में पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत आलम के तमाम लोगों से ज़्यादा हो। यहां तक कि अगर वह उसका बाप हो या उसका बेटा हो या उसकी अपनी औलाद ही क्यों न हो। इसीलिए एक मर्तबा हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के उस फ़रमान पर कि ऐ अल्लाह के रसूल!

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! आप मुझे अपनी जान के अलावा हर चीज से ज्यादा महबूब—तर हैं, तो उस पर अल्लाह के रसूल हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया—लैं युमिनु अहदुकुम हत्ता अकू न अहब ब इलैहि मिन नफिसह—(किताबुश—शिफा जिल्द दोम—सफा ५७) यानी तुममें से कोई भी शख्स उस वक्त तक मोमिने कांमिल हो ही नहीं सकता जब तक कि मैं उसे उसकी जान से ज्यादा बढ़कर महबूब न हो जाऊं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन मुकद्दस कलिमात का ऐसा असर हुआ कि हजरत सैयदना उमर फारूक रजियल्लाहु अन्हु फौरन बोल उठे : या रसूलल्लाह! उस जाते पाक की कसम जिसने आपको हक व सदाकत के साथ किताबे हिदायत देकर मबऊस फरमाया है। अब तो आप मुझे मेरी जान, माल, औलाद और आलम की तमाम चीजों से ज्यादा महबूब हैं। तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया ऐ उमर! अब तुम्हारा ईमान मुकम्मल हुआ। इसलिए जनाब हफीज़ जालंधरी ने क्या खूब कहा है :

मुहम्मद की मुहब्बत दीने हक की शर्तें अव्वल है
इसी में हो अगर खामी तो सब कुछ नामुकम्मल है
मुहम्मद की गुलामी है सनद आज़ाद होने की
खुदा के दामने तौहीद में आबाद होने की

बुखारी शरीफ (जिल्द दोम) किताबुल—अंबिया सफा—३६० में हजरत सैयदना अनस रजिअल्लाहु अन्हु से एक हदीसे पाक मरवी है कि किसी शख्स ने हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि या रसूलुल्लाह मतस्साअः? या रसूलुल्लाह क्यामत कब आएगी? गैब—दां नबी ने फरमाया कि तुमने उसके लिए क्या तैयार कर रखा है? उसने कहा कि मेरे पास तो कोई अमल नहीं सिवाये इसके कि मैं अल्लाह और उसके महबूबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखता हूं। इस पर हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया : अन त म अ मन अहबब त तुम उनके साथ हो जिनसे मुहब्बत रखते हो। हजरत अनस रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मुझे इतना किसी चीज ने खुश नहीं किया जितना हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फरमान ने किया।—

सहिबे तफसीरे कबीर हजरत इमाम राजी अलैहिर्रहमः ने अपनी अरबी तफसीर के अलजुजउर्बावे सफा—२३१ पर इसी हदीसे पाक को तहरीर

फरमाते हुए लिखते हैं कि वह शख्स एक आराबी था। उसने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से सवाल किया कि या रसूलुल्लाह! मतरसाअः? ऐ अल्लाह के रसूल! क्यामत कब आएगी? तो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मा आददत लहा तूने इसके लिए क्या तैयारी की है? उस आराबी ने बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम में अर्ज किया : या रसूलुल्लाह! मा आददतु कसी र सलातिव्वला सियामिन इल्ला इन्नी उहिबुल्ला ह व रसूलह ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास इसके लिए कोई तैयारी नहीं; न मेरे पास नमाजों का जखीरा है और न ही रोजों का। मगर हां, मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूं। बस यही एक जखीरा है। आराबी की इन बातों को सुन कर अल्लाह के रसूल हुज़ूर मालिके कौनैन सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया अल-मरउ म अ मन अहब ब तू उनके साथ है जिनको तू महबूब रखता है।

मदारिजुन्नुबुव्वः जिल्द अव्वल सफ़ा : ५२१ पर सैयदुल-मुहक्किनीन हज़रत शाह अब्दुल-हक़ मुहदिस देहलवी अलैहिर्रहमः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से एक हदीस पाक नक़ल फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मन अहब्वनी का न मइया फ़िल-जन्नः जो मुझसे मुहब्बत रखता है वह जन्नत में मेरे साथ होगा।

मज़कूरा बाला आयते करीमा और दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला और अल्लाह के महबूबे हकीकी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुहब्बत मां-बाप व औलाद, अजीज व अकारिब, दोस्त व अहबाब, माल व दौलत, मस्कन व वतन और खुद अपनी कीमती जान की मुहब्बत से भी ज़्यादा ज़रूरी और लाज़िम है, और अगर मां-बाप व औलाद अजीज व अकारिब, दोस्त व अहबाब, अल्लाह और उसके रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अकीदत व मुहब्बत न रखते हों तो उनसे दोस्ती व मुहब्बत रखना जायज़ नहीं। कुरआन करीम में इस मज़मून की मुतअदिद आयतें आयी हैं। लेकिन हम यहां सिर्फ़ एक आयते करीमा पेश कर रहे हैं। इरशादे बारी तआला है। ला तजिदु कौमें यूमिनु न बिल्लाहि वल-यौमिल आखिरि युवाहू न मन हादल्ला ह व रसूलहू वलौ कानू आबाअहुम औ अब्नाअहुम औ इख़वानहुम औ अशीरतहुम (पारा २८ सूरह हश्र) तुम न पाओगे उन लोगों को जो यकीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर

कि दौस्ती करें उनसे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुखालफत की अगरचे वह उनके बाप या बेटे या भाई या कुंजे वाले हों।

(कन्जुल—ईमान सफा ७८८)

इस आयते करीमा से भी यह बात बिल्कुल वाजेह और साफ हो जाती है कि एक मर्दे मोमिन जो अल्लाह और पिछले दिन पर यकीन रखता है। वह अल्लाह तआला और उसके रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखता है और जो उनके दुश्मन हैं उनसे दूरी इस्तिथार करता है। अगरचे वह उसके बाप या बेटे या कुंजे वाले ही क्यों न हों। गरज यह कि ईमान और नजात का दार व मदार हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की मुहब्बत पर है। तो जिस मोमिन के दिल में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की मुहब्बत होगी उसके दिल में हर उस चीज़ की मुहब्बत होगी जिसका तअल्लुक हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाते पाक से होगा। यह क़ुदरती बात है कि इन्सान जिससे मुहब्बत रखता है उससे मुहब्बत और तअल्लुक रखने वाली उन तमाम चीज़ों को भी महबूब रखता है। लिहाज़ा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखने वाले आपकी औलाद, आपके असहाब, आपके अहले-बैत अतहार और हर उस चीज़ को जिसका रूहानी या जिस्मानी तौर से आपका तअल्लुक है, दिल व जान से महबूब रखते हैं। क्योंकि उनकी मुहब्बत ऐन मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। तो गोया उनकी मुहब्बत हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत है। जो बदबख्त, शकीयुल-कल्ब, इब्ने-यज़ीद, उनमें से किसी एक के साथ भी बुग़ज़ व अदावत रखे या उनकी तौहीन व बे-अदबी करे, चाहे वह जुबान से हो या तहरीरी शकल में हो, वह ईमान से महरूम और दुश्मने खुदा व रसूल है। मुसलमानों को चाहिए कि ऐसे बदबख्त और दुश्मने खुदा व रसूल का समाजी बाईकाट करें। उनकी मजलिसों में न खुद जाएं और न किसी को जाने दें और न उनके पास बैठें।

मुसलमानो! ग़ौर का मक़ाम है ज़रा ठंडे दिल से सोचो कि अगर कोई शख्स या जमाअत तुम्हारे बाप की दुश्मन है तो क्या तुम उनके पास बैठना, उनसे खुशी से बात करना ग़वारा करोगे? तो तुम्हारा जवाब नफ़ी ही में होगा तो फिर तुमने दुश्मनाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दुश्मनाने अहले-बैत व दुश्मनाने असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ

उठना बैठना और उनसे खुशी से बात करना कैसे गवारा कर लिया?

मुसलमानो! खूब याद रखो अहले-बैते अतहार और सहाबाए-इजाम रिजवानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन की मुहब्बत ऐन मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। उनकी अदावत ऐन अदावते रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि वह अपने दिल में उन मुकद्दस नुफूस की मोहब्बत रखें और अपनी जुबान और अपनी तहरीरों से उन नुफूस को कुदसिया की शान में मुहब्बत भरे अलफाज बोलें और तहरीर करें। हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अहले-बैते किराम से मुहब्बत करने के मुतअल्लिक इरशाद फरमाया है : वल्लाहि ला यदखुलु कल ब रजुलिनिलईमानु हत्ता युहिबुहुम लिल्लाहि व लिफराबतिहिम मिन्नी (इब्ने माजा (जिल्द अव्वल) सफ़ा ७१) खुदा की कसम ! किसी शख्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाखिल न होगा जब तक (अहले-बैत) से अल्लाह के लिए और मेरी क़राबत की वजह से मुहब्बत न करे। दूसरी जगह इरशादे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है : अहब्यु अहल-बैती लिहुब्बी (तिर्मिज़ी शरीफ़ (जिल्द दोम) सफ़ा ७६८) यानी मुझसे मुहब्बत रखते हो तो इस बिना पर मेरे अहले-बैत से भी मुहब्बत करो।

देखिए एक हदीस पाक में अहले-बैत की मुहब्बत को ईमाने कामिल और दूसरी हदीस में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का दार व मदार मुहब्बते अहले-बैत क़रार दिया जा रहा है। क्योंकि अहले-बैत अतहार से मुहब्बत हुजूर पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का बय्यिन सुबूत है। हुजूर की मुहब्बत तमाम मखलूक़े खुदा पर फ़र्ज़ है। तो अहले-बैते अतहार की मुहब्बत भी ज़िम्नन फ़र्ज़ हुई। इंशाअल्लाह इस सिलसिले में आप आइन्दा सफ़हात में आयाते क़ुरआनी व अहादीसे करीमा से दलाइल मुलाहज़ा फ़रमाएंगे।

अहले-बैते अतहार की मुहब्बत सरमायए ईमान और रज़ाये खुदा व रसूल है। इसलिये हम सबसे पहले अहले-बैत की शान में सैयदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः के भाई हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ान साहब अलैहिर्रहमः की एक मनक़बत तहरीर कर रहे हैं। फिर फ़ज़ाइले अहले-बैत क़ुरआने करीम व अहादीसे मुबारका की रौशनी में पेश करेंगे। बादहू सहाबा-ए-किराम के फ़ज़ाइल व मनाकिब पेश किए जाएंगे।

लअनतुल्लाहि अलैकुम दुशमनाने अहले-बैत

बागे जन्नत के हैं बहरे मदह-ख्याने अहले-बैत

तुम को मुजदा नार का ऐ दुशमनाने अहले-बैत

किस जवां से हो व्याने इज्ज व शाने अहले-बैत

मदह गोए मुस्तफा है मदह-ख्याने अहले-बैत

उनकी पाकी का खुदाए पाक करता है व्यां

आयते ततहीर से जाहिर है शाने अहले-बैत

उनके घर में बे-इजाजत जिव्रईल आते नहीं

कद्र वाले जानते हैं कद्र व शाने अहले-बैत

रज्म का मैदां बना है जलवा-गाहे हुस्न व इश्क

करबला में हो रहा है इम्तिहाने अहले-बैत

फूल जख्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने

खून से सींचा गया है गुलिसताने अहले-बैत

हूरें करती हैं उरुसाने शहादत का सिंगार

खूबरू दूल्हा बना है हर जवाने अहले-बैत

जुमा का दिन है किताबें जीस्त की तय करके आज

खेलते हैं जान पर शहजादगाने अहले-बैत

ऐ शबाबे फस्ले गुल! यह चल गयी कैसी हवा

कट रहा है लहलहाता बोस्ताने अहले-बैत

खुश्क हो जा खाक होकर खाक में मिल जा कुरात

खाक तुझ पर देख तू! सूखी जुवाने अहले-बैत

बागे जन्नत छोड़ कर आए हैं महबूबे खुदा

ऐ जहे किस्मत तुम्हारी कुश्तगाने अहले-बैत

हूरें बेपरदा निकल आयी हैं सर खोलें हुए

आज कैसा हश्र है बरपा म्याने अहले-बैत

घर लुटाना, जान देना, कोई तुझसे सीख जाये

जाने आलम हो फिदा, ऐ खानदाने अहले-बैत

सर शहीदाने मोहब्यत के हैं नेजों पर बुलन्द

और ऊंची की खुदा ने, कद्र व शाने अहले-बैत

जख्म खाने को, तो आबे तेग पीने को दिया

खूब दावत की बुला कर दुशमनाने अहले-बैत

अहले-बैते पाक से गुस्ताखियां बे-वाकियां

लअनतुल्लाहि अलैकुम दुशमनाने अहले-बैत

बेअदब गुस्ताख फिर्के को सुना दे ऐ हसन

यूं कहा करते हैं सुन्नी दारस्ताने अहले-बैत

(अल्लामा हसन रजा खी हसन बरिलवी)

अहले-बैते नुबुव्वत पाक हैं

अहले-बैते नुबुव्वत यह वह मुकद्दस हस्तियां हैं कि जिस तरह हुजूर नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम सारे नबियों और रसूलों के सरदार हैं। इसी तरह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहले-बैते अतहार तमाम अंबियाए किराम व रसूलाने इज़ाम के अहले-बैत के सरदार हैं। उन पाकीज़ा नुफ़ूस की शाने आलिया में अल्लाह जल ल शानुहू अपने मुकद्दस कलाम 'पाक' में इरशाद फ़रमाता है—इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि व अन्कुमुरिज स अहलल बैति व युतहहिरुकुम तत्हीरा (सूरह अहज़ाब पारह २२ रुकू १) ऐ नबी के घर वालो! अल्लाह तो यही चाहता है कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमाए और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे (कंजुल-ईमान)। आयते करीमा में अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमा रहा है कि ऐ मेरे महबूब! आप फ़रमा दीजिये कि अल्लाह तआला मेरे अहले-बैत से नापाकी दूर फ़रमाकर उन्हें पाक व साफ़ फ़रमा रहा है।

सबसे पहले तो हमें यह समझना है कि इस आयते करीमा में अहले-बैत से कौन-कौन लोग मुराद हैं। लफ़्ज़े अहल के लुगवी माना हैं 'वाला'। इसीलिए कहा जाता है — अहले-इल्म, अहले-दौलत, अहले-मुल्क, अहले-राय वगैरा। यानी इल्म वाला, दौलत वाला, मुल्क वाला, राय वाला। लिहाज़ा अहले-बैत के माना हुए घर वाले, और अहले-बैते नबी के माना हुए नबी के घर वाले। फिर घर वाला होने की तीन सूरतें हैं : एक, यह कि नबी के घर में पैदा हों और घर ही में रहते हों। जैसे हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चारों फ़र्जन्द : तैय्यब, ताहिर, कासिम, इब्राहीम। दूसरे, यह कि नबी के घर में पैदा हों मगर फिर बाद में दूसरे घर में रहें। जैसे: हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों साहिबज़ादियां हज़रत ज़ैनब, कुल्सूम, रुक़ैया, और हज़रत फ़ातिमतुज्जुहरा रज़ियल्लाहु अन्हुमा। यह हुजूर के घर में पैदा हुई मगर निकाह के बाद अपने ससुराल में रहीं। उन दोनों को अहले-बैते विलादत कहा जाता है। तीसरे, यह कि पैदा और जगह हों मगर बाद में हुजूर के घर में रहने लगे हों। जैसे : हुजूर

अलैहिस्सलातु वरसलाम की अजवाजे मुतहहिरात कि उनकी विलादत अपने वालिदैन के घर हुई मगर हुजूर से निकाह के बाद यह हुजूर अलैहिस्सलातु वरसलाम के घर में रहने लगीं। उन्हें अहले-बैते सुकूनत कहते हैं। यह तीन किस्म के हजरात अहले-बैते रसूल हैं। हमारे उर्दू मुहावरे में भी बीवी-बच्चों को अहले खाना या अहल व अयाल या घर वाले कहा जाता है। लिहाजा इस तशरीह के मुताबिक हुजूर अलैहिस्सलातु वरसलाम की तमाम औलाद, साहिबज़ादे, साहिबज़ादियां और तमाम अजवाजे मुतहहिरात हुजूर के अहले-बैत हैं। लेकिन हक यह है कि अहले-बैत का इत्तलाफ हजरात इमाम हसन व इमाम हुसैन व हजरात अली व हजरात फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ही की जाते गिरामी पर होता है।

आयते ततहीर का शाने नुज़ूल और तफ़सीली ब्यान

आयत करीमा इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अन्कुमुरिज स अहलल बैति व युतहहिरुकुम ततहीरा में अहले-बैत से कौन लोग मुराद हैं? इसके बारे में मुख्तलिफ़ अक़वाल हैं। लेकिन अकसर मुफ़रिसरीन का ख़्याल है और खुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बाद इरशाद फ़रमाया कि आयते ततहीर अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम के मुतअल्लिक़ नाज़िल हुई हैं। बाज़ का ख़्याल है कि यह आयत आपकी बीवियों के मुतअल्लिक़ नाज़िल हुई हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है वज़कुर न मा युतला फी बुयूतिकुन्न न यह कौल हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास और हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हुम का है। क्योंकि वही आपके सुकूनती मकान में रिहाइश पज़ीर थीं। अल्लाह तआला के इस कौल वज़कुर न मा युतला फी बुयूतिकुन्न न की वजह से भी इस आयत को आपकी बीवियों के मुतअल्लिक़ करार दिया गया है। आपके अहले-बैत आपके नसब वाले भी हैं। जिन पर सदक़ा हराम करार दिया गया है। एक जमाअत ने इस पर एतमाद किया है और इसी को तरज़ीह दी है। इब्ने कसीर ने भी इसकी ताईद की है। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा ४८४)

बहरहाल जो लोग अहले-बैत से उम्महातुल-मोमिनीन मुराद लेते हैं और वह लोग जो अहले-बैत से हज़रात पंजतन पाक मुराद लेते हैं — दोनों

जमाअतों के पास दलाइल मौजूद हैं। मगर अकसरियत दूसरे कौल के हुकूम में है। इसीलिए अहले-बैत का लफ्ज अक्सर हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए शाये व मशहूर है। इस सिलसिले में हम अहादीसे करीमा पेश करके अपने कौल के कबो होने का सुबूत पेश कर रहे हैं। चुनांचे मिश्कात शरीफ़ बाब मनाकिबे अहले-बैत में उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सैयदना आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा आयते ततहीर के मुतअल्लिक जों रिवायत ध्यान करती हैं, वह यह है : अन आई श त कालत ख र जन्नविय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गदा त व अलैहि मिरतुन मुरहहलुम मिन शअरि अस व द फ़जाअल हसनुब्नु अलीइन फ़अदख़लहू सुम्म मजाअल हुसैनु फ़ दख़ल मअहू सुम्म म जाअत फ़ातिमतु फ़अदख़ ल हा सुम्म मजाअ अलीयुन फ़अदख़ लहू सुम्म म का ल इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि व अन्कुमुरिज स अहललबैति व युतहहिरुकुम तत्हीरा रवाहु मुरिल्लमु (मिअ्तुल-मनाजीह शरह मिश्कातुल-मसाबीह, सफ़ा ४५१)। हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि एक सुबह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए। आप पर काले ऊन के बालों की मुखत्तत चादर थी। पस हज़रत हसन बिन अली आए। हुज़ूर ने उन्हें अपने चादर में दाख़िल फ़रमा लिया। फिर जनाब हुसैन आए तो वह भी उनके साथ चादर में दाख़िल हो गए। फिर हज़रत फ़ातिमा आयीं उन्हें भी दाख़िल फ़रमा लिया। फिर हज़रत अली आए उन्हें भी दाख़िल फ़रमा लिया। फिर फ़रमाया : ऐ नबी के घर वालो! अल्लाह चाहता है कि तुमसे गन्दगी दूर कर दे और तुमको ख़ूब-ख़ूब पाक व साफ़ फ़रमा दे।

दूसरी रिवायत उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सैयदा उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से इस तरह नबी है : अन उ म रबनि अवी सलमा रबीविन्नवीय्यी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम काल : लम्मा न ज़ लत हाज़िहिल आयतु अलन्नवीय्यी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम : 'इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि व अन्कुमुरिज स अहललबैति व युतहहिरुकुम तत्हीरा।' फ़ी बैति उम्मे सलमा फ़ दआ फ़ातिम त व हसनन व हुसैनन फ़जल्ल ललहू बिकसाइन व अलीय्युन ख़ल फ़ ज़हरिही फ़जल्लललहू बिकसाइन सुम्म म का ल हाउलाइ अहलु बैती फ़ज़हब अन्हुमुरिज स व

तहहिरहुम ततहीरा। कालत उम्मे सलमा व अ न म अ हुम या नवीयल्लाहि का ल अन्ति अला मकानिकि य अन त अला खैरिन (तिर्मिजी शरीफ जिल्द दोम सफ़ा-४८५) उमर इन्ने अवी सलमा, जो रबीव हैं नवी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के, उन्होंने कहा : जब आयते करीमा इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुजहि ब अन्कुमुरिज स नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा के घर में हज़रत फ़ातिमा और हसन और हुसैन को बुलाया और उन सब पर एक चादर डाल दी। आपके पीछे हज़रत अली थे। फिर अर्ज किया आपने : या अल्लाह! यह मेरे अहले-बैत हैं, तू इनसे हर किस्म की आलूदगी दूर करके ख़ूब पाकीज़ा फ़रमा दे। हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि मैं ने कहा या रसूलुल्लाह! मैं भी उनके साथ हूँ। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपने मकान पर हो और ख़ैर पर हो।

साहिबे तफ़सीर हुसैनी आयते ततहीर की तफ़सीर लिखते हुए फ़रमाते हैं : जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपना सर कमली के अन्दर करके बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम! मैं अर्ज किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या मैं आपके अहले-बैत से नहीं हूँ? आपने फ़रमाया इन्न क अला खैरिन यानी तुम ख़ूबी पर हो। इसी जेहत से उन्हीं पांच को आले अबा बोलते हैं। (तफ़सीरे हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा-२६२)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से यह तीसरी रिवायत इस तरह मर्वी है कि अन्न न रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का न यमुरु बिवाबि फ़ातिम त सित्त त अशहुरिन इज़ा ख र ज लिसलातिल फ़जे यकूलु या अहलवैति! इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुजहि ब अन्कुमुरिज स अहलल-वैति व युतहहिरुकुम ततहीरा (तिर्मिजी शरीफ़-जिल्द दोम सफ़ा-५३६) रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छः महीने तक यही आदते करीमा थी कि जब आप सुबह को नमाज़े फ़ज़ के लिये निकलते तो हज़रत बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के दरवाज़े पर गुज़रते तो फ़रमाते कि ऐ अहले-बैत अल्लाह तआला तुमको हर किस्म की नापाकी से दूर फ़रमा दे और तुम्हें ख़ूब-ख़ूब पाकीज़ा फ़रमा दे। (तफ़सीर हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा-२६३)

चौथी रिवायत मशहूर सहावीए रसूल हज़रत अबू-सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : न ज़ लत हाज़िहिल आयतु फ़ी ख़म्सतिन फ़िय्या व फ़ी अलिथिन व फ़ातिम त व हसनिन व हुसैनिन इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अन्कुमुरिज स अहलल बैति व युतहहिरुकुम ततहीरा। यह आयते करीमा इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अन्कुमुरिज स पांच शख़्सीयतों के बारे में नाज़िल हुई है। मेरे बारे में और अली और फ़ातिमा और हसन और हुसैन के बारे में। (मनाकिब अहले-बैत, सफ़ा : ६८)

बहरहाल यह बात रोज़े रौशन की तरह बिल्कुल ज़ाहिर हो गई कि आयते ततहीर में अहले-बैत से मुराद हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम और खुद सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुक़द्दस जाते पाक है। नीज़ मज़कूरा वाला तमाम हदीसों में आपने देखा कि अहले-बैत की नब्बी तफ़्सीर कभी कौलन तो कभी फ़ेअलन आपने अहले-बैत को ज़ाहिर फ़रमा दिया है। यह कितनी अहम और ज़रूरी बात है। क्या इसके खिलाफ़ कोई बात तस्लीम की जा सकती है?

रिज्स क्या है?

अल्लाह तआला ने आयते ततहीर इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अन्कुमुरिज स अहलल बैति व युतहहिरुकुम ततहीरा की इब्तेदा इन्नमा के लफ़ज़ से फ़रमाई है जो हसर के लिये आता है। इसमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि वह अहले-बैत से उस नापाकी को दूर फ़रमा देगा जो ईमानियात में गुनाह और शक का मोज़िब होती हैं और उन्हें दीगर अख़लाक व अहवाले मज़मूमा से पाक कर देगा। ख़त्म आयत पर ततहीरा की तन्वीन ताज़ीम व तकसीर के लिए है। यानी मामूली तहारत नहीं बल्कि बहुत-ही ज़्यादा उमदा और आला तहारत है। बाज़ तुर्क में उनका आग पर हराम होना भी व्यान हुआ है। यह उस ततहीर का फ़ायदा है जिसकी ग़ायत इनाबत इलल्लाह का इलहाम और आमाले सालिहा पर मदावमत इख़्तियार करना है। जब मुलूकियत के वाइस उनसे ज़ाहिरी ख़िलाफ़त का ख़ात्मा हो गया और यह ख़ात्मा हज़रत इमाम हसन पर हुआ तो उन्हें उसके एवज़ ख़िलाफ़ते बातनी अता की गई। यही वजह है कि हर ज़माने के कुतुब, औलिया उन्हीं में से हुए। यह

लोग खुद भी मादने विलायत और मरजए सलासिले औलियाए उम्मत हुए। इसीलिए हज़रत अल्लामा हसन रज़ा खान वरैलवी ने क्या खूब फ़रमाया है :

उनकी पाकी का खुदाए पाक करता है व्यान
आयते ततहीर से ज़ाहिर है शाने अहले-बैत

आयते ततहीर में इन्नमा के बाद अल्लाह तआला फ़रमाता है युरीदुल्लाहु। यानी अल्लाह तआला का यह इरादा है कि (अहले-बैत को) अरजास से पाक कर दे। तो क्या अल्लाह तआला का इरादा फ़रमा लेना ही काफी नहीं है। जबकि किसी भी काम के पूरा करने के लिए अल्लाह तआला का इरादा फ़रमा लेना ही काफी है। इस पर कुरआन करीम गवाह है कि इज़ा अरादल्लाहु शैअन कुन फ़ यकून। उधर युरीदुल्लाह है इधर अरादल्लाहु है। कहा और हो गया। फिर उस बशारते खुदावन्दी के बाद मुस्तज़ाद यह कि सैयदुल-अंबिया हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम इमाम हुसैन और दूसरे हज़राते अहले-बैत को कमली में लेकर बारगाहे खुदावन्दी में दुआगो हैं कि या अल्लाह! यह मेरे अहले-बैत हैं उनसे अरजास व आलूदगी को दूर रख। तो क्या इमामुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह मुबारक दुआ शर्फ़ कुबूलियत को पहुंची कि नहीं? क्या कोई मुसलमान यह गुमान कर सकता है कि महबूबे खुदा की दुआ कुबूल नहीं हुई, जबकि आपसे बढ़कर दोनों आलम में कोई मुस्तजाबुद्वात पैदा ही नहीं हुआ।

अब यह देखना है कि वह 'रिज्स' क्या है जिससे उस खानवादए तकदीस व अज़मत को अलाहदा रखा गया। तो उसके मुतअल्लिक भी तवीलतरीन मबाहिस हमारे सामने मौजूद हैं। मुख्तसरन यह है कि काल इब्ने अतीया अर्रिज्सु इस्मु यकअ अलल इस्मि बल-अज़ाबि व अलन्नजासात। व काल इमाम नववी की ल हु व शक्कुन व कीलल अज़ाबु व कीलल इस्म। कालज़ुहरी अर्रिज्सु इस्मुन लिकुल्लि मुस्तकज़रिम मिन अ म लिन वगैरहि।

(अशरफुल-मवीद सफ़ा : ११, शहीद इब्ने शहीद, जिल्द दोम, सफ़ा : ३६६)

इब्ने अतीया कहते हैं : रिज्स का वुकू है ऊपर गुनाहों के, और अज़ाब के, और ऊपर नजास्तों के। इमाम नववी कहते हैं कि रिज्स शक को, अज़ाब को और गुनाह को कहते हैं। जुहरी कहते हैं कि रिज्स आमाल वगैरा

के तमाम गुनाहों का नाम है। नीज अहले-लुगत का इस पर इतिफाक है कि रिज्ज के माना पलीदी, गुनाह, कुफ़ और हर बुरा काम है।

व का ल इब्ने अब्बास अरिज्जु अमलशैतानि मा लै स लिल्लाहि फ़ीहि रज़ा। व कीलरिज्जु : अशशक्कु व कीलरसू (खाज़िन जिल्द ५ सफ़ा : २५५) व का ल इमाम फ़ख़रुद्दीन अरज़ी-अरिज्जु अय यज़ीलु अन्कुमुज़्ज़ुनूब (तफ़सीरे कबीर (अरबी) अज्जुज़्जल-ख़ामिस बल-इशरून सफ़ा : २०६)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं : रिज्ज अमले शैतान है, और हर वह काम है जो रज़ाये इलाही के खिलाफ़ हो। और रिज्ज शक और बुराई को कहते हैं।

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी तफ़सीरे कबीर में फ़रमाते हैं कि रिज्ज अहले-बैत से गुनाहों को ख़त्म करने का नाम है।

बहरहाल यह मुसल्लमा अम्र है कि रिज्ज गुनाह और बुराई और हर उक्त काम को कहते हैं जो रज़ाये खुदावन्दी के खिलाफ़ हो। यह क़ुरआन व हदीस की नुसूस और मुफ़रिसरीन के अक़वाल से साबित है कि अल्लाह तबारक व तआला ने हज़रात अहले-बैत अतहार को रिज्ज से मुकम्मल तौर पर अलाहिदा करके ताहिर व मुतहहिर फ़रमा दिया है। तमाम एतकादी और अमली नापाकियों और बुराईयों से बिल्कुल पाक और मुनज़्ज़ह फ़रमा कर क़लबी सफ़ाई, अख़लाकी सुथराई और तज़कीए ज़ाहिर व बातिन का वह आला मक़ाम अता फ़रमा दिया जिसकी वजह से वह दूसरों से मुमताज़ व फ़ाइक हैं।

अल्लाह तआला अहले-बैत के तुफ़ैल हमारे गुनाहों को भी माफ़ फ़रमा कर दरजाते आलिया अता फ़रमाए। आमीन।



पंजतन पाक

और

आयते मुबाहला

पंजतन पाक यह मुक़द्दस हस्तियां हैं :

1. हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम
2. हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी-तालिब कर्रमल्लाहु वज्हः
3. हज़रत सैयदना फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा
4. हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु
5. हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

आयते मुबाहला यह है :

फ़मन हाज्ज ज क फ़ीहि मिम्बादि मा जा अ क मिनल इल्मि फ़कुल तआलौ नदऊ अबनाअना व अबनाअकुम व निसाअना व निसाअकुम व अन्फ़ुसना व अन्फ़ुसकुम सुम्म म नबतहिल फ़नजअल लानतल्लाहि अलल काज़िबीन। (सूरह आले इमरान पारह ३ रुकू १४)

तर्जुमा : (फ़िर ऐ महबूब) जो तुमसे ईसा के बारे में हुज्जत करें बाद उसके कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उनसे फ़रमा दो — आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें और अपनी जानें और तुम्हारी जानें, फिर मुबाहिला करें, तो झूठों पर अल्लाह की लानत डालें। (कन्ज़ुल-ईमान)

शाने नुज़ूल और तफ़सीली ब्यान

यह आयते करीमा नजरान के ईसाईयों के मुतअल्लिक़ नाज़िल हुई जो पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम वस्सलाम के मुतअल्लिक़ बहस करने आए थे। नजरान, मक्का मुअज़्ज़मा से जानिबे यमन सात मन्ज़िल के फ़ासले पर एक बड़ा वसी व अरीज़ शहर है जो नजरान बिन ज़ैद बिन यशहुब बिन यारब के नाम से मौसूम है। यह शहर मुल्के अरब में ईसाई मज़हब का बहुत बड़ा मर्कज़ था। ७३ गांव इससे मुतअल्लिक़ थे। यहां एक अज़ीम गिरजा था जिसको ईसाई 'काबा' कहते थे। इसी में उनके बड़े-बड़े पादरी रहते थे। हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल से एक साल पेशतर यहां के ईसाईयों का एक वफ़द जो साठ अफ़राद पर मुश्तमिल था, मदीना मनुव्वरा आया। इन में लॉर्ड बिशप भी था जिसका नाम अबू-हारसा था। उन साठ अफ़राद में चौबीस (२४) अफ़राद ईसाईयों के अशराफ़ लोगों में से थे। फिर इन २४ में से तीन मरजए कुल थे। उनमें से एक का नाम अब्दुल मसीह और आकिब लक़ब था यह अपनी कौम का सरदार था। जिसकी राय के बग़ैर ईसाई कोई काम नहीं करते थे। दूसरे का नाम ऐहम था। यह अपनी कौम का अफ़सरे माल था जिसके ज़िम्मे सारी कौम के ख़ुर्द व नोश और रसद का इंतज़ाम था। तीसरे का नाम अबू-हारसा बिन अल्क़मा था। जो नसारा के तमाम उलमा पादरियों का बड़ा पेशवा था। यह गिरोह नमाज़े

अस के वक्त मदीना मुनव्वरा पहुँचा। इस वफ़द के तमाम शुरका निहायत उम्दा और कीमती पोशाकें पहन कर बड़ी शान व शौकत के साथ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुनाज़िरा करने आए थे। सहाया—ए—किराम रिज़वानुल्लाहु अलैहिम फ़रमाते हैं कि हमने आज तक ऐसी शान व शौकत वाली जमाअत न देखी थी। यह लोग सीधे मस्जिद नबी में आए। नमाज़ का वक्त था। फ़ौरन उन लोगों ने वहीं जानिये शर्क़ मुतवज्जह होकर नमाज़ शुरू कर दी। हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उन्हें अपनी नमाज़ पढ़ लेने दो।

(तफ़सीरे नईमी जिल्द सोम—सफ़ा : २६८)

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी आदतें करीमा के मुताबिक़ इस वफ़द को दावते इस्लाम दी। लेकिन वह रू—व—रू न हुए और मुवाहिसा करने लगे। उनका मर्कज़ी मसअला यह था कि हज़रत ईसा मसीह खुदा थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके जवाब में आयते क्रुरआनिया पढ़ीं जिनके दलाइले क़तईया से साबित किया गया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे हैं, खुदा नहीं। बिना बाप के पैदा होना इस बात की दलील नहीं कि वह खुदा हैं। आखिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भी तो बिन माँ—बाप के मिट्टी से पैदा किए गए। तो जब उन्हें अल्लाह की मख़लूक़ और उसका बन्दा मानते हो तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह की मख़लूक़ और बन्दा मानने में क्या तअज्जुब व रुकावट है ? जबकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का तो हज़रत मरयम से पैदा होना भी साबित है। लेकिन ईसाइयों का यह वफ़द दलाइले क़ातिआ सुनने के बावजूद अपनी जिद्द पर कायम रहा तो अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इन आयते मुवाहिला को नाज़िल फ़रमाया। इरशादे बारी तआला हुआ कि ऐ महबूब! उनसे फ़रमा दीजिए कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो तो आओ हम और तुम अपने बाल—बच्चों को लेकर अल्लाह तआला के सामने दुआ करें कि जो अपने दावे में झूठा हो उस पर अल्लाह तआला की लानत हो और वह अज़ाबे खुदावन्दी का मुस्तहिक़ बने। अहले इस्लाम उसी को मुवाहिला के नाम से याद करते हैं। इस हुक्मे मुवारक के बाद वफ़द के उलमाए नसारा ने हुजूर अलैहिस्सलाम से एक दिन की मोहलत माँगी कि हम कल आपको इसका जवाब देंगे। जब वह जमा हुए तो उन्होंने अपने सबसे

बड़े आलिम और साहिबे राय शरख्स आकिय से कहा : ऐ अब्दुल मसीह! आप की क्या राय है ? उसने कहा : ऐ जमाअते नसारा! तुम पहचान चुके हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व वसल्लम) नबी मुर्सल जरूर हैं। अगर तुमने उनसे मुबाहिला किया तो सब हलाक हो जाओगे। अब अगर नसरानियत पर कायम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ दो और अपने-अपने घर लौट चलो। यह मशवरा करने के बाद वह तमाम लोग हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमते आलिया में हाजिर हुए तो उन्होंने देखा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की गोद में इमाम हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में इमाम हसन का हाथ है और हजरत फातिमा व हजरत अली हुजूर के पीछे हैं। हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम उन लोगों से फरमा रहे हैं कि जब मैं दुआ करूँ तो तुम सब आमीन कहना। नजरान के सबसे बड़े पादरी बिशप ने जब उस नूरानी काफिले को देखा तो कहने लगा ऐ गिरोहे नसारा ! इन्नी लअरा वुजूहन लौ सअलुल्ला ह ऐंयुजी ल ज ब लम भिम मकानिही लअजालहू बिहा फ़ला व तबाहिलू फ़तुहलिकू वला यब्का अला वजहिल अर्जे नसरानीयुन इला यौमिल क्याम : (तफ़सीरे कबीर अल-जुज़उस्सामिन-सफ़ा : ८५) यानी बेशक मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूँ कि अगर यह लोग अल्लाह तआला से पहाड़ को इसकी जगह से हटाने की दुआ करें तो यकीनन अल्लाह तआला पहाड़ को उसकी जगह से हटा देगा। पस हरगिज़ उनसे मुबाहिला मत करो वरना हलाक हो जाओगे और क्यामत तक रूए ज़मीन पर कोई ईसाई बाकी न रहेगा। चुनांचे ईसाइयों ने अपने पादरी की बात मान ली और मुबाहिला से राहे फ़रार इख्तियार की और जिज़या देना मन्ज़ूर कर लिया कि हम हर साल दो हजार जोड़े कपड़े (जिनमें एक जोड़े की कीमत चालीस दीनार से कम न होगी) देंगे। एक हजार माहे सफ़र में और एक हजार माहे रज्जब में। और तीस (३०) ऊँट, ज़िरह और ३० नेजे पेश करते रहेंगे। साहिबे तफ़सीरे नईमी ने इस आयते करीमा की तफ़सीर में लिखा है कि ईसाई बतौरे जिज़या दो हजार जोड़े, ३३ ज़िरह, ३३ ऊँट और ३४ घोड़े दिया करेंगे।

तारीखे इस्लाम मुअल्लिफ़ अब्दुर्रहमान शौक़ अमृतसरी अपनी किताब के सफ़ा २८१ जिल्द अव्वल में तहरीर करते हैं कि ईसाइयों ने जहां जिज़या देना कुबूल किया इसी के साथ-साथ यह सुलहनामा भी लिखा गया कि (१) मुसलमानों की तरफ़ से जो भी काफ़िर उनके पास आएगा वह उसकी

मेहमान नवाजी करेंगे। (२) न सूद लेंगे और न सूद का कारोबार करेंगे। (३) मुसलमान उनके दीन और उनकी आजादी के निगराँ रहेंगे। इस सुलहनामा पर नामवर सहाबा किराम ने दस्तखत फरमाई और उनके हवाले कर दिया गया। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया :

वल्लजी नफ़सी बियदिही इन्नल हला क क़द तदल्ली अला अहले नजरान वलौ लअनुल मसखू किरदतुन व खनाजीरु वला जतरम अलैहिमुल वादी नारौ वला सतासिलल्लाहु नजरान व अहलिही हत्तत तै र अला रुऊसुश्श ज रे व लमा हालल हौलु अलन्नसारा कुल्लुहुम हत्ता युहलिकू। (सीरत रसूले अरबी व तफ़सीरे कबीर जुज़ सामिन सफ़ा : ८५)

यानी कसम है उस जात की जिसके कब्जे में मेरी जान है कि अहले नजरान पर यकीनी हलाकत तारी हो जाती अगर वह हमसे मुबाहिला करते तो बन्दरों और सूअरों की सूरत में मसख़ कर दिए जाते और अज़ाबे इलाही की आग से जंगल जल जाते। नजरान और वहाँ के रहने वाले हत्ता कि दर्ख़तों पर बैठे हुए परिन्दे जल जाते और एक साल की मुदत में तमाम ईसाई हलाक हो जाते। मवाहिबुल-लदुन्निया ने लिखा है कि जिस किसी ने भी मुबाहिला किया है अगर वह बातिल पर है तो उस पर रोज़े मुबाहिला से एक साल भी नहीं गुज़रेगा कि वह हलाक हो जाएगा।

ख़साइस कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४३ पर एक हदीस पाक हज़रत अबू-नईम के हवाले से तहरीर फ़रमाई है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अहले नजरान की हलाकत की ख़बर देने वाला आ गया था हत्ता कि परिन्दे भी उनकी हलाकत की ख़बर दे रहे थे अगर वह मुबाहिला करते तो हलाक हो जाते।

सही मुस्लिम शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : २७८ और साहिबे मिअ्तुल-मनाजीह ने जिल्द हशतुम सफ़ा : ४५० पर बहवाला मुस्लिम एक हदीस पाक हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नक़ल फ़रमाई हैं कि लम्मा न ज़लत हाज़िहिल आयतु नदऊ अबनाअना व अबनाअकुम दआ रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अलीय्यन व फ़ातिम त व हसनन व हुसैनन फ़का ल अल्लाहुम्म म हाउलाइ अहलु बैती।

जब यह आयत यानी आयते मुबाहिला नाज़िल हुई कि हम अपने और तुम्हारे बेटों को बुलाएं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली और फ़ातिमा और हसन व हुसैन को बुलाया और फ़रमाया : यह मेरे घर वाले हैं।

साहिबे सवाइक मुहर्रका ने सफ़ा ५२४ पर कश्शाफ़ के हवाले से लिखा है कि उससे बढ़कर चादर वालों की फ़ज़ीलत में कोई कवी दलील नहीं। वह हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा और हसनैन करीमैन हैं। क्योंकि जब यह आयत नाज़िल हुई तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन्हें बुलाया और हुसैन को गोद में लिया, हसन का हाथ पकड़ा और हज़रत फ़ातिमा और हज़रत अली आप के पीछे थे। पस मालूम हो गया कि आयत से मुराद हज़रत फ़ातिमा की औलाद और उनकी ज़ुरीयत है जिन्हें वह अपने बेटे कहते हैं और आपकी तरफ़ मन्सूब होते हैं।

आयते मुबाहला में अबनाअना व निसाअना व अंफ़ुसना से कौन लोग मुराद हैं?

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अंफ़ुसना से मुराद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। और निसाअना से मुराद जनाब सैयद फ़ातिमा जुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। और अबनाअना से मुराद हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। अरबी इबारत यह है। का ल जाबिर : अंफ़ुसना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व अली व निसाअना फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा व अबना अना अल-हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा। (तफ़सीरे इब्ने कसीर पारा ३ सूरा आले इमरान सफ़ा ७६ तफ़सीरे कबीर जुज़उस्सामिन सफ़ा : ८६ पर लिखा है कि—हाज़िहिल आयः दात्लतु अला अन्नल हसनु वल हुसैनु अलैहुम अस्सलामु कानन नबई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वअदा ऐं-यदऊ बनाउहू फ़दअल हसनु वल हुसैनि फ़वजबएं यकू न इब्नैह। यानी यह आयते करीमा दलील है इस बात की कि इमाम हसन और इमाम हुसैन अलैहिमुस्सलाम हुज़ूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेटे हैं।

मुहतरम कारिईन किराम! आयते मुबाहिला की यह तफ़सीर दर—हकीकत हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अमली तफ़सीर है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'अबनाअना' में अपने फ़र्जन्दों यानी इमाम हसन और इमाम हुसैन को पेश कर दिया कि

यह मेरे बेटे हैं; और 'निसाअना' में अपने घर की औरतों में से अपनी सबसे चहीती बेटा हज़रत फ़ातिमा जुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा को पेश कर दिया और 'अंफ़ुसना' की जगह खुद अपनी जाते गिरामी और हज़रत मौला अली को पेश कर दिया। इससे आप अन्दाज़ा लगाएं कि क़ुरआन मजीद और हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस अमली तफ़सीर ने हज़रात पंजतन पाक यानी हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा और हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुम की फ़ज़ीलत को कितना बढ़ा दिया है। इसलिए उलमाए किराम ने फ़रमाया है कि हज़रात पंजतन पाक का वसीला दुआ की क़ुबूलियत के लिए अकसीरे आज़म है कि उनके वसीले से माँगी हुई दुआ इन्शाअल्लाह रद्द न होगी।

मुहब्बते अहले-बैत और क़ुरआने हकीम

जब तक मुसलमानों के हाथों में क़ुरआने हकीम और अहले-बैते अतहार का दामन रहा वह कभी गुमराह और रुसवा नहीं हुए बल्कि हमेशा फ़तह व कामरानी उनके क़दम चूमती रही। लेकिन जैसे ही मुसलमानों ने उन दोनों के दामन से अपनी वाबरस्तगी छोड़ी हर जगह ज़िल्लत व रुसवाई उनके सामने आती चली गयी। आज जो आलमे इस्लाम के मुसलमानों पर मुट्ठी भर इसराईलियों का दबदबा और ग़ल्बा है उसकी सबसे बड़ी वजह यही है कि मुसलमानों ने क़ुरआने हकीम और अहले-बैते नुबुव्वत को भुला दिया। आज भी वक़्त है अगर मुसलमान वही सुख़्ख़रुई और फ़तह व कामरानी चाहता है तो अपने आपको क़ुरआने हकीम और अहले-बैते नुबुव्वत से वाबरस्ता कर ले और अपने दिल को अहले-बैते नुबुव्वत की मुहब्बत का मदीना बना ले तो इन्शाअल्लाह फ़तह व कामरानी फिर तुम्हारे क़दम चूमेगी।

अहले-बैते अतहार की मुहब्बत का मक़ाम और उसकी अहमियत इतनी ज़्यादा है कि खुद खुदा ने अपने मुक़द्दस कलाम पाक में इरशाद फ़रमाया कि कुल ला असअलुकुम अलैहि अजरन इल्लल मवद्द त फ़िल-कुर्बा

(सूफ़ह शूरा पारा २५ रुकूअ ४) तुम फ़रमाओ मैं उस पर तुमसे कुछ उजरत नहीं माँगता मगर क़राबत की मुहब्बत। यानी मैं तुमसे अपने क़राबतदारों की मुहब्बत का मुतालबा करता हूँ।

शाने नुज़ूल और तफ़रीली ब्यान

इस आयते करीमा के शाने नुज़ूल के मुतअल्लिक हुजूर सदरुल-अफ़ाज़िल हज़रत अल्लामा मौलाना सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी अलैहिर्रहमः अपनी तफ़रीर ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा में रौनक अफ़रोज़ हुए और अंसार ने देखा कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िम्मे मसारिफ़ बहुत हैं और (बज़ाहिर) माल भी कुछ नहीं है तो उन्होंने आपस में मशवरा किया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्क और एहसानात याद करके हुजूर की ख़िदमत आलिया में पेश करने के लिए बहुत-सा माल जमा किया और उसको लेकर हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़िर हुए और अर्ज किया कि हुजूर की बदौलत हमें हिदायत मिली। हम ने गुमराही से नजात पायी। हम देखते हैं कि हुजूर के मसारिफ़ बहुत ज़्यादा हैं इसलिए हम खुदमे आस्ताना यह माल आपकी ख़िदमत में नज़र के लिये लाए हैं। उम्मीद है कि हुजूर क़ुबूल फ़रमा कर हमारी इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाएंगे। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह अमवाल वापस फ़रमा दिए।

साहिबे तफ़रीरे कबीर हज़रत इमाम राज़ी अलैहिर्रहमः तफ़रीरे कशशाफ़ के हवाले से लिखते हैं कि लम्मा न ज़लत हाज़िहिल आयः की ल या रसूलल्लाहि! मन कराबति क हाउलाइल्लज़ी न व जबत अलैना मवदतुहुम फ़का ल अलीय्यन व फ़ाति म त व अबनाहुमा (तफ़रीरे कबीर अल-जुज़उस्साबी वल इशरून सफ़ा : १६६)

जब यह आयत (कुल ला असअलुकुम अलैहि अजरा) नाज़िल हुई तो सहाबए किराम ने बारगाहे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके वह कौन रिश्तेदार हैं जिनकी मोहब्बत हम पर वाजिब कर दी गई है। इमामुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : वह अली, फ़ातिमा और उनके दोनों फ़र्जन्द (इमाम हसन व इमाम हुसैन) हैं। इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक ख़ुतबे में इरशाद फ़रमाया :

मन अ र फ़नी फ़क़द अ र फ़नी व मल लम यारिफ़नी फ़अनल

हसनुबनु मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमं सुम्म म तला वत्तवअतु मिल्लल त आबाई इबराहीम (आयः) सुम्म म का ल अनवनुल वशीरु अनवनुन्नजीरु सुम्म म का ल व अना मिन अहलिल वैतिल्लजीनफ़ तर जल्लाहु अज्ज व जल ल मवदतहुम व मवालातहुम फ़ का ल फ़ीमा अन्ज ल अला मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। कुल ला असअलुकुम अलैहि अजरन इल्लल मवद त फ़िल-कुर्बा (अस्सवाइकुल मुहर्रका सफ़ा : ५७०)

यानी जो मुझे पहचानता है वह तो मुझे पहचानता ही है और जो नहीं पहचानता वह भी जान ले कि मैं हसन हूँ, फ़र्जन्दे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। फिर यह आयत तिलावत फ़रमाई वत्तवअतु मिल्ल त आबाई इबराहीम (आख़िर तक), फिर फ़रमाया : मैं बशीर व नजीर का फ़र्जन्द हूँ और मैं अहले-बैते नुबुव्वत से हूँ जिनकी मुहब्बत व दोस्ती अल्लाह अज्ज व जल्ल ने तुम पर फ़र्ज फ़रमाई है। इस बारे में उसने अपने महबूब हज़रत सैयदना मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह आयत कुल ला असअलुकुम अलैहि अजरा नाज़िल फ़रमाई है।

तबरानी ने रिवायत ब्यान फ़रमाई है जब हज़रत सैयदना इमाम जैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने वालिदे गिरामी हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद असीरी की हालत में दमिश्क की एक जगह पर खड़ा किया गया तो एक ज़ालिम जफ़ाकार शामी ने आप से कहा : अलहम्दुलिल्लाहिल्लजी क़ त लकुम वस्तासलकुम व क़ त अ करनल फ़ितनः। फ़ का ल लहू अमा क़ र त कुल ला असअलुकुम अलैहि अजरन इल्लल मवद त फ़िल-कुर्बा। का ल व अन्तुम हुम? का ल नअम।

(अस्सवाइकुल—मुहर्रका सफ़ा : ५७१—व तफ़सीर इब्ने कसीर सूरह शूरा सफ़ा : १३)

ख़ुदा का शुक्र है जिसने तुम्हारा ख़ात्मा किया और तुम्हारी जड़ों को काटा और फ़ितनागरों को मिटाया (मआज़ल्लाह) आपने उससे फ़रमाया : क्या तूने क़ुरआने करीम में यह आयत नहीं पढ़ी कुल ला असअलुकुम अलैहि अजरा। उसने कहा क्या वह तुम हो? फ़रमाया : हाँ! बिला शुब्हा।

हज़रत अल्लामा नबहानी ने भी इस वाकिआ को लिखा है। इस वाकिआ के बाद वह लिखते हैं कि मैं इस बदबख़्त को ईमान वाला नहीं समझता।

इसलिए कि एक ईमानदार शख्स जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया है उसकी जुबान से कभी भी ऐसे कबीह और मुलहिदाना कलिमात निकल ही नहीं सकते।

हम कहते हैं कि ऐसे बदबख्त और मुलहिद के दिल में ईमान कैसे ठहर सकता है जो जिगर गोशए रसूल, राहते जान, खातूने जन्नत के शहीद किए जाने पर खुश हो और अल्लाह का शुक्र अदा करता हो। मैं, अल्लाह और रसूल का उस मुलहिद से ज्यादा दुश्मन किसी को नहीं समझता।

हम सगे बारगाहे अहले-बैत कहते हैं कि इस जमाने में भी ऐसे बदबख्त और मुलहिद बेईमान लोग बहुत मिलेंगे जो अहले-बैते नुबुव्वत और खानदाने रिसालत और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नफरत और दुश्मनी करते हैं और उनके फ़ज़ाइल व मनाकिब के आयात व अहादीस को ज़र्इफ़ और ग़लत माना देकर उनके मनाकिब को ख़त्म करने की नापाक कोशिश कर रहे हैं। उनकी मुक़द्दस जात पर तरह-तरह के रकीक और नाज़ैबा कलिमात अदा करके उनकी शान को घटाने की सई-ए-ला हासिल करते हैं। जब कोई मुहिब्बे अहले-बैते, आशिके रसूल, साहिबे इल्म व फ़ज़ल उन मुक़द्दस हज़रात की तारीफ़ व तौसीफ़ ब्यान करता है तो उन यज़ीदियों और ख़ारजियों के चेहरे बदल जाते हैं और फ़ौरन ऐसी हदीस को ज़र्इफ़ साबित करने के लिए उठ खड़े होते हैं और अपने आपको दुश्मनाने अहले-बैत की सफ़ में शामिल कर लेते हैं। ऐसा ही एक बदबख्त इब्ने यज़ीद, ख़ारजी, बेईमान और मुलहिद फ़ासिक व फ़ाजिर औरंगाबाद (महाराष्ट्र) की सरज़मीन पर पैदा हुआ है जो हज़रत इमाम आली मक़ाम सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और आपके रुफ़काए किराम को बागी करार दे रहा है और यज़ीद जैसे फ़ासिक व फ़ाजिर शख्स को जन्नती साबित करने में सफ़हात के सफ़हात सियाह करके अपने ईमान से हाथ धो बैठा है। ऐसे ही नापाक और नाहन्जार यज़ीदियों के लिए हम एक बहुत ही मशहूर और मारुफ़ बुजुर्ग, जो तमाम अक़ाइद वालों के नज़दीक मुसल्लम व मोतबर शख्सियत हैं, उनकी एक मशहूर व मारुफ़ तफ़सीर "तफ़सीरे कबीर" से अहले-बैते अतहार की फ़ज़ीलत में और उनसे बुज़्ज़ व हसद रखने वालों के लिए बतौरे इबरत उन तमाम अहादीसे करीमा को नक़ल कर रहे हैं। साहिबे तफ़सीरे कबीर हज़रत अल्लामा इमाम राज़ी अलैहिर्रहमः लिखते हैं कि हुज़ूर नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : मम मा त अला हुब्बि आलि मुहम्मदिम मा त शहीदन जो अहले-बैत की मुहब्बत में मरा उसने शहादत की मौत पाई । और फरमाया अला व मम मा त अला हुब्बि आले मुहम्मदिम मा त मगफूरल लहू आगाह हो जाओ जो शख्स अहले-बैत की मुहब्बत में मरा वह ऐसा है कि उसके गुनाह वरक्ष दिए गए । और फरमाया अला व मम मा त अला हुब्बि आले मुहम्मदिन मा त ताइवन आगाह हो जाओ जो शख्स अहले-बैत की मुहब्बत में मरा वह गुनाहों से ताइव होकर मरा । फिर फरमाया : अला व मम मा त अला हुब्बि आले मुहम्मदिम मा त मूमिनम मुस्तकमिलुल ईमान खबरदार हो जाओ जो शख्स अहले-बैत की मुहब्बत में मरा वह मुकम्मल ईमान के साथ इन्तकाल किया । और फरमाया अला व मम मा त अला हुब्बि आलि मुहम्मदिन बशशरहु मल कुल मौत बिल जन्नति सुम्मम मुन्कर व नकीर आगाह हो जाओ जो अहले-बैत की मुहब्बत में मरा उसे हजरत इजराईल (मौत के फरिश्ते) और मुन्कर नकीर जन्नत की बशारत देंगे । फिर इरशाद फरमाया अला व मम मा त अला हुब्बि आलि मुहम्मदिन यज़िफु इलल जन्नति कमा यज़िफुल उरुसु इला बैति जौजिहा आगाह हो जाओ जो अहले-बैत की मुहब्बत में मरा उसको ऐसी इज्जत के साथ जन्नत में ले जाया जाएगा जैसे दुल्हन को उसके शौहर के घर ले जाया जाता है । और फरमाया अला व मम मा त अला हुब्बि आले मुहम्मदिन फ़त ह लहू फी कबरिही बाबाने इलल जन्नत खबरदार हो जाओ जो अहले-बैत की मुहब्बत में मरा उसकी कब्र में जन्नत के दो दरवाजे खोल दिए जाएंगे । फिर फरमाया अला व मम मा त अला हुब्बि आलि मुहम्मदिन जअलल्लाहु कबरहु मज़ारि मलाइकतिर्रहमः आगाह हो जाओ जो अहले-बैत की मुहब्बत में मरा अल्लाह तआला उसकी कब्र को रहमत के फरिश्तों की ज़ियारतगाह बना देगा । फिर इरशाद फरमाया अला व मम मा त अला हुब्बि आलि मुहम्मदिम मा त अलरसुन्नति वल जमाअः खबरदार हो जाओ जो अहले-बैत की मुहब्बत में मरा वह मसलके हक्कः अहले-सुन्नत व जमाअत पर मरा । (तफ़सीरे कबीर अल-जुज़उरसाबे वल-इशरून सफ़ा : १६५-१६६ तफ़सीरे कश्शाफ़ अल-जुज़उरसालिस सफ़ा : ४६७)

यह सारी बशारतें और खुशख़बरियाँ उन लोगों के लिए हैं जो अहले-बैत अतहार और खानदाने नुबुव्वत से मुहब्बत व उलफ़त रखते हैं

और अपने हर कौल व फ़ेल और अपनी तहरीरों से अहले-बैत की मुहब्बत का इज़हार फ़रमाते हैं।

इन्शाअल्लाह आइन्दा सफ़हात में आप अहले-बैत के फ़ज़ाइल पर चालीस अहादीस का एक मजमूआ पढ़ेंगे तो ईमान ताज़ा हो जाएगा। जो लोग अहले-बैते रिसालत और ख़ानदाने रिसालत से बुग़्ज़ व हसद रखते हैं और अपने कौल व फ़ेल और अपनी तहरीरों से उन मुक़द्दस नुफ़ूस की शान में गुस्ताख़ियाँ करते हैं उनके लिए चन्द अहादीस पेश क़ी जाती हैं।

हुज़ूर फ़ख़्रे काइनात सैयदुल इन्स वल जिन्न सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं अला मम मा त अला बुग्जे आलि मुहम्मदिम जा अ यौमल-क़्यामति मक़तूबम बै न ऐनैहि आयसुम मिर्रहमतिल्लाह आगाह हो जाओ जो अहले-बैत की बुग़्ज़ व दुशमनी में मरा वह क़्यामत के दिन इस हाल में आएगा कि उसकी दोनों आँखों के दरमियान लिखा होगा "अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद" और फ़रमाया अला मम मा त अला बुग्जे आलि मुहम्मदिम मा त काफ़िरन ख़बरदार हो जाओ जो अहले-बैत की दुशमनी व बुग़्ज़ में मरा, वह काफ़िर मरा। और इरशाद फ़रमाया अला व मम मा त अला बुग्ज़ि आले मुहम्मदिक लम यशुम्मु राइहतल जन्नः आगाह हो जाओ जो अहले-बैत की बुग़्ज़ व अदावत में मरा वह जन्नत की खुशबू से महरूम हो गया।

(तफ़सीर कबीर अल-जुज़्जुस्साबे वल इशरून सफ़ा : १६६)

नोट:- पूरी हदीसे पाक में आले मोहम्मद का तर्जुमा अहले-बैत से इस लिए किया गया कि अहले-बैत के आले रसूल होने में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं। दूसरों को आले रसूल होना इख़्तलाफी है। तफ़सील के लिए तफ़सीरे कबीर अल-जुज़्जुस्साबे वल इशरून (अरबी) (हिस्सा २७) का मुतालआ फ़रमा लें।

अब उन गुस्ताख़ाने अहले-बैत को सोचना चाहिए कि उनका ठिकाना किधर है ? यज़ीद जैसे फ़ासिक व फ़ाजिर इन्सान को अमीरुल-मोमिनीन, जन्नती और इमाम आली मक़ाम सैयद इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को मआज़ल्लाह सद मआज़ल्लाह ! बागी, गुनहगार, और मुजरिम कहने और लिखने वालो अपने अन्जाम को सोचो। एक-न-एक दिन मरना है। अब भी वक़्त है। तौबा का दरवाज़ा बन्द नहीं हुआ है। बारगाहे खुदावन्दी में बवसीलए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम माफ़ी माँग कर अहले-बैते

अतहार के चौखट के सग वन जाओ। इसलिये कि यह वही घर है जहाँ से तुम्हें नजात का परवाना मिलेगा; यही वह घर है जो सफ़ीनए नजात है। इन्हीं के मुतअल्लिक इरशादे रसूल है कि अगर उनको छोड़ोगे तो गर्क हो जाओगे। इसलिये ऐ इमामैन करीमैन के नाना जान का कलिमा पढ़ने वालो! अपने नबी के हक को पहचानो और उनके अहले-वैत से अकीदत व मुहब्बत रखो, इन्शाअल्लाह! अल्लाह और उसके रसूल की खुशनूदी तुम्हें जरूर हासिल होगी। इसलिये आला हज़रत सैयदना इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाजिले बरैलवी अलैहिर्रहमः ने क्या ख़ूब कहा है —

क्या बात रज़ा इस चमनिरस्ताने करम की
जुहरा है कली जिसकी हुसैन और हसन फूल

आयते मवद्दत में कुर्बा से कौन लोग मुराद हैं

आयते करीमा में कुर्बा से कौन लोग मुराद हैं? इसके मुतअल्लिक मुतअदिद अक़वाल हैं। एक कौल यह है कि उससे हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा और हज़रत हसनैन करीमैन मुराद हैं। एक कौल यह है कि उससे आले अली व आले अक़ील और आले जाफ़र मुराद हैं। एक कौल यह है कि इससे अज़वाजे मुतहहरात और वह रिश्तेदार मुराद हैं जिन पर सदका हराम है। (तफ़सीरे ख़ज़ाइन-इरफ़ान)

लेकिन जैसा की आपने मज़कूरा बाला हदीसे पाक में पढ़ा कि जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो सहाबा-ए-किरा के पूछने पर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिल्कुल वाज़ेह तौर पर फ़रमा दिया कि मुहब्बत व मवद्दत के सही हक़दार अली, फ़ातिमा और उनके दोनों साहबज़ादे हैं। कुरआने हकीम हुज़ूर सैयदुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ। तो जब साहिबे कुरआन ने खुद उसकी तफ़सीर फ़रमा दी तो फिर तावीलों और दीगर अक़वाल की क्या ज़रूरत रह जाती है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मालिक व मुख्तार हैं। साहिबे इख़्तियारे नबी हैं। जिसको चाहें जो एज़ाज़ अता फ़रमाएं उनका यह करम है। इसीलिए सरकारे आला हज़रत अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं :

ख़ालिके कुल ने आपको मालिके कुल बना दिया
दोनों जहाँ हैं आपके क़ब्ज़ा व इख़्तियार में

सखावते अहले-बैत और कुरआने हकीम

अहले-बैते अतहार का तअल्लुक, उनकी परवरिश और तरबीयत का पूरा-पूरा मामला हुजूर सैयदुल अंबिया वल-मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुकद्दस व मुतहहर जाते करीमा से रहा। उसी तअल्लुक और तालीम व तरबीयत का यह असर है कि अहले-बैते नुबुव्वत में हुजूर सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाके हसना, आदाते करीमा, ईसार व कुर्बानी और गरीबों, यतीमों और मिरकीनों के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कल्बी मुहब्बत का असर उन हज़रात अहले-बैते नुबुव्वत पर भी पड़ना यकीनी अम्र है। इस वक़्त हम ऐसा ही एक वाकिआ जो अहले-बैत नुबुव्वत की गुर्बानवाज़ी से तअल्लुक रखता है, कारिईन की खिदमत में पेश करने की सआदत हासिल कर रहे हैं। यह वाकिआ ऐसा है कि अल्लाह तबारक व तआला ने भी अहले-बैते नुबुव्वत के इस फ़ेल पर इतना खुश हुआ कि अपने मुकद्दस कलाम पाक में इस वाकिआ को ब्यान फ़रमा दिया। मुलाहज़ा फ़रमाइए -

पूरा वाकिआ हम तफ़सीरे कबीर (अरबी) अल-जुज़ुत्तासि वल-इशरून सफ़ा : २४४-तफ़सीर मुवज़्जेहुल कुरआन सफ़ा : ६०८ तफ़सीर हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा : ६४४ और तफ़सीर ख़ज़ाइनूल-इरफ़ान मुसन्निफ़ अल्लामा मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः के हवाले से तहरीर कर रहे हैं कि जमहूर मुफ़रिसरीन इस बात पर हैं। रावी हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं। आप फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा बीमार हुए तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा-ए-किराम की एक जमाअत के साथ हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की अयादत के लिए

तशरीफ ले गए। तो किरसी सहाबी ने या खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली को मशवरा दिया कि तुम्हारे फ़र्जन्द वीमार हैं तो अल्लाह के लिए कुछ नज़र मान लो। चुनांचे हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा और आपकी लौंडी हज़रत फ़िज़्ज़ा ने तीन रोज़ों की नज़र मानी। दोनों शहज़ादे अल्लाह तआला के फ़ज़ल व करम से बहुत जल्द सेहतयाब हो गए। तो उन तीनों हज़रात ने रोज़े रख लिए। मगर काशानए मौला अली में उस दिन खाने के लिए कुछ भी नहीं था। हज़रत अली शमऊन खैबरी यहूदी के पास गए और तीन साअ जौ बतौर कर्ज ले आए। हज़रत खातूने जन्नत ने एक तिहाई हिस्सा जौ अपने हाथ से पीसा और पाँच आदमियों के हिसाब से शाम की रोटियाँ तैयार फ़रमा लीं और इफ़तार के वक़्त खाना सामने लाकर रख दिया। अभी रोज़ा इफ़तार करने की तैयारी थी अचानक एक शख्स काशानए अली पर आवाज़ देता है। ऐ अहले-बैते रसूलुल्लाह! मैं एक मिस्कीन मुसलमान हूँ, भूखा हूँ, तुम्हारे दरवाज़े पर आया हूँ। अल्लाह के नाम पर कुछ खाना दे दो अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत के ख़ानों पर खिलाएगा। यह सुन कर उन मुक़द्दस हज़रात ने वह सारी रोटियाँ उस मिस्कीन के हवाले कर दीं और खुद पानी पी कर रोज़ा इफ़तार कर लिया और सो गए। दूसरे रोज़ फिर रोज़ा रखा और एक तिहाई जौ की रोटियाँ बनाई। और जब इफ़तार करने बैठे तो फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई और कोई आवाज़ देने वाला आवाज़ दे रहा है कि ऐ अल्लाह के रसूल के घर वालो! मैं यतीम हूँ, भूखा हूँ, मुझे अल्लाह के लिए कुछ खाना दे दो। उन हज़रात ने फिर तमाम रोटियाँ उस यतीम को दे दीं और खुद पानी पी कर रोज़ा इफ़तार कर लिया। तीसरे रोज़ फिर रोज़ा रखा और बक़िया जौ को पीस कर रोटियाँ बनाई कि अचानक फिर एक साइल ने आवाज़ दे दी। ऐ अहले-बैत अतहार! मैं असीर (कैदी) हूँ, भूखा हूँ, अल्लाह के लिए कुछ खाना दे दो। तीसरे रोज़ भी उन हज़रात ने तमाम की तमाम रोटियाँ उस कैदी को दे दीं और खुद पानी से रोज़ा इफ़तार कर लिया। और खुदा वन्द कुदूस का शुक्र अदा किया कि अब हमारी नज़र पूरी हो गई।

चौथे रोज़ सुबह उठे तो भूख की शिद्दत और ज़ोफ़ से चलने फिरने की ताक़त न थी। हज़रत मौला अली ने हज़रात हसनैन का हाथ पकड़ा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमतें आलिया में ले गए। दोनों

साहिबजादे भूख की शिद्दत की वजह से काँप रहे थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको देखा तो रंज पैदा हुआ। फिर आप हज़रत अली के काशाने पर हाज़िर हुए। उस वक़्त हज़रत सैयदा नमाज़ पढ़ रही थीं। हुजूर ने उनको देखा तो बहुत बेकरार हो गए। यहाँ तक कि आँखें अशक़बार हो गयीं। उसी वक़्त हज़रत जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपके अहले-बैत को मुबारक हो, अल्लाह तआला उनकी शान में अपने मुक़द्दस कलाम में फ़रमा रहा है कि :

यूफू न बिन्नज़रि व यखाफू न यौमन का न शरूहू मस्ततीरा । व युतइमूनत्तआ म अला हुब्बिही मिस्कीनों व यतीमों व असीरा। इन्नमा नुतइमुकुम लिवजहिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम जज़ाओं वला-शुकूरा।

(सूरह दहर पारा २६)

यानी अपनी मिन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई फैली हुई है। और खाना खिलाते हैं उसकी मुहब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को। उनसे कहते हैं हम तुम्हें खास अल्लाह तआला के लिए खाना देते हैं। तुमसे कोई बदला या शुक्रगुज़ारी नहीं माँगते।

(कन्ज़ुल-ईमान)

अल्लाह! अल्लाह! यह है सखावते अहले-बैत रसूलुल्लाह की कि तीन दिन से लगातार सिर्फ़ पानी से इफ़तार कर लिया और अपने हिस्से की तमाम रोटियाँ साइल को दे दीं। लेकिन साइल को वापस नहीं किया। क्या कोई ऐसी मिसाल पेश कर सकता है ?

अल्लाह तआला हमें और तमाम मुसलमानों को अहले-बैत अतहार के तुफ़ैल ऐसा ही जज़्बा-ए-ईसार अता फ़रमाए।

आमीन

अहले-बैत पर दुरुद और कुरआन मजीद

हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरुद व सलाम भेजना वाजिब है। हर एक मजलिस में आपके जिक्र करने वाले पर और सुनने वाले पर भी एक मर्तबा वाजिब और उससे ज्यादा मुस्तहब है। यही कौल मोतमद है और इस पर जमहूर उलमा का फतवा है। और आपके ताबे करके आपके आल व असहाब पर भी दुरुद शरीफ भेजा जा सकता है। यानी आपके नामे अक़दस के बाद आपकी आल को शामिल किया जा सकता है। मगर मुस्तक़िल तौर पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा उनमें से किसी पर दुरुद शरीफ भेजना मकरूह है। हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शाने पाक के मुतअल्लिक़ इरशादे खुदावन्दी है —

इन्नल्लाह व मलाइकतहू युसल्लू न अलन्नबीय याऐय्युहल्लज़ी न आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा। (सूरह अहज़ाब—प—२२)

बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरुद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर। ऐ ईमान वालो! उन पर दुरुद और ख़ूब सलाम भेजो।

(कन्ज़ुल—ईमान)

शाने नुज़ूल

हज़रत काब बिन उज़रा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हमने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़द अल्लमना कै फ़ नुसल्लिमु अलै क का ल कूलू अल्लाहुम्म म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मिदिन

कमा सल्लै त अला इबराही म व अला आलि इबराही म इन्न न क हमीदुम्मजीद।

(अशअतुल-लम्आत जिल्द दोम-सफ़ा : २६६)

बेशक अल्लाह तआला ने हमें सिखा दिया है कि आप पर सलाम किस तरह पढ़ें। अब आप फ़रमाएं कि हम आप पर दुरुद किस तरह पढ़ें? तो फ़रमाया : यूँ कहो, ऐ अल्लाह! दुरुद भेज हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी आल पर जैसा की दुरुद भेजा तूने हज़रत इब्राहीम और उनकी आल पर। बेशक तू हम्द व बुर्जुगी वाला है।

एक रिवायत में फ़रमाया : यूँ कहो अल्लाहुम्म म सल्लै अला मुहम्मदिव व अला अजवाजिही व जुरियतिही कमा सल्लै त अला इब्राही म इन्न न क हमीदुम मजीद। (अशअतुल-लम्आत जिल्द दोम सफ़ा : २६८)

ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा (हज़रत) मुहम्मद और आपकी अजवाज और आपकी औलाद पर जैसा कि तूने रहमत नाज़िल फ़रमाया आले इब्राहीम पर। बेशक तू हम्द व बुर्जुगी वाला है।

गौर फ़रमाइए सहाबा-ए-किराम ने अपने सवाल में यह दर्याफ़्त नहीं किया कि आप पर और आपके अहले-बैत पर कैसे दुरुद भेजें? बल्कि सिर्फ़ आप पर दुरुद भेजने की कैफ़ियत पूछी? मगर आपने अपनी तबईय्यत में अपने अहले-बैत को भी अपने साथ मिला लिया। बल्कि जिस दुरुद में आपके साथ आपके अहले-बैत को न मिलाया जाए उसे नाकिस करार दिया। कामिल दुरुद वह है जिसमें आपके साथ आपके अहले-बैत का नाम भी शामिल हो। चुनांचे फ़रमाया :

ला तुसल्लू अलैयस्सलातल बुतरा फ़कालू वमस्सलातुल बुतरा का ल तकूलू न अल्लाहुम्म म सल्लि अला मुहम्मदिन व तुमसीकू न बल कुलू अल्लाहुम्म म सल्लि अला मुहम्मदिव व अला आलि मुहम्मदिन।

(अस्सवाइकूल-मुहर्रका-सफ़ा : ४६५)

मुझ पर नाकिस दुरुद न भेजा करो। सहाबा ने पूछा : या रसूलल्लाह! नाकिस दुरुद कौन-सा है? फ़रमाया : तुम कहते हो अल्लाहुम्म म सल्लि अला मुहम्मदिन और यहीं रुक जाते हो बल्कि यूँ कहा करो अल्लाहुम्म म सल्लि अला मुहम्मदिव व अला आलि मुहम्मदिन, यानी आल का नाम लिए बग़ैर पढ़ना नाकिस है और आल के नाम के साथ पढ़ना कामिल दुरुद शरीफ़ है।

हज़रत अबू मरऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि का ल रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम : मन सल्ला सलातल लम

युसल्लि फीहा अलैया व अला अहले-बैती लम तुकबलु मिन्दु।

(इमाम पाक और यजीद सफ़ा : २४६)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो नमाज़ पढ़े और उसमें मुझ पर और मेरे अहले-बैत पर दुरुद न पढ़े उसकी नमाज़ क़बूल न होगी।

चुनांचे इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक़ तशहहुद में आप पर और आपके अहले-बैत पर दुरुद पढ़ना वाजिब है। इस सिलसिले में उनके यह अशआर बहुत ही मशहूर व मारुफ़ हैं —

या अहले-बैते रसूलिल्लाहि हुब्बुकुम
फ़र्जुम मिनल्लाहि फ़िल कुरआने अन्जलहू
यकफ़ीकुम मिन अज़ीमिल कद्रे इन्नकुम
मल लम युसल्लि अलैकुम ला सला त लह

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ५०१)

ऐ अहले-बैते रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआला ने तुम्हारी मुहब्बत को फ़र्ज करार दिया है उस कुरआन में जिसको उसने नाज़िल किया है। तुम्हारी अज़मत व शान के लिए यही काफी है कि जिसने तुम पर दुरुद नहीं पढ़ा उसकी नमाज़ ही क़बूल नहीं।

वैलमी ने ब्यान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम और अहले-बैत पर दुरुद न पढ़ा जाए, दुआ क़बूलियत से रुकी रहती है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ५७७)

अबू-दाऊद ने रिवायत की है कि जो शख्स हम अहले-बैत पर दुरुद पढ़कर पूरा-पूरा सवाब का वज़न लेकर खुश होना चाहता है वह कहे अल्लाहुम्म म सल्लि अलन्नबीई मुहम्मदिव व अज़वाज़िही उम्महातिल मोमिनी न व जुर्रियतिही व अहले बैतिही कमा सल्लै त अला इबराही म इन्न न क हमीदुम्मजीद। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ४६६)

बहरहाल हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का सलात व सलाम में अपने अहले-बैते अतहार का अपने साथ मिलाना उनकी अज़मत व शान की बहुत बड़ी दलील है।

दुरुद व सलाम के फ़ज़ाईल व मसाइल के लिए मुअल्लिफ़े हाज़ा की किताब 'फ़ज़ाइले दुरुद व सलाम' का मुताला किया जाए।

अहले-बैते अतहार

और

अहादीसे करीमा

हुजूर नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के अहले-बैते अतहार के फ़ज़ाइल आसमान के तारों और ज़मीन के ज़रों की तरह बेशुमार व बे-इन्तिहा हैं। और क्यों न हों कि जब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के रुमाल से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना दस्ते मुबारक पोंछ लें तो वह रुमाल आग में न जले। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बौले शरीफ़ (पेशाब) पी लें तो उनके पेट का दाइमी दर्द ख़त्म हो जाए और आइन्दा कभी पेट का मर्ज़ न होने की बशारत मिल जाए। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जब आपका बौले शरीफ़ पी लिया तो उन्हें जहन्नम से नजात का परवाना मिल गया। तो वह नुफ़ूसे कुदसिया जिन्हें अहले-बैते अतहार के नाम से याद किया जाता है जिनका ख़मीर ख़ूने सैयदुल - मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिला हुआ और जिनके मुतअल्लिक आपने फ़रमाया हो कि यह मुझसे हैं और मैं इनसे हूँ तो उनके फ़ज़ाइल व मनाकिब का कोई शुमार कर सकता है ?

अहले-बैते नुबुव्वत के फ़ज़ाइल क़ुरआने करीम की रौशनी में आपने गुज़िशता सफ़हात में मुलाहज़ा फ़रमाया। अब हम अहले-बैत के फ़ज़ाइल अहादीसे करीमा की रौशनी में पेश करने की सआदत हासिल कर रहे हैं:

१. हदीसे सकलैन

हदीसे सकलैन दरहकीक़त हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की एक वसीयत है जो मुतअद्दिद सहाबा किराम से मरवी है। हम यहाँ पर मुस्लिम शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : २७६ की रिवायत जो मशहूर सहाबीए

रसूल हजरत जैद बिन अरकम रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है, तहरीर कर रहे हैं। आप फ़रमाते हैं कि का म रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यौमन फ़ीना खतीबन बिमाइन युदआ खुम्मा बै न मक्क त वल मदीन त फ़हमिदल्ला ह व असना अलैहि व व अ ज व जक्क र सुम्म म का ल अम्मा बाद ! अला ऐय्युहन्नासु इन्नमा अ न बशरुं यूशिकु ऐय्यातियनी रसूलु रब्बी फ़उजी ब व अ न तारिकुन फ़ीकुमुरसकलैनि अब्ब ल हुमा किताबुल्लाहि फ़ीहिल हुदा वन्नूरु फ़खुजू बिकिताबिल्लाहि वस्तमसिकू बिही फ़हस स अला किताबिल्लाहि व रग्ग ब फ़ीही सुम्म म का ल व अहलु बैती उजविकरुकुमुल्ला ह फ़ी अहलेबैती उजविकरुकुमुल्ला ह फ़ी अहलेबैती उजविकरुकुमुल्लाह फ़ी अहलेबैती। एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का और मदीना के दरमियान उस पानी के मक़ाम पर जिसे खुम कहा जाता है, खड़े होकर खुतबा दिया। जिसमें अल्लाह तआला की हम्द व सना की और वाज़ व नसीहत फ़रमाई। फिर हम्द व सना के बाद फ़रमाया : लोगो! ख़बरदार हो जाओ मैं एक बशर हूँ। अन्करीब मेरे पास मेरे रब का कासिद आ जाए और मैं उसका बुलावा कुबूल कर लूँ। और मैं तुम लोगों में दो वज़नी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। जिनमें पहली तो अल्लाह तआला की किताब है जिसमें हिदायत व नूर है। तुम अल्लाह की किताब लो और उसे मज़बूती से पकड़ लो। फिर किताबुल्लाह पर उभारा और तरगीब दी। फिर फ़रमाया और (दूसरी चीज़) मेरे अहले-बैत हैं। मैं तुमको अपने अहले-बैत के मुतअल्लिक अल्लाह से डराता हूँ। मैं तुमको अपने अहले-बैत के मुतअल्लिक अल्लाह से डराता हूँ, मैं तुमको अपने अहले-बैत के मुतअल्लिक अल्लाह से डराता हूँ।

कारिईने किराम! हदीसे सकलैन के आख़री जुमले पर जिसे हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया, बड़ी अहमीयत व अफ़ज़लीयत का हामिल है। इससे यह मतलब हासिल होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अहले-बैत के मुतअल्लिक अपनी उम्मत को यह याददहानी फ़रमा रहे हैं कि मेरे अहले-बैत का बहुत ज़्यादा ख़याल रखना। उनकी ताज़ीम व तकरीम में कभी फ़र्क न आने देना और उनके हुक्क वगैरा बराबर अदा करते रहना। दूसरी बात जो इस हदीस से हासिल होती है वह यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ैब-दां नबी हैं। आपको इस बात का इल्म था कि मेरे अहले-बैत अतहार

में से जो खास मेरे फ़र्जन्द हैं यानी हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा उनको तरह-तरह की तकालीफ़ दी जाएंगी और उनके साथ नाजैबा सुलूक किया जाएगा कि उनमें से एक को ज़हर देकर और दूसरे को तीन दिन का भूखा प्यासा रखकर एक वीरान और चटियल मैदान में शहीद किया जाएगा। इसलिए आपने बतौरे खास तीन बार इन मुकद्दस नुफ़ूस के मुतअल्लिक आगाही फ़रमा कर उम्मत को उनके साथ अच्छे सुलूक की वसीयत फ़रमा दी। लेकिन अफ़सोस सद अफ़सोस कि अपने आपको उम्मत मुहम्मदिया में शुमार करने वाले रसूले करीम का कलिमा पढ़ने वाले उन नाम निहाद मुसलमानों ने हज़रात हसनैन करीमैन और दीगर अहले-बैते अतहार पर जो मज़ालिम ढाए हैं। आलमे इन्सानियत ऐसे वाकिआत पेश करने से कासिर है।

तीसरी बात यह कि हदीसे सकलैन में खिताब सहाबा-ए-किराम से हो रहा था तो आप गौर फ़रमाएं जब सहाबए किराम से अहले-बैत अतहार के हुक्क की ताकीद फ़रमाई जा रही है तो हम तुम किस शुमार में हैं। हमें उनका कितना अदब व एहताराम करना चाहिये और उनसे कितनी अक्कीदत व मुहब्बत रखनी चाहिये।

(२) क़ुरआन मजीद और अहले-बैत का दामन थामने वाला गुमराह न होगा

ऊपर जो हदीसे सकलैन लिखी गई है वह मक़ामे खुम में हुज़ूर अनवर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अहम खुतबा और अहले-बैते अतहार के लिए एक वसीयत-नामा है।

इसी किस्म का एक अहम खुतबा हज्जतुल-विदा में अफ़ा के दिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़ारों सहाबा-ए-किराम के सामने ब्यान फ़रमाया था जिसे हम सु न ने तिमिज़ी जिल्द दोम सफ़ा ७३५ के हवाले से सहाबा-ए-रसूल हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, तहरीर फ़रमा रहे हैं। आप फ़रमाते हैं कि अन जाबिरिन का ल रऐतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ी हज्जातेही यौ म अ र फ़ त व हु व अला नाक़तिहिल क़सवा यख़तुबु फ़ समिअतुहू यकूलु

या ऐयुहन्नास! इन्नी तरकतु फ़ीकुम मा इन अखज़तुम विही लन तज़िल्लु किताबुल्लाहि व इतरती अहलु बैती। रिवायत है हज़रत जाविर से, फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आपके हज़ में अफ़ा के दिन देखा जबकि आप अपनी ऊँटनी कसवा पर खुतवा पढ़ रहे थे। मैंने आपको फ़रमाते सुना : ऐ लोगो ! मैंने तुममें वह चीज़ छोड़ी है कि जब तक तुम उनको थामे रहोगे, गुमराह न होंगे। अल्लाह की किताब और मेरी इतरत यानी अहले-बैत।

इस हदीसे पाक में भी सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम हिदायत चाहते हो और गुमराही और ज़लालत से अपने आपको दूर रखना चाहते हो तो मेरे अहले-बैत का दामन थाम लो, कभी गुमराह न होंगे।

यह इरशादे आली भी सहाबए किराम जैसी मुक़द्दस जमाअत से हो रहा है। इससे आप अन्दाज़ा लगाएं कि अहले-बैते अतहार का दर्जा कितना बुलंद व बाला है कि सहाबा-ए-किराम से फ़रमाया जा रहा है कि अपने आपको अहले-बैते अतहार से वाबरस्ता रखो। तो हम तुम किस शुमार व क़तार में हैं। हमें अहले-बैते अतहार का दामन थामना कितना ज़रूरी और अहम हो जाता है।

अहले-बैत से वाबरस्ता रहने की एक और हदीस

हदीसे सकलैन में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार अपने अहले-बैत के हुक्क के बारे में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिलाया। उसके बाद की हदीस में अहले-बैत से वाबरस्तगी का समरा यह ब्यान फ़रमाया कि अहले-बैत से वाबरस्ता रहने वाले कभी गुमराह नहीं होंगे। अब जो हदीस पाक ब्यान की जा रही है उसमें आप का इरशादे गिरामी है कि मेरे अहले-बैत से जो लोग वाबरस्ता होंगे और उनके हुक्क अदा करते रहेंगे तो क़यामत के दिन मेरे अहले-बैत उनकी सिफ़ारिश करेंगे।

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म इस हदीसे पाक के रावी हैं। वह फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन्नी तारिकुन फ़ीकुम मा इन तमस्सकतुम बिही लन तज़िल्लू बादी अ ह दुहुमा आजमु मिनल आखिरी किताबुल्लाहि हबलुम मम्दूदुम मिनस्समाइ इलल अर्जे व इतरती अहलु बैती वलैं यतफ़र्रका हत्ता यरि द अलैयल हौ ज़ फ़न्जुरु

कै फ़ तख़लुफूनी फ़ीहिमा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७६७)

बेशक ! मैं तुममें वह चीज़ छोड़ता हूँ कि अगर तुम उसे थामे रहोगे तो मेरे बाद गुमराह न होगे। उनमें से एक दूसरी से बड़ी है। अल्लाह की किताब जो ज़मीन से आसमान तक (नूर की) एक दराज़ रस्सी है। और मेरी इतरत यानी मेरे अहले-बैत। यह दोनों जुदा न होंगे, हत्ता कि मेरे पास हौज़ पर आ जाएं। तो गौर करो तुम उन दोनों के साथ मेरे बाद क्या मामला करते हो।

इस हदीसे पाक में भी बिल्कुल वाज़ेह अल्फ़ाज़ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरे उम्मतियो! अगर तुम गुमराही व ज़लालत से बचना चाहते हो तो कुरआने हकीम और मेरे अहले-बैत से अपने आपको वाबस्ता कर लो। मगर अफ़सोस और दुख का मक़ाम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतनी ताकीद फ़रमाने के बाद भी उम्मते मुहम्मदिया में अपने आपको शामिल करने वाले ग़िरोह ने कुरआने हकीम पर तरह-तरह के हमले किए और अहले-बैते अतहार की शान में गुस्ताख़ियाँ और बदसुलूकियाँ कीं जिससे तारीखे इस्लाम के सफ़हात भरे पड़े हैं।



फ़ज़ाइले अहले-बैत के मुतअल्लिक ४० हदीसें

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दर्याफ़्त किया गया कि इल्म की गायत और मर्तबा कौन-सा है जिस पर पहुंच कर मर्द फ़कीह कहलाता है। और फ़ुक़हा के जुमरे में शामिल होता और उनका सवाब पाता है ? रसूले करीम सल्लल्लाहु व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो दीन से मुतअल्लिक चालीस हदीसें याद करे और लोगों तक पहुंचाए तो अल्लाह तआला उसे क़्यामत के दिन ग़िरोहे फ़ुक़हा में उठाएगा। और मैं क़्यामत के दिन उसके गुनाहों की शफ़ाअत करूंगा और उसके ईमान व ताअत की गवाही दूंगा।
(मिशकातुल-मसाबीह)

इस हदीसे पाक की रौशनी में सल्फ़ व ख़ल्फ़ अकाबिर उलमाए किराम ने हुज़ूर ताजदारे अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत के उम्मीदवार बनने और आपको शाहिद बनाने के लिए अरबईनियात (चालीस हदीसों) को जमा किया और उसे तहरीर फ़रमा कर शाये फ़रमाया।

इस हकीर फ़कीर सरापा तकसीर सगे बारगाहे अहले-बैत ने भी चालीस हदीसों का एक मजमूआ अपनी तालीफ़ करदा किताब 'फ़ज़ाइले दुरुद व सलाम' उर्दू और गुजराती में तहरीर किया है। अलहम्दुलिल्लाह! दारुल-उलूम मुहम्मदिया (बम्बई) में दरसे आलिया निज़ामिया की फ़रागत के बाद सबसे पहले जिस तालीफ़ की मुझे तौफ़ीक़ हुई वह यही किताब 'फ़ज़ाइले दुरुद व सलाम' थी।

अब दोबारा फिर इस नयी तालीफ़-करदा किताब में जो आपके हाथों में है 'फ़ज़ाइले अहले-बैत' के तअल्लुक से चालीस हदीसों का एक मजमूआ हवालजात की रौशनी में पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ। उम्मीद है कि शर्फ़ कुबूलियत से नवाज़ा जाएगा और मुहिब्बाने अहले-बैत के लिए भी एक मीनारए नूर होगा।

अहले-बैत की फज़ीलत पर चालीस हदीसें

(१) हज़रत मौला अली कर्रमुल्लाह तआला वजहहुल-करीम फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हसनैन करीमैन के हाथ को अपने दस्ते मुबारका में लेकर फ़रमाया : जो मुझसे मेरे इन दोनों फ़रज़न्दों और उनके वालिदैन् से मुहब्बत करेगा वह क़यामत के दिन मेरे साथ होगा और जन्नत के भी उस दर्जा में रखा जायेगा जहां मैं रहूंगा।

(शेफ़ा शरीफ़, जिल्द दोम, सफ़ा ५६)

(२) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मेरे अहले-बैत उम्मत के लिए अमान हैं। जब अहले-बैत न रहेंगे तो उम्मत पर वह आएगा जो उनसे वादा^१ है।

(१-यानी जुहूरे किज़्ब)

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ५१४-अल-अमन वल उला सफ़ा २६)

(३) वैल्मी ने रिवायत की कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ १. अपने नबी की उल्फ़त व मुहब्बत २. अहले-बैते अतहार की उल्फ़त व मुहब्बत ३. क़ुरआने करीम की किर्अत

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ५७७)

(४) बैहकी और वैल्मी ने रिवायत किया कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

कोई बन्दा-ए-मोमिने कामिल नहीं हो सकता यहां तक कि मैं उसको उसकी जान से ज़्यादा प्यारा न हूँ और मेरी औलाद उसको अपनी जान से ज़्यादा प्यारी न हो और मेरे अहल उसको अपने अहल से ज़्यादा महबूब न हों और मेरी जात उसको अपनी जात से ज़्यादा महबूब न हो।

(सवानेहे करबला सफ़ा ५३)

(५) इमाम अहमद ने रिवायत किया कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख्स अहले-बैत से बुग़ज़ रखता है वह मुनाफ़िक है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ७६४)

(६) वैल्मी ने रिवायत किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो मुझसे तवरस्सुल की तमन्ना रखता हो और यह चाहता हो कि उसको मेरी बारगाहें करम में रोज़े क़यामत हक्के शफ़ाअत हो तो उसे चाहिये। कि वह मेरे अहले-बैत की न्याज़मन्दी करे और उनको हमेशा खुश रखे। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा: ५८८)

(७) वैल्मी ने हजरत अबू-हुसैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : तुममें ज्यादा बेहतर वह है जो मेरे बाद मेरे अहले-बैत के लिये साबित हो। (सवाइके मुहर्रका सफा ६२२)

(८) हजरत अबू-सईद खुदरी रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : कसम है उस जात की जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है जिसने मेरे अहले-बैत से बुग़्ज रखा खुदावन्द कुदूस उसको दौजख में डालेगा।

(ख़साइसुल-कुब्रा जिल्द दोम सफा ४६६)

(६) अमीरुल-मोमिनीन हजरत सैयदना मौला अली मुशकिल कुशा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जो शख्स मेरी इतरत यानी अहले-बैत और अन्सार के हुक्क को न पहचाने और उनके हुक्क अदा न करे तो उसमें उन तीन बातों में कोई एक बात जरूर होगी - या तो वह मुनाफ़िक होगा या जिना की औलाद होगा या फिर वह हैज़ व निफ़ास-जैसी नापाकी की हालत में उसकी माँ की पेट में रहा होगा। (सवाइके मुहर्रका सफा ५८०)

(१०) वैल्मी ने हजरत मौला अली रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि मैं ने हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फरमाया : जो लोग हौजे कौसर पर पहले आएंगे वह मेरे अहले-बैत होंगे। (सवाइके मुहर्रका सफा ६२२)

(११) अमीरुल-मोमिनीन हजरत सैयदना उस्मान इब्ने अफ़फ़ान रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जिस शख्स ने दुनिया में औलादे अब्दुल-मुत्तलिब या औलादे बनी हाशिम यानी अहले-बैत से कुछ नेकी या अच्छा सुलूक या एहसान किया फिर वह अहले-बैत उस का बदला न दे सके तो क्यामत के रोज़ उस सैयद की तरफ़ से मैं पूरा-पूरा बदला अता करूंगा। (सवाइके मुहर्रका सफा : ७६२)

(१२) हाकिम और वैल्मी ने हजरत अबू-सईद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : तीन चीज़ें ऐसी हैं जो शख्स उन चीज़ों की हिफ़ाज़त करेगा अल्लाह तआला उसकी दुनिया और दीन दोनों की हिफ़ाज़त फरमाएगा। और जो शख्स उन बातों को जाए करेगा अल्लाह तआला उसके किसी काम की हिफ़ाज़त नहीं फरमाएगा। (१) इस्लाम की इज़्ज़त (२) मेरी इज़्ज़त (३) मेरे

कराबत दारों और अहले-बैत की इज्जत। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६६)

(१३) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : आसमान के तारे अहले ज़मीन के लिये सफ़रे दरिया में डूबने से बचाने में बाइसे पनाह और मोजिबे अमान हैं। मेरे अहले-बैत मेरी उम्मत को इख़तिलाफ़ और तफ़रका में पड़ने से बचाने में बाइसे अमन हैं। जब मेरे अहले-बैत से कोई ग़िरोह इख़तिलाफ़ करके अलग हो जाए तो वह ग़िरोह शैतानी ग़िरोह समझा जाएगा। (ख़साइसुल-कुबरा जिल्द दोम सफ़ा ४६७)

(१४) वैल्मी ने हज़रत अबी सईद से ब्यान किया है कि रसूलें करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख्स मेरे औलाद के मुतअल्लिक मुझे अजीयत देगा उस पर सख़्त ग़ज़बे इलाही नाज़िल होगा। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६२१)

(१५) वैल्मी ने हज़रत अबी-सईद से ब्यान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स यह चाहता है कि उसकी उम्र लम्बी हो और अल्लाह तआला ने जो उसे दिया है उससे लुत्फ़-अन्दोज़ हो तो उसे चाहिए कि मेरे अहले-बैत के बारे में मेरा अच्छा जानशीन बने। और जो उनके बारे में मेरे बाद उनका अच्छा जानशीन न हुआ तो उसकी उम्र काट दी जायेगी और वह क़यामत के दिन मेरे पास रुस्याह होकर आएगा। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६२१)

(१७) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम लोग किसी के वास्ते खड़े न हो मगर हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) और उनकी औलाद के लिए खड़े रहा करो। (ख़साइसुल-कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६७)

(१८) हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझ पर और मेरे अहले-बैत पर सदका हराम कर दिया है। (ख़साइसुल-कुबरा-जिल्द दोम सफ़ा : ४३०)

(१९) हज़रत उम्मे-सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलें करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यह मस्जिद जुंबी और हाइज़ा के लिए हलाल नहीं है मगर मेरे लिए और मौला अली फ़ातिमा और उनके साहिबज़ादे हसन व हुसैन के लिए। (ख़साइसुल-कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४५२)

(२०) रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मैंने अपने रब से दुआ की कि वह अहले-बैत में से किसी को आग में दाखिल न फरमाए तो उसने मेरी यह दुआ कुबूल फरमा ली।

(सवाइके मुहर्रका सफा : ६२२)

(२१) मुहिब्बे तबरी ने एक रिवायत नकल फरमाई है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अल्लाह तआला ने तुम पर जो मेरा अज़्र मुकर्रर किया है वह मेरे अहले-बैत से मुहब्बत करना है। और मैं कल तुमसे उनके बारे में दर्याफ्त करूंगा। (सवाइके मुहर्रका सफा ७५३)

(२२) हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जो नेमतें अल्लाह तआला तुमको दे रहा है उनके बाइस उनसे मुहब्बत रखो और मुझसे खुदाए तआला की मुहब्बत की वजह से मुहब्बत रखो और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अहले-बैत से मुहब्बत रखो। (तिर्मिज़ी शरीफ-जिल्द दोम सफा : ७६८)

(२३) तबरानी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से एक रिवायत नकल फरमाई है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आखरी कलाम यह फरमाया कि मेरे अहले-बैत के मुतअल्लिक मेरे जानशीन बनो। (सवाइके मुहर्रका सफा : ५०७)

(२४) हज़रत अबू-बक्र ख़्वारज़मी के हवाले से रिवायत नकल की गयी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो आपका रुख़े अनवर इस तरह तलअतबार था जैसे चाँद का दायरा। हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस मुसरत के मुतअल्लिक पूछा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मुझे मेरे परवरदिगार की तरफ़ से बशारत दी गयी है कि मेरे चचाज़ाद भाई अली और मेरी चहेती बेटी फ़ातिमा को अल्लाह तआला ने रिश्तए जौजीयत में मुन्सलिक फरमाकर रिज़वाने खाज़िने जन्नत को हुक्म फरमाया कि वह जन्नती दरख़्त तूबा को हिलाए और उसके गिरने वाले तमाम पत्ते मुहिब्बाने अहले-बैत की तादाद के मुताबिक़ उठा लिये जाएं। फिर तूबा के नीचे नूर से फ़रिश्ते पैदा किए और वह पत्ते फ़रिशतो को दिए गए। पस जब क़यामत काइम होगी तो फ़रिश्ते तमाम मख़लूक़ात में निदा फरमाएंगे और मुहिब्बाने अहले-बैत में से कोई शख़्स भी ऐसा शख़्स न होगा जिसे वह पत्ता न दिया जाए और उस पत्ते पर मुहिब्बाने अहले-बैत के लिये जहन्नम से रिहाई के बारे में लिखा होगा। (सवाइके मुहर्रका सफा : ५८१)

(२५) तबरानी और हाकिम हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि रसूले काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अगर कोई शख्स बैतुल्लाह शरीफ के एक गोशा और मकामे इब्राहीम के दर्मियान चला जाये और नमाज पढ़े और रोजे रखे फिर वह अहले-बैत की दुशमनी पर मर जाए तो जहन्नम की आग में जाएगा।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६५)

(२६) रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अल्लाह तआला मेरे अहले-बैत पर जुल्म करने वाले, उनसे जंग करने वाले और उन्हें बुरा कहने वाले इन सब पर जन्नत हराम कर दिया है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६५—ख़साइसुल कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६६)

(२७) तबरानी ने ब्यान किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अली से फरमाया : तू और तेरे अहले-बैत और तुम्हारे चाहने वाले (मुहिब्ब) जिन्होंने मेरे सहाबा को गाली देने की बिदअत एख़तियार नहीं की वह होजे कौसर पर सैराब और सफ़ेद-रू जाहिर होंगे। और तुम्हारे दुशमन प्यासे और सर उठाए हुए आएंगे।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६६)

(२८) हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : आले मुहम्मद से एक दिन की मुहब्बत एक साल की इबादत से बेहतर है और मुझसे और मेरे अहले-बैत से मुहब्बत रखना सात ख़तरनाक मक़ाम पर फ़ायदा बरख़्श है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६७)

(२९) मुहिब्बे तबरी ने शर्फ़ुन्नुबुव्वत में हजरत अबी-सईद से बिला असनाद ब्यान किया है कि मैं और अहले-बैत जन्नत का दरख़्त हैं और उसकी शाखें दुनिया में हैं जो उनसे वाबरस्ता रहेगा वह अपने रब की तरफ़ रास्ता पाएगा।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७८०)

(३०) हजरत मौला अली रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : तुममें से सबसे ज़्यादा पुलसिरात पर साबित क़दम रहने वाला वह शख्स होगा जो मेरे अहले-बैत और मेरे असहाब की मुहब्बत में ज़्यादा मज़बूत क़वी और सख़्त होगा।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६२४)

(३१) हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : जिसने मेरे अहले-बैत को बुरा-भला कहा तो वह अल्लाह तआला और

इस्लाम से मुरतद हो गया और जिसने मेरी औलाद को तकलीफ दी उस पर अल्लाह की लानत होगी। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६५)

(३२) हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मारफ़त (पहचान) दौजख़ के अज़ाब से नजात का बाइस है और मुहब्बत रखना आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पुलसिरात से गुज़र जाने की सनद है और विलायते आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अमान है अज़ाब से।

(शिफ़ा शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६७)

(३३) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मर्वी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में सबसे पहले मेरी शफ़ाअत अपने अहले-बैत के लिये होगी।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७७८)

(३४) हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : क्यामत के रोज़ चार किस्म के आदमियों की शफ़ाअत करूंगा। एक, जो मेरी ज़ुरीयत की इज़्ज़त करेगा; दूसरे, जो उनकी ज़रूरियात को पूरा करेगा; तीसरे, जब वह किसी काम में परेशान हो जायें तो उनके उमूर को पाए तकमील तक पहुंचाने के लिए सरग़रमे अमल हो जाए; और चौथे, जो अपने दिल और जुबान से उनका चाहने वाला हो।

(मनाकिबे अहले-बैत सफ़ा : ७०—सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६२ व ५८६)

(३५) तबरानी शरीफ़ में है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरे अहले-बैत के बारे में मेरी मुहब्बत का ख़्याल रखो। इसलिए कि जों शख़्स अहले-बैत से और हमसे मुहब्बत रखते हुए अल्लाह तआला से मिलेगा तो वह हमारी शफ़ाअत से जन्नत में दाख़िल होगा। उस जात की क़सम जिसके क़बज़ए कुदरत में मेरी जान है किसी शख़्स का कोई भी नेक अमल उसको कुछ फ़ायदा न देगा जब तक कि वह हमारे हुक्क को न पहचाने और उनको अदा न करे।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६६)

(३६) वैल्मी ने ब्यान किया है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स खुदाए तआला से मुहब्बत रखता है वह कुरआन से मुहब्बत रखता है (और जो कुरआन से मुहब्बत रखता है वह मुझसे मुहब्बत रखता है।) और मुझसे मुहब्बत रखता है। वह मेरे असहाब

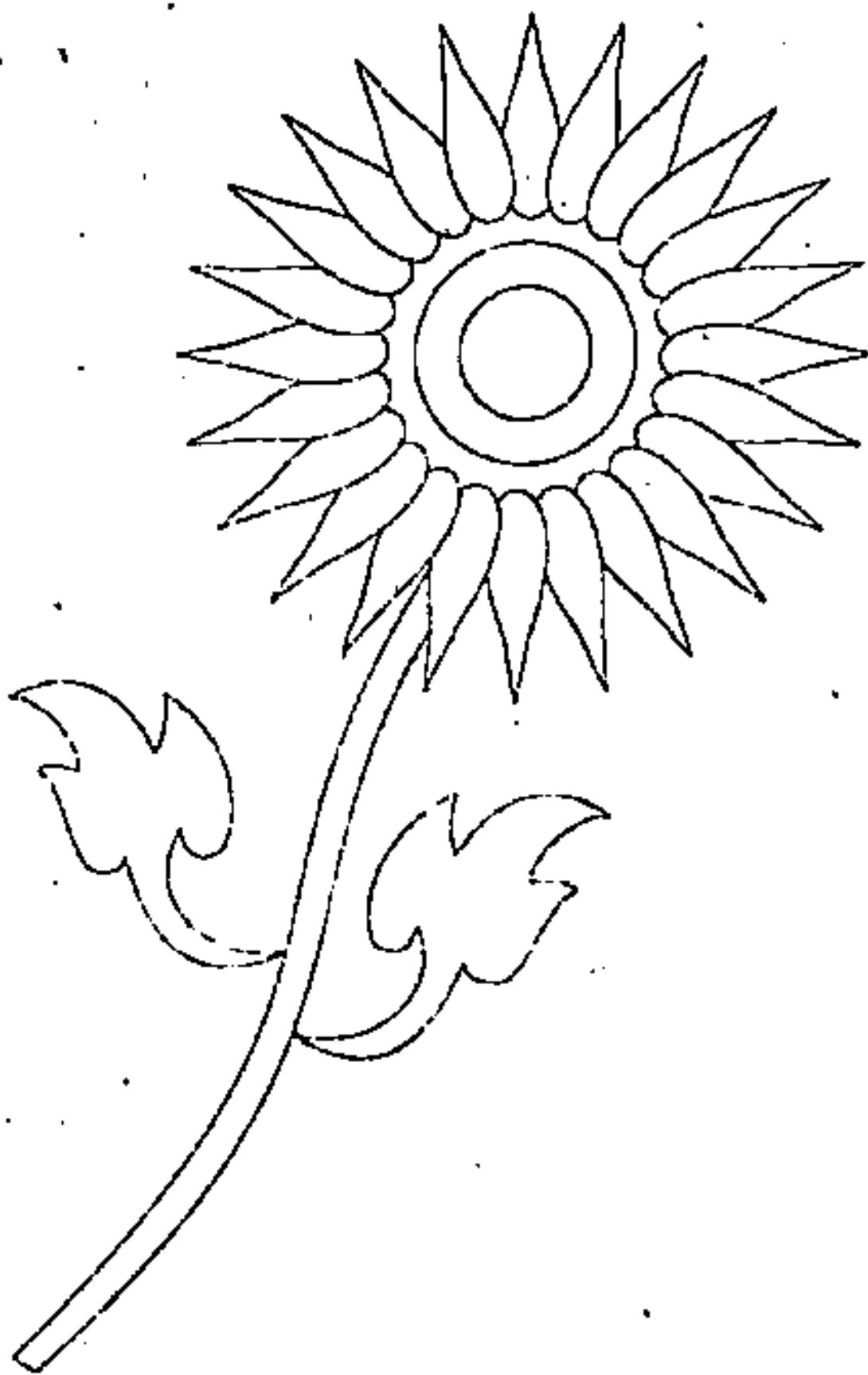
और कराबतदारों से मुहब्बत रखता है। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६७)

(३७) मुहिब्बे तबरी ने रिवायत किया है कि मोमिन और मुत्तकी अहले-बैत से मुहब्बत रखता है और मुनाफ़िक और शकी अहले-बैत से बुग़ज़ रखता है। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६७)

(३८) हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने मेरे अहले-बैत के किसी आदमी से बुग़ज़ रखा वह मेरी शफ़ाअत से महरूम रहेगा। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६४)

(३९) हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरे अहले-बैत हौजे कौसर पर आएंगे और मेरी उम्मत में जो शख्स उनसे मुहब्बत करेगा वह दो उंगलियों की तरह उनके साथ इकट्ठा होगा। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ५९६)

(४०) हाफ़िज़ इब्ने असाकिर की रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : इस्लाम की बुनियाद मेरी मुहब्बत और मेरे अहले-बैत की मुहब्बत है। (मनाकिब अहले-बैत सफ़ा : ६९)



अहले-बैत और सहाबा-ए-किराम व सुलहाए उम्मत

हुजूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे आली है कि आले मुहम्मद को पहचानना आतिशे दोजख से नजात का जरिया है। आले मुहम्मद से मुहब्बत रखना पुलसिरात से गुजारता है। आले मुहम्मद से अकीदत अजाबे इलाही से अमान है। उसके इलावा और बहुत-सी अहांदीस हैं जिसे आपने पिछले औराक में पढ़ लिया है। अल्लाह के रसूल हमारे आका व मौला हुजूर ताजदारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा अहले-बैत अतहार की ताजीम व तकरीम की तालीम अपने सहाबा किराम को देते रहे। यही वजह है कि सहाबा किराम ताबेईन तबा ताबेईन और अइम्मए एजाम रिजवानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन भी हमेशा अहले-बैत अतहार की बहुत ज्यादा ताजीम व तकरीम करते रहे और उनसे मुहब्बत व उल्फत रखते और अपने आपको उनसे वाबस्ता रखने में फरख महसूस करते रहे। चुनांचे खलीफए अब्बल हजरत सैयदना सिद्दीक अकबर रजियल्लाहु अन्हु अहले-बैते अतहार से अपनी मुहब्बत का इजहार इन अल्फाज में फरमाते हैं : वल्लजी नफसी बियदिही लकराबतु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अहब्बु इलैया अन असि लमिन करावती। खुदा की कसम ! जिसके कबजए कुदरत में मेरी जान है मुझको अपने अकरबा से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के अकरबा महबूब-तर हैं। (बुखारी शरीफ जिल्द दोम सफा : ४०५)

इन्हीं का एक और इरशाद है : उर्कुबू मुहम्मदन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फी अहले-बैतिही (बुखारी शरीफ जिल्द दोम सफा : ४१५) यानी मुहाफिजत करो (हजरत) सैयदना मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उनके अहले-बैत में। यानी इज्जत व हुर्मते मुहम्मदी उसमें है कि उनके अहले-बैत की ताजीम व तकरीम की जाये।

उनकी उल्फत जब है ऐने उल्फते खैरुल-वरा

यूं हुए महबूबे रब्बे जुलकरम हजरत हुसैन

खलीफए दोम हजरत सैयदना उमर फारूक रजियल्लाहु तआला अन्हु

भी अपनी औलाद से ज्यादा अहले-बैते अतहार से मुहब्बत फरमाया करते थे और हर मौका पर उनको फौकियत दिया करते थे। चुनांचे एक मरतबा आप ने माले गनीमत जो आपके अहदे खिलाफत में शहरे मदाइन के फतह के वक्त आया था, हजरात हसनैन करीमैन रजियल्लाहु तआला अन्हुमा को हजार-हजार दिरहम दिए और अपने फरजन्द अर्जमन्द हजरात अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु को सिर्फ पांच सौ दिरहम दिए तो हजरात अब्दुल्लाह इन्ने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा ने कहा : या अमीरुल-मोमिनीन ! मैं हुजूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में जवान था और आपके हुजूर जिहाद करता था और हजरात हसनैन उस वक्त बच्चे थे, मदीना मुनव्वरा की गलियों में खेला करते थे। आपने उनको हजार-हजार दिरहम दिये ? आपने फरमाया : बेटा पहले वह मकाम और अफजलीयत तो हासिल करो जो हसनैन को हासिल है फिर हजार दिरहम का मुतालबा करना। उनके बाप हजरात अली, माँ हजराते फातिमा, नाना हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, नानी हजरात खदीजतुल-कुबरा हैं। यह सुन कर हजरात अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु खामोश हो गये।

(तारीखे इस्लाम, बाब खुलफाए राशिदीन-१३६)

हजरात उमर बिन अब्दुल-अजीज रजियल्लाहु तआला अन्हु के पास हजरात अब्दुल्लाह बिन हुसैन रजियल्लाहु अन्हुमा किसी जरूरत से चले गए तो आपने फरमाया : अगर आइन्दा आपको कोई जरूरत पेश आए तो किसी को मेरे पास भेज दिया कीजिये या खत लिखकर बुला लिया कीजिए मैं उस वक्त निहायत शर्मशार हो जाता हूँ जब आप मेरे दरवाजे पर किसी जरूरत के लिये आ जाते हैं।

(शिफा शरीफ जिल्द दोम सफा : १०० सवाइके मुहर्रका सफा : ६०२)

इसी तरह एक मरतबा हजरात फातिमा बिनते अली आपके पास आयी तो आपने उनका बहुत एजाज व इकराम किया और फरमाया : खुदा की कसम ! ये अहले-बैत, रूए-जमीन पर तुमसे ज्यादा महबूब कोई नहीं और तुम मुझे मेरे अहल से ज्यादा महबूब हो। (सवाइके मुहर्रका सफा : ७८६)

हजरात सैयदना इमामे आजम अबू-हनीफा रजियल्लाहु अन्हु अहले-बैते नुबुव्वत की बहुत ताजीम करते थे। उनके जाहिरी और पोशीदा नादार लोगों पर खूब खर्च करके उनकी कुरबत हासिल करना चाहते थे। कहे हैं आपने उनमें से एक खुफिया नादार आदमी को बारह हजार दिरहम

भिजवाए। और अपने साथियों को भी अहले-बैत की ताज़ीम का दर्स दिया करते थे। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६०४)

हज़रत सैयदना इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अहले-बैत से बे-इन्तिहा मुहब्बत फ़रमाया करते थे। चुनांचे आपने अपनी एक तवील नज़्म में इरशाद फ़रमाया : आले नबीयुल्लाह तआला के पास पहुंचने के लिए मेरा ज़रिए और वसीला हैं। मुझे उम्मीदे कामिल है कि कल वह उनके ज़रिए मेरे आमाल-नामा को मेरे दायें हाथ में देगा। एक बार फ़रमाया : जब मैंने लोगों को देखा कि वह उन लोगों की राह पर चल रहे हैं जो हलाकत और जिहालत की समुन्दर में ग़र्क हैं तो मैंने अल्लाह का नाम लेकर नजात के सफ़ीने में सवार हो गया और वह नजात का सफ़ीना हुज़ूर खातमुन्नबीयीन सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहले-बैत हैं।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६०४-इमाम पाक सफ़ा : ६४३)

एक मरतबा अहले-बैत से अपनी जोशे मुहब्बत का इज़हार इस तरह फ़रमाया -

इन का न रिफ़ज़न हुब्बु आले मुहम्मदिन

फल यशहदिस्सक़लानि अन्नी राफ़िज़ीयुन

(तफ़सीरे कबीर अल-जुज़्जुस्साबे वल इशरून सफ़ा : १६६)

अगर आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत ही का नाम रफ़ज़ है तो दोनों ज़हान में गवाह रहें कि मैं बेशक राफ़िज़ी हूँ।

हज़रत सैयदना इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु को जब अब्बासी हाकिम जाफ़र बिन सुलैमान ने ज़द-वं-कूब किया और कोड़ों से आपके जिस्मे मुबारक को मारना शुरू किया तो आप बेहोश हो गए। जब होश आया तो आपने हाज़िरीन से फ़रमाया : मैंने उस अज़ीयत देने वाले को माफ़ कर दिया है। लोगों ने आपसे उस माफ़ी की वजह पूछी तो आपने फ़रमाया : मुझे ख़ौफ़ हुआ कि अगर इस हालत में मेरी मौत वाक़े हो जाये और हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुलाकात हो जाए तो मुझे उस वक़्त नदामत व शर्मिन्दगी न उठानी पड़े कि मेरी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक कुराबतदार को अज़ाबे दौज़ख़ का मज़ा चखना पड़े। इसके मिस्ल एक और वाक़िया मशहूर है कि जब अमीर मन्सूर ने आपको जाफ़र से किंसास दिलाना चाहा तो इमाम साहब ने फ़रमाया : खुदा की पनाह! कोड़ा लगते वक़्त जो कोड़ा मेरे जिस्म से

अलाहदा होता था मैं उसी वक़्त जाफ़र को करावते रसूल की वजह से माफ़ कर देता था। (किताबुशशिफ़ा सफ़ा : १०१-सवाइके मुहररका सफ़ा : ६०३)

हज़रत सैयदना इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा अहले-बैते अतहार की ताज़ीम व तकरीम करते थे। जब कोई औलादे अहले-बैत में से उनके पास आता तो अपनी जगह से उठ जाते और उन्हें मुक़द्दम फ़रमाया करते और खुद उनके पीछे बैठते थे।

(सवाइके मुहररका सफ़ा : ६०४)

साहबे किताबुशशिफ़ा हज़रत अल्लामा काज़ी अयाज़ बिन मूसा अल हसबी अलैहिर्रहम : फ़रमाते हैं कि उन मुक़द्दस नुफूस यानी अहले-बैत अतहार उम्महातुल-मोमिनीन और सहाबए किराम की तनकीस करना हराम है और यह तनकीस करने वाला मलऊन है। जैसा कि मिशकात शरीफ़ बाबुल-ईमान जिल्द अव्वल सफ़ा : २२ की हदीस से ज़ाहिर है।

(किताबुशशिफ़ा जिल्द दोम : ४८८)



अहले-बैत की ताजीम के चन्द वाकिआत

अहले-बैते नुबुव्वत का सहाबए किराम, ताबेईन तबा-ताबेईन और अइम्माए इज़ाम की नज़र में कितना बलन्द व बाला मक़ाम है और यह हज़रात उन नुफ़ूसे कुदसीया की कितनी ज़्यादा ताजीम व तकरीम करते थे, उनके हुक्क का कितना ख़्याल फ़रमाते थे, इसके मुतअल्लिक अभी आपने इनके अक़वाल और अफ़आल का मुताला फ़रमाया। अब हम उन्हीं हज़रात के ताजीम व तकरीम के वाकिआत जो अहले-बैत अतहार के मुतअल्लिक हैं, तहरीर कर रहे हैं। जिनसे अहले-बैत अतहार की शान रोज़े रौशन की तरह ज़ाहिर हो जायेगी।

इन्ने असाकिर अबुल-बख़्तरी से रिवायत करते हैं कि एक रोज़ हज़रत सैयदना उमर फ़ारुक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मेज़ पर खुतबा के लिए तशरीफ़ ले गये। वहां हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी मौजूद थे। आपको मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा देखकर फ़रमाया : मेरे बाबा जान के मिम्बर से उतरिए। हज़रत उमर फ़ारुक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : बेशक यह आपके बाबा जान हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही का मिम्बर है, मेरे बाप का नहीं। मगर यह तो बताओ तुम्हें किसने सिखाया है ? हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुन कर खड़े हो गए और फ़रमाया : वल्लाह! मैंने इनसे कुछ नहीं कहा है। हज़रत उमर फ़ारुक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ौरन फ़रमाया : आप सच्चे हैं। मैं आप पर बदगुमानी नहीं करता हूँ। उसके बाद हज़रत इमाम हुसैन को अपने पहलू पर बिठा लिया और फ़रमाया : ऐ इमाम हुसैन! हमने यह बुलन्दी तो तुम्हारे बाबा जान के ज़रिए ही पायी है। (तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २२४) और इसी के मिरल हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत सिद्दीके अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का वाकिआ भी मन्कूल है। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ५६२)

एक मरतबा अमीरुल-मोमिनीन हज़रत हसन मुजतबा रज़ियल्लाहु अन्हु अमीरुल-मोमिनीन हज़रत सैयदना उमर फ़ारुक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के

काशानए खिलाफत पर तशरीफ ले गए वहां देखा कि हजरत उमर फारुक रजियल्लाहु अन्हु के साहिबजादे हजरत अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु काशाना के बाहर खड़े हुए हैं और इजाजत तलब कर रहे हैं। इतिफाक से उनको हाजिर होने की इजाजत न मिली तो हजरत हसन रजियल्लाहु अन्हु यह ख्याल करके कि जब उन्होंने अपने साहिबजादे को अन्दर आने की इजाजत नहीं दी तो मुझे कब देंगे? वापस हो गये। हजरत उमर फारुक रजियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ कि हजरत हसन रजियल्लाहु अन्हु इस ख्याल से वापस चले गये हैं तो आपने फौरन उनको बुलावाया। उन्होंने आकर कहा : या अमीरुल-मोमिनीन! मैंने सोचा की जब आपने अपने साहिबजादे को इजाजत नहीं दी तो मुझे कब देंगे? तो हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया : अन त अहक्कु बिल इज्जि मिन्हु वहल अनबतश्शा' र फिरसि बादल्लाहि इल्ला अन्तुम तुम उससे ज्यादा इजाजत के मुस्तहिक हो और यह बाल सर पर अल्लाह तआला के बाद किसने उगाए सिवा तुम्हारे। यानी तुम्हारे बदौलत राहे रास्त पायी और तुम्हारी बरकत से इस मरतबे को पहुंचे। (अल-अमन वल-उला सफा : ७८)

हजरत अब्दुल्लाह बिन हसन मुसन्ना रजियल्लाहु तआला अन्हु एक मरतबा हजरत उमर बिन अब्दुल-अजीज के पास तशरीफ ले गए तो हजरत अब्दुल्लाह बिन हसन मुसन्ना नौ-उम्र थे और आपकी जुल्फें बड़ी-बड़ी थीं। हजरत उमर बिन अब्दुल-अजीज ने आपको बुलन्द जगह पर बिठाया और उनकी तरफ खुसूसी तवज्जह फरमा कर उनकी जो जरूरियात थीं उनको फौरन पूरा कर दिया। जब हजरत अब्दुल्लाह चले गये तो आप की कौम ने हजरत उमर बिन अब्दुल-अजीज को मलामत किया कि एक नौ-उम्र लड़के की आपने इतनी इज्जत फरमाई। आपने फरमाया : मुझसे सिका आदमी ने ब्यान किया है और मुझे यूँ महसूस होता है कि मैं उस हदीस को रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबाने पाक से खुद सुन रहा हूँ कि फातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है; जो उसे खुश करेगा, वह मुझे खुश करेगा। मैं जानता हूँ कि हजरत सैयदतना फातिमतुज्जुहरा रजियल्लाहु अन्हा बक़ैदे हयात होतीं तो मैंने उनके बेटे के साथ जो सुलूक किया है उससे वह यकीनन खुश होतीं। (सवाइके मुहर्रका सफा : ६०२)

ताजीम आले रसूल के मुतअल्लिक इमाम अहले सुन्नत मुजदिदेदीन व मिल्लत हजरत सैयदना आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिल बरैलवी

अलैहिर्रहमः वरिजवान का एक ईमान अफ़रोज़ और बे-मिसाल वाकिआ शहनशाहे कलम हज़रत अल्लामा अरशदुल-कादरी साहब दामत बरकातुहुम के अल्फ़ाज़ में तहरीर कर रहा हूँ। आप फ़रमाते हैं कि एक मरतबा इमामे अहले सुन्नत अपने ही शहर बरैली शरीफ़ के एक महल्ले में तशरीफ़ ले जाने वाले थे। इसलिये पालकी आपके दरवाज़े पर लगा दी गई। सैकड़ों मुशताकाने दीदार इन्तिज़ार में खड़े थे। आपने बुज़ू फ़रमाया। कपड़े जैवे तन फ़रमाए, अमामा बांधा और इन्तिहाई आलिमाना शान व शौकत के साथ बाहर तशरीफ़ लाए। चेहरा अनवर से फज़ल व तक़्वा की किरण फूट रही थी। शब-बेदार आँखों से फ़रिशतों का तक़दुस बरस रहा था। तलअते जमाल की दिलकशी से मजमा पर एक रिक़त अंगेज़ बेखुदी का आलम तारी था। गोया परवानों के हुज़ूम में एक शमा फ़रोज़ा मुस्कुरा रही थी और अन्दलीबाने शौक की अन्जुमन में एक गुले राना खिला हुआ था। बड़ी मुशकिल से सवारी तक पहुंचने का मौका मिला। पाबोसी का सिलसिला ख़त्म होने के बाद कहारों ने पालकी उठाई। आगे-पीछे, दाहिने-बायें नियाज़मन्दों की भीड़ हमराह चल रही थी। कहार पालकी लेकर थोड़ी ही दूर चले थे कि इमामे अहले सुन्नत ने आवाज़ दी : पालकी रोक दो। हुक्म के मुताबिक़ पालकी रख दी गयीं। हमराह चलने वाला मजमा भी वहीं रुक गया। इज़तिराब की हालत में बाहर तशरीफ़ लाए। कहारों को अपने करीब बुलाया और भर्राई हुई आवाज़ में दर्याफ़्त किया। आप लोगों में से कोई आले रसूल तो नहीं ? अपने जद्दे आला का वास्ता ! सच बताइए। मेरे ईमान का जौके लतीफ़ तने जाना की खुशबू महसूस कर रहा था। इस सवाल पर अचानक उनमें से एक शख्स के चेहरे का रंग फ़क़ हो गया। पेशानी पर ग़ैरत व पशीमानी की लकीरें उभर आयीं। बे-नवाई आशुफ़ता हाली और गरदिशे ऐयाम के हाथों एक पामाल ज़िन्दगी के आसार उसके अंग-अंग से आशकारा थे। काफी देर खामोश रहने के बाद नज़रें झुकाए दबी जुबान से कहा : मज़दूर से काम लिया जाता है, ज़ात-पात नहीं पूछा जाता। आह! आपने मेरे जद्दे आला का वास्ता देकर मेरी ज़िन्दगी का एक सरबस्ता राज़ फ़ाश कर दिया। समझ लीजिए कि मैं उसी चमन का एक मुरझाया हुआ फूल हूँ जिसकी खुशबू से आपकी मशामे जां मुअत्तर है। रगों का खून नहीं बदल सकता इसलिए आले रसूल होने से इंकार नहीं है। लेकिन अपनी खानमां बरबाद ज़िन्दगी को देखकर यह कहते हुए शर्म आती।

है। चन्द महीने से आपके इस शहर में आया हुआ हूँ। कोई हुनर नहीं जानता कि उसे अपना जरिये मआश बनाऊँ। पालकी उठाने वालों से राबता काइम कर लिया है। हर रोज़ सवेरे आकर उनकी झुण्ड में आकर बैठ जाता हूँ और शाम को अपने हिस्से की मजदूरी लेकर अपने बाल-बच्चों में लौट जाता हूँ।

अभी उसकी बात तमाम भी न होने पायी थी कि लोगों ने पहली बार तारीख का यह हैरत-अंगेज़ मन्ज़र देखा कि आलमे इस्लाम के एक मुक़्तदर इमाम की दस्तार उसके कदमों पर रखी हुई है और वह बरस्ते हुए आंसुओं के साथ फूट-फूट कर इल्तिजा कर रहा था।

मुअज़ज़ शहज़ादे मेरी गुस्ताखी माफ़ कर दो। लाइल्मी में यह ख़ता सरज़द हो गयी है। हाय ग़ज़ब हो गया! जिनके कफ़श-पा का ताज मेरे सर का सबसे बड़ा एजाज़ है उनके कांधे पर मैंने सवारी की। क्यामत के दिन अगर कहीं सरकार ने पूछ लिया कि अहमद रज़ा! क्या मेरे फ़रज़न्दों का दोशे नाज़नीन इसीलिए था कि वह तेरी सवारी का बोझ उठाएं तो मैं क्या जवाब दूंगा। उस वक़्त भरे मैदाने हश्र में मेरे नामूसे इश्क़ की कितनी बड़ी रुस्वाई होगी ?

आह! इस हौलनाक तसव्वर से कलेजा शक़ हुआ जा रहा है। देखने वालों का ब्यान है कि जिस तरह एक आशिक़ दिलगीर रूठे हुए महबूब को मनाता है बिल्कुल उंसी अन्दाज़ में वक़्त का एक अजीमुल-मर्तबत इमाम उसकी मिन्नत व समाजत करता रहा और लोग फटी आँखों से इश्क़ की नाज़-बरदारियों का यह रिक्कत-अंगेज़ तमाशा देखते रहे। यहां तक कि कई बार जुबान से माफ़ कर देने का इकरार करा लेने के बाद इमाम अहले सुन्नत ने फिर अपनी इल्तिजाए शौक पेश की। राहे इश्क़ में ख़ूने जिगर से ज़्यादा वजाहत व नामूस की कुरबानी अज़ीज़ है। इसलिए लाशुऊरी की इस तकसीर का कफ़ारा जब ही अदा होगा कि अब तुम पालकी में बैठो और मैं पालकी उठाऊँ। इस इल्तिजा पर जज़्बात के तलातुम से लोगों के दिल दहल गए। वुफूरे अस्र से फ़िज़ा में चीखें बुलन्द हो गयीं। हजार इन्कार के बावजूद आखिर सैयदज़ादा को इश्क़े जुनूखेज़ की ज़िद पूरी करनी पड़ी।

आह! वह मन्ज़र कितना रिक्कत-अंगेज़ और दिलगुदाज़ था जब अहले सुन्नत का जलीलुल-क़द्र इमाम कहारों की क़तार से लग कर अपने

इल्म व फज़ल जुब्बा व दरस्तार अपनी आलमगीर शोहरत का सारा एजाज़ खुशनूदी-ए-हबीब के लिए एक गुमनाम मजदूर के कदमों पर निसार कर रहा था। शौकते इश्क का यह ईमान अफ़रोज़ नज़ारा देखकर पत्थरों के दिल पिघल गए; कदूरतों का गुबार छट गया; गफ़लतों की आँख खुल गयी और दुश्मनों को भी मान लेना पड़ा कि आले रसूल के साथ जिसके दिल अकीदत व इख़लास का यह आलम है खुद रसूल के साथ उसकी वाबस्तगी का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है ? अहले इन्साफ़ को इस हकीकत के एतराफ़ में अब कोई तअम्मुल नहीं हो सकता कि नज्द से लेकर सहारनपुर तक रसूल के गुस्ताखों के खिलाफ़ अहमद रज़ा की बरहमी कतअन हक़ बजानिब है। सहाराए इश्क के इस रूटे हुए दीवानों को अब कोई नहीं मना सकता। वफ़ा पेश दिल का यह ग़ैज़ ईमान का बख़्शा हुआ है, नफ़सानी हैजान की पैदावार नहीं।

है उन के इत्र बूए गरीबां से मस्त गुल
गुल से चमन, चमन से सबा और सबा से हम



लफ़्ज़ 'सैयद' की तशरीह और फ़ज़ाइल

सैयद के लुग्वी माना हैं — इमाम, पेशवा और सरदार।

अल्लाह तबारक व तआला हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ सूरह आले इमरान में इरशाद फ़रमाता है : अन्नल्लाह युबशिशरु क बियह्या मुसद्दिक़म बिकलिमतिम मिनल्लाहि व सैयिदौ व हंसूरौ व नबीयम मिनरसालिहीन।

हुजुरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद को आज हमारे यहाँ 'सैयद' कहते हैं। वह यहीं से लिया गया है। सैयद के मुतअल्लिक़ बाज़ का कौल यह है कि सैयद वह है कि जिस का गुस्सा उसकी अक्ल पर ग़ालिब न हो। बाज़ ने फ़रमाया : सैयद वह है जो ख़ैर व बरकात में दूसरों से बढ़कर हो।

हुजुरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने फ़रज़न्द हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया इन्नबनी हा ज़ सैयिदुन। मेरा यह बेटा सैयद है। इसी तरह दूसरी रिवायत में हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन के मुतअल्लिक़ फ़रमाया : अल ह स नु वल-हुसैनु सैइदन शबाबि अहल्लि जन्नः यानी हसन और हुसैन जन्नती नौजवान के सरदार हैं। इन्हीं अहादीसे करीमा के पेशे नज़र हुजूर अलैहिस्सलाम की औलाद को लफ़्जे सैयद से पुकारा जाने लगा। दूसरे इसलिए कि सैयद के माना सरदार के हैं और हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लक़ब है सैयदुल-मुर्सलीन। यह हज़रात उनकी औलाद से हैं तो रसूलों के सरदार की औलाद भी मुसलमानों की सरदार कहलाती है। हुजूर नबियों के सरदार, हज़रत अली शेर ख़ुदा वलीयों के सरदार, हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा मुसलमान बीवियों की सरदार और हज़रात हसनैन करीमैन जन्नत के जवानों और शहीदों के सरदार।

हज़रत अली शेर ख़ुदा की वह औलाद जो हज़रत ख़ातूने जन्नत

फातिमतुज्जोहरा रजियल्लाहु अन्हा से है उसे 'सैयद' कहते हैं। और हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु की वह औलाद जो दूसरी बीवियों के बतन से है उसे 'अलवी' कहते हैं, सैयद नहीं कहते। जैसे मुहम्मद बिन हनफिया वगैरहुम।

सैयद वह होगा जिसका बाप सैयद होगा। अगर माँ सैदानी है और बाप गैर-सैयद है तो सैयद नहीं। क्योंकि नसब बाप से होता है, माँ से नहीं। और अगर बाप सैयद है, माँ गैर-सैयद तो वह सैयद है। और अगर माँ-बाप दोनों सैयद हैं तो वह नजीबुत्तरफैन सैयद है। जैसे हुजूर गौसुस्सकलैन रजियल्लाहु अन्हु के वालिद हसनी सैयद हैं और वालिदा हुसैनी सैयद हैं। फी-जमाना हसनी सैयद कम और हुसैनी सैयद ज्यादा हैं। मगर दोनों वाजिबुत्ताजीम हैं।

नोट : फी-जमाना बहुत से अहले इल्म मुसलमान मोमिन अपने उलमाए किराम और पीराने एजाम को सैयदना के नाम से याद करते हैं हालाँकि वह सैयद नहीं होते। तो उसका माना सरदार या पेशवा या इमाम के करना चाहिए यानी उससे मुराद हमारे सरदार या हमारे पेशवा या हमारे इमाम होते हैं। जैसे सैयदना आला हजरत या सैयदना हुजूर मुफ्तीए आजम हिन्द वगैरह।

फी-जमाना नकली सैयद बहुत बन गए हैं कि सैयद नहीं मगर अपने आप को सैयद कहलाते हैं। यह सख्त हराम और शदीद तरीन जुर्म है। हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम का इरशादे आली है : मनिद्दा इला गैरि अबीहि फ़अलैहि लानतुल्लाहि वल मलाइ क ति वन्नासे अजमईन। ला युक्बिलुल्लाहु मिन्हु यौमल क्यामति सरफौ वला अदला। (फ़तावा रजवीया जिल्द पन्जुम सफ़ा : ६६७) यानी जो अपने बाप के सिवा दूसरे की तरफ़ अपने आपको मन्सूब करे उस पर खुदा और सब फ़रिश्तों और आदमियों की लानत है। अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसका न फ़र्ज कुबूल करेगा और न नफ़ल।

सैयदजादों के फ़ज़ाइल

(१) तकी बिन फ़हद हाफ़िज़ हाशमी मक्की ने ब्यान किया है कि मेरे पास शरीफ़ (सैयद) अकील बिन अकील आए। उन्होंने मुझसे रात का खाना तलब किया। मैंने माज़रत की और कुछ न दिया। उसी रात या

दूसरी रात को ख्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़्यादा नसीब हुई तो आपने मुझसे मुंह फेर लिया। मैंने अर्ज किया : हुजूर ! मैं आपकी हदीस का खादिम हूँ। आप मुझसे क्यों एराज़ फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया : मैं तुझसे क्यों एराज़ न करूँ। मेरा बच्चा तुझसे रात का खाना तलब करता है और तू उसे खाना नहीं देता। वह कहते हैं सुबह हुई तो मैंने उस शरीफ़ सैयद साहब के पास जाकर माज़रत की और जो हाज़िर था वह दे दिया और उनसे हुसन सुलूक भी किया। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ८०६)

(२) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मुबारक रहमतुल्लाह अलैहि एक बड़े मजमा के साथ मस्जिद से निकले तो एक सैयदज़ादे ने कहा : ऐ अब्दुल्लाह! यह कैसा मजमा है? देखे मैं फ़रज़न्दे रसूल हूँ। और तेरा बाप तो ऐसा न था। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मुबारक ने ज़वाब दिया : मैं वह काम करता हूँ जो तुम्हारे नाना जान ने किया था और तुम नहीं करते। और यह भी कहा कि बेशक तुम सैयद हो और तुम्हारे वालिद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और मेरा वालिद ऐसा न था। मगर तुम्हारे वालिद से इल्म की मीरास बाकी रही। मैंने तुम्हारे वालिद की मीरास ली। तुम इज़्ज़त न पा सके।

उसी रात ख्वाब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि चेहरा अनवर आपका मुतगय्यर है। अर्ज किया : या रसूलुल्लाह ! यह रंजिश क्यों है? फ़रमाया : तुमने मेरे एक बेटे पर नुक्ताचीनी की है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक जागे और उस सैयदज़ादे की तलाश में निकले ताकि उससे माफ़ी तलब करें। इधर उस सैयदज़ादे ने भी उसी रात ख्वाब में हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा तो हुजूर ने उससे यह फ़रमाया : कि बेटा ! अगर अच्छा होता तो वह तुम्हें क्यों ऐसा कलिमा कहता। वह सैयदज़ादे भी जागे और अब्दुल्लाह बिन मुबारक की तलाश में निकले। चुनांचे दोनों की मुलाकात हो गयी और दोनों ने अपने-अपने ख्वाब सुनाकर एक दूसरे से माज़रत तलब कर ली।

(सच्ची हिकायात-हिस्सा अब्वल सफ़ा : ६३)

(३) हुजूर मुफ़तीए आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमः आले रसूल की ताज़ीम व तकरीम के मुतअल्लिक इशार्द फ़रमाते हैं कि सैयद से जब तक कुफ़्र न सादिर हो वह वाजिबुत्ताज़ीम है। यह इसलिए है कि उनका गुनाह बख़्शा जाएगा। अल्लाह तआला उनकी गलतियों से दरगुज़र फ़रमाएगा। उन्हें मौत से पहले तौबा की तौफीक अता

फरमा देगा जैसा कि आयते ततहीर से ज़ाहिर है।

इसी तरह अहले नुबुव्वत के फ़ासिक की इज़्ज़त उनके फ़िस्क और बे-अमली की वजह से नहीं की जाती है बल्कि उनके मुबारक निरयत, जो उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हासिल है, उसकी विना पर की जाती है। इसलिए उनका फ़ासिक होना उन्हें अहले-बैते नुबुव्वत से खारिज नहीं कर देगा।

हज़रत अबू-मुहम्मद फ़ास रहमतुल्लाह अलैहि मदीना मनव्वरा के बाज़ हुसैनी सैयदों से उनके फ़िस्क की वजह से बुग़ज़ व इनाद रखते थे। तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में उनको फ़रमाया : ऐ अबू-मुहम्मद फ़ास! क्या बात है मेरी औलाद से बुग़ज़ रखते हो। उन्होंने कहा : या रसूलुल्लाह ! वह आपकी सुन्नत के खिलाफ़ करते हैं। इसलिये मैं उनसे मुहब्बत नहीं करता। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या यह फ़िक्ही मसअला नहीं कि नाफ़रमान औलाद नसब से वांबस्ता रहती है? मैंने अर्ज किया हां फ़रमाया : यह नाफ़रमान औलाद है। हज़रत अबू-मुहम्मद फ़ासी फ़रमाते हैं कि जब मैं बेदार हुआ तो मेरे दिल से उनकी अदावत दूर हो चुकी थी। फिर तो मैं उनमें से जिससे भी मिलता उनकी ख़ूब ताज़ीम व तकरीम करता।

(ख़ुतबाते मुहरिम सफ़ा : २५०)

सैयद हज़रात रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस फ़रमाने आली को अपने मद्दे नज़र रखें कि सुन्नत के खिलाफ़ अमल करने वाले को आपने अपनी नाफ़रमान औलाद फ़रमाया है। जबकि आम वालिदैन की नाफ़रमानी गुनाह कबीरा है तो सादाते किराम अपने जद्दे आला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी करें तो क्या हाल होगा ?

इसलिए बाज़ मुहक्किनीन फ़रमाते हैं कि खुदा-न-खास्ता अगर किसी सैयद से जिना, शराब-खोरी, या चोरी जैसा जुर्म सरज़द हो जाए और उस पर हद्द जारी करने का मौका आए तो यह समझना चाहिए कि शहज़ादे के बदन पर धूल लग गयी है उसे साफ़ कर रहा हूँ।

अल्लाह तआला हमें अहले-बैत नुबुव्वत की ताज़ीम व तकरीम की तौफीक अता फ़रमाए। जिन्दा रहें तो उनकी मुहब्बत में और इस दुनिया से जाएं तो उनकी मुहब्बत में इंतिकाल हो। आमीन।



फ़ज़ाइल सहाबा-ए-किराम

कुरआन व हदीस की रौशनी में

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
असहाबी कन्नुजूमे, फ़बिऐइहिम इक़तदैतुम इहतदैतुम
(मिशकात)

मेरे सहाबा तारों की तरह हैं तो तुम उनमें से
जिसकी पैरवी करोगे हिदायत पाओगे।

सहाबी किसे कहते हैं?

सहाबी वह खुशानसीब मोमिन हैं जिन्होंने ईमान व होश की हालत में हुजूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक नज़र देखा; या उन्हें हुजूर की सोहबत नसीब हुई हो फिर उनको ईमान पर खात्मा भी नसीब हुआ हो। लिहाज़ा हज़रत इब्राहीम व तैयब व ताहिर फ़र्जन्दाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, जो बचपन ही में वफ़ात पा गए, सहाबी नहीं। क्योंकि उन्होंने शीरख्वारगी में हुजूर को देखा जबकि होश नहीं होता। हज़रत सैयदना अबदुल्लाह इब्ने मकतूम नाबीना सहाबी हैं। क्योंकि वह बुजुर्ग अगरचे नाबीना होने की वजह से हुजूर को देख न सके मगर उस सोहबत में हाज़िर तो हुए।

जो लोग हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मुरतद होकर मरे। जैसे मुसैलमा कज़्ज़ाब पर ईमान ले आने वाले। वह सहाबी नहीं। क्योंकि सहाबियत में ईमान पर खात्मा होने की शर्त है। अलबत्ता वह लोग जो मुरतद होकर फिर ईमान ले आए जैसे अशअस बिन कैस या ज़माना सिद्दीकी में ज़कात के मुन्किर जो बाद में ताइब हो गए, वह सहाबी हैं। (मिर्आतुल-मनाज़ीह सफ़ा : ३३४, अमीर मुआविया सफ़ा ११)

मज़हबे इस्लाम में सहाबियत सबसे बड़ा दर्जा है। पैग़म्बर के बाद सहाबी ही आला रुत्बे वाले हैं। तमाम दुनिया के औलिया, अक़ताब व अबदाल, ग़ौस — सहाबी के गर्द को भी नहीं पहुँच सकते। क्यों न हो? सहाबी सोहबत याफ़तए हुजूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है।

सहाबए किराम का मामला दुनिया के आम अफ़राद की तरह नहीं है कि उनके मक़ाम व फ़ज़ाइल का फ़ैसला किसी तारीख़ और उसके ब्यान करदा हालात के ताबे किया जाए जैसा कि कुछ मुनाफ़िक़ और इब्ने-यज़ीद इमाम आली मक़ाम और हज़रत सिद्दीके अक़बर व हज़रत उमर फ़ारुक़ रज़ियल्लाहु अन्हुम के मुतअल्लिक़ बक़वास बक़ते हैं। बल्कि सहाबए किराम एक ऐसे मुक़दस ग़िरोह का नाम है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तमाम उम्मत के दर्मियान अल्लाह तआला का अता किया हुआ एक वास्ता है। इस वास्ते के बग़ैर न उम्मत को क़ुरआने करीम हाथ

आ सकता है और ना ही हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पाक और आपकी तालीमात का इल्म हो सकता है। और न ही कुरआने करीम की उन आयात का जो मुजमल हैं जिनका ब्यान हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पाक पर छोड़ा गया है। तो ऐसे गिरोह के फज़ाइल कुरआने करीम और अहादीसे करीमा ही से मिल सकते हैं और उनके मुतअल्लिक हुजूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो ब्यान फ़रमाया है इसकी हैसियत हर्फ़ आखिर की है। तो अगर ऐसे मुक़द्दस गिरोह के मक़ाम को कोई मुनाफ़िक या यज़ीदी तारीख़ी किताबों से ब्यान करके उनकी शान में 'गुस्ताख़ियां' करे तो उससे बड़ा ज़ालिम और एहसान फ़रामोश कौन हो सकता है ?

सहाबए किराम हुजूर सैयदुल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िन्दगी के साथी, आपकी तालीमात को तमाम दुनिया में फैलाने वाले और अपने अहल व अयाल और खुद अपनी जान से ज़्यादा हुजूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चाहने वाले और आपके एक इशारे पर अपनी जान व माल कुरबान कर देने वाले हैं। उनकी सीरत हुजूर सैयद आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत का एक जुज़' ला युनफक है। इसलिये आपका इरशादे गिरामी है : असहाबी कन्नुजूम फ़बिऐइहिम इक़तदैतुम इहतदैतुम । (मिअ्तुल-मनाज़ीह सफ़ा:३४५)

यानी मेरे सहाबा तारों की तरह हैं तो तुम उनमें से जिसकी पैरवी करोगे हिदायत पाओगे।

एक और हदीसे पाक में इरशाद फ़रमाया : फ़अलैकुम बिसुन्नती व सुन्नतिल-खुलफ़ाईराशिदीन अल-महदिईन तमरसकू बिहा (अशअतुल लम्आत व इब्ने-माजा जिल्द अब्वल सफ़ा : ४३) यानी अपने ऊपर मेरी सुन्नत और मेरे खुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम कर लो। इसलिए यह मुक़द्दस गिरोह आम लोगों की तरह सिर्फ़ कुतुबे तवारीख़ से नहीं पहचाने जाएंगे बल्कि आयाते कुरआनिया व अहादीसे करीमा से पहचाने जाएंगे।

इसलिये हम सबसे पहले सहाबए किराम कुरआन की रौशनी में पेश करेंगे। बादहू उनके फ़ज़ाइल, जो सही अहादीसे करीमा से साबित हैं, पेश करने की सआदत हासिल करेंगे।

सहाबा-ए-किराम और कुरआने हकीम

सहाबए किराम के फ़ज़ाइल में कसरत से आयाते कुरानिया वारिद हुई हैं। यह आयात दो किस्म की हैं। एक तो वह जो किसी खास सहाबी के हक़ में नाज़िल हुई हैं। जैसे हज़रत सिदीक़ अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल में चार आयात। हज़रत अली मुर्तज़ा व हसनैन करीमैन व फ़ातिमतुज्जुहरा और हज़रत फ़िज़्ज़ा के फ़ज़ाइल में सूरह दहर की १५ आयात, हुजूर अलैहिस्सलाम की अज़वाजे मुतहहिरात के फ़ज़ाइल में सूरह अहज़ाब की आठ आयत, हज़रत आयशा सिदीका रज़ियल्लाहु अन्हा के फ़ज़ाइल में सूरह नूर की उन्नीस आयत वग़ैरह। और दूसरी किस्म की वह आयात जो आम सहाबए किराम के फ़ज़ाइल में वारिद हुई हैं, वह भी बहुत हैं। हम बतौरे इख़्तिसार कुछ आयतें पेश करेंगे जिनसे नाज़िरीन अपने रब का फ़रमान देखेंगे और ग़ौर करेंगे कि रब्बे करीम ने किस शान से सहाबा किराम के तक्वा, तहारत, ईमान, दियानत, सिद्क़, अमानत और अदालत का एलान फ़रमाया है। इरशादे खुदावन्दी है :

(१) वल्लज़ी न म अ हू अशिदाउ अलल-कुफ़ारि रु ह मा उ बै नहुम तराहुम रुक्कअन सुज्जदन। (सूरह फ़तह—प—२६)

और उनके साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल। तू उन्हें देखेगा रुकू करते, सज्दे में गिरते हुए। (कन्ज़ुल—ईमान सफ़ा : ७४४)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला सहाबए किराम की इब्रादत, उनके रुकू और सज्दे और उनका आपस में एक दूसरे पर मेहरबान होना ब्यान फ़रमा रहा है। तो फिर कैसे हो सकता है कि वह आपस में एक दूसरे के दुशमन हों। सहाबए किराम की वह तमाम जंगें चाहे वह जंगें जमल हो या जंगें सिफ़फ़ीन — यह सब अल्लाह तआला के लिए थीं। उनमें से बाज़ को ग़लतफ़हमी हुई थी, बाज़ बिल्कुल हक़ पर थे। मगर जिनसे ग़लती हुई वह इजतिहादी थी जो शरअन जुर्म नहीं। उसका खुला हुआ सबूत उन

उमूर से मिलता है कि अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा को जंगे जमल में शिकरत दी। और जब हज़रते आइशा का ऊँट जिस पर आप सवार थी, गिरा दिया गया तो उन्हें गिरफ़्तार न किया गया बल्कि निहायत एहताराम व इज़्ज़त के साथ वालिदए मुहतरम का अदब फ़रमाते हुए मदीना मुनव्वरा वापस पहुंचा दिया। न उनके माल पर कब्ज़ा फ़रमाया और न उनके किसी सिपाही पर कोई सख़्ती फ़रमाई। जब ख़्वारिज ने आप पर एतराज़ किया कि आपने दुश्मन पर कब्ज़ा पाकर उसे क्यों छोड़ दिया? तो आप ने जवाब दिया हज़रत आइशा सिद्दीका बहुक्मे कुरआन हमारी माँ हैं। रब फ़रमाता है व अज़वाजुहू उम्महातुहुम नबी की बीवियां मुस्लमानों की माँ हैं। और माँ कुरआनी हुक्म से बेटे पर हराम है। कुरआन पाक में है हुर्मत अलैकुम उम्महातुकुम तुम पर तुम्हारी माँएं हराम की गई। अगर तुम हज़रते आइशा को माँ नहीं मानते तो काफ़िर और अगर उन्हें माँ जान कर उनको लौंडी बना कर रखना जायज़ मानते तो काफ़िर। (सवाइके मुहर्रका-सफ़ा : ७१५)

(ब) हज़रत अली और हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दरमियान जो जंग हुई उसे जंगे सिफ़्फ़ीन कहते हैं। यह जंग हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के खून के किंसास के लिए थी। लेकिन उसमें हज़रत अमीर मुआविया को ग़लतफ़हमी हुई जिससे ऐसी ख़तरनाक जंग का मामला हो गया। लेकिन जब सुलह सफ़ाई हो गई और हज़रत अली के भाई हज़रत अक़ील अमीर मुआविया के पास गए तो आपने उनका बहुत अदब व एहताराम किया और सालाना एक लाख का वज़ीफ़ा मुक़रर फ़रमा दिया। इसी तरह हज़रत अमीर मुआविया के दरबार में एक शाइर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ में चन्द क़सीदे पढ़े तो आप बहुत खुश हुए। और शाइर को एक हज़ार अशरफ़ी इनाम में दिया। किसी ने पूछा कि ऐ अमीर! जब आप हज़रत अली के ऐसे मोतकिद हैं तो आपने उनसे जंग क्यों फ़रमाई? आपने फ़रमाया अलमलिकु अक़ीम। यह मज़हबी जंग नहीं, मुल्की मामलात की जंग है। यानी खूने हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की। (हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र। सफ़ा : १७)

तबरांनी ने एक सही रिवायत ब्यान फ़रमाई कि किसी ने हज़रत अली कर्मुल्लाह वज्हुल-करीम से जंगे सिफ़्फ़ीन के ज़माना में अमीर मुआविया के मुतअल्लिक दर्याफ़्त किया तो आपने फ़रमाया क़तलाना व क़तला मुआविया फ़िल-जन्नः हमारे और मुआविया के मक़तूलीन सब

जन्मती हैं। नीज़ हज़रत सैयदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमीर मुआविया के मुतअल्लिक इरशाद फ़रमाया इख़्वांनना बग़वु अलैना यह लोग हमारे भाई हैं, हमसे बगावत कर बैठे।

(‘हज़रत अमीर मुआविया एक नज़र में’। सफ़ा : ४३)

सहाबए किराम की आपसी जो लगज़िशें हुई हैं उनके मुतअल्लिक हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि मेरे सहाबा से जो लगज़िश होगी उनके उन साबिका आमाल की बिना पर जो मेरे साथ उन्होंने किए होंगे। अल्लाह तआला बख़्श देगा उस लगज़िश पर। जब एक कौम मेरे बाद अमल करेगी तो अल्लाह तआला उनको मुंह के बल जहन्नम में डाल देगा। (ख़साइसुल कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६८)

सहाबए किराम के आपसी मुशाजिरात के बारे में सैयदना गौसे आजम दरस्तगीर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी किताब गुनीयतुत्तालिबीन सफ़ा : १६५ पर इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रत अली कर्रमुल्लाहु वज्हह, हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर, हज़रत आइशा सिद्दीका और हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के दरमियान जो जंग हुई उसके बारे में हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु अन्हु ने तशरीह फ़रमाई है कि उसमें और सहाबा की तमाम जंगों में बहस करने से बाज़ रहना चाहिए। क्योंकि अल्लाह तआला उनके तमाम कदूरतों को क़्यामत के दिन दूर फ़रमा देगा। हज़रत अली उन सहाबा से जंग करने में हक़ पर थे और जो उनकी इताअत और फ़रमांबरदारी से खारिज हुआ और उनके मुकाबिल जंग आजमा हुआ उसने इमामे बरहक़ से बगावत की। लिहाज़ा उससे जंग जाइज़ हुई। जिन बुजुर्गों ने हज़रत अली मुर्तज़ा से जंग की जैसे हज़रत तलहा, जुबैर, अमीर मुआविया — उन्होंने हज़रत उस्मान ग़नी के खून के बदले का मुतालबा किया जो कि ख़लीफ़ए बरहक़ और मज़लूम होकर शहीद किए गए। उस्मान के कातिलैन हज़रत अली के फ़ौज में शामिल थे। लिहाज़ा उनमें से हर एक सही तावील की तरफ़ गए।

(‘अमीर मुआविया पर एक नज़र’ सफ़ा : ६५)

और उसी गुनीयतुत्तालिबीन के सफ़ा : १६७ में अहले सुन्नत का अक्कीदा यूं ब्यान फ़रमाते हैं कि सारे अहले सुन्नत उस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सहाबए किराम के जंगों में बहस से बाज़ रहा जाए और उन्हें बुरा कहने से परहेज़ किया जाए। उनके फ़जाइल और ख़ूबियां ज़ाहिर की जाएं और उन बुजुर्गों

का मामला रब तआला के सुपुर्द किया जाए। जैसे वह इखितलाफात हजरत अली और हजरत आइशा, मुआविया, तलहा व जुवैर रजियल्ला अन्हुम अजमईन में बाँके हुए। हमारे इमामे आजम अबू-हनीफा रजियल्ला अन्हु का कौल जिसे मुल्ला अली कारी ने फिक्हः अकबर सफा : ८५ में नकल फरमाया है कि फतवल्लाहुम जमीऔं वला नज़कुरुरसहाब त इल्ला बिखैरिन हम अहले-सुन्नत तमाम सहाबा से मुहब्बत करते हैं और उन्हें भलाई ही से याद करते हैं।

मुहतरम कारिईन! आपने हजरत सैयदना गौसे पाक और हजरत सैयदना इमामे आजम अबू-हनीफा रजियल्लाहु अन्हुमा के अकवाल पढ़ लिए। अब अगर आप बाकई उन बुर्जुगों के मानने वाले हैं और सच्चे पक्के सुन्नी हन्फी हैं तो सहाबए किराम की आपसी जंगों के बारे में बहस नहीं करेंगे। इस मामले को अल्लाह तआला के सुपुर्द करके खुदा व रसूल की खुशनूदी के मुस्तहिक बनेंगे।

आयते करीमा वल्लज़ी न म अ हू अशिदाऊ अलल कुपफ़ार से हजरत सैयदना इमाम मालिक रजियल्लाहु अन्हु ने रवाफ़िज़ के कुफ़्र का मफ़हूम अख़ज़ किया है जो आपकी एक रिवायत में ब्यान हुआ है। क्योंकि यह लोग सहाबा से बुग़ज़ रखते हैं। फ़रमाते हैं — क्योंकि सहाबा उन लोगों को गुस्सा दिलाते हैं और जिसे सहाबा गुस्सा दिलाएं वह काफ़िर है। हजरत इमाम शाफ़ई ने भी रवाफ़िज़ के कुफ़्र में आपसे इत्तिफ़ाक़ किया है। इसी तरह अइम्मा की एक जमाअत भी आपसे मुत्तफ़िक़ है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६६६)

(२) व अन्ज़महुम कलिमततक़वा व कानू अहक्क़ बिहा व अहलहा। (सूरह फ़तह-पारह २६) और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वह उसके ज़्यादा सज़ावार और उसके अहल थे।

(कन्ज़ुल-ईमान सफ़ा : ७४३)

इस आयते करीमा से मालूम हुआ कि तमाम सहाबा के लिए तक़वा व तहारत ऐसी लाज़िम है जैसे सूरज के लिए रौशनी और आग के लिए गरमी। जैसे आग ठण्डी नहीं हो सकती सूरज काला नहीं होता। ऐसे ही कोई सहाबी फ़ासिक़ या ग़ैर-आदिल नहीं हो सकता।

(३) व कज़ालि क जअलनाकुम उम्मतौं व स तल लितकूनू शुहदा अ अलन्नासि व यकूनरसूलु अलैकुम शहीदा। (सूरः बकर-प-२) और बात

तुं ही है कि हमने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफज़ल। कि तुम लोगों पर गवाह हो और यह रसूल तुम्हारे निगहबान और गवाह।

(कन्जुल-ईमान सफ़ा : ३३)

हकीकतन इससे पहली आयत और इस आयत में सहाबा को हुजूर अलैहिस्सलाम की जुबान से बिलमुशाफ़ा खिताब किया गया है। कुदरते इलाही पर गौर करो अल्लाह तआला ने उनको आदिल और नेक बनाया है। ताकि क़यामत के रोज़ बक़िया उम्मतों पर गवाह हों। अल्लाह तआला ग़ैर-आदिल और नबी करीम अलैहिस्सलाम के परदा फ़रमाने के बाद मुरतद हो जाने वालों के बारे में कैसे इस क़िस्म की गवाही दे सकता है। अल्लाह तआला उन राफ़ज़ियों को ज़लील करे और उन पर लानत करे और उनको बे यार व मददगार छोड़ दे। यह किस क़दर झूठे जाहिल और इफ़तरा परदाज़ी और बुहतान तराशी से गवाही देने वाले हैं कि सिवाए छः आदमियों के सब सहाबा रसूले करीम के बाद मुरतद हो गए।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६६२)

(४) लक़द रज़ियल्लाहु अनिल मोमिनी न इज़ युबाइऊन क तहतशजरते। (सूरतुल-फ़तह-प-२६)

बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअत करते थे। इस आयत में अल्लाह तआला सराहत के साथ उन लोगों से इज़हारे रज़ामन्दी फ़रमाया और यह कोई चौदह सौ के करीब थे। जिससे अल्लाह राज़ी हो उसकी मौत कुफ़्र पर नहीं हो सकती। यह आयत मुलहिदीन मुनकिरीने क़ुरआन के मज़ऊमात की तरदीद कर रही है। जबकि क़ुरआन पर ईमान लाने से यह बात साबित व लाज़िम होती है कि उसमें जो कुछ ब्यान है उस पर भी ईमान लाया जाए। आपको यह इल्म हो चुका है कि क़ुरआने करीम में सहाबा के ख़ैरुल-उमम, आदिल और नेक क़रार दिया है और यह कि अल्लाह उनसे राज़ी है। अब जो शख्स उनके मुतअल्लिक़ इन बातों की तसदीक़ न करे वह क़ुरआने करीम का मुक़ज़िब है और जो क़ुरआन की तकज़ीब करे जिसकी कोई तावील न हो सके तो ऐसा ग़िरोह या शख्स काफ़िर, मुन्किर, मुलहिद और दीन से खारिज है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६६२)



सहाब-ए-किराम

और फरमाने नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

फज़ाइले सहाबा के सिलसिले में कुरआने हकीम की आयाते करीमा अभी आपने पढ़ीं। अब हम फज़ाइले सहाबा के मुतअल्लिक अहादीसे करीमा पेश करने की सआदत हासिल कर रहे हैं। मुलाहिज़ा फ़रमाइए –

(१) हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ला तसुब्बू असहाबी फ़लौ अन्न न अह दकुम अन्फ़ क़ मिस ल उहुदिन ज़ ह बम मा ब ल ग़ मुद द अ ह दिहिम वला नसीफ़हू। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम-सफ़ा : ३८४)

मेरे किसी सहाबी को गाली न दो (बुरा न कहो) क्योंकि अगर तुममें का कोई उहुद (पहाड़) भर सोना ख़ैरात करे तो उनके एक मुद्द या निस्फ़ के बराबर भी सवाब को नहीं पहुंचेगा।

(२) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ला तमुस्सुन्नारु मुस्लिमन रआनी औ रआ मन रआनी। (तिर्मिज़ी-जिल्द दोम-सफ़ा : ७६०)

उस मुसलमान को आग न छुएगी जिसने मुझे देखा या मेरे देखने वाले को देखा।

(३) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह! अल्लाह! फ़ी असहाबी ला तत्तख़िजुहुम गरज़म मिम बादी फ़मन अहब्बहुम फ़बिहुब्बी अहब्बहुम वमन अब ग़ ज़हुम फ़युबगिज़नी अ ब ग़ ज़हुम वमन आज़ाहुम फ़क़द अज़ानी वमन आज़ानी फ़क़द अज़ल्लाहु वमन अज़ल्लाहु फ़यूशकु ऐंयाखुजुहू (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७६२)

यानी मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो। अल्लाह से डरो। मेरे बाद उन्हें निशाना न बनाओ। क्योंकि जिसने उनसे मुहब्बत की तो मेरी मुहब्बत की वजह से मुहब्बत की। और जिसने बुग़ज़ रखा तो मेरे बुग़ज़ की वजह से उनसे बुग़ज़ रखा। जिसने उन्हें सताया और जिसने उनको ईज़ा दी

उसने मुझे ईजा दी। और जिसने मुझे ईजा दी। उसने अल्लाह को ईजा दी। तो करीब है कि अल्लाह उसे पकड़े।

(४) हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मा मिन अं ह दिम मिन असहाबी यमूतु बिअरजिन इल्ला बु इ स काइदन औ नूरल्लहुम यौमल-क्यामतः (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७६३)

मेरा कोई सहाबी किसी ज़मीन में वफ़ात नहीं पाता मगर वह क्यामत के दिन उनका पेशवा और नूर होगा।

(ख़साइसुल-कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६८)

(५) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : इज़ा रऐतुमुल्लज़ी न यसुब्बू न असहाबी फ़कूलू लान्तुल्लाहि अला शर्रिकुम (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७६३)

यानी जब तुम ऐसे लोगों को देखो कि वह मेरे सहाबा की शान में गुस्ताखियां कर रहे हैं तो उनसे कह दो — तुम्हारी इस बुरी हरकत पर अल्लाह तआला की लानत हो।

(६) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मसलु असहाबी फ़ी उम्मती कल मिलहि फ़ित्तआमे ला युस्लिहुत्तआमु इल्ला बिलमिल्ह। (ख़साइसुल-कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६८)

मेरे सहाबी की मिसाल मेरी उम्मत में खाने में नमक की-सी है कि खाना बग़ैर नमक के दुरुस्त नहीं होता।

(७) वैल्मी ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब अल्लाह तआला मेरी उम्मत के किसी आदमी से भलाई चाहता है तो उसके दिल में मेरे सहाबा की मुहब्बत पैदा फ़रमा देता है। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ४७)

(८) हुजुरे अनवर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरे सहाबा को बुरा कहने वालों पर अल्लाह तआला और फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत है। और अल्लाह तआला उनके फ़राइज़ और नवाफ़िल को भी कुबूल नहीं फ़रमाएगा। (शिफ़ा शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४८८)

(९) मुख़बिरे सादिक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आख़िरी

जमाने में एक कौम पैदा होगी जो मेरे सहाबा को गाली देगी। तुम उनके साथ नमाज़ न पढ़ना और न उनकी नमाज़े जनाज़ा में शिरकत करना। उनसे शादी ब्याह भी न करना और न उनके पास बैठना। अगर वह बीमार हों तो उनकी इआदत न करना। नीज़ आपने फ़रमाया जो सहाबा को बुरा कहे उसको मारो। (शिफ़ा शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४८६)

नोट:- यह कौम खौजह, बोहरी, राफ़िज़ी, शीआ हैं जो हज़रत सिद्दीक़े अकबर व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा और हज़रत अमीर मुआविया व हज़रत आइशा सिद्दीका की शान में गुस्ताख़ियां और तबर्ह बाज़ी करते हैं। अल्लाह तआला उन तमाम के हक़ को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

(१०) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करे उसको क़त्ल करो। और जो शख्स मेरे सहाबा में से किसी को बुरा कहे उसको सज़ा दो। (शिफ़ा शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३८३)

(११) हज़रत उवैम बिन साइदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन्नल्लाहख़्तारनी वख़्तारली असहाबन फ़ ज़ अ ल ली मिन्हुम वु ज़ राअ व अन्सारौ व अस्हारन फ़मन सब्बहुम फ़अलैहि लान्तुल्लाहि वल मलाइकति वन्नासि अजमईन वला यक़बलुल्लाहु मिन्हु सरफ़ौ वला अदला।

(मज़ाहिरे हक़ जिल्द चहारुम सफ़ा : ८४)

बेशक अल्लाह तआला ने मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया और मेरे लिए सहाबा को मुन्तख़ब फ़रमाया। पस उनको मेरा वज़ीर और मददगार बनाया। जो उनको बुरा कहे उसपर अल्लाह तआला और फ़रिशतों और तमाम लोगों की लानत है। अल्लाह तआला उसका कोई फ़र्ज और नफ़ल कुबूल न फ़रमायेगा।



फ़ज़ाइल खुलफ़ा-ए-राशिदीन

उलमाए अहले सुन्नत व जमाअत का इस पर इजमा और इत्तिफ़ाक़ है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत सैयदना सिद्दीक़े अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ए अव्वल और बरहक़ इमाम हैं। उनके बाद हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़; फिर हज़रत सैयदना उस्मान ग़नी और उनके बाद हज़रत अली रज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन। उनके बाद अशरए मुबश़शरा, उनके बाद आम सहाबा अहले-बद्र, फिर तमाम बैअतुर्रिज़वान के सहाबा, फिर वह जिन्होंने दोनों क़िबलों की जानिब नमाज़ पढ़ी। फिर उनके बाद फ़त्हे मक्का के दिन या उसके बाद ईमान लाने वाले सहाबा अफ़ज़ल हैं। अबू मन्सूर बग़दादी ने भी लिखा है कि इसी पर उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफ़ाक़ है। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १०८ तकमीलुलईमान सफ़ा : २५३। अमीर मुआविया सफ़ा : १२। शरह फ़िक्हे अक़बर सफ़ा : १४५)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन के फ़ज़ाइल बेशुमार हैं। उन बुज़ुर्गों के नामों को रब तआला और उसके हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वह क़ुरबत हासिल है कि सुब्हानल्लाह ! ला इला ह इल्लल्लाह के हुरूफ़ बारह हैं। इसी तरह मुहम्मदरसूलुल्लाह, अबू बक्र सिद्दीक़, उमर इब्नुल ख़त्ताब, उस्मान इब्ने अफ़फ़ान, अली बिन अबी तालिब तमाम में बारह-बारह हुरूफ़ ही हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया ख़ैरुल क़ुरुनि करनी यानी तमाम ज़मानों में मेरा ज़माना ज़्यादा बेहतर है। करनी में 'काफ़' से इशारा सिद्दीक़े अक़बर की तरफ़ है। 'रे' से उमर फ़ारूक़। 'नून' से उस्मान ग़नी और 'ये' से हज़रते अली की तरफ़ इशारा है। गोया उन बुज़ुर्गों का ज़माना हुज़ूर ही का ज़माना है। इसी तरह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उम्र ६३ साल हुई। इन तमाम ख़ुलफ़ा में से हर एक की उम्र भी ६३ साल हुई। सिवाए हज़रत उस्मान ग़नी के। अल-मुख़्तसर यह कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मरातिब बहुत ही बुलन्द व बाला हैं। इसलिए हम सबसे पहले उन ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मनाक़िब में जो आयाते क़ुरआनिया नाज़िल हुई हैं, उनको तहरीर करेंगे। बादहू अहादीसे करीमा और उनके हालाते ज़िन्दगी पर भी मुख़्तसरन रौशनी डालेंगे। ❖❖

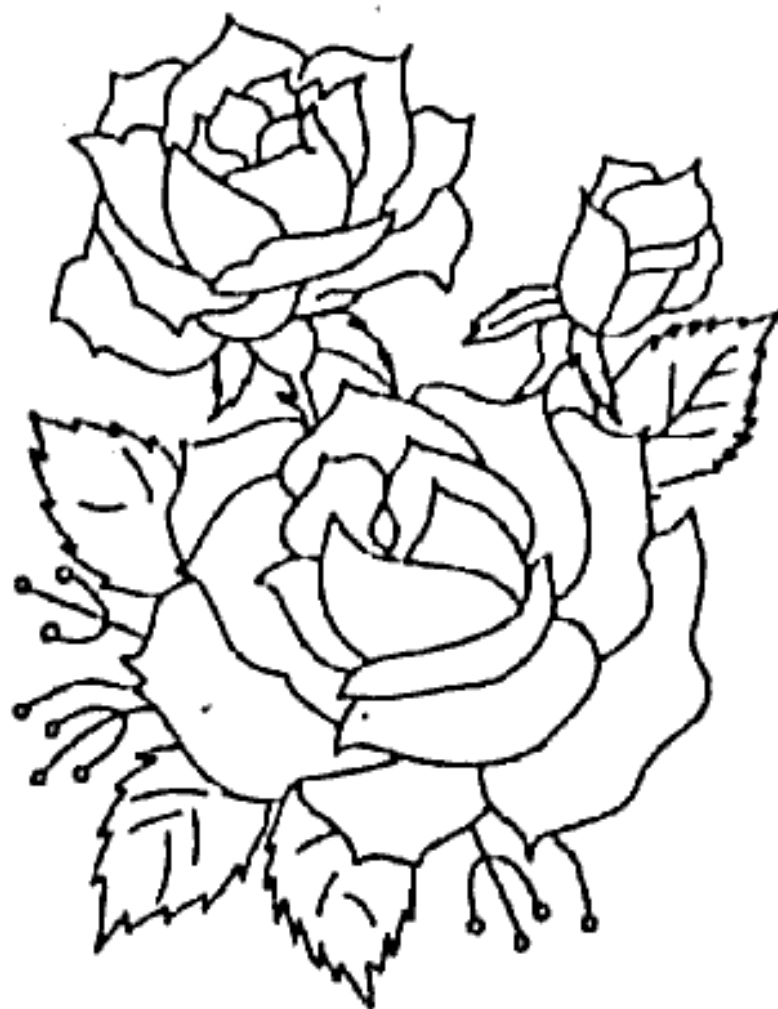
खलीफा-ए-अव्वल

अमीरुल-मोमिनीन सैय्यदना हजरत

अबू-बक्र सिद्दीक़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

सायाए मुस्तफ़ा, मायाए इस्तफ़ा
 इज्ज व नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम
 यानी उस अफ़ज़लुलख़ल्क़ बादरुसुल
 सानी-यसनैने हिजरत पे लाखों सलाम
 असदकुस्सादिकीन सैयदुल-मुत्तकीन
 चश्म व गोशे वज़ारत पे लाखों सलाम
 (आला हजरत फ़ज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु)



हजरत अबू-बक्र सिद्दीक रजियल्लाहु अन्हु। आपका नाम अब्दुल्लाह और 'अबू-बक्र' कुन्नीयत और 'सिद्दीक' व 'अतीक' आपका लकब है। आपके वालिदे गिरामी का नाम उस्मान और अबू-कहाफ़ा कुन्नीयत है। वालिदा माजिदा का नाम 'सलमा' और कुन्नीयत 'उम्मुल-खैर' है। आपका सिलसिलए नसब यह है। अब्दुल्लाह इब्ने अवी-कहाफ़ा उस्मान बिन आमिर बिन अमरू बिन काब बिन साद बिन कैइम बिन मुरह बिन काब लौवय बिन गालिबुल करशी अत्तयमी। आपका नसब मुरह बिन काब पर रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिल जाता है।

आपका लकब सिद्दीक है। उसके पाने के मुतअल्लिक तहरीर है कि मेराज की सुबह को मेराज की शानदार तसदीक की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तसदीक फ़रमाया। हजरत बिलाल को आज़ाद करने के बाद आपको 'अतीक' यानी जहन्नम से आज़ाद का लकब मिला। आपके फ़ज़ाइल आसमान के तारों और ज़मीन के ज़रों की तरह बेशुमार हैं। बाद अंबिया आप अफ़ज़लुलख़ल्क हैं। आपके इस्लाम लाने के बारे में हुजूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मैंने पहले पहल जिस शख्स को भी दावते इस्लाम दी उसने थोड़ा बहुत तअम्मुल व तवक्कुफ़ किया लेकिन अबू-बक्र कि दावते इस्लाम के बाद फ़ौरन बगैर दलील व बुरहान के मुझ पर ईमान ले आए और मेरे मुसद्दिक (तस्दीक करने वाले) बने। (शवाहिदुन्नुबुव्व: सफ़ा : २५८)

सबसे पहले आपने इस्लाम लाया। इस्लाम लाने के बाद कभी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जुदा नहीं हुए। तमाम ग़ज़वात में हुजूर के साथ रहे। सफ़ेद रंग, दराज़ क़द, दुबले बदन वाले और चौड़ी पेशानी वाले उस मर्दे मुजाहिद ने हिजरत के लिए अपने अहल व अयाल को खैर आबाद कह दिया। अपने आका व मौला हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ग़ारे सौर की तरफ़ रवाना हो गये। ग़ारे सौर और तमाम रास्ते आप की ख़िदमत में रहे। सुलह हुदैबिया में मक्का शरीफ़ में दाख़िल न होने के बाइस लोगों के दिलों में जो शुकूक पैदा हो गये थे, उनका इरतेफ़ा (दूर करना) और रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम का यह इरशादे गिरामी सुनकर "अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को दुनिया में रहने या आख़िरत कुबूल कर लेने का एख़्तियार दिया है"— आपका आह व ज़ारी करना ;

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के वक्त सहाबा किराम की तरस्कीने खातिर के लिए आपकी इस्तिफामत और खुत्वे के जरिए उनमें तरस्कीने कल्ब पैदा करना; मुस्लमानों की मसलेहत के पेशे नज़र बारे खिलाफत को कुबूल कर लेना; मुस्तदीन से जंग के लिए हज़रत उसामा बिन जैद की क्यादत में शाम की जानिब लशकर रवाना करना और उस अज़म पर साबिते क़दम रहना; सहाबा किराम को यह बसुवूत व दलाइल हक़ से आगाह करना; और मुस्तदीन की जंग में उनको अपना हमनवा बनाना। मम्लकते शाम की जानिब फौजों को रवाना करना; फिर उस लशकर की फ़तह होना — हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहम फ़ज़ाइल हैं। नीज़ हज़रत सैयदना उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने बाद ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करना यह बहुत बड़ी फ़ज़ीलत का हामिल है। आपने सबसे पहले क़ुरआन शरीफ़ को जमा फ़रमाया और किताबी शकल दी। बादहू हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो क़ुरआन शरीफ़ को किताबी शकल में जमा फ़रमाया : यह वही क़ुरआन पाक था जिसे हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने किताबी शकल दी थी।

आपके माँ-बाप, आपकी सारी औलाद और आपकी औलाद की औलाद सब सहाबी हैं। यह शर्फ़ किसी और को नसीब नहीं हुआ। आप ही ने मस्जिदे नब्वी की असल ज़मीन दस दीनार में ख़रीद कर वक्फ़ की।

(हाशिया इब्ने माजा सफ़ा : ५४)

आपकी विलादत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत व सआदत से दो साल दो माह क़बल मक्का में हुई। ६३ साल की उमर पाकर २२ जमादिल उख़रा शब मंगल सन १३ हिजरी में मग़रिब व इशा के दरमियान मदीना मनव्वरा में वफ़ात पाई। बिला फ़सल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहलू में मदफून् हुए।



हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रज़िअल्लाहु अन्हु और आयाते कुरआन

कारिईने किराम ! हज़रत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ व तौसीफ़ में कुरआने करीम की बहुत-सी आयात का नुज़ूल हुआ है। हम उनमें से चन्द आयाते करीमा लिखने की सआदत हासिल कर रहे हैं -

(१) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है इल्ला तन्सुरूहु फ़क़द न स रहुल्लाहु इज़ अख़रजहुल्लज़ी न क फ़ रू सानियसनैने इज़ हुमा फ़िल ग़ारे इज़ यकूलु लिसाहिबिही ला तहज़न। इन्नल्ला ह म अ ना फ़अन्ज़लल्लाहु सकीनतहु अलैहि व ऐयदहु बिजुनूदिल्लम तरौहा व ज अ ल कलिमतल्लज़ी न कफ़रुस्सुफ़ला व कलिमतुल्लाहि हियल उलया वल्लाहु अज़ीजुन हकीम (सूरह तौबह रूकू १२-प-१०)

तर्जुमा:- अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमाई। जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुआ। सिर्फ़ दो जान से, जब वह दोनों ग़ार में थे। जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा। बेशक। अल्लाह हमारे साथ है। तो अल्लाह ने उसपर अपना सकीनत उतारा और उन फ़ौजों से उनकी मदद की जो तुमने न देखीं। और काफ़िरों की बात नीचे डाली। अल्लाह ही का बोलबाला है। और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है। (कन्ज़ुल-ईमान सफ़ा : २८०)

तमाम मुसलमानों का इस पर इतिफ़ाक़ है कि इस आयते करीमा में साहिब से मुराद हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सकीना (सुकूने खातिर व तसल्ली) तो कभी जायल न हुआ। बस जिन पर सकीना नाज़िल हुआ वह हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। (शरह फ़िक्हे अक़बर : अज़ मुल्ला अली क़ारी सफ़ा : ८५)

बहरहाल यह आयत हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु की

तारीफ़ व तौसीफ़ में बिल्कुल वाजेह ब्यान है। आप सहाबीए रसूल हैं इस पर भी नरसे कतई है। इसीलिये हज़रत हसन बिन फज़ल रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि जो शख्स हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु की सहाबियत का इन्कार करे, वह नरसे कुरआनी के इन्कार करने के मक़दूर काफ़िर है। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : ११ व सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ३३५)

अरबी इबारत यह है मन का ल इन्ना अबा बकरिल्लम यकुन साहि व रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ हु व काफ़िरुल्लि इन्कारिही नरसुल कुरआन। (तफ़सीर कबीर अलजुज़्जुस्सादिस अशर सफ़ा : ६२)

(२) व सयुजन्नबुहल अतक़ल्लज़ी यूती मा लहू य तं ज़क्का वमा लिअ ह दिन इन्दहु मिन नेमतिन तुज्ज़ा इल्लबतिगा अ वजहि रब्बिहिल आला (सूरह वल्लैल-प : ३०)

तर्जुमा:- और बहुत उससे (जहन्नम से) दूर रखा जाएगा जो सबसे बड़ा परहेज़गार, जो अपना माल देता है कि सुथरा हो। और किसी का उस पर कुछ एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाए, सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सबसे बुलन्द है। (कन्ज़ुल-ईमान सफ़ा : ८६८)

यह आयते करीमा भी हज़रत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई। (तफ़सीरे कबीर अल-जुज़्जुल हादी वस्सलासून सफ़ा : २०५-तफ़सीरे मुरादिया सफ़ा : २३५)

साहिबे सवाइक़ मुहर्रका इस आयते करीमा की तफ़सीर में लिखते हैं कि इसमें यह तसरीह मौजूद है कि आप सारी उम्मत से ज़्यादा इतका (परहेज़गार) हैं, और इतका अल्लाह तआला के नज़दीक़ मुकर्रम होता है। जैसा कि इरशादे बारी तआला है : इन्न न अकरमकुम इन्दल्लाहि अतकाकुम यानी बेशक अल्लाह तआला के नज़दीक़ तुममें ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो तुममें ज़्यादा परहेज़गार है।

इन दोनों आयते करीमा से मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु खुदाए तआला के नज़दीक़ तमाम उम्मत से ज़्यादा मुकर्रम और इज़्ज़त वाले हैं। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : २२८)

हज़रत सदरुल-अफ़ज़िल मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहि र्रहम अपनी तफ़सीर ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान और हज़रत इमाम राज़ी तफ़सीरे कबीर में इस आयते करीमा की तफ़सीर ब्यान करते हुए लिखते हैं कि जब हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ ने हज़रत बिलाल को ज़रे कसीर देकर आज़ाद

करवा लिया तो कुप्फार को हैरत हुई और उन्होंने कहा कि हजरत सिद्दीक अकबर ने ऐसा इसलिये किया कि बिलाल का उनपर कोई एहसान है जो इतनी कसीर रकम देकर खरीदा और आजाद कर दिया। इसपर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और अल्लाह तआला ने साफ़ फ़रमा दिया कि बिलाल का कोई एहसान नहीं है बल्कि यह काम अबू-बक्र ने महज़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिए किया है।

(तफ़सीरे कबीर अलजुज़्जल हादी वस्सलासून सफ़ा : २०६)

(३) वल्लज़ी जा अ बिरिसदक़े व सदक़ बिही उलाइ क हुमुल मुत्तकून।

(सूरह जुमर-प : २४)

तर्जुमा:- और वह जो यह सच लेकर तशरीफ़ लाए और वह जिन्होंने उनकी तस्दीक़ की यही डर वाले हैं। (कन्जुल-ईमान सफ़ा : ६६८)

यह आयते करीमा भी हजरत सैयदना सिद्दीक अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत का एलान कर रही है। जैसा कि बज़्ज़ार और इब्ने असाकिर ने ब्यान किया है कि हक़ लाने वाले हजरत मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और हक़ की तस्दीक़ करने वाले आपके यारे ग़ार हजरत सैयदना सिद्दीक अकबर हैं। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : २३१)

साहिबे तफ़सीरे कबीर इमाम राज़ी अलैहिर्रहमः तफ़सीरे कबीर अल-जुज़्जस्सादिस वल इशरून सफ़ा : २७६ में इस आयते करीमा की तफ़सीर ब्यान फ़रमाते हुए लिखते हैं कि अन्नल मुराद शख़्सुं वाहिदुन फ़ल्लज़ी जा अ बिरिसदक़े मुहम्मदुन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वल्लज़ी सदक़ बिही हु व अबू-बकरिन व हाज़ल कौलु मरवीयुन अन अली इब्ने तालिबिन रज़ियल्लाहु अन्हु व जमाअतुम मिनल मुफ़स्सरीन रज़ियल्लाहु अन्हुम।

यानी इससे एक ही शख़्स मुराद है कि जा अ बिरिसदक़ से हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पाक है और वल्लज़ी सदक़ बिही से हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मुराद हैं। और यह कौल हजरत सैयदना अली इब्ने अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और दीगर मुफ़रिसरीन का है।

लिहाज़ा उन मुफ़स्सरीने किराम की तफ़ासीर से यह साबित हो गया कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हजरत सिद्दीक अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी मुत्तकी फ़रमाया है। इसीलिये

आप क़यामत तक पैदा होने वाले तमाम मुत्तकियों के सरदार और सैयदुल-मुत्तकीन हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल वरैलवी अलैहिर्रहम। इसीलिये तो फ़रमाते हैं :

असदकुस्सादिकीन सैयदुल-मुत्तकीन
चश्म व गोशे वज़ारत पे लाखों सलाम

(४) ला यस्तवी मिन्कुम मन अन्फ़ क़ मिन क़व्लिल फ़तहे व क़ातल ऊलाइ क़ आज़मु द र जतन मिनल्लज़ी न अन्फ़कू मिम्बादु व क़ातलू व कुल्लों व अदल्लाहुल हुसना। वल्लाहु बिमा तामलू न ख़बीर।

(सूरह हदीद-प : २७)

तर्जुमा: तुम में बराबर नहीं, वह जिन्होंने फ़तह मक्का से क़बल ख़र्च किया और जिहाद किया। वह मर्तबा में उनसे बड़े हैं जिन्होंने बादे फ़तह के ख़र्च किया और जिहाद किया। और उन सबसे अल्लाह जन्नत का वादा फ़रमा चुका और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

(कन्ज़ुल-ईमान सफ़ा : ७७६)

कलबी ने कहा कि यह आयत हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक़ में नाज़िल हुई। क्योंकि आप पहले शख्स हैं जो इस्लाम लाए और पहले शख्स हैं जिसने राहे खुदा में माल ख़र्च किया और रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हिमायत की। (तफ़सीरे खज़ाइनुल-इरफ़ान सफ़ा : ७७६)

साहिबे तफ़सीरे हुसैनी कादरी अपनी तफ़सीर के सफ़ा : ५०८ पर इस आयते करीमा के तहत लिखते हैं कि यह आयत हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में नाज़िल हुई है। इस वास्ते कि आप ही वह पहले शख्स हैं जो ईमान लाए और ख़र्च किया और काफ़िरों से जंग की।

इब्ने हज़म ने कहा कि तमाम सहाबा क़तई तौर पर जन्नती हैं और मज़कूर बाला आयते करीमा तिलावत फ़रमाई। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६६८)



हजरत सिद्दीक़े अकबर रज़िअल्लाहु अन्हु

और अहादीसे करीमा

अमीरुल-मोमिनीन हजरत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़जाइल व मनाकिब में कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। उनमें से चन्द पेशे ख़िदमत हैं।

(१) हजरत अबू-हुसैरा रज़ियल्लाहु अन्हु का ब्यान है कि मैंने रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मन अन्फ़ क़ ज़ौजैने मिन शैइन मिनल अशयाइ फ़ी सबीलिल्लाहि दु इय मिन अब्बाबिन यानी अल जन्न त या अब्दल्लाहे हा ज़ खैरुन फ़मन का न मिन अहलिस्सलाति दु इ य मिम बाबिल जिहादे वमन का न मिन अहलिस्सदक़ते व मन का न मिन अहलिस्सियामे दु इ य मिन बाबिस्सियामे बाबिरैयाने फ़क़ाल अबू बकरिन मा अला हाज़ल्लज़ी युदआ मिन तिल्कल अब्बाबे मिन ज़रूरतिन व क़ाल हल युदआ मिन्हा कुल्लिहा अ ह दुन या रसूलल्लाहे क़ाल नअम! व अरजू अन तकू न मिन्हुम या अबा बकरिन।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३८०)

तर्जुमा: जो अल्लाह की राह में एक चीज़ का जोड़ा खर्च करे तो अल्लाह उसे जन्नत के सब दरवाज़ों से बुलाएगा। जो मुजाहिद है उसे जिहाद वाले दरवाज़े से; जो खैरात करता है उसे खैरात वाले दरवाज़े से; और जो रोज़े रखेगा उसे रोज़ों वाले बाबुरैयान से बुलाया जाएगा। हजरत अबू-बक्र कहने लगे जो उन सारे दरवाज़ों से बुलाया जाए तो उसे ख़दशा ही किया ? फिर अर्ज गुज़ार हुए या रसूलुल्लाह! क्या कोई ऐसा भी है जिसको तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाएगा? फ़रमाया : हाँ ऐ अबू-बक्र मुझे उम्मीद है तुम ऐसे लोगों में से हो।

(२) हजरत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फ़रमाया : रसूलै अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि मा लि अ ह दिन इन्दना

यदुन इल्ला वक़द काफ़ीनाहु मा ख़ला अबा बकरिन फ़इन्न न लहू
इन्दना यदन युकाफ़ीहिल्लाहु बिहा यौमल क़्यामति वमा न फ़ अनी मालु
अ ह दिन क़त्तु मा न फ़ अनी मालु अबी-बकरिन वलौ कुन्तु मुत्तख़िज़ न
ख़लीलल लत्तख़ज़तु अबा बकरिन ख़लीलन अला व इन न साहियकुम
ख़लीलुल्लाह। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६८८)

तर्जुमा: हम पर किसी का एहसान नहीं मगर हमने उसका बदला कर
दिया सिवाए अबू-बक्र के कि हम पर उनका एहसान है कि अल्लाह उन्हें
उसका बदला क़्यामत के दिन देगा। और मुझे किसी के माल ने इतना
नफ़ा न दिया जितना अबू-बक्र के माल ने दिया। और अगर मैं किसी को
दोस्त बनाता तो अबू-बक्र को दोस्त बनाता। ख़याल रखो कि तुम्हारे साहब
अल्लाह के दोस्त हैं।

(३) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि हुज़ूर
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु
से फ़रमाया अन त साहिबी फ़िलग़ारे व अन त साहिबी अलल हौज़ तुम
मेरे ग़ारे सौर के साथी हो और हौज़ पर भी मेरे साथ रहोगे।

(तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा : ६६२)

(४) हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि मेरे
वालिद गिरामी हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर नबीए
करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये तो हुज़ूर
ने फ़रमाया अन त अतीकुन मिनन्नार यानी अल्लाह तआला ने तुझे
जहन्नम से आज़ाद फ़रमाया है। हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि उसी रोज़
से मेरे वालिदे मुहतरम का नाम 'अतीक' हो गया।

(५) अबू-दाऊद शरीफ़ की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
ने हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को मुखातब करते हुए फ़रमाया अमा
इन्न क या अबा बकरिन अब्वलु मैयदख़ुलुल जन्न त मिन उम्मती।

(मिअ्तुल-मंनाजीह शरह मिशकातुल-मसाबीह सफ़ा : ३५७)

यानी ऐ अबू-बक्र! सुन लो कि मेरी उम्मत में सबसे पहले तुम जन्नत
में दाख़िल होगे।

(६) हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि आप
फ़रमाती हैं कि एक चाँदनी रात में जब की रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि
वसल्लम का सरे मुबारक मेरी गोद में था। मैंने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह!

क्या किसी शख्स की नेकियां आसामान के तारी के बराबर होगी? फरमाया :
हॉ! वह उमर (रजियल्लाहु अन्हु) की नेकियां इतनी ही हैं। हज़रत आइशा
रजियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि मैंने फिर पूछा और अबू-बक्र (रजियल्लाहु
अन्हु) की नेकियां कहाँ गई? तो हज़ूर अलैहिरसलाम वसल्लाम ने फरमाया:
इन्नमा जमीउ ह स नाते उ म र लिह स न ते वाहिदतिन मिन ह स ना ते
अबी बकरिन (मिअतुल-मनाजीह सफ़ा : ३६०)

यानी उमर (रजियल्लाहु अन्हु) की सारी नेकियां अबू-बक्र (रजियल्लाहु
अन्हु) की एक नेकी के बराबर हैं।

(७) इब्ने असाकिर हज़रत अनस रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं
कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हुब्यु अबी बकरिन
व शुक़रूह वाजिबुन अला कुल्लि उम्मती (तारीखुल-खुलफ़ाए सफ़ा : १२१)
यानी अबू-बक्र से मुहब्बत करना और उनका शुक्र अदा करना मेरी पूरी
उम्मत पर वाजिब है।

(८) इब्ने असाकिर ने हज़रत मिक्दाम रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत की
है कि एक दफ़ा हज़रत अबू-बक्र रजियल्लाहु अन्हु और हज़रत अकील
बिन अबी-तालिब रजियल्लाहु अन्हु में कुछ बदमज़गी हो गई। हज़रत
अबू-बक्र फ़हीम व होशमन्द थे। दूसरे हज़रत अकील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम के क़राबतदार भी थे। हज़रत अबू-बक्र ने उनसे कुछ न
कहा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में तमाम
माजरा ब्यान किया। हज़रत अबू-बक्र की शिकायत सुनकर रसूले करीम
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाज़रीन में खड़े हुए और फरमाया अला तदऊ
न ली साहिबी मा शानुकुम व शानुहू फ़वल्लाहि मा मिन्कुम रजलुन इल्ला
अला बाबे बैतिही जुल्मतुन इल्ला बाबु अबी बकरिन फ़इन्नना अला
वाविहिन्नूर फ़वल्लाहि लक़द कुल्लुम कज़ब त वक़ा ल अबू-बकरिन
सदक़ त व अम्सकतुमुल अमवाल व जा द ली बिमालिही व ख़ज़लतुमूनी
ववासानि वत्त व अनी। (तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : ११७)

तर्जुमा : यानी लोगो! तुम मेरे दोस्त को मेरे लिये छोड़ दो। तुम्हारी
हैसियत क्या है और उनकी हैसियत क्या है (तुम को उसका अन्दाज़ा है)।
यखुदा! तुम सब लोगों के दरवाज़ों पर अन्धेरा है लेकिन अबू-बक्र का
दरवाज़ा नूरानी है। खुदाए जुल-जलाल की क़सम! तुमने मेरी तकज़ीब की
और अबू-बक्र ने मेरी तरदीक़ की। इस्लाम के लिए तुमने माल खर्च करने

में बुखल से काम लिया और अबू-बक्र ने गाल खर्च किया। और तुम लोगों ने मेरी मदद नहीं की मगर अबू-बक्र ने मेरी गमखारी की और मेरी इतनेवा की।

यह चन्द हदीसें हैं जो हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल पर दलालत करती हैं। अब हम हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त कुरआने करीम की रौशनी में पेश कर रहे हैं। बादह आपकी ख़िलाफ़त पर अहादीसे करीमा पेश की जाएंगी।



ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक़बर पर आयाते कुरआनी

ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का इस्तिदलाल उलमाए किराम की एक जमाअत ने इस आयते करीमा से किया है —

या ऐयुहल्लज़ी न आमनू मैयर त द मिन्कुम अन दीनिही फ़सौ फ़ यतियल्लाहु बिकौमिं युहिब्बुहुम व युहिब्बूनहु। अज़िल्लतिन अलल मोमिनी न अइज़्ज़तिन अलल-काफ़िरीन। युजाहिदू न फ़ी सबीलिल्लाहि बला यखाफू न लौम त लाइमन। ज़ालि क फ़ज़लुल्लाहि यूतीहि मैयशाउ। वल्लाहु वासिउन अलीम। (सूरह माइदा—प : ६)

तर्जुमा:- ऐ ईमान वालो! तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अन्क़रीब अल्लाह ऐसे लोगों को लायेगा कि वह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा। मुसलमानों पर नरम और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अंदेशा न करेंगे। यह अल्लाह का फ़ज़ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है। (कन्ज़ुल—ईमान सफ़ा : १७०)

उलमाए किराम ने उसकी तफ़सीर में कहा है कि कौम से मुराद हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके असहाब ही हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम वस्सलाम के विसाल फ़रमाने के बाद जब कुछ अरब मुर्तद हो गये तो हज़रत अबू-बक्र और उनके असहाब ही ने उनसे जिहांद किया और फिर उनको मुसलमान बनाया।

यूनुस बिन बुक़ैर ने हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया तो

अरब के बहुत से लोग मुर्तद हो गये हजरत अबू-बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे किताल किया। उस ज़माने में हम लोग आपस में कहा करते थे कि आयते करीमा फ़सौ फ़ यातियल्लाहु विकौमिं युहिव्युहुम व युहिव्यूनहु हजरत अबू-बक्र और उनके असहाब की ही शान में नाज़िल हुई है।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : १२८)

बैहकी ने हजरत इमाम बसरी से रिवायत की है कि उन्होंने क़सम खाकर फ़रमाया कि इस आयत से मुराद हजरत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७५)

साहिबे तफ़सीरे हुसैनी ने तैसीर के हवाले से लिखा है कि हजरत इब्ने अब्बास और हजरत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हुम इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि आयते करीमा में कौम से मुराद हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके यार मुहाजिर और अन्सार रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं कि उन्होंने मुर्तदों से जंग की। (तफ़सीरे हुसैनी जिल्द अव्वल सफ़ा : २३१)

(२) आपकी खिलाफ़त पर दलालत करने वाली दूसरी आयत यह है: कुल लिलमुख़ल्लफ़ी न मिनल आराबि सतुदऔ न इला कौमिन उली बासिन शदीदिन तुकातिलूनहुम औ युसलिमू न फ़इन तुतीऊ यूतिकुमुल्लाहु अजरन ह स ना। व इन त त वल्लौ कमा तवल्लैतुम मिन कबलु युअज़िज़कुम अज़ाबन अलीमा।

(सूरह फ़तह-प:२६-रुकू१०)

तर्जुमा:- उनके पीछे रह गये हुये ग़वारों से फ़रमाओ। अन्करीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली कौम की तरफ़ बुलाये जाओगे कि उनसे लड़ो या वह मुसलमान हो जायें। फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे, अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गये तो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा।

(कन्ज़ुल-ईमान सफ़ा : ७४१)

सदरुल-अफ़ाज़िल हजरत अल्लामा मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहम: इस आयते करीमा की तफ़सीर में लिखते हैं कि उस कौम से बनी हनीफ़ा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमा कज़्ज़ाब की कौम के लोग हैं, वह मुराद हैं जिनसे हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंग फ़रमाई। यह आयते करीमा शैख़ैन जलीलैन हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ व हजरत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सेहते खिलाफ़त की दलील है कि उनकी इताअत पर जन्नत का और मुख़ालिफ़त पर जहन्नम का वादा है।

(ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान सफ़ा : ७४१)

इब्ने अबी हातिम और इब्ने कुतैबा कहते हैं कि गजकूरा वाला आयत करीमा हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त पर हुज्जत और वाज़ेह दलील है। क्योंकि आप ही ने मुर्तदीन से किताल करने की दावत दी है। (तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : १२८)

इमाम अहले सुन्नत हज़रत शैख़ अबुल हसन अशअरी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि मैंने अबू-अब्बास बिन शुरैह से सुना है कि हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त कुरआने करीम की इस आयत से साबित है इसलिये कि तमाम उलमाए किराम का उस पर इत्तिफ़ाक़ है कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद जिन लोगों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया और मुर्तद हो गये थे। उन लोगों से हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंग की। पस यह आयत आपकी खिलाफ़त पर दलालत करती है। (तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : १२८-सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ८१)



ख़िलाफ़ते सिद्दीके अकबर पर अहादीसे करीमा

ख़लीफ़तुल-मुस्लिमीन हज़रत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त पर कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। हम उनमें से चन्द पेश करने की सआदत हासिल कर रहे हैं।

(१) हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में एक औरत हाज़िर हुई तो आपने उससे फ़रमाया कि फिर आना। उस ख़ातून ने अर्ज किया : अगर मैं फिर आऊँ और आपको न पाऊँ तो क्या करूँ? उसकी मुराद शायद वफ़ात से थी। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इल लम तजिदीनी फ़ातिया अबा बकरिन अगर तू मुझे न पाये तो अबू-बक्र के पास आ जाना। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३७८)

(२) इब्ने असाकिर ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हवाले से लिखा है कि एक ख़ातून हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई जो आपसे कुछ दर्याफ़्त करना चाहती थीं। आपने उनसे कहा : फिर आना। उन्होंने कहा अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ और हुज़ूर का विसाल हो चुका हो। तब आपने फ़रमाया इन जिअ त फ़लम तजिदीनी फ़ाति अबी बकरिल ख़लीफ़त मेम बादी।

यानी अगर तुम आओ और मुझको न पाओ तो अबू-बक्र के पास आना। मेरे बाद वही खलीफा होंगे।

(तारीखुल-खुलफाए सफा १२४ सवाइके मुहर्रका सफा ८५)

(३) मुस्लिम ने हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है कि हजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी अलालत के दौरान फरमाया कि उदई ली अबा बकरिन अबा क व अखा क हत्ता अकतु व किताबन फइन्नी अखाफु ऐं यतमन्न न मु त म त्रिउ व यकूलु काइलुन अ न। वला याबल्लाहु वल मूमिनूना इल्ला अबा बकरिन। यानी तुम अपने वालिद और भाई को बुला लो ताकि मैं कुछ उन्हें लिखकर दे दूँ क्योंकि मुझे खौफ है कि मेरे बाद कोई तमन्ना करने वाला या कहने वाला कहे कि मैं ख़िलाफ़त का मुस्तहिक हूँ। फिर फरमाया कि रहने दो इसलिये कि अल्लाह तआला और मोमिनीन किसी से राजी न होंगे।

(मिअ्तुल-मनाजीह शरह मिशकात जिल्द चहारुम सफा-३४८ तारीखुल खुलफा सफा : १२४ सवाइके मुहर्रका सफा : ६४ मज़ाहिरे हक जिल्द चहारुम सफा : ६२ ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफा : १६१)

अहमद और दूसरे मुहद्दीसीन ने इस हदीस को इन अल्फ़ाज़ में हजरत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है। उन्होंने फरमाया कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मर्जुल-मौत में इरशाद फरमाया कि अब्दुर्रहमान बिन अबू-बक्र रजियल्लाहु अन्हुमा को बुला लो ताकि अबू-बक्र के लिये एक वसीयत (दस्तावेज़) लिख दूँ ताकि मेरे बाद कोई उनसे इख़तिलाफ़ न करे। फिर फरमाया : अच्छा रहने दो कि अबू-बक्र के मामले में मोमिनीन इख़ितलाफ़ न करेंगे। (सवाइके मुहर्रका सफा-६४ तारीखुल-खुलफा सफा : १२४-शरह फ़िक्हे अकबर-सफा : ७४)

मज़ाहिरे हक ने काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह से नक़ल किया है कि यह हदीस अजवद है। इसमें इशारा है कि मेरे बाद ख़िलाफ़त के हक़दार हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु अन्हु हैं। शीआ जो हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर और वसीयत का उनके हक़ में करते हैं वह महज़ बातिल है इसकी कुछ असल नहीं।

(मज़ाहिरे हक जिल्द ४ सफा : ६२)

(४) हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ला यम्बगी लिक्ौमिन फ़ीहिम अबू

बकरिन ऐयउम्महुम गैरुहू (तिर्मिजी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६६३)

यानी जिस कौम में अबू-बक्र हों उन्हें लाइक नहीं कि उनकी इमामत अबू-बक्र के सिवाए कोई और करे। इस हदीस पाक से हज़रत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत साबित हो रही है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम सहाबए किराम जिनमें हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत उसमान ग़नी, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम भी शामिल हैं — उन सबकी मौजूदगी के बावजूद हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी न्याबत के लिये फ़रमा रहे हैं। इससे साबित हो रहा है कि आप तमाम सहाबा से अफ़ज़ल और अज़लमे क़ुरआन थे क्योंकि इमाम उसी को बनाया जाता है जो सबसे ज़्यादा आलिम और अफ़ज़ल हो। मेराज में सारे नबियों की इमामत हुजूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई। क्योंकि आप तमाम नबियों और रसूलों से अफ़ज़ल और बड़े आलिम थे। हज़रत सिद्दीक़े अक़बर का इमामत के लिये अपनी मौजूदगी में आगे बढ़ाना आपकी ख़िलाफ़त की तरफ़ एक इशारा था।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं कि ये सिद्दीक़ अक़बर आपको रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब हमारे दीन में हमारा पेशवा बना दिया तो दुनिया में आपको (ख़िलाफ़त के लिये) पीछे करने वाला कौन है? (मिर्अतुल-मनाज़ीह सफ़ा : ३५५ मज़ाहिरे हक़ जिल्द दोम सफ़ा : ६४)

(५) हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इक़तदू बिल्लज़ी न मिम बादी अबी बकरिन व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा

(तिर्मिजी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६८६)

यानी मेरे बाद अबू-बक्र व उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की इक्तिदा करो। इस हदीस पाक से तो बिल्कुल वाज़ेह तौर पर हज़रत सिद्दीक़ अक़बर व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िलाफ़त का सुबूत मिल रहा है। फिर उसमें भी अव्वल हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम मुबारक है इसके बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ का यानी पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ होंगे उसके बाद हज़रत उमर फ़ारूक़।

एक दूसरी हदीस पाक में है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते

हैं कि बनी मुस्तलिक के सफीरों ने मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं आपसे पूछूँ कि अगर हम आइन्दा साल आयें और आपको न पायें तो सदकात किसको दें। मैंने आपसे अर्ज किया : आपने फरमाया : उमर को दें। मैंने उन लोगों से कह दिया। उन्होंने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज करो अगर उमर को ना पायें तो किसको दें। आपने फरमाया : उसमान को दें और जिस रोज उसमान शहीद हों उस रोज तुम्हें हलाकत हो।

(ख़साइसुल-कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : १६१)

हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत सफीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दोनों रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नब्वी की तामीर शुरू फरमाई तो पहला पत्थर हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उठाया। फिर उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक पत्थर उठाया, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह असहाब मेरे बाद खुलफ़ा होंगे।

(ख़साइसुल-कुबरा-जिल्द दोम-सफ़ा : १८६)



हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़िअल्लाहु अन्हु की

ख़िलाफ़त पर

सहाब-ए-किराम का इज्मा

अस्दुरस्सुन्नः ने फ़ज़ाइल में मुआविया बिन कुर्रः के हवाले से ब्यान किया है कि सहाबए किराम ने हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में कभी शक नहीं किया। वह आपको हमेशा ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ही कहते रहे। इलावा अर्जी सहाबए किराम का इज्मा कभी भी ख़ता व ज़लाल पर नहीं हो सकता था। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १२६)

हाकिम ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि आम मुसलमानों ने जिस चीज़ को अच्छा समझा वह अल्लाह के नज़दीक भी अच्छी है और जिस चीज़ को आम मुसलमानों ने बुरा जाना वह अल्लाह के नज़दीक भी बुरी है। चूंकि तमाम सहाबा ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त को अहसन और पसंदीदा समझा है। पस वह अल्लाह तआला के नज़दीक भी अहसन है। हाकिम ही ने मुस्तदरक और ज़हबी ने अपने सही में मिर्अतुतैयब के हवाले से लिखा है कि अबू-सुफ़ियान इब्ने हरब एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आये और कहा कि लोगों को क्या हो गया कि उन्होंने कुरैश के एक मामूली आदमी से बैअत कर ली (यानी हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ से)। अगर आप चाहते तो आपको बहुत आसानी से ख़िलाफ़त मिल जाती। तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। अबू-सुफ़ियान! तुम इस्लाम और मुसलमानों दोनों के दुश्मन हो। मुझे तो अबू-बक्र की ख़िलाफ़त में कोई ख़राबी नज़र नहीं आती क्योंकि वह हर तरह उसके अहल थे। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १२६)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इस कौल से राफ़ज़ी, शीआ, बोहरा और दीगर दुश्मनाने सिद्दीक़ को सबक़ हासिल करना चाहिये जो यह कहते हैं कि ख़िलाफ़त के हक़दार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

हजरात सिद्दीक व उमर की खिलाफत

का इन्कार करने वाले काफिर हैं —

हुजूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद खलीफ़ए बरहक व इमामे मुतलक हजरात सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। फिर हजरात उमर फारूक, फिर हजरात उसमान गनी, फिर हजरात मौला अली। फिर छः महीने के लिये हजरात इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हुम हुये। उन हजरात को खुलफ़ाये राशिदीन और उनकी खिलाफ़त को 'ख़िलाफ़ते राशिदा' कहते हैं कि उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्ची न्याबत का पूरा-पूरा हक़ अदा फ़रमाया है।

हजरात अबू-बक्र सिद्दीक और आपके बाद दोनों खुलफ़ा की खिलाफ़त को हजरात अली हजरात इमाम हसन और हजरात इमाम हुसैन ने कुबूल फ़रमाया और उनके मातहत रह कर जंगें लड़ीं और उनके पीछे नमाज़ें पढ़ते रहे। लेकिन फिरक़ए रवाफ़िज़ व फिरक़ए इमामिया ने हजरात सिद्दीक अकबर व हजरात उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हुमा की खिलाफ़त का इन्कार किया। उनकी शान में तरह-तरह की गुस्ताखियां और नाज़ैबा अल्फ़ाज़ बकते रहे। हम इस सिलसिले में कुदवतुल-मुहक्किनीन सनदुल मुहदसीन हजरात मौलाना शाह अबदुल अजीज़ मुहदिस देहलवी अलैहिर्रहमः के फ़तावा अजीज़िया से चन्द इक़तिबास पेश कर रहे हैं 'पुलाहज़ा फ़रमाइये —

बिलां शुब्हा फिरक़ए इमामिया हजरात अबू-बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त से मुन्किर हैं और फ़िक्ह की किताबों में लिखा है जो हजरात अबू-बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त से इन्कार करे तो वह इजमा क़तई का मुन्किर हुआ और वह काफ़िर हो गया। चुनांचे फ़तावा आलमगीरी में लिखा है अर्राफ़िज़ीयु इज़ा का न यंसुब्बुश़ैख़ैने व यलअनुहुमा अल अयाज़ु बिल्लाह फ़हु व काफ़िरून व इन का न युफ़ज़िज़लु अलीयन कर्म्मल्लाहु वजहहुलकरीमे अला अबी बकरिन रज़ियल्लाहु अन्हु ला यकूनु काफ़िरन लाकिन्नहु मुबतदिउन वलौ क़ ज़ फ़ आइश त रज़ियल्लाहु अन्हा बिज़्जिना फ़क़द क़फ़र यानी राफ़ज़ी जो बुरा कहता हो हजरात शैख़ैन और उन हजरात पर लानत भेजता हो, नऊज़बिल्लाह मिन ज़ालिक! तो वह काफ़िर है। और अगर बुरा न कहता हो मगर उस अम्र का कायल हो कि हजरात अबू-बक्र पर हजरात अली की फ़ज़ीलत है तो वह काफ़िर

नहीं बिदअती है। अगर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की शान में कज़फ़ का मुरतकिब हो तो वह भी काफ़िर है। और फ़तावा आलमगीरी में यह भी लिखा है कि मन अन्क र इमाम त अबी बकरिनिस्सिदीके रज़ियल्लाहु अन्हु फ़हु व काफ़िरुन व अला कौले बाज़ेहिम हु व मुबतादिउन व लै स बिकाफ़िरिन वरसहीहु अन्नहु काफ़िरुन व कज़ालि क मन अन्क र ख़िलाफ़ त उ म र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ी असहिहल अक़वाल यानी जिसको हज़रत अबू-बक्र सिदीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इमाम होने से इन्कार हो तो वह काफ़िर है। और बाज़ उलमा के नज़दीक़ वह बिदअती है, काफ़िर नहीं। सही यह है कि वह काफ़िर है। ऐसा ही जिसको हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इमाम होने से इन्कार हो तो ज़्यादा सही कौल यह है कि वह भी काफ़िर है। (फ़तावा अज़ीज़िया सफ़ा ४४०)

साहिबे बहारे शरीअत हज़रत अल्लामा मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली साहबे आजमी अलैहिर्रहमः बहारे शरीअत हिस्सा अव्वल सफ़ा : ७४ पर तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रात शैख़ैन (हज़रत अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की ख़िलाफ़त से इन्कार फ़ुकहाये किराम के नज़दीक़ कुफ़्र है।

रवाफ़िज़ हज़रात शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शान में तबरी-बाज़ी भी करते हैं। इसके मुतअल्लिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है हुब्बु अबी बकरिन व उ म र ईमानुन व बुग्जुहुमा कुफ़रुन.....

यानी हज़रत अबू-बक्र और हज़रत उमर की मुहब्बत ईमान की अलामत है और उनसे दुशमनी कुफ़्र है। (मज़ाहिरे हक़-जिल्द चहारुम-सफ़ा : ८४) और खुलासा में है कि मन अन्क र ख़िलाफ़तस्सिदीके फ़हु व काफ़िरुन यानी जिसने हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का इन्कार किया वह काफ़िर है। (मज़ाहिरे हक़ जिल्द चहारुम सफ़ा:८४)

अल्लाह तआला से दुआ है कि हम सबको अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्ची मोहब्बत व गुलामी अता फ़रमाये। आपके सच्चे जानशीन हज़रत अबू-बक्र सिदीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मुहब्बत व उत्फ़त से हमारा दिल मुनव्वर व मुजल्ला फ़रमा दे।

आमीन! बजाह सैयदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम।



खलीफा-ए-दोम

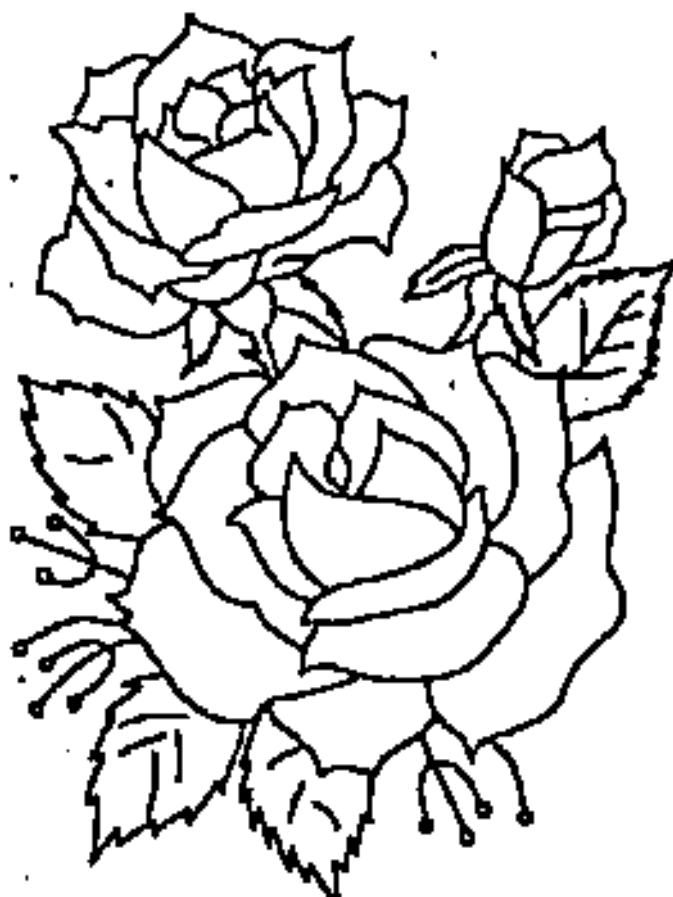
अमीरुल-मोमिनीन सैय्यदना हज़रत

उमर फ़ारूक़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

वह उमर जिसके आदा पे शैदा सकर
 उस खुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम
 फ़ारूक़े हक़ व बातिल, इमामुलहुदा
 तेग़े मसलूले शिद्दत पे लाखों सलाम
 तर्जुमाने नबी, हम जुबाने नबी
 जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

(सैय्यदना आला हज़रत फ़ज़िल बैरलवी अलैहिस्सलामः)



नाम व नसब: खलीफ़े दोम का नाम उमर, कुन्नीयत अबुल-हफ़स और लक़ब फ़ारूक़े आजम है। आपके वालिद का नाम ख़त्ताब और माँ का नाम अन्तमा है जो हिशाम बिन मुगीरह की बेटी हैं। आपका नसबनामा यूँ है : हज़रत उमर बिन ख़त्ताब बिन अब्दुल उज्ज़ा बिन रियाह बिन कुर्त बिन रज्ज़ाह बिन अदी बिन काब बिन लुवैय। आठवीं पुश्त में आप का शजरए नसब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ानदाने शजरा से मिलता है।

आप का इस्लाम कुबूल करना : वाकिअए फ़ील के तेरह साल बाद आप की विलादत हुई। नुबुव्वत के छठे बरस सत्ताईस बरस की उम्र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस दुआ से इस्लाम लाये अल्लाहुम्म म अइज्जल इस्ला म लिउ मरिन्निल ख़त्ताबि ख़ारसतन

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १८३ बहवाला हाकिम)

इलाहल-आलमीन ! उमरबनिल ख़त्ताब से इस्लाम को ग़लबा अता फ़रमा।

आपके इस्लाम लाने से आसमान के फ़रिश्तों ने खुशियां मनाई। इस्लाम की शौकत व कुव्वत में इज़ाफ़ा हुआ। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने से पहले जो हज़रात इस्लाम लाये थे वह छुप-छुपकर इबादत व बन्दगी किया करते थे। लेकिन जैसे ही हज़रत उमर फ़ारूक़ मुसलमान हुये आपने एलान फ़रमा दिया कि अब अल्लाह तआला की इबादत छुप कर नहीं बल्कि खुल्लम-खुल्ला ज़ाहिर में होगी। चुनांचे तमाम मुसलमान दो सफ़ें बनाकर निकले। एक सफ़ में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और एक सफ़ में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उसी तरह सफ़ों की शकल में मुसलमान मस्जिदे हराम में दाख़िल हुये। जब कुरैश ने हज़रत हमज़ा और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा को मुसलमानों की जमाअत के साथ देखा तो उनको हद दर्ज़ा मलाल हुआ। उसी रोज़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको 'फ़ारूक़' का लक़ब मर्हमत फ़रमाया क्योंकि इस्लाम ज़ाहिर हुआ और हक़ व बातिल में फ़र्क़ पैदा हो गया। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १७६)

आपका शुमार अशराफ़ व अकाबिर कुरैश में होता था। ज़मानए जाहिलीयत में आपके ख़ानदान से सफ़ारत मुख़्तस और मख़सूस थी। यानी जब कभी कुरैशी ख़ानदान के दरमियान या किसी मुल्क से जंग होती थी तो आपही के ख़ानदान के अफ़राद सुलह व सफ़ाई के लिये सफ़ीर बना कर भेजे जाते थे। या अगर कभी तफ़ाख़ुरे नसब के इज़हार की ज़रूरत पेश आती तो आपही के बुजुर्ग उस काम के लिये रवाना किये जाते थे।

आपने जिस वक्त ईमान लाया तो चालीस मर्द और ग्यारह औरतें इस्लाम कुबूल कर चुकी थीं। बाज उलमा का ख्याल है कि उन्तालीस मर्द और तैंतीस औरतें मुशरफ़ ब—इस्लाम हो चुकी थीं। आपका शुमार भी हज़रत अबू—बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह साबिकीन अब्वलीन में होता है। आप अशरए मुबशशरा में भी दाखिल हैं। (यानी वह दस खुशनसीब सहाबी जिनको दुनिया में जन्नत की खुशख़बरी दी गई) आपको रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खुसुर (ससुर) होने का शर्फ़ भी हासिल है। आप उलमा व जुहहाद सहाबा किराम में शुमार किये जाते हैं। आपसे पाँच सौ उन्तालीस हदीसें मर्वी हैं। (तारीखुल—खुलफ़ा सफ़ा : १८२)

अस्करी कहते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु वह पहले शख्स हैं जिनको अमीरुल—मोमिनीन से मौसूम किया गया। आप ही पहले वह शख्स है जिन्होंने तारीख़ व साल हिजरी (सन् हिजरी) जारी किया; बैतुलमाल कायम किया; माहे रमज़ान में तरावीह की नमाज़ बा—जमाअत जारी फ़रमाई। लोगों के हालात मालूम करने के लिये रातों को आबादी का ग़श्त आप ही ने शुरू फ़रमाया। हिज्व व मुज़म्मत करने वालों पर हद्द जारी फ़रमाई। शराब पीने वालों पर अस्सी कोड़े लगवाए। मतआ की हुर्मत को आम किया। दफ़ातिर कायम किये। वज़ारतें मुतअय्यन फ़रमाई। घोड़ों पर ज़कात वसूल की। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अतालल्लाहु बकाउ क और ऐदीकल्लाह कह कर दुआ दी। आप ही ने सबसे पहले दुर्ः ईजाद किया। शहरों में काज़ी मुकर्रर फ़रमाये और आपका सबसे बड़ा कारनामा यह है कि आपने मस्जिदे नब्वी शरीफ़ को वसी कराया और उसमें टाट का फ़र्श बिछवाया। आप ही ने मक़ामे इबराहीम को उस जगह कायम किया जहां वह अब मौजूद है वरना पहले वह बैतुल्लाह से मिला हुआ था। जितनी फ़तूहात आपके दौरे खिलाफ़त में हुई उसकी मिसाल नहीं मिलती। गर्ज यह कि उस मर्दे मुजाहिद ने दस साल छः महीने और पाँच दिन बड़ी ही शान व शौकत के साथ खिलाफ़त व न्याबते रसूल का हक़ अदा किया। और २६ ज़िलहिज्ज : सन् २३ हिजरी बरोज़ बुध ६३ साल की उम्र पाकर मस्जिदे नब्वी शरीफ़ में नमाज़े फ़ज्र के वक्त अबू—लूलू के ज़हर—आलूद खंजर से तीन कारी ज़र्ब लगी। बेहोश हुये। जब होश आया तो फ़रमाया : अलहम्दुलिल्लाह ! एक काफ़िर के हाथ से शहादत मिली। आपका विसाल हो गया। गुंबदे ख़ज़रा में पहलूए सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु में तदफ़ीन की गई और नमाज़े जनाज़ा हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई। (तारीखुल—खुलफ़ा सफ़ा : २१५—२१६)

हजरत फारूक़े आजम रज़िअल्लाहु अन्हु और कुरआने हकीम

इब्ने मर्दूया ने मुजाहिद से रिवायत की है कि हजरत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो कुछ राय (किसी अहम मसअले में) देते थे कुरआने हकीम का हुक्म उसी के मुताबिक़ नाज़िल होता था। इब्ने असाकिर हजरत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल नक़ल करते हैं कि कुरआन शरीफ़ में अकसर हजरत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रायें मौजूद हैं। इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि अगर बाज़ उमूर में लोगों की रायें कुछ और होतीं और हजरत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की कुछ और, तो कुरआन शरीफ़ हजरत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय के मुवाफ़िक़ नाज़िल होता था।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १६७)

हजरत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : मेरे रब ने मेरी राय से इक्कीस जगह कुरआने करीम में मुवाफ़िक़त फ़रमाई है। हम उनमें से चन्द आयातों को कारिईन की ख़िदमत में पेश कर रहे हैं :

(१) बुख़ारी व मुस्लिम हजरत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मेरे रब ने मेरी राय से तीन मौकों पर इत्तिफ़ाक़ किया। अव्वल, उस वक़्त कि जब मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया: काश! हम मक़ामे इब्राहीम को अपनी नमाज़ की जगह बनाते। तो उसके बाद ही यह आयत नाज़िल हुई। वत्तख़िजू मिम मक़ामे इब्राहीम मुसल्ला (सूरह बक़रा-प-१ रूकू १५)

यानी और इब्राहीम की खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ। दोम, मैंने अर्ज किया कि हुज़ूर आपकी ख़िदमत में हर तरह के लोग आते जाते हैं और अज़वाजे मुतहिहरात भी होती हैं। बेहतर होगा कि आप उनको पर्दा करने का हुक्म फ़रमा दें। तो हजरत उमर फारूक़ फ़रमाते हैं कि इस गुज़ारिश के बाद उम्महातुल-मोमिनीन के लिये पर्दा की

यह आयत नाज़िल हुई। व इज़ा सअल तुमूहुन्न न मताअन फ़सअलू हुन्न न मिंब्बराइ हिजाबिन (सूरह अहज़ाब—प—२२ रूकू—१४) यानी और जब तुम उनसे बरतने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर (से) मांगो। सोम, जब तमाम अज़वाजे मुत्तहिहरात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (नान व नफ़का की तंगी के सिलसिले में) ग़ैरत दिलाने पर यक—ज़ुबान और मुत्तहिद हो गई तो मैंने कहा मुम्किन है कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुमको तलाक़ दे दें तो उनका रब उन्हें तुमसे बेहतर बीवियां दे दे। तो अल्लाह तआला ने मेरे बिल्कुल उन्हीं अल्फ़ाज़ में यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई असा रब्बहू इन तल्ल क कुन्न न ऐंयुबदिलहु अज़वाजन ख़ैरम्मिनकुन्न (सूरह तहरीम—प:२८—रूकू १६) यानी उनका रब, करीब है कि अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दे कि उन्हें तुमसे बेहतर बीवियां बदल दे इताअत वालियां।

(तारीख़ुल—ख़ुलफ़ा सफ़ा : १६७)

(२) पहली शरीअतों में इफ़्तार के बाद खाना पीना, मुजाम्बित करना नमाज़े इशा तक हलाल था। बादे नमाज़ इशा यह सब चीज़ें रात में हराम हो जाती थीं। यह हुक्म ज़मानए अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक बाकी था कि अचानक रमज़ानुल मुबारक में बादे नमाज़े इशा रात में बाज़ सहाबए किराम और ख़ुरसून हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मुबाशिरत वुकू में आई तो उसपर उन हज़रात को शर्मिन्दगी हुई और बहुत नादिम होकर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुये और पूरा वाक़िया ब्यान फ़रमाया। तो अल्लाह तआला ने उनको माफ़ फ़रमा दिया। यह आयत नाज़िल हुई। उहिलल लकुम लैलतरिसयामिरफ़सु इला निसाइकुम (सूरह बकरा—प:२—रूकू ७) यानी रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिये हलाल हुआ।

(तारीख़ुल—ख़ुलफ़ा सफ़ा : ११६)

(३) इब्ने हातिम ने बरिवायत अब्दुरहमान बिन अबू—याला ब्यान किया है कि एक यहूदी हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मिला और आपसे कहा कि जिब्रईल फ़रिशता जिसका ज़िक्र तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) करते हैं वह हमारा दुशमन है। यह सुनकर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मन का न अदुव्वल लिल्लाहि व मलाइकतिही व रसुलिही व जिबरी ल व मीका ल फ़ इन्नल्ला ह अदुव्वुलिलकाफ़िरीन। (सूर: बकर पारा १ रूकू १२) यानी जो कोई दुशमन हो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिबरईल और

मीकाईल का तो अल्लाह दुशमन है काफिरों का। तो उन्हीं अलफाज में यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (तारीखुल-खुलफा सफा : १६६) अल्लामा सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः फरमाते हैं कि आयते करीमा के आखरी अलफाज फ़इन्नल्ला ह अदुव्वुलिलकाफिरी न। मालूम हुआ कि अंबिया और मलाइका की अदावत कुफ़ और ग़ज़बे इलाही का मूजिब है और महबूबाने हक़ से दुशमनी खुदा से दुशमनी करना है।

(४) बशर नामी एक मुनाफ़िक़ का यहूदी से झगड़ा हो गया तो यहूदी ने कहा : चलो सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से फ़ैसला करा लें। मुनाफ़िक़ ने ख़्याल किया हुज़ूर तो बे-रियायत महज़ हक़ फ़ैसला देंगे जिससे मतलब हासिल न होगा। इसलिये उसने बावजूदे मुद्ईए ईमान होने के यह कहा कि काब बिन अशरफ़ यहूदी को पंच बनाओ यहूदी जानता था कि काब रिशवतख़ोर है इसलिये उसने बावजूदे हम-मज़हब होने के इसको पंच तस्लीम न किया। नाचार मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आना पड़ा। हुज़ूर ने जो फ़ैसला दिया वह यहूदी के मवाफ़िक़ हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ैसला सुनने के बाद फिर वह मुनाफ़िक़ यहूदी के दरपै हुआ और उसे मजबूर करके हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाया। यहूदी ने आपसे अर्ज किया कि मेरा और उसका मामला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तय फ़रमा चुके हैं लेकिन यह हुज़ूर के फ़ैसले से राज़ी न हुआ। अब आपसे फ़ैसला चाहता है। तो आपने फ़रमाया : ठहरो, हां मैं अभी आकर उसका फ़ैसला कर देता हूं। यह फ़रमा कर मकान में तशरीफ़ ले गये और तलवार लाकर उस मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर दिया। फ़रमाया : जो अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसले से राज़ी न हुआ उसका मेरे पास यही फ़ैसला है। उसी दिन हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर 'फ़ारूक़' रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़ारूक़ का लक़ब दिया। अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई : अलम तर इलल्लज़ी न यज़उमून अन्नहुम आमनू बिमा उन्ज़िल इलैक वमा उन्ज़िल इलैका वमा उन्ज़िल ल मिन क़बलि क युरीदू न ऐंतहाकमू इलत्तागूति वक़द उमिरू ऐंयकफुरू बिह व युरीदुश्शैतानु ऐंयुज़िल्लहुम ज़लालम बईदा। (सूरह निसा-प:५-रुकू-६) यानी क्या तुमने उन्हें न देखा कि जिनका दावा है कि वह ईमान लाये उस पर जो तुम्हारे ऊपर

उतरा और उस पर जो तुमसे पहले उतरा। फिर चाहते हैं कि शैतान को अपना पंच बनायें और उनको तो हुक्म यह था कि उसे असलन न मानें और इबलीस यह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे।

(तफसीर कबीर मिश्री अल जुज्जल-आशिर सफा : १५३। तफसीरे हुसैनी जिल्द अव्वल सफा : १७५। तारीखुल खुलफा सफा २००)

फिर दूसरा शख्स भागा हुआ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और उस वाकिया की इत्तला हुजूर को पहुंचाई तो आपने फरमाया कि मुझे तो उमर से यह उम्मीद नहीं कि वह किसी मोमिन के कत्ल पर इस तरह जुरअत करें। इस पर अल्लाह तआला ने मुन्दरजा जैल आयते करीमा नाजिल फरमाई फ़ला व रब्बि क ला यूमिनु न हत्ता युहक्किमू क फीमा श ज र बैनहुम सुम्म म ला यजिदू फी अन्फुसिहिम हं र जम्मिम्मा कज़ै त व युसल्लिमू तसलीमा। (सूरह निसा-प:५-रुकू ६) तो ऐ महबूब! तुम्हारे रब की कसम वह मुस्लमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें अपना हाकिम न बनायें फिर जो कुछ तुम हुक्म फरमा दो अपने दिलों में उससे रुकावट न पायें और जी से मान लें। तो हज़रत उमर फारुक रज़ियल्लाहु अन्हु उस मुनाफिक के खून से बरी हो गये। और उसका खून रायगां गया।

(तारीखुल-खुलफा सफा : २००)

मुहतरम कारिईन! इन तमाम बातों से अल्लाह तआला के नज़दीक हज़रत उमर फारुक रज़ियल्लाहु अन्हु की इज्जत व अज़मत का पता चलता है कि हज़रत उमर फारुक ने जो बातें कीं उसकी मुवाफिकत में अकसर व बेशतर आयतें नाजिल होती रहीं। इसके अलावा और बहुत-सी आयाते कुरआनिया हैं। शाइकीन हज़रत तारीखुल-खुलफा, तफसीरे कबीर व सवाइके मुहर्रका का मुताला करें।



हजरत फारूक़े आजम रज़िअल्लाहु अन्हु और अहादीसे करीमा

खलीफ़ए दोम हजरत सैयदना उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़जाइल में कसरत से हदीसों वारिद हुई है उनमें से चन्द कारिर्न की ख़िदमत में पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ —

(१) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैना अ न नाइमुन शरिबु यानिल्लबन हत्ता अन्जु र इलरैये यजरी फी जुफ़री औ फी अजफ़री सुम्म म नावलतु उ म र फ़ कालू फ़ मा अब्वलतहु कालल इल्म। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३८८)

यानी मैं सो रहा था कि दौराने ख़्वाब में इतना दूध पिया जिसकी ताज़गी मेरे नाखुनों से भी जाहिर होने लगी। फिर बचा हुआ (दूध) मैं ने उमर को दिया। लोग अर्ज गुज़ार हुये कि इस (दूध) से क्या मुराद है? फ़रमाया 'इल्म' मुराद है।

(२) हजरत अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लक़द कांन फ़ीमा क़बलकुम मिनल उ म मि मुहदिसू न फ़ईयकु फ़ी उम्मती अ ह दुन फ़इन्नु उमरु। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३६०)

यानी तुमसे पहले उम्मतों में मुहदिस हुआ करते थे अगर मेरी उम्मत में कोई मुहदिस है तो वह उमर है। (रज़ियल्लाहु अन्हु)

(३) हजरत अबू-सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है : मैं सो रहा था कि लोगों को मेरी ख़िदमत में पेश किया गया। वह कमीज़ पहने हुये थे। पस किसी की कमीज़ तो सीने तक आती थी और किसी की उससे भी ऊंची थी। लेकिन जब उमर को मेरे सामने पेश किया गया तो उनकी कमीज़ ज़मीन पर लटक रही थी। लोग अर्ज गुज़ार हुये या रसूलल्लाह!

आप इससे क्या ताबीर लेते हैं ? फरमाया : 'दीन' (बुखारी शरीफ जिल्द दोम सफा : ३६१)

(४) हजरत इब्ने-उमर रजियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है कि रसूलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : इन्नल्ला ह ज अ लल हक क अला लिरानि उ म र व कलबिही (तिर्मिजी शरीफ जिल्द दोम सफा : ६६६)

यानी अल्लाह तआला ने उमर की जुबान और दिल पर हक को जारी फरमा दिया।

(५) हजरत उकबा बिन आमिर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लौ का न बादी नबीयुन लका न उ म रबनिल खत्ताब

(तिर्मिजी शरीफ जिल्द दोम सफा:६६७)

यानी अगर मेरे बाद नबी होता तो जनाब उमर इब्ने-खत्ताब होते।

(६) तबरानी ने कबीर और इब्ने इदी ने कामिल में हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया —

उ म रु म इ य व अ न म अ उमरिं वल हक्कु बादी म अ उ म रिन हैसु का न। (सवाइके मुहर्रका सफा:३४३ अदुररुस्सुन्नीय : सफा : २४)

यानी उमर मेरे साथ है और मैं उमर के साथ हूँ। मेरे बाद हक वहां होगा जहां उमर होगा। (रजियल्लाहु अन्हु)

(७) हजरत सईद बिन मुसैइब रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अव्वलु मैंयुसाफिहुहुल हक्कु उ म रु व अव्वलु मैंयुसल्लिमु अलैहि व अव्वलु मैंयाखुजु बियदिही फयदखुलुहुल जन्न : (इब्ने माजा। जिल्द अव्वल सफा : ६३)

यानी सबसे पहले अल्लाह तआला उमर से मुसाफहा करेगा और सबसे पहले उमर को सलाम करेगा। सबसे पहले उमर का हाथ पकड़ कर जन्नत में दाखिल फरमायेगा।

(८) हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : यत्तलिऊ अलैकुम रजुलुम मिन अहलिल जन्नति फत्तल अ अबू बकरिन सुम्म म का ल यत्तलिऊ अलैकुम रजुलुम मिन अहलिल जन्नते फत्तल अ उ म रु। (तिर्मिजी जिल्द दोम सफा : ७०१) यानी एक शख्स तुम में आ रहा है, वह जन्नती

है। तो हजरत अबू-बक्र आये। फिर फरमाया : एक शख्स तुममें आ रहा है। वह भी जन्नती है, तो हजरत उमर फरूक तशरीफ लाये। (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

(६) तबरानी ने औसत में हजरत अबू-सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जिस शख्स ने उमर से बुग़्ज रखा उसने मुझसे बुग़्ज रखा और जिसने उमर से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की। अल्लाह तआला ने अहले अफ़ा पर उमूमन और उमर पर खुसूसन फ़ख़ व मुबाहात की है। जितने अंबियाए किराम अलैहिस्सलाम मबऊस हुए हैं हर एक की उम्मत में एक मुहदिस जरूर हुआ है। अगर मेरी उम्मत का कोई मुहदिस है तो वह उमर हैं। सहाबा किराम ने यह सुनकर अर्ज किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मुहदिस कौन होता है? आपने फरमाया : जिसकी जुबान से मलाइका गुफ़्तगू करें।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : १८४-ख़साइसुल कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : २१३)

(१०) हजरत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं जिन्न व इन्त और शयातीन को उमर से भागते हुये देखता हूँ।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७५७)



हज़रत उमर फ़ारूक़

सहाब-ए-किराम व सुलहा-ए-उम्मत

रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सहाबए किराम की तादाद बहुत ज़्यादा थी। हम उन सब में हज़रत उमर के बारे में यह समझते थे कि सकीना उमर की जुबान पर नातिक होता है। तारीक़ बिन शिहाब से मर्वी है कि हम लोग यह कहा करते हैं कि हज़रत उमर फ़रिशते की जुबान से नातिक होते हैं। (ख़साइसुल-कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : २१३)

हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तमाम रूए ज़मीन पर मुझे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा कोई अजीज़ नहीं है। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को जब हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु ने ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया तो लोगों के एक सवाल के जवाब में फ़रमाया : मैंने तुम सबसे बेहतर शख्स को ख़लीफ़ा बनाया है।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १६४)

हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि (हज़रत) उमर रज़ियल्लाहु अन्हु निहायत ज़ूद फ़हम, तेज़ तबा और मामला फ़हम थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक रोज़ हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ ले गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त एक कपड़ा ओढ़े हुए थे। हज़रत अली ने आपको देखकर फ़रमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल के बाद इस चादर ओढ़ने वाली हस्ती के अक़वाल ज़्यादा अजीज़ हैं।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा १६५)

हज़रत अबू-उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जो शख्स हज़रत अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भलाई के साथ याद न करे तो मैं ऐसे शख्स से बिल्कुल बेज़ार और अलग हूँ।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १६७)

हज़रत इब्ने-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हज़रत

उमर रजियल्लाहु अन्हु को ताबूत में रखा गया तो लोगों का जमघटा हो गया। आपका जनाजा उठने से पहले लोग दुआयें मांगते और नमाजें पढ़ते रहे और मैं भी उनमें था। अचानक एक शख्स ने मेरा कंधा पकड़ लिया और वह हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु थे। फिर उन्होंने हजरत उमर के लिये दुआये रहमत की और फरमाया : आपके बाद ऐसा कोई शख्स नहीं जो मुझे आपके बराबर महबूब हो कि वह खुदा के बारगाह में आप जैसे अमल लेकर जायें। (बुखारी शरीफ जिल्द दोम सफ़ा : ३८६)

खिलाफ़त हजरत उमर फारूक रजियल्लाहु अन्हु

अमीरुल-मोमिनीन हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त पर किसी दलील के काइम करने की ज़रूरत नहीं। क्योंकि यह बात हर साहिबे अक्ल व फ़हम जानता है कि हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त की हकीकत से हजरत उमर की खिलाफ़त लाज़िम आती है। और हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त की हकीकत इजमा और नुसूसे कुरआन व हदीस से साबित है। पस उससे हजरत उमर की खिलाफ़त की हकीकत पर नुसूसे कुरआन व हदीस और इजमा लाज़िम आता है। क्योंकि जो चीज़ असल के लिये साबित है वह फ़रा के लिये भी साबित होती है। जैसा कि हमने गुज़िश्ता औराक में हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त के ज़िम्न में हजरत उमर फारूक रजियल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त पर भी चन्द हदीसों पेश की हैं। इस वक़्त हम कदरे तफ़सील के साथ आपकी खिलाफ़त को अल्लामा वाक़दी की रिवायत से ब्यान कर रहे हैं कि जब हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु अन्हु की तबीयत ज़्यादा ख़राब हो गई तो आपने हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रजियल्लाहु अन्हु को बुलाया। आप अशरा मुबशशरा में से हैं। उनसे फ़रमाया कि तुम उमर फारूक के बारे में क्या राय रखते हो? उन्होंने कहा कि आप मुझसे बेहतर जानते हैं। आपने फ़रमाया कि फिर भी तुम्हारी उनके बारे में क्या राय है? उन्होंने कहा कि मेरे ख़्याल में तो वह उससे बढ़कर हैं जितना आप उनके बारे में ख़्याल फ़रमाते हैं। फिर आपने हजरत उसमान ग़नी रजियल्लाहु अन्हु को बुला कर यही बात दर्याफ़त फ़रमाई। उन्होंने भी यही कहा कि आप उनके बारे में मुझसे ज़्यादा जानते हैं। हजरत सिद्दीक़े अकबर रजियल्लाहु अन्हु ने

इरशाद फरमाया : कुछ तो बतलाओ। हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि अल्लाह जानता हम लोगों में उनका मिस्ल मौजूद नहीं। फिर आपने सईद बिन जैद, उसैद बिन हुज़ैर और दूसरे अन्सार व मुहाजिरीन हज़रात से भी मशवरा लिया और उनकी राय मालूम की। हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : अल्लाह तआला खूब जानता है कि आपके बाद उमर ही वह शख्स हैं जो अल्लाह की रज़ा को अपनी रज़ा समझते हैं और अल्लाह तआला जिससे नाखुश होता है वह भी उससे नाखुश होते हैं। उनका बातिन उनके ज़ाहिर से भी अच्छा है और कारे खिलाफ़त के लिये उनसे ज़्यादा कवी और मुस्तइद शख्स कोई दूसरा नज़र नहीं आता। उसके बाद और सहाबए किराम तशरीफ़ लाये। उनमें से एक ने हज़रत सिद्दीक़ से अर्ज किया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सख़्त मिज़ाजी से आगाही के बावजूद अगर आपने उनको ख़लीफ़ा नामज़द कर दिया तो अल्लाह तआला के यहां क्या जवाब देंगे? आपने फरमाया : खुदा की कसम! तुमने मुझको ख़ौफ़ज़दा कर दिया। लेकिन मैं बारगाहे इलाही में अर्ज करूंगा कि या इलाहल-आलमीन ! मैंने तेरे बन्दों में से बेहतरीन शख्स को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया है और जो कुछ भी मैंने किया वह इससे भी बाला तर हैं। यह जो कुछ मैंने कहा है तुम दूसरों तक भी पहुंचा देना। उसके बाद आपने हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु से फरमाया : आप लिखिये!

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम! यह वसीयत-नामा है जो हज़रत अबू-बक्र बिन क़हाफ़ा ने अपने आखिरी अहद में दुनिया से जाते वक़्त और अहदे आखिरत के आगाज़ में आलमे बाला में दाख़िल होते वक़्त लिखाया है। यह वह वक़्त होता है जब एक काफ़िर भी ईमान ले आता है और एक काज़िब भी सच बोलता है और फ़ासिक व फ़ाजिर भी नूरे/यकीन हासिल कर लेता है। लोगो! मैंने अपने बाद तुम्हारे ऊपर उमर बिन ख़त्ताब को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया है। उनके अहक़ाम को सुनना और उनकी तामील करना। मैंने हतल-मक़दूर खुदा और उसके रसूल और दीने इस्लाम अपने नफ़्स की और तुम्हारी ख़िदमत की है और जहां तक मुम्किन था तुम्हारी भलाई और बेहतरी में कोई दक्कीका उठा नहीं रखा। मुझे यकीन है कि वह (यानी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) अदल व इन्साफ़ से काम लेंगे और अगर ऐसा हुआ तो मेरे ज़न्न व ख़्याल के मुताबिक़ होगा और अगर वह बदल

जायें तो हर शख्स अपने किये का जवाबदेह होगा। अलबत्ता मैं ने तुम्हारे लिये नेकी और भलाई का कसद किया है। जालिमों को अन्करीब मालूम हो जायेगा कि वह किस तरफ रुजू करने वाले हैं। वस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू।

फिर आपने वसीयत-नामा को सर बमुहर करके हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु के हवाले कर दिया। हजरत उसमान गनी उसको लेकर चले गये। लोगों ने ब-रजा व रगबत हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु से बैअत कर ली। उसके बाद आपने हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु को खलवत में बुला कर जो कुछ वसीयतें करना थीं वह कीं। उसके बाद हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु जब चले गये तो हजरत सिद्दीक अकबर रजियल्लाहु ने बारगाहे इलाही में दुआ के लिये हाथ उठाये और कहा: इलाही! यह जो कुछ मैं ने किया है उससे मेरा मकसूद मुसलमानों की फूलाह व बहबूद है। तू इस अम्र से वाकिफ है कि मैं ने फित्ना व फसाद की इनसिदाद के लिये यह काम किया है। मैंने इस सिलसिले में अपनी राय के इजतिहाद से काम लिया है। मैंने उनमें जो सबसे बेहतर था उसको उनका वाली बनाया है। वह उनमें सबसे ज्यादा कवी और नेकी पर हरीस है। इलाही! मैं तेरे हुक्म से तेरे हुजूर में हाज़िर हो रहा हूँ। इलाही! तू ही अपने बन्दों का मालिक व मुख्तार है और उनकी बागडोर तेरे ही हाथ में है। इलाही! उन (हाकिमों) में सलाहियत व दुरुस्ती पैदा करना और उमर को खुलफ़ाए राशिदीन में शामिल करना। अवाम को सालेह ज़िन्दगी बसर करने की तौफीक अता फ़रमाना। (तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : १४८)

इब्ने असाकिर ने बरिवायत यसार बिन हमज़ा ब्यान किया है कि हजरत अबू-बक्र सिद्दीक रजियल्लाहु अन्हु ने इशतिदादे अलालत में दरीचा (खिड़की) से सर बाहर निकाल कर लोगों से इस तरह खिताब फ़रमाया : ऐ लोगो! मैंने एक शख्स को तुम पर (खलीफ़ा) मुक़रर किया है। क्या तुम इस इन्तिखाब पर राजी हो। लोगों ने बिल-इत्तिफ़ाक कहा या खलीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! हम बिल्कुल राजी हैं। हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु यह सुनकर खड़े हो गये और कहा कि वह शख्स अगर उमर नहीं हैं तो हम राजी नहीं हैं। आपने फ़रमाया बेशक वह उमर ही हैं।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : १५०)

हजरत सुफ़ियान सौरी रजियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस शख्स ने

यह ख्याल किया कि हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु हजरत अबू-बक्र व हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से ज्यादा खिलाफत के मुस्तहिक थे तो उसने सिर्फ हजरत अबू-बक्र व हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हुमा ही को नहीं बल्कि तमाम मुहाजिरीन व अन्सार सहाबा को खताकार ठहराया। हजरत शुरैक रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जिस शख्स के दिल में एक जरा-सी भी नेकी है वह यह कभी नहीं कह सकता कि हजरत अबू-बक्र व उमर रजियल्लाहु अन्हुमा के मुकाबले में हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु खिलाफत के ज्यादा मुस्तहिक थे। (तारीखुल-खुलफा सफा : १६६)



गुस्ताखाने अबू-बक्र व उमर की सजायें

इमाम मुस्तगफरी दलाइलुन्नुबुब्बः में एक शख्स से रिवायत करते हैं कि कूफा में एक शख्स रहता था जो सैयदना हजरत सिद्दीक़े अकबर व सैयदना उमर फारूक रजियल्लाहु अन्हुमा को बुरा भला कहता था। एक दिन वह हमारे साथ सफ़र में हो गया तो हमने उसे हर चन्द समझाया लेकिन उसने सुनी अनसुनी कर दी। आखिर हमने उसे कह दिया कि हमसे दूर हो जा। वह हमसे जुदा हो गया। जब हम वापस आने लगे तो हमने उसके नौकर से कहा कि अपने आका से कहो कि हमारे पास आ जाये। उसने कहा : मेरे आका से एक अजीब व ग़रीब वाकिआ पेश आ गया है। उसके दो हाथ सूअर के हाथों जैसे हो गये हैं। हम उसके पास गये तो अपने पास आने की दावत दी। लेकिन उसने कहा कि मेरे साथ एक अजीम हादसा वाक़ेय हो चुका है। उसने अपने हाथ अपनी आस्तीन से बाहर निकाले जो सूअर की तरह थे। वह हमारे साथ हो लिया। चलते-चलते हम ऐसी जगह पहुंचे जहां सूअरों का एक गल्ला था। वह घोड़े से उतरा और सूअर बन कर सूअरों से जा मिला। उसके बाद हम उसे पहचान न सके।

(शवाहिदुन्नुबुब्बः सफ़ा : २६६)

अहले बसरा में से एक का ब्यान है कि मैं ने अपना माल व मता अहवाज़ के रईस के हाथों फ़रोख्त कर दिया। लोगों ने मुझे बताया कि वह राफ़ज़ी है और हजरत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक़ व सैयदना उमर फारूक

रजियल्लाहु अन्हुमा को बुरे अलफ़ाज़ से याद करता है। जब मेरा उसके यहां मुसलसल आना-जाना हुआ तो एक दिन मेरी मौजूदगी में उसने हज़रात शैख़ैन रजियल्लाहु अन्हुमा को बुरा भला कहना शुरू कर दिया। मैं उसके यहां से बहुत मग़मूम व महज़ून होकर उठा। इस अन्होह व गुम के बाइस मैंने उस रात इफ़तार नहीं किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैंने ख़्वाब में देखा और अर्ज़ किया : या नबीयल्लाह (सल्लल्लाहु अलै क वसल्लम) देखिए! वह शख़्स हज़रात अबू-बक्र व उमर रजियल्लाहु अन्हुमा की शान में क्या बकता है ? हुज़ूर हतमिय्युल मरतबत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या उसकी बातें तुझे अच्छी नहीं लगती? मैंने अर्ज़ किया : हाँ, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलम ने फ़रमाया : जाओ उसे मेरे पास ले आओ। मैं गया और उसे ले आया। फिर फ़रमाया : उसे सुला दो। मैंने उसे सुला दिया। फिर आपने मुझे एक छुरी दी और फ़रमाया उसे क़त्ल कर दो। मैंने अर्ज़ किया : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं उसे मार दूँ। मैंने तीन बार इसी तरह पूछा। क्योंकि किसी को क़त्ल करना मेरे लिये कारे अज़ीम था। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया : उसे मार दो। मैंने उसे क़त्ल कर दिया। सुबह हुई तो मुझे उस ख़बीस का हाल दर्याफ़्त करने का ख़्याल आया। जब मैं महल्ले में पहुंचा तो उसके घर से हाव-हू और शोर व फुगां की आवाज़ें आ रही थीं। मैंने पूछा : यहां क्या हुआ है? लोगों ने बताया कि कल रात किसी शख़्स ने उसे बिस्तर पर ही ख़त्म कर दिया है। मैंने कहा : खुदा की क़सम! मैंने उसे हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के हुक्म से क़त्ल किया है। जब उसके बेटे को सूरते हाल का पता चला तो उसने कहा : तुम अपना माल व असबाब संभालो और इसे छोड़ दो। मैं इसे दफ़न कर दूँ। मैं अपना माल व मता लेकर वहां से चल दिया।

(शवाहिदुन्नुबुव्व : सफ़ा : २७०)

एक बुर्जुग का ब्यान है कि मैं ने शाम के सफ़र में सुबह की नमाज़ एक मस्जिद में पढ़ी जब इमाम नमाज़ से फ़ारिग हुआ तो उसने हज़रात शैख़ैन रजियल्लाहु अन्हुमा को बद-दुआयें देना शुरू कर दीं। आइन्दा साल जब मैं दोबारा शाम गया तो इत्तिफ़ाक़ से फिर सुबह की नमाज़ उसी मस्जिद में अदा करनी पड़ी। जब इमाम नमाज़ से फ़ारिग हुआ तो उसने हज़रात शैख़ैन के हक़ दुआये ख़ैर की। मैंने नमाज़ियों से पूछा : यह क्या बात है

कि गुज़िश्ता साल तो यह हज़रत अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुरा भला कहता था और अब दुआयें देता है। उन्होंने कहा : क्या तुम साबिका इमाम को देखना चाहते हो? मैंने कहा : हां।

वह मुझे एक सराए में ले गये जहां एक कुत्ता बंधा हुआ था। और उसकी आंखें आसुओं से तर थीं।

मैंने उस कुत्ते से दर्याफ़्त किया। क्या तुम वही इमाम हो जो पिछले साल हज़रात शैख़ैन को गालियां देता था? उसने सर से इशारा किया। हां मैं वही हूँ।

(शवाहिदुन्नुबुव्व : सफ़ा : २७२)

अल्लाह तआला उन राफ़ज़ीयों को अक़ले सलीम अता फ़रमाये जो हज़रात शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को गालियां देते हैं और तबर्बाज़ी करते हैं। अल्लाह तआला हमें हज़रात शैख़ैन की मोहब्बत अता फ़रमाये। आमीन।



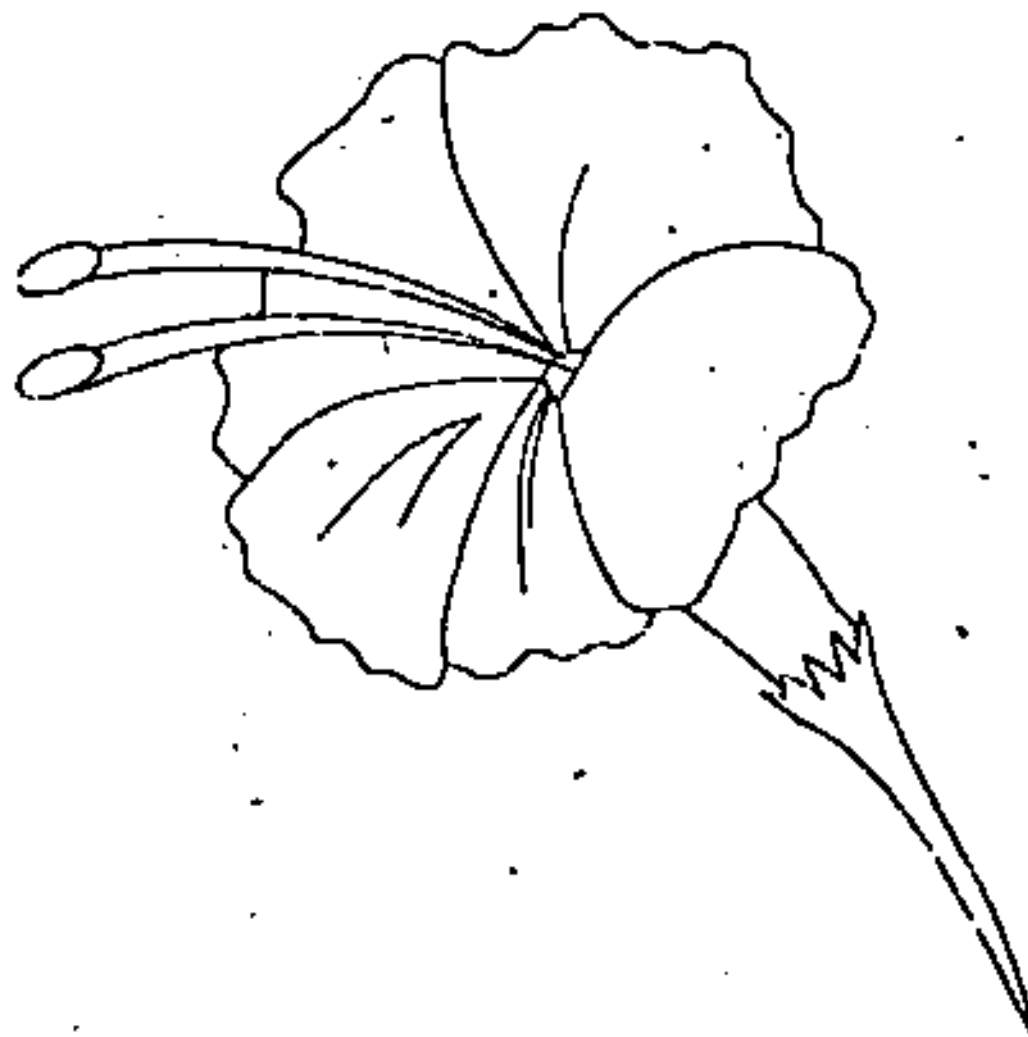
खलीफ़ा-ए-सोम

अमीरुल-मोमिनीन सैय्यदना हज़रत

उसमान जुन्नूरैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

ज़ाहिदे मज्दे अहमदी पर दुरुद दौलते जैशे उशरत पे लाखों सलाम
 दुर्रे मंसूर कुरआं की सिल्के बही जौजे दो नूरे इफ़्त पे लाखों सलाम
 यानी उसमान साहिबे कमीसे हुदा हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम
 (आला हज़रत अलैहिर्रहमः)



हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु का इसमे शरीफ उसमान, कुन्नीयत 'अबू-उमर' थी। बाज कहते हैं कि 'अबू-अब्दुल्लाह' और 'अबू-याला' आप की कुन्नीयत है। लकब 'जामिउल-कुरआन' व 'जुन्नुरैन' है। आपके वालिद गिरामी का नाम अफ़्फ़ान और वालिदए मुहतरम का नाम उरवा बिनते कुरैज बिन रबीया बिन हबीब बिन अब्द-शम्स था। आपका नसबनामा इस तरह है : उसमान बिन अफ़्फ़ान बिन अबुल-आस बिन उमैया बिन अब्द-शम्स बिन अब्द-मनाफ़ बिन कुरसा बिन किलाब बिन मुरः बिन काब बिन लुवैय बिन गालिब कर्शी उमवी।

आपकी नानी का नाम उम्मे हकीमुल बैजा बिनते अब्दुल-मुत्तलिब बिन हाशिम था। आप की नानी और रसूले अकरम सल्लुल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद माजिद हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब एक ही पेट से पैदा हुए थे। इस रिशता से हजरत उसमान की वालिदा माजिदा रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी-ज़ाद बहन थीं।

आपकी पैदाइश आमुलफ़ील के छः बरस बाद हुई। आप इब्तिदाए इस्लाम ही में हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु अन्हु की तबलीग़ से उन्हीं के हाथ पर इस्लाम लाये। आप कदीमुल-इस्लाम हैं यानी इब्तिदाये इस्लाम ही में ईमान ले आये थे। इब्ने-इसहाक़ कहते हैं कि आपने हजरत अबू-बक्र सिद्दीक़, हजरत अली और हजरत जैद बिन हारिसा रिज़वानुल्लाह तआला अजमईन के बाद इस्लाम कुबूल किया। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २३३)

कुबूले इस्लाम पर मसाइब : इब्ने-सअद ने मुहम्मद बिन इब्राहीम की जुबानी लिखा है कि हजरत उसमान रजियल्लाहु अन्हु के इस्लाम कुबूल करने के बाद आपके चचा हकम बिन अबिल-आस ने आपको पकड़ कर एक कमरे में बन्द कर दिया और कहा : तुमने आबाई मज़हब तर्क करके एक नया मज़हब इख़तियार कर लिया है। जब तक तुम उस नये मज़हब को नहीं छोड़ोगे मैं तुम्हें आज़ाद नहीं करूंगा। यह सुनकर हजरत उसमान रजियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : चचा, खुदा की कसम ! मैं मज़हबे इस्लाम कभी नहीं छोड़ूंगा और उस दौलत से कभी दस्त-बरदार नहीं हूंगा। इस तरह हकम बिन अबिल-आस ने जब आपको इस्लाम पर मुस्तहकम और मुस्तक़िल पाया तो मजबूर होकर आपको कैद व बन्द से आज़ाद कर दिया। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २३४)

आप साहिबे हिज़रतैन हैं, पहली हिज़रत हबशा की तरफ़ और दूसरी

मदीना पाक की तरफ फ़रमाई। आपका लकब जुन्नूरैन (दो नूर वाले) है। क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो साहिब जादियां हज़रत रुक़ैया और हज़रत कुलसूम आगे पीछे आपके निकाह में आईं। आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुजूर अलैहिस्सलाम तक हज़रत उसमान के सिवा किसी शख्स के निकाह में किसी नबी की दो बेटियां नहीं आईं।

इसलिये आपको जुन्नूरैन कहते हैं। इसलिये आला हज़रत फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहम : ने फ़रमाया है —

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का
हो मुबारक तुमको जुन्नूरैन जोड़ा नूर का

इब्ने असाकिर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद सुना है कि आप हज़रत उसमान ग़नी से फ़रमा रहे थे कि अगर मेरी चालीस लड़कियां भी होतीं तो मैं उनके बादीगरे उन सबका निकाह तुम से कर देता। यहां तक की कोई भी बाकी न रहती। एक रिवायत में सौ लड़कियों का ज़िक्र आया है।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २३६)

आपको जंगे बद्र और बैअते रिज़वान के शुरका में भी शुमार किया जाता है। हालांकि उन दोनों में आप शरीक नहीं हुए थे। जंगे बद्र में तो इसलिये शरीक नहीं हो सके कि हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा की तबीयत बहुत ज़्यादा नासाज़ और नाज़ुक हो गई थी। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें हज़रत रुक़ैया की देख-भाल के लिये मदीना तैयबा में ही रोक दिया। मगर शुरकाए बद्र में शुमार फ़रमाया और माले ग़नीमत में भी हिस्सा दिया। बैअते रिज़वान में भी शरीक न हो सके। इसलिये कि उस वक़्त आप मक्का मुअज़्ज़मा में अपने नबी के कासिद की हैसियत से मक्का के कुरैश से सुलह की बातचीत करने गये थे। आने में ताख़ीर हुई और यह अफ़वाह फैल गई कि हज़रत उसमान शहीद कर दिये गये। इसी पर हुजूर ने बैअते रिज़वान ली थी। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने बायें हाथ के बारे में फ़रमाया कि यह उसमान का हाथ है और अपने दाहिने हाथ के बारे में फ़रमाया : यह मुहम्मद मुस्तफ़ा का हाथ है। (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फिर हुजूर ने अपने एक हाथ को दूसरे हाथ पर रख कर फ़रमाया : यह बैअत उसमान की है। नीज़ आपका शुमार अशरए मुबश्शरह में भी होता है। आप ही ने कुरआने हकीम के जमाशुदा

मुकम्मल किताबी शकल वाले कुरआन के चन्द नुरखे तैयार कराके ममालिके इस्लामिया में रवाना फरमाये। आपसे एक सौ छियालिस हदीस मरवी हैं जिनमें ग्यारह इमाम बुखारी ने तखरीज की हैं।

असकरी कहते हैं कि हजरत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु वह पहले शख्स हैं जिन्होंने लोगों के लिये जागीरें मुकरर फरमाई। जानवरों के लिये चरागाहें कायम कीं। मस्जिदों में बुखूरात जलाने का रिवाज दिया जिसमें जाफ़रान की आमेज़श होती थी। जुमा के दिन अज़ाने अब्वल देने का हुक्म सादिर फरमाया। मुअज़्जिनों की तंख्वाहें मुकरर फरमाई। आप ही ने सबसे पहले पुलिस और उसके उहदेदार मुकरर फरमाये।

आप ही ने सबसे पहले मअ अहल व अयाल राहे खुदा में हिजरत फरमाई। आपका सबसे अहम दीनी व अमली कारनामा यह है कि आपने किरातों के इख़िलाफ़ को ख़त्म करने की गर्ज से अहदे सिद्दीकी और अहदे फारूकी में मुदव्वन कुरआन मजीद को उम्मुल-मोमिनीन हजरत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से हासिल किया और ज़ैद बिन साबित, अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर वगैरह से नुकूल बनाकर इस्लामी ममालिक में रवाना फरमाये। हुक्म दिया कि आइन्दा इसी के मुताबिक कुरआन लिखे और पढ़े जायें। अलगर्ज इस मर्दे मुजाहिद ने यकुम मुहर्रमुल-हराम सन : २४ हिजरी को मसन्दे ख़िलाफ़त संभाला और बारह साल तक उमूरे ख़िलाफ़त को बहुस्ने खूबी अन्जाम देते रहे। ब्यासी साल की उम्र पाकर असवद तजीबी मिस्री के हाथ से १८ जिलहिज्जा सन् ३५ हिजरी बरोज़ जुमा चालीस दिन के सख़्त मुहासरे के बाद, जो बागियों ने आपके मकान पर किया था, शहीद हुए। सनीचर की शब माबैन मगरिब व इशा आपको जन्नतुल-बकी (मदीना मनव्वरा) के मशरिकी किनारे हशे कौकब में मदफून किया गया। रिवायतों में आता है कि आप जिस वक़्त शहीद हुए कुरआने हकीम की यह आयते करीमा फ़सयकफ़ीकहुमुल्लाहु व हुवरसमीउल अलीम की तिलावत फरमा रहे थे। उसी पर आप शहीद हो गये। आपकी नमाज़े जनाज़ा हजरत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई और आप ही ने उनको दफ़न किया क्योंकि आपने उनको उन बातों की वसीयत फरमाई थी।

इब्ने असाकिर हजरत यज़ीद बिन हबीब से रिवायत करते हैं कि मुझे ख़बर पहुंची है कि हजरत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु पर जिन लोगों ने चढ़ाई की थी उनमें से अकसर दीवाने और मजनून हो गये थे।



हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाहु अन्हु और कुरआन हकीम

खलीफ़ए सोम हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के मनाकिब में भी कुरआने हकीम की बहुत-सी आयते करीमा का नुज़ूल हुआ है। उनमें से चन्द कारिर्इन की खिदमत में पेश की जा रही हैं :

(१) इरशादे बारी तआला है : अल्लज़ी न युनफ़िकू न अम्यालहुम फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्म म ला युतबिऊ न मा अन्फ़कू मन्नौ वला अज़ल्लहुम अज़रुहुम इन द रब्बिहिम वला खौफ़ुन अलैहिम वला हुम यहज़नून

(सूरह बकरा—प:३—रुकू ४)

वह जो अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं फिर दिये के पीछे न एहसान रखें न तकलीफ़ दें, उनका (अज़ व सवाब) उनके रब के पास है। और उन्हें न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म।

(कन्जुल—ईमान सफ़ा : ६५)

हज़रत सदरुल—अफ़ज़िल अल्लामा मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल—इरफ़ान सफ़ा : ६६ पर तहरीर फ़रमाते हैं कि यह आयते करीमा हज़रत उसमान ग़नी और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हक़ में नाज़िल हुई।

साहिबे मिशकात लिखते हैं ग़ज़वए तबूक जिसे ग़ज़वए उसरत भी कहते हैं, यह ग़ज़वा मुसलमानों की सख़्त तंगी, नादारी और बेसामानी के आलम में हुआ। गर्मी सख़्त थी और तबूक भी मदीना मुनव्वरह से ६६० मील की दूरी पर वाक़ेय था। यह ग़ज़वा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़िरी ग़ज़वा था जो सन् ६ हिजरी में हुआ। उसके बाद हुज़ूर ने किसी ग़ज़वा में शिक़त नहीं फ़रमाई। उस ग़ज़वा में चालीस हज़ार और सत्तर हज़ार के दरमियान सहाबा किराम थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को जिहाद के लिये चन्दा देने का हुक्म दिया।

तिर्मिजी शरीफ जिल्द दोम सफा ७०३ में हजरत अब्दुर्रहमान बिन खब्बाब रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। वह फरमाते हैं कि मैं रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में उस वक्त हाजिर था जब आप शुरकाए जंग तबूक की मदद के लिये लोगों को जोश दिला रहे थे। हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु आपके पुरजोश अलफाज सुनकर खड़े हो गये और अर्ज किया : या रसूलल्लाह! मैं सौ ऊँट, उनके कम्बल और पालान के साथ खुदाए तआला की राह में पेश करता हूँ। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए और तरगीब दिलाई तो आपने फिर खड़े होकर अर्ज किया : या रसूलुल्लाह! मेरे जिम्मे दो सौ (२००) ऊँट मअ् साज व सामान के हैं। मैं उसे आपकी बारगाह में पेश कर दूंगा। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर रग़बत दिलाई तो हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अर्ज किया। या रसूलुल्लाह! मेरे जिम्मे तीन सौ (३००) ऊँट मअ् साज व सामान के हैं। मैं पेश कर दूंगा। हदीस के रावी हजरत अब्दुर्रहमान बिन खब्बाब रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने देखा कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम मिम्बर से उतरते जाते थे और फरमाते जाते थे मा अला उसमान मा अमि ल बा द हाजिही। मा अला उसमान मा अमि ल बा द हाजिही। यानी अब इसके बाद हजरत उसमान पर कोई गुनाह नहीं, वह जो भी करें। उसके बाद उसमान पर कोई गुनाह नहीं, वह जो भी करें। मतलब इसका यह है कि हजरत उसमान रजियल्लाहु अन्हु का यह अमल अल्लाह के रसूल की बारगाह में इतना मकबूल है कि अब अगर उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु उसके बाद दीगर कोई नेक काम न भी करें तो उनके मदरिजे आलिया में कुछ रुकावट नहीं आयेगी।

(मिशकात—शरीफ सफा : ३६४)

हजरत इमाम राजी तफ़सीरे कबीर मिस्त्री अल—जुज़उस्साबे सफा : ४८ में इस आयते करीमा के तहत फरमाते हैं कि यह आयत हजरत उसमान गनी व हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रजियल्लाहु अन्हुमा की शान में नाज़िल हुई। हजरत उसमान गनी ने ग़ज़वए तबूक के लिये एक हजार ऊँट मअ् साज व सामान और एक हजार दीनार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना दस्ते शफ़क़त दराज़ फरमाया और बारगाहे इलाही में यूँ दुआ फरमाई या रब्बि उसमान रज़ीतु अन्हु फरज़ि अन्हु ऐ अल्लाह! यह

उसमान है। मैं इससे सजी हुआ तू भी इससे राजी हो जा।

(२) अल्लाह तआला अपने मुकद्दस कलाम पाक में इरशाद फरमा रहा है —
 सयज्जककरु मैयखशा व यतजन्नयुहल अशकल्लजी यसलन्नारल
 कुबरा (सूरह आला—प:३०)

यानी अन्करीब नसीहत मानेगा जो डरता है और उससे वह बड़ा
 बदबख्त दूर रहेगा जो सबसे बड़ी आग में जायेगा।

(कन्जुल—ईमान सफ़ा : ८६२)

साहिबे तफ़सीरे कबीर अल—जुज्जल हादी वस्सलासून सफ़ा : १४६ पर
 लिखा है कि न ज़लत हाज़िहिल आयतु फी उसमानिवनि अफ़फ़ान
 (रज़ियल्लाहु अन्हु) यानी यह आयते करीमा हज़रत उसमान बिन अफ़फ़ान
 रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में नाज़िल हुई है।

(३) इरशादे खुदावन्दी है अम्मन हु व क़ानितुन आनाअल्लैलि साजिदौ
 व क़ाइमै यहज़रुल आख़िर त व यरजू रह म त रब्बिही

(सूरह जुमर—पारा २३ रुकू १५)

यानी क्या वह जिसे फ़रमांबदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में
 और क़ियाम में। आख़िरत से डरता और अपने रब की रहमत की आस
 लगाये।

(कन्जुल ईमान सफ़ा : ६६५)

साहिबे तफ़सीरे कबीर इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं अम्मन
 हु व क़ानितुन आनाअल्लैलि उसमा न लिअन्नहु का न युहयिल्लै ल फी
 रकअतिव वाहिदति व यंकरउल क़ुरआ न फी रकअतिव्वाहिदति

(तफ़सीरे कबीर अल—जुज्जउस्सादिस वल—इशरून सफ़ा : २५१)

यानी इस आयत से हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु मुराद हैं
 इसलिए कि आप पूरी रात एक ही रकअत में गुज़ार दिया करते थे और पूरा
 क़ुरआन हकीम एक ही रकअत में ख़त्म फ़रमाते थे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह आयत करीमा
 हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में नाज़िल हुई।

(तफ़सीरे मवाहिबुर्रहमान—पारा २३ सफ़ा : २३६)

साहिबे तफ़सीरे हुसैनी भी लिखते हैं कि यह आयत हज़रते उसमान
 ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में नाज़िल हुई।

(तफ़सीरे हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा ३४२)



हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाहु अन्हु और अहादीसे करीमा

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल में कसरत से अहादीसे करीमा आई हैं। उनमें से चन्द कारिर्इन की ख़िदमत में पेश की जा रही हैं :

(१) हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **लिकुल्लि नबीइन रफीकुन व रफीकी यानी फ़िल जन्नति उसमान**

(तिर्मिज़ी ज़िल्द दोम सफ़ा : ७०२)

यानी हर नबी का एक साथी होगा और मेरा साथी जन्नत में उसमान बिन अफ़फ़ान है।

(२) हज़रत मुरह बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना जबकि आपने फ़िल्नों का ज़िक्र किया और उन्हें बहुत करीब बताया तो एक शख्स चादरपोश गुज़रा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस दिन यह हिदायत पर होगा। मैं उस शख्स की तरफ़ गया तो वह उर बिन अफ़फ़ान थे। राविए हदीस फ़रमाते हैं कि मैं ने उनका चेहरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने किया और कहा कि क्या यह? फ़रमाया : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने, हां।

(तिर्मिज़ी ज़िल्द दोम सफ़ा : ७०६)

(३) हज़रत अबू-मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरा के एक बाग़ में हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था कि एक साहब आये और दरवाज़ा खोलने को कहा। उस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : इफ़तह लहव

बशिशरहू बिल जन्नति यानी उनके लिये दरवाजा खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत दे दो। मैंने दरवाजा खोला तो हज़रत अबू-वक्र थे। पस मैंने उन्हें वह बशारत दे दी जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। पस उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया। फिर एक साहब आये उन्होंने दरवाजा खुलवाया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इफ़तह लहू व बशिशरहु बिल जन्नति अला बलवा तुसीयुहू इनके लिये दरवाजा खोल दो और इन्हें भी जन्नत की बशारत दे दो। मैंने दरवाजा खोला तो वह हज़रत उमर थे, पस मैंने उनको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान की ख़बर दी तो उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया। फिर एक साहब ने दरवाजा खुलवाया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इफ़तह लहू व बशिशरहु बिल जन्नति: उनके लिए दरवाजा खोल दो और इन्हें भी जन्नत की बशारत दो, और एक मुसीबत पर जो इन्हें पहुंचेगी। मैंने दरवाजा खोला तो देखा वह उसमान थे। मैंने उन्हें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान की ख़बर दी। उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया और बोले अल्लाह मददगार है। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३६२)

(४) अबू-नईम ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्यान किया है किं रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसमान मेरी उम्मत का सब से हयादार और करीम आदमी है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ३७५)

(५) इब्ने-असाकिर ने हज़रत इब्ने-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्यान किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसमान की शफ़ाअत से सत्तर हज़ार ऐसे आदमी बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे जो आग के मुस्तहिक हो चुके होंगे। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ३७८)

(६) हाकिम ने हज़रत अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु ने दो मर्तबा जन्नत ख़रीदी है। एक मर्तबा तो बिरे रुमा ख़रीद कर उसकी खुदाई कराके। (यह कुआं एक यहूदी का था। मुसलमानों की तकलीफ़ को मद्दे नज़र रखते हुए आपने ख़रीदा था ताकि मुसलमानों को ज़्यादा पानी मिल सके) और दूसरी मर्तबा जैशे उसरत को साज़ व सामान फ़राहम करके। उसका ज़िक्र पहले आ चुका है। अलफ़ाजे हदीस यह हैं। क़ालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मैयहफिरु बि अ र रूमत फ़ लहुल जन्न त फ़ हफ़रहा उसमानु वका ल
मन जह ह ज़ जैशुल उसरति फ़ लहुल जन्नतु फ़ जहहज़हु उसमान।

(तारीखुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २३६- बुख़ारी जिल्द दोम सफ़ा : ३६३)

(७) हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि मैंने
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना कि आप सल्लल्लाहु अलैहि
वसल्लम ने फ़रमाया : उसमान मेरे पास ऐसे हाल में आए कि मेरे पास
फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता था। उसने कहा उसमान शहीद होंगे। उन ही
की कौम उन्हें शहीद करेगी और हम फ़रिश्ते उसमान से हया करते हैं।

(ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : २०२)



हज़रत उसमाने ग़नी

सहाब-ए-किराम व सुलहा-ए-उम्मत

रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन

इब्ने-असाकिर ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि किसी शख्स ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत उसमाने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की हया के बारे में दर्याफ़्त किया तो आपने जवाब फ़रमाया कि (आपकी हया का क्या पूछते हो?) अगर आप कभी नहाने का क़सद करते तो घर में किवाड़ बन्द करके भी कपड़े उतारने में इस क़दर शर्म फ़रमाते थे कि अपनी पीठ सीधी नहीं करते थे।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा २३७)

इब्ने-असाकर अबू ख़ुल्दा हनफी से ब्यान किया है कि मैं ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते ख़ुद सुना है कि बनू-उमैया का यह ख़्याल है कि मैंने उसमान को क़त्ल कराया। मैं अल्लाह की उलुहियत की क़सम खाकर कहता हूँ कि मैंने न उन्हें क़त्ल किया है और न क़त्ल की साज़िश में तआवुन किया। बल्कि मैंने तो क़त्ल से हर तरह बाज़ रखने की कोशिश की लेकिन लोगों ने मेरा कहना न सुना।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २४६)

हज़रत सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु मज़लूम शहीद किये गये और जिन्होंने आपका क़त्ल किया वह ज़ालिम थे और जिन्होंने आपका साथ छोड़ दिया, वह माज़ूर थे।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २४७)

हज़रत समुरा का ब्यान है कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करके लोगों ने इस्लाम के मज़बूत क़िले में ऐसा रखना डाल दिया जो क़यामत तक बन्द नहीं होगा। इसी तरह मुहम्मद बिन सीरीन फ़रमाते हैं कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद फ़रिश्तों ने इस्लामी जंगों में मुसलमानों की मदद करना तर्क कर दिया। मुसलमानों में रुवैयते हिलाल के सिलसिले में आपकी शहादत ने

पहले कभी इखतिलाफ नहीं हुआ। (तारीखुल-खुलफा सफा : २४६)

हजरत अब्दुल्लाह रूमी का ब्यान है कि हजरत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु रात को उठकर खुद ही वुजू का सामान फ़राहम कर लेते थे। लोगों ने अर्ज किया कि आप किसी मुलाज़िम को बेदार कर लिया कीजिए ताकि वह इन्तज़ाम कर दिया करे। तो आपने फ़रमाया : मैं यह मुनासिब नहीं समझता क्योंकि रात को वह भी आराम कर रहे होते हैं।

(तारीखुल-खुलफा सफा : २५०)



खिलाफ़त हजरत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु

खलीफ़ए दोम हजरत सैयदना उमर इब्नुल ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जब अबू-लूलू मजूसी के हाथ से ज़हर आलूद खन्जर से ज़ख्मी हो गये और मर्ज़ बतदरीज बढ़ता ही चला गया तो लोगों ने अर्ज किया : या अमीरुल-मोमिनीन आप को जो वसीयतें करना है, कर दीजिये और किसी को खिलाफ़त के लिये भी मुन्तख़ब फ़रमा दीजिए। आपने इरशाद फ़रमाया: कि मैं इस काम के लिये सिवाये इन छः अशखास के जिनसे रसूलुल्लाह सल्लुल्लाहु अलैहि वसल्लम राज़ी और खुश रह कर दुनिया से तशरीफ़ ले गये हैं, किसी और को हक़दार नहीं समझता हूँ। फिर आपने उन छः हजरात के नाम लिये। वह हजरत अली, हजरत उसमान, हजरत जुबैर, हजरत तलहा, हजरत सअद बिन अबी वक्कास और हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। मजलिसे शूरा के इन्तज़ाम में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हाथ बटायेंगे, लेकिन खिलाफ़त से उन्हें कोई सरोकार न होगा। अगर सअद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिखाब हो जाता तो वह उसके हक़दार थे। वरना उन छः में से जिनको चाहें खलीफ़ा मुन्तख़ब कर लें। और मैंने सअद को किसी ख़्यानत, किसी इज्ज की बिना पर इमारत से माजूल नहीं किया था। फिर आपने लोगों से फ़रमाया कि मैं अपने बाद होने वाले खलीफ़ा को वसीयत करता हूँ कि वह खुदा से डरता रहे और तमाम मुहाजिरीन व अन्सार और तमाम रिआया के साथ नेकी से काम ले। इसी किस्म की बहुत-सी वसीयतें फ़रमाई और फिर जान जाने आफ़रीं के सुपर्द फ़रमा दी।

फिर जब तजहीज व तकफीन से फारिग हो गये तो तीन रोज बाद खलीफा का इन्तिखाब करने लिये लोग जूक-दर-जूक जमा हो गये तो हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ ने कहा कि अब्वलन तीन आदमी मुन्तख़ब कर लेना चाहिए। चुनांचे हजरत जुबैर ने अपनी तरफ से हजरत अली को, हजरत सअद बिन वक्कास ने हजरत अब्दुर्रहमान को, और हजरत तलहा ने हजरत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हुम को मुन्तख़ब किया। फिर यह तीनों हजरात बाहम मशवरा करने के लिये एक तरफ़ चले गये। वहां पहुंचकर हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने फ़रमाया : मैं अग्रे खिलाफ़त अपने लिये पसंद नहीं करता। तुम में से भी अगर कोई खिलाफ़त की जिम्मेदारी से बरी होना चाहे तो मुझे बता दे। इसलिये कि ऐसा ही शख्स खलीफ़ा का इन्तिखाब करेगा, और जो कोई खलीफ़ा मुन्तख़ब हो तो उसके लिये ज़रूरी है कि उम्मत मुहम्मदी में सबसे अफ़ज़ल हो; और इस्लाहे उम्मत की ख़्वाहिश रखता हो। हजरत अब्दुर्रहमान का यह फैसला सुन कर हजरत उसमान व हजरत अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ख़ामोश रहे। फिर हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने खुद ही दर्याफ़्त किया। अच्छा इस इन्तिखाब का काम तुम मेरे सुपुर्द कर दो ताकि मैं सबसे अफ़ज़ल और बेहतर शख्स का इन्तिखाब कर दूं। दोनों हजरात ने कहा कि हमें मन्जूर है। तब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हजरत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को एक तरफ़ ले गये और उनसे कहा : ऐ अली! (रज़ियल्लाहु अन्हु) आप पहले इस्लाम लाये हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीबी अजीज भी हैं इसलिये आप खिलाफ़त के ज़्यादा मुस्तहिक हैं। पस अगर मैं आपको खलीफ़ा मुक़र्रर कर दूं तो आप कुबूल कर लें। अगर आप पर किसी दूसरे को खलीफ़ा मुक़र्रर कर दूं तो आप उसकी इताअत करें। हजरत अली ने फ़रमाया : मुझे तस्लीम है फिर आप उसी तरह हजरत उसमान को एक तरफ़ ले गये और उनसे भी उन्हीं दोनों बातों का इकरार लिया। जब हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन दोनों हजरात से यह अहद व पैमान ले लिया तो आपने हजरत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत कर ली।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २१४-२१३)

हजरत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैहि अपनी मशहूर व मारुफ़ किताब 'तारीखुल-खुलफ़ा' में इब्ने असाकिर के हवाले से लिखते हैं कि हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हजरत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के

बजाये हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु को खलीफा मुन्ताखब किया तो उसकी वजह हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ यह ब्यान करते हैं कि मुझसे जो भी साइबुराय शख्स तखलिया में मिलता तो वह यही मशवरा देता कि खिलाफत हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु को मिलना चाहिए। इसलिये कि वही उसके ज्यादा मुस्तहिक हैं चुनांचे अब्दुर्रहमान बिन औफ बैअत लेने के लिये बैठ गये।

एक रिवायत में है कि हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ रजियल्लाहु अन्हु ने हम्द व सलात के बाद हजरत अली करमल्लाह वजहहू से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि ऐ अली! मैंने तमाम लोगों की राय मालूम कर ली है। सबकी राय उसमान के लिए है। यह कहकर आपने हजरत उसमान रजियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा और कहा कि मैं आपसे सुन्नतुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह और हर दो खुलफ़ा रजियल्लाहु अन्हुमा की सुन्नत पर बैअत करता हूँ। इस तरह सबसे पहले आपने बैअत की और फिर तमाम मुहाजरीन व अन्सार ने आपसे बैअत की।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २३७)

मुसनद इमाम अहमद में हजरत अबी वाइल रजियल्लाहु अन्हु से इस तरह रिवायत ब्यान की गई है कि मैंने हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से दर्याफ़्त किया कि तुमने हजरत उसमान से बैअत क्यों की? और हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु को क्यों छोड़ दिया, उनसे बैअत क्यों नहीं की? तो आपने जवाब दिया कि उसमें मेरा कुछ क़सूर नहीं। मैं ने अव्वलन हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु से कहा कि मैं आपसे किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सुन्नते अबू-बक्र व उमर रजियल्लाहु अन्हुमा पर बैअत करता हूँ तो उन्होंने फ़रमाया कि मुझमें इसकी इस्तेताअत नहीं है। फिर मैंने हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु से यही बातें कीं तो उन्होंने कुबूल फ़रमा लिया।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २३८)

तारीखुल-खुलफ़ा में इसी सफ़े पर एक रिवायत यह भी लिखी है कि हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने तख़लिया में हजरत उसमान रजियल्लाहु अन्हु से कहा कि अगर मैं आपसे बैअत न करूँ तो आप मुझे किससे बैअत करने का मशवरा देंगे। आपने फ़रमाया: हजरत अली से। फिर मैंने हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु से इसी तरह तख़लिया में कहा कि अगर मैं आपसे बैअत न करूँ तो आप मुझे किससे

बैअत करने का मशवरा देंगे तो उन्होंने कहा: उसमान से। मैंने इसी तरह हजरत सअद रजियल्लाहु अन्हु को बुलाया और कहा: मेरा और आपका इरादा तो खिलाफत करने का नहीं है। लेकिन आप मुझे किससे बैअत करने का मशवरा देते हैं तो उन्होंने कहा हजरत उसमान रजियल्लाहु अन्हु से। उसके बाद मैंने तमाम असहाब व आयान से मशवरा किया तो अकसरीयत की राय हजरत उसमान ही की तरफ़ पाई।

खुलासा कलाम यह है कि इन तमाम रिवायतों की रौशनी में हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु समझ गये थे कि खिलाफत के लिये अकसरीयत हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु के हक़ में है। इसलिये आपने इस्लाम की बका व तहफ़फ़ुज और बाहमी इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की खातिर खुद भी हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु से बैअत फ़रमा ली। इसके अलावा हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु के इल्म में हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह हदीसे पाक भी थी जिसमें आपने फ़रमाया था कि ऐ उसमान! मुम्किन है कि अल्लाह तआला तुमको एक कमीज़ पहनायेगा (खिलाफ़त अता फ़रमायेगा) तो अगर लोग तुमसे इसको उतार देना चाहें तो तुम उनकी वजह से उसे मत उतारना। (मिशकातुल-मसाबीह जिल्द हशतुम सफ़ा : ४०२)

एक और हदीस पाक जो उम्मुल-मोमिनीन हजरत हफ़सा रजियल्लाहु अन्हुम से मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत उसमान को बुलवाया। वह आये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम मक़तूल व शहीद होगे तो सब्र करना और जो लिबास अल्लाह तुम्हें पहनायेगा (खिलाफ़त) वह बारह साल और छः माह रहेगी। मगर तुम खुद न उतारना। जब हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु वापस पल्टे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ दी कि अल्लाह तआला उसमान को सब्र दे कि अन्क़रीब वह रोज़े की हालत में शहीद होंगे। मेरे साथ इफ़तार करेंगे। चुनांचे फ़रमाने नबी के मुताबिक़ ऐसा ही हुआ कि बाग़ियों ने आपसे यह मुतालबा किया कि आप खिलाफ़त से अलग हो जायें। लेकिन आपने जामे शहादत नोश फ़रमा लिया मगर खिलाफ़त से अलाहदगी क़बूल न की कि फ़रमाने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यही था।



खलीफा-ए-चहारुम

अमीरुल-मोमिनीन सैय्यदना हजरत

अली मुर्तजा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

मुर्तजा शोरे हक अशजउल अशजई
साकिए शीर व शर्बत पे लाखों सलाम
अस्ले नस्ले सफ़ा वजहे वरस्ले खुदा
बाबे फज़ले विलायत पे लाखों सलाम
अव्वली दाफ़ए अहले रिफ़ज़ व खुरुज
चार मी रुक्ने मिल्लत पे लाखों सलाम
शोरे शमशीरे ज़न, शाहे खैबरे शिकन
परतौए दस्ते कुदरत पे लाखों सलाम

(सैयदना आला हजरत फ़ाजिले बरैलवी अलैहिर्रहम :)



खलीफ़ए चहारुम हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी तालिब करमल्लाह वजहहुल करीम बारह इमामों में से पहले इमाग हैं। आपका इस्मे शरीफ़ 'अली' और 'हैदर' है, 'करार' आपका लक़ब और कुन्नीयत 'अबुल हसन' और 'अबू-तुराब' है। आपको 'अबू-तुराब' से ज़्यादा कोई नाम पसंदीदा न था। जब आपको कोई 'अबू-तुराब' कह कर पुकारता था तो आप बहुत मसरूर और शादमां होते थे क्योंकि यह नाम आपको हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त अता फ़रमाया था जब आप मस्जिद शरीफ़ की दीवार के पास लेटे हुए थे और पुश्ते मुबारक में मिट्टी लग गई थी। उसी वक़्त हुजूर तशरीफ़ लाये तो आपको इस आलम में देखकर फ़रमाया : इजलिस या अबा-तुराब यानी उठिए ऐ अबू तुराब।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०२)

आपका नाम हैदर है। इसके माना हैं 'शेर'। यह नाम आपकी वालिदा फ़ातिमा बिनते असद ने अपने वालिद के नाम पर रखा था। और 'करार' के माना 'पलट-पलटकर हमला करने वाला'। आपके वालिदे गिरामी का नाम अबू-तालिब है। आप हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा-ज़ाद भाई हैं। हज़रत अबू-तालिब ने आपका नाम अली रखा। और हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'असदुल्लाह' का ख़िताब अता फ़रमाया : यानी 'अल्लाह का शेर'। आपका नसबनामा इस तरह है : अली इब्ने अबी-तालिब अल मारुफ़ बिही अब्द मनाफ़ बिन अब्दुल मुत्तलिब मारुफ़ बिही शैबा बिन हाशिम बिन अब्दे-मनाफ़ अलमारुफ़ बिही मुगीरा बिन कुरै अलमारुफ़ बिही ज़ैद बिन किलाब बिन मुरह बिन काब बिन लुवइ बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन कनाना। आपकी विलादते मुबारका ऐन जौफ़ ख़ानए काबा में जुमा के दिन १३ रज्जबुल-मुरज्जब सन् ३० आमुल-फील में हुई। आप वह वाहिद शख्स हैं जिनको यह शर्फ़ हासिल हुआ है। आपकी वालिदा मुहतरमा ने आपकी विलादत के बाद फ़ौरन आपको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में दे दिया जब तक हज़रत अली की आंख बन्द थी। जैसे ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में तशरीफ़ लाये फ़ौरन आँख खोल दी। दुनिया में आने के बाद सब से बड़ा शर्फ़ आपको यह हासिल हुआ कि आपने सबसे पहले हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुक़द्दस चेहरा देखा। गुरले विलादत हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया। अपना

लुआबे दहन हजरत अली के मुंह में डाल दिया। आपकी परवरिश और तालीम व तरबीयत की पूरी जिम्मेदारी हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद अपने जिम्मे करम में ले ली थी। इसलिये आपने कभी बुतपरस्ती नहीं की। इसी वजह से आपको 'कर्रमल्लाह वजहहू' कहते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की दावत दी तो आपने फौरन इस्लाम कुबूल कर लिया। 'तारीखुल-खुलफा' में है जिस वक्त आप ईमान लाये उस वक्त आपकी उम्र शरीफ दस साल थी। बाज लोगों के कौल के मुताबिक नौ साल और बाज आठ साल और कुछ उस से भी कम बताते हैं। आपको भी यह शर्फ हासिल है के आप दामादे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहय-ए-इलाही के मुताबिक अपनी चहेती बेटी हजरत फातिमतुज्जुहरा रजियल्लाहु अन्हा का निकाह आपके साथ किया। आप ही से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नस्ले पाक चली। जैसा कि हदीसे पाक में आपका इरशादे गिरामी है कि अल्लाह तआला ने हर नबी की जुरीयत को उसकी सुल्ब में रखा है और मेरी जुरीयत को अली इब्ने अबी -तालिब की सुल्ब में रखा है। (सवाइके मुहर्रका सफा : ४२४)

आप इमामैने करीमैन हजरत सैयदना इमाम हसन व हजरत सैयदना इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हुमा के वालिदे गिरामी हैं। विलायत की मर्कजी शख्सीयत हैं कि आपकी जात से हर वली को फैजे विलायत मिलता है और शरीअत के दरियाये नापैदा किनार हैं। आपका शुमार पंजतन पाक, अशरए मुबश्शरा और खुलफाए राशिदीन में होता है। आप ही के घर हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवरिश हुई।

जिस रोज हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का से मदीना मनव्वरह की तरफ हिजरत फरमाई तो आप ही को अपने बिस्तरे मुबारक पर लिटा कर अहलियाने मक्का की अमानतें सुपुर्द फरमाई थीं। आप तमाम ग़ज़वात में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ-साथ रहे। सिवाये ग़ज़वए तबूक के कि उस ग़ज़वा के वक्त रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको अपना नाइब बना कर मदीना मनव्वरा में छोड़ दिया था और इरशाद फरमाया कि ऐ अली! क्या तुम इस बात से राजी नहीं हो कि मैं तुम्हें इस तरह छोड़े जाता हूँ जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम जब कोहे तूर पर मुनाजात के लिये तशरीफ ले

गये तो अपनी जगह अपने भाई हारून अलैहिरसलाम को छोड़ गये थे। बस फर्क सिर्फ इतना है कि हारून अलैहिरसलाम खुद भी नबी थे और एक नबी के खलीफा। तुम मेरे नाइब हो, नबी नहीं।

(बुखारी शरीफ जिल्द दोम सफ़ा : ४०३)

आपकी शुजाअत और बहादुरी का डंका पूरे अरब में मशहूर था कि आपका सिर्फ नाम सुनते थे तो दुश्मनाने इस्लाम थर्रा उठते थे। क़िला खैबर को आप ही ने फूट कर फ़रमाया। जंगे उहुद में इन्तिहाई नाजुक वक़्त में भी साथ-साथ रहे और इस ग़ज़वा में सोलह ज़ख़्म खाये। मगर क़दम में लगज़िश न हुई। हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद बइत्तिफ़ाक़ तमाम अहले हल्ल व अक़द ने ३५ हिजरी बरोज़ जुमा १८ ज़िलहिज्जा को खलीफ़ा मुन्तख़ब किया। तीन माह कुछ दिन कम पांच साल तक मसनदे ख़िलाफ़त पर जलवा अफ़रोज़ रहे और १८ या २१ रमज़ानुल-मुबारक सन् ४ हिजरी में नमाज़े फ़ज़्र के लिये जाते हुए मस्जिदे कूफ़ा में अब्दुरहमान बिन मुलजिम ने सरे अक़दस पर ज़हर आलूद तलवार इस जोर से मारी कि दिमाग़ तक पहुंच गई और आपका विसाल हो गया।

हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन और अब्दुल्लाह इब्ने ज़ाफ़र तय्यार ने गुस्ल दिया। इमाम हसन ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। बरिवायत सही कूफ़ा में बमक़ामे नजफ़ मदफून् हुए। उस वक़्त उम्र शरीफ़ ६३ साल थी। आपकी नौ बीवियां थीं जिनसे कुल इक्कीस औलाद हुई।



हज़रत अली मुर्तज़ा रज़िअल्लाहु अन्हु और कुरआने हकीम

खलीफ़ए चहारुम अमीरुल-मोमिनीन हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी तालिब कर्मल्लाह वजहहू की फज़ाइल व मनाकिब में भी कुरआन पाक की बहुत-सी आयतों का नुज़ूल हुआ है। हज़रत इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमः 'ज म उल-जवामे' में एक हदीस पाक नक़ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अलक़ुरआनु मअल अलीई व अलीय्यु म अल क़ुरआन। यानी कुरआन अली के साथ है और अली कुरआन के साथ। तबरानी ने हज़रत उम्मे सलमा से यह हदीस नक़ल की है। इसी तरह एक और हदीसे पाक में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अली और कुरआन हौजे कौसर तक एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे बल्कि साथ साथ रहेंगे। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ४२१)

हकीमुल-उम्मत मुफ़तीए आज़म पाकिस्तान हज़रत मौलाना अहमद यार ख़ान साहब नईमी अलैहिर्रहमः ने इसी की मन्ज़रकशी फ़रमाई है :

यह है ख़ामोश क़ुरआन वह क़ुरआने नातिक है

ना हो जिस दिल में यह उसमें नहीं क़ुरआन का रिश्ता

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : इन्नल क़ुरआ न उनज़ि ल अला सबअति अहरुफ़िम मा फ़ीहा हरफ़ुन इल्ला व लहु ज़हरुं व ब त नुन व इन्न न अलीयन इन्दहू मिनज़ज़ाहिरि वल बातिन। यानी बेशक क़ुरआन सात हफ़ों (सात क़िरअतों) में नाज़िल हुआ है और कोई हफ़ ऐसा नहीं है जिसका ज़ाहिर व बातिन एक न हो और हर हफ़ के ज़ाहिर व बातिन का इल्म हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास है।

(सफ़ीनए नूह जिल्द अब्वल सफ़ा : ८४)

अब हम उन आयाते करीमा का ज़िक्र कर रहे हैं जो हज़रत मौला अली

मुशकिल—कुशा रजियल्लाहु अन्हु के हक में नाजिल हुई हैं।

(१) हजरत मकहूल रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब आयते करीमा व तइयहा उजनुंवाइयः (प—२६ सूरह हाक्कः) और उसे महफूज रखे वह कान कि सुनकर महफूज रखता हो (कन्जुल—ईमान सफा : ८२४) नाजिल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मैंने अपने रब से अली करमुल्लाह वजहहू के लिये सवाल किया कि या अल्लाह अली को न भूलने वाली याददाश्त अता फरमा। चुनांचे हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस दुआ के बाद मैंने जो कुछ भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना वह मुझे याद हो गया और हमेशा याद रहा और फिर कभी ना भूला।

(तफसीरे कबीर मिस्री अल—जुजुउस्सल्लासून सफा : १०७—तफसीरे हुसैनी जिल्द दोम सफा : ५६६)

(२) हजरत इब्ने—अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु के पास चार दिरहम थे और कुछ ना था। आपने उन चार दिरहमों को इस तरह खैरात किया कि एक दिरहम रात को, एक दिन को, एक पोशीदा, और एक एलानिया तौर पर तो आपके इस फल पर अल्लाह तआला ने यह आयते करीमा नाजिल फरमाई : अल्लजी न युनफिकू न अम्वालहुम बिल्लैलि वन्नहारि सिरों व अलानियतन फलहुम अजरुहुम इन द रब्बिहिम वला खौफुन अलैहिम वला हुम यहजूनून (सूरह बकरा—प—३ रुकू ६) यानी वह जो अपने माल की खैरात करते हैं, रात में और दिन में, छुपे और जाहिर, उनके लिये उनका अज्र उनके रब के पास है। उनको न कुछ अन्देशा हो न कुछ गम। (कन्जुल—ईमान सफा : ६८)

(तफसीरे कबीर मिस्री अल—जुजुउस्साबे सफा : ८६ 'सवाइके मुहर्रका' सफा : ४४५)

साहिबे तफसीरे हुसैनी हजरत मुल्ला हुसैन वाइज काशफी अपनी मशहूर व मारुफ तफसीर हुसैनी जिल्द दोम सफा : ८७ में लिखते हैं कि इस आयते करीमा के नाजिल होने के बाद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु से पूछा कि ऐ अली! किस बात ने तुम्हें इस तरह सदका देने पर आमादा किया। तो आपने जवाब दिया कि या रसूलुल्लाह! सदका व खैरात देने का तरीका उन चार सूरतों के सिवा

मैंने कोई और न देखा। इसलिये मैंने उन चारों सूरतों को लाजिम पकड़ लिया कि उनमें से एक तो कुबूल होकर महल्ले रजा पर पहुंच जायेगी।

(3) हजरत सैयदना इब्ने-अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि जब यह आयते करीमा नाजिल हुई इन्नमा अन त मुन्जिरुं व लिफुल्लि कौमिन हादिन (सूरह रअद-प : १३ रुकू ७)

तुम तो डर सुनाने वाले हो और हर कौम के हादी।

(कन्जुल-ईमान सफा : ३६१)

उसके बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सीनए मुबारक पर दस्ते अक़दस रखकर फरमाया अनल मुन्जिरु सुम्म म औ मा इला मन्कबे अलीइन रजियल्लाहु अन्हु व का ल अन्तल हादिल मुहतदू न मिम बादी।

मैं डर सुनाने वाला हूँ। फिर हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु के कन्धे पर हाथ रखकर फरमाया : ऐ अली! तू हादी है और मेरे बाद राह पाने वाले तुझसे राह पायेंगे। विलायत के सिलसिले तुझसे जारी होंगे और उम्मत के औलिया उलमा और अग़वास व अक़ताब तुझसे फ़ैज पायेंगे। (तफ़सीरे कबीर मिस्री अल-जुज़उत्तासे अशर सफा : १४)

(४) तफ़सीरे कशशाफ़ में है कि एक दिन हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु मुसलमानों की एक जमाअत में तशरीफ़ ले जा रहे थे। मुनाफ़िकीन ने उन्हें देखकर आँखों से इशारे किये और हंसी और मस्खरापन किया। उनकी शान में नाज़ैबा कलिमात कहे तो हजरत अली रजियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिदे नब्वी में न पहुंचे होंगे कि अल्लाह तआला की जानिब से यह आयत नाज़िल हो गई। व इज़ा मर्रु बिहिम यतग़ामज़ून।

(सूरह अलमुतफ़िफ़ीन प-३० रुकू ८)

यानी और जब वह उन पर गुज़रते तो यह आपस में उनपर आँखों से इशारे करते हैं। (कन्जुल-ईमान सफा ८५८)

(तफ़सीरे हुसैनी कादरी जिल्द दोम सफा : ६१८)



हजरत अली मुर्तजा रजिअल्लाहु अन्हु और अहादीसे करीमा

खलीफ़े चहारुम हजरत सैयदना मौला अली मुशकिल-कुशा रजियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल में भी कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। बल्कि इमाम अहमद फ़रमाते हैं कि जितनी अहादीस हजरत अली रजियल्लाहु की फ़ज़ीलत में वारिद हुई हैं किसी और सहाबी की फ़ज़ीलत में वारिद नहीं हुई हैं। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५५)

(१) हजरत संहल बिन सअद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंगे ख़ैबर के रोज़ फ़रमाया : कल मैं यह झण्डा जरूर उस शख्स को दूंगा जिसके हाथ पर अल्लाह तआला फ़तह मर्हमत फ़रमायेगा। लोग तमाम रात उसी हसरत में रहे कि देखिये सुबह किस खुशनसीब को झण्डा अता फ़रमाया जायेगा। जब सुबह हुई तो हर एक यह तमन्नां लिये हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़िर हुआ कि झण्डा उसे मर्हमत हो। (इतने में) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ न अलीयुब्नु अबी तालिबिन। अली बिन अबी-तालिब कहां हैं ?

लोगों ने जवाब दिया : या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उनकी आँखें दुखती हैं। फ़रमाया उन्हें बुला लाओ। पस उन्हें आपकी ख़िदमत में पेश किया गया। तो आपने उनकी आँखों में अपना लुआबे दहन लगा दिया। और उनके लिये दुआ फ़रमाई। पस वह इस तरह शिफ़ाय़ाब हो गये जैसे उन्हें तकलीफ़ ही नहीं हुई थी। फिर आपने उन्हें झण्डा अता फ़रमाया। (अल्लाह तआला ने आपके हाथों फ़तह अता की)।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०१)

(२) हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ला युहिब्बु अलीयन

मुनाफिकुन वला युबगिजुहु मोमिनुन यानी अली से मुनाफिक मुहब्बत नहीं करता और उनसे मोमिन बुग़्ज़ नहीं रखता। आप ही से एक और हदीस मरवी है। फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मन सब ब अलीयन फ़क़द सब्बनी यानी जिस ने अली को बुरा कहा उसने मुझे बुरा कहा।

(तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा : ७१२ 'मिअ्तुल-मनाजीह' जिल्द हशतुम सफ़ा : ४२३)

(३) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है वह कहते हैं कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा के दरमियान भाईचारा कराया तो हज़रत अली आये। उनकी आँखों से आंसू जारी था। अर्ज किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने अपने सहाबा में भाईचारा करा दिया लेकिन मुझे किसी का भाई न बनाया। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अन त अखी फ़िदुनिया वल आखिरः। यानी ऐ अली! तुम दीन व दुनिया में मेरे भाई हो।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७१३)

नोट:- ख़याल रहे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु रिश्ता में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद भाई हैं। जब मदीना में अनसार व मुहाजिरीन में मवाखात (भाईचारा) कराया तो उस वक़्त भी उनको अपना भाई फ़रमाया। लेकिन कभी भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर अनवर को अपना भाई या बड़ा भाई कह कर नहीं पुकारा बल्कि जब भी पुकारा तो या रसूलुल्लाह, या नबीयल्लाह, या हबीबल्लाह! कह कर ही पुकारा। फिर किसी ऐरे-ग़ैरे को क्या हक़ पहुंचता है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना भाई कह कर पुकारे। अल कादरी।

(४) तबरानी और अल बज़्ज़ाज़ हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से और हाकिम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्यान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अ ना मदीनतुल-इल्मे व अलीयुन बाबुहा। मैं इल्म का शहर हूँ और अली उसका दरवाज़ा हैं। हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहि र्रहमं फ़रमाते हैं। यह हदीस हसन है और जिन्होंने उसे मौजू कहा है उन्होंने ग़लती की है।

(तारीखुल-खुलफ़ हुसना : ३५७)

एक रिवायत इस तरह भी आई है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अ न दारुल हिकमते व अलीयुन बायुहा में हिकमत का घर हूँ और अली उसका दरवाजा हैं।

(तिर्मिजी शरीफ जिल्द दोम सफ़ा : ७७५)

(५) अहमद ने अबुत्तुफैल से रिवायत की है कि एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक वसी मक़ाम पर लोगों को जमा करके फरमाया कि मैं तुमसे क़सम देकर पूछता हूँ कि बताओ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यौमे ग़दीर ख़म के मौक़ा पर मेरी निसबत क्या फरमाया था? उस मजमा से तीस आदमी खड़े हुए और उन्होंने कहा कि हम गवाही देते हैं कि हमारे सामने हज़रत रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह इरशाद फरमाया था अल्लाहुम म मन कुन्तु मौलाहु फ़अलीयुन मौलाहु अल्लाहुम्म म वाले मन वालाहु व आदु मन आदाह। ऐ अल्लाह! मैं जिसका दोस्त हूँ अली भी उसके दोस्त हैं। इलाही! अली से जो मुहब्बत रखे उससे तू भी मुहब्बत फरमा। जो अली से बुग़ज़ रखे तू भी उससे दुशमनी रख।

(तारीखुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५६)

(६) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत ब्यान की कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना है कि अ न व अलीयुन नूरम बै न यदयल्लाहि तआला क़ब ल ऐंयख़लु क आ द म बिअरबअते अ श र अल फ़ आमिन फ़लम्मा ख़ ल क़ल्लाहु आ द म क़स स म ज़ालिकन्नूर जुज़ऐनि फ़ जुज़उन अ न व जुज़आ अलीइन मैं और अली तख़लीके आदम से चौदह हज़ार साल पहले एक नूर की सूरत में अल्लाह तआला के हुज़ूर में मौजूद थे। फिर जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फरमाया तो उस नूर को दो अज़्जा में तक़सीम फरमाया चुनांचे एक जुज़ मैं और एक जुज़ अली हैं।

(मुशकिल-कुशा सफ़ा : १३५ बहवाला 'रियाजुन्नज़रा' जिल्द दोम सफ़ा : २१७)

(७) हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया इन्न अलीयम मिनी व अ न मिन्हु व हु व वलीय्युन कुल्लि मूमिनिन बेशक अली मुझसे हैं और मैं अली से हूँ और अली हर मोमिन के वली (मददगार) हैं।

(तिर्मिजी जिल्द दोम सफ़ा : ७७१ मिरआत शरह मिश्कात जिल्द
हशतुम सफ़ा : ४१६)

(८) हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मन अताअनी फ़क़द अताअल्लाह व मन असाानी फ़क़द असल्लाह व मन अताअ अलीयन फ़क़द अताअनी व मन असा अलीयन फ़क़द असाानी जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह तआला की इताअत की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की। और जिसने अली की इताअत की उसने मेरी इताअत की और जिसने अली की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की। (सफीनए नूह जिल्द अब्वल सफ़ा ५७ बहवाला 'अर्रियाजुन्नज़रा' सफ़ा : २२०)

(९) इब्ने अदी और इब्ने असाकिर अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मुझे मेराज हुई तो मैंने अर्श के पाये पर ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह लिखा देखा और साथ में (हज़रत) अली का नाम भी था। ('ख़साइसुल-कुब्रा' जिल्द अब्वल सफ़ा : २५)

(१०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अली क़सीमे दौज़ख़ हैं। अपने दोस्तों को बहिश्त में अपने दुशमनों को दौज़ख़ में दाख़िल फ़रमायेंगे।

(अल-अम्न वल-उला सफ़ा : ५६ सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ४२६)



हजरत अली मुर्तजा

सहाब-ए-किराम व सुलहा-ए-उम्मत

रिजवानुल्लाह अलैहिम अजमईन

अबू-याला हजरत अबू-हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि हजरत उमर फारूक रजियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फरमाया कि हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु को तीन फज़ीलतें ऐसी मिली हैं कि अगर मुझे उनमें से एक भी मिल जाती तो वह मेरे नज़दीक तमाम दुनिया से ज्यादा महबूब होती। लोगों ने दर्याफ़्त किया वह फज़ाइल क्या हैं? तो आपने फरमाया : अव्वल, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे अपनी साहिबज़ादी (हजरत) फ़ातिमा का निकाह किया।

दूसरा, आपने उन दोनों को मस्जिद में रखा और जो कुछ उनको वहां हलाल है, मुझे हलाल नहीं। तीसरा जंगे खैबर में अलम उनको अता फरमाया। (तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २५६)

हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं अली से ज्यादा इल्मे सुन्नत का जानने वाला कोई नहीं। हजरत सईद बिन मुसयिब रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु के पास जब कोई मुशकिल सवाल आता और हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु मौजूद न होते तो हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु तअव्वुज़ पढ़ा करते कि कहीं उस सवाल का जवाब ग़लत न हो जाये। हजरत सईद बिन मुसयिब का यह भी कौल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाबे किराम में से सिवाये हजरत अली के और कोई यह कहने वाला न था कि जो कुछ पूछना है मुझसे पूछ लो। (तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २५८)

हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु का यह भी कौल है कि हजरत अली ही सबसे ज्यादा बेहतर फैसला करने वाले (काज़ी) हैं। हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि सहाबा आपस में कहा करते थे कि अली रजियल्लाहु हम अहले मदीना में सबसे ज्यादा मामला फ़हम हैं। (तारीखुल खुलफ़ा सफ़ा : २५७)

हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि मदीना मनव्वरह में फस्ले कजाया (मुकद्मात के फैसल करने) और इल्मे फराइज में अली इब्ने अबी तालिब से ज्यादा इल्म रखने वाला और कोई नहीं था।

(तारीखुल-खुलफा सफा : २५८)

हजरत अब्दुल्लाह बिन अयाश बिन अबी रबीआ फरमाते हैं कि हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु में इल्म की कुव्वत, इरादे की पुख्तागी, मजबूती और इस्तिकलाल मौजूद था। खानदान भर में आपकी बहादुरी मशहूर थी। आप अहकामे फिक्ह व सुन्नत में माहिर थे।

(तारीखुल-खुलफा सफा : २५८)

हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि कुरआने करीम में जिस जगह या ऐयुहल्लजी न आमनू है वहां समझना चाहिए कि हजरत अली उनके अमीर व शरीफ हैं। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में जहां भी हजरते अली का जिक्र फरमाया खैर के साथ फरमाया है।

(तारीखुल खुलफा सफा : २५८)



खुलफ़ा-ए-सलासा की खिलाफ़त और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

खलीफ़ाए चहारुम हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी-तालिब कर्म्मल्लाह वजहहू ने अपने पेशरू खुलफ़ाए सलासा हज़रत सैयदना अबू-बक्र सिदीक़, हज़रत सैयदना उमरे फ़ारूक़ और हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन में हर एक की खिलाफ़त को बख़ुशी मंज़ूर फ़रमाया था। आपने कभी-भी उनमें से किसी की खिलाफ़त का इन्कार नहीं फ़रमाया। जैसा कि इब्ने असाकिर ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु के हवाले से लिखा है कि जिस वक़्त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बसरा तशरीफ़ लाये तो इब्नुल कवा और हज़रत कैस बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने खड़े होकर आपसे यह दर्याफ़्त किया कि हमें यह बतलाइये कि बाज़ लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपसे वादा फ़रमाया था कि मेरे बाद तुम खलीफ़ा होगे। यह बात कहां तक सच है? क्योंकि आपसे ज़्यादा इस मामले में सही बात और कौन कह सकता है? आपने फ़रमाया कि यह ग़लत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे कोई वादा फ़रमाया था। जब मैंने आपकी नुबुव्वत की सबसे पहले तसदीक़ की तो अब आप पर झूठ क्यों तराशूं। अगर हुज़ूर सल्लुल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे इस किस्म का कोई वादा किया होता तो मैं हज़रत अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मिम्बर पर क्यों खड़ा होने देता? मैं उन दोनों को क़त्ल कर डालता ख़्वाह मेरा साथ देने वाला कोई न होता। यह तो सबको मालूम है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दफ़अतन न किसी ने क़त्ल किया और न आपने यकायक़ इन्तिक़ाल फ़रमाया। बल्कि आप चन्द रोज़ मर्जुलमौत में मुवतला रहे। जब आपकी बीमारी ने शिद्दत इख़तियार की और मुअज़्ज़िन ने आपको नमाज़ पढ़ाने के लिये बुलाया। आपने हज़रत अबू-बक्र सिदीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया। उन्होंने नमाज़ पढ़ाई और आप अपने मक़ाम से मुशाहिदा फ़रमाते रहे। हालांकि उस अरसा में एक बार उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा सिदीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने

हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की इमामत के लिये आपको इस इरादे से वाज़ रखना चाहा तो आपको गुर्रआ आया और आपने फ़रमाया कि तुम तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने की ओरत हो। जाओ, अबू-बक्र ही को कहो कि वह नमाज़ पढ़ायें। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हुआ तो हमने अपने मामलात में (यानी ख़िलाफ़त में) ग़ौर किया। फिर उसी शख्स को अपनी दुनिया के वास्ते भी इख़्तियार कर लिया जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे दीन (इमामत) के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया था। क्योंकि नमाज़ दीन की असल है। हुज़ूर दीन और दुनिया दोनों के काइम रखने वाले थे।

लिहाज़ा हम सबने हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत कर ली। सच्ची बात भी यही है कि आप ही उसके अहल भी थे। इसी वास्ते आपकी ख़िलाफ़त में किसी ने इख़िलाफ़ नहीं किया और न किसी ने किसी को नुक़सान पहुंचाने का इरादा किया और न किसी ने आपकी ख़िलाफ़त से सरग़रदानी की। मैंने भी उसी बिना पर आपका हक़ अदा किया और आपकी इताअत की। मैंने आपके लश्कर में शरीक होकर काफ़िरों से जंग की। माले ग़नीमत और बैतुल-माल से जो आपने दे दिया वह बख़ुशी कुबूल कर लिया। जहां आपने मुझे जंग के लिये भेजा और दिल खोल कर लड़ा। यहां तक कि आपके हुक्म से शरई सज़ायें भी दीं (यानी हद जारी की)। फिर जब हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के विसाल का वक़्त करीब आ गया, तो आपने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना ख़लीफ़ा बना गये। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़े अक़बर के बेहतरीन जानशीन और सुन्नते नब्वी पर अमल करने वाले थे। तो हमने उनके हाथ पर भी बैअत कर ली। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को भी ख़लीफ़ा बनाने पर किसी शख्स ने मुतलक़ इख़्तिलाफ़ नहीं किया और न कोई किसी के नुक़सान रसानी के दरपै हुआ। यकीनी तौर पर कोई भी फ़र्द हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त से बेज़ार नहीं हुआ। पहले की तरह हज़रत उमर के भी मैंने हुक्क़ अदा किये। उनकी मुकम्मल तौर पर इताअत की जो कुछ उन्होंने दिया मैंने ले लिया। उन्होंने मुझे जंगों में भेजा जहां मैंने दुशमनों से मुक़ाबले किये और आपके अहद में भी अपने कोड़ों से मुजरिमों को सज़ा दी। जब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु का भी वक़्त विसाल आया तो उस वक़्त मैंने अपने दिल में ग़ौर किया और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अपनी कराबत, इस्लाम लाने में अपनी सबक़त, अपने आमाल और अपनी बाज़ दीगर फ़ज़ीलतों की जानिब ग़ौर

किया तो मुझे ख्याल जरूर पैदा हुआ कि हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु अब मेरी खिलाफत में एतराज नहीं करेंगे। लेकिन शायद हजरत उमर को यह खौफ दामनगीर हुआ कि वह कहीं ऐसा खलीफा नामजद न करे जिसके आमाज का खुद हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु को कब्र में जया देना पड़े। इस ख्याल के पेशे नजर उन्होंने अपनी औलाद को भी नजर अन्दाज कर दिया। खिलाफत के लिये नामजद नहीं फरमाया। खलीफा के इतिखाब का मसला छः कुरैशियों के सुपुर्द कर दिया जिनमें एक मैं भी था। जब उन छः अरकान ने खलीफा के इतिखाब के लिये मजलिस तलब की तो मुझे ख्याल आया कि अब खिलाफत का बार मेरे कन्धों पर रख दिया जायेगा और यह मजलिस मेरे बराबर किसी दूसरे को हैसियत नहीं देगी। मुझे ही खलीफा मुन्तखब करेगी। उसके बाद हजरत अब्दुरहमान बिन औफ रजियल्लाहु अन्हु ने हम सबसे वादा लिया कि अल्लाह तआला हममें से जिसको खलीफा मुकरर फरमा दे हम सब उसकी इताअत करेंगे और उसके अहकाम को बरजा व रगबत बजा लायेंगे। उसके बाद हजरत अब्दुरहमान बिन औफ रजियल्लाहु अन्हु ने हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु के हाथ पर खुद बैअत की। उस वक्त मैंने सोचा कि मेरी इताअत मेरी बैअत पर गालिब आ गई और मुझसे जो वादा लिया गया था वह (असल में) दूसरे की बैअत के लिये था। बहरहाल मैंने हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु के हाथ पर भी बैअत कर ली। खुलफा साबकीन की तरह उनकी इताअत व फरमांबरदारी की और हजरत उसमान गनी के हुक्क अदा किये। उनकी क्यादत में जंगें लड़ीं, उनकी अतियात को कुबूल किया और शरई सजायें भी दीं। फिर हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद मुझे ख्याल हुआ कि वह दोनों खलीफा जिनसे मैं ने लफ्जे बिस्सलात के साथ बैअत की थी, इतिकाल फरमा चुके। जिनके लिये मुझसे वादा लिया गया था वह भी अब रुखसत हो गये। पस यह सोच कर मैंने बैअत लेनी शुरू कर दी। चुनांचे मुझसे अहले हरमैन शरीफैन (मक्का और मदीना) के बाशिन्दों ने बैअत कर ली। अब खिलाफत के लिये मेरे मुकाबले में वह शख्स खड़ा हुआ है (यानी हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु) जो कराबत, इल्म और सब्कते इस्लाम में मेरे बराबर हो ही नहीं सकता। और मैं हर तरह उस शख्स के मुकाबला में खिलाफत का ज्यादा मुस्तहिक हूं। (तारीखुल-खुलफा सफा : २६४)

हजरत जाफर बिन मुहम्मद अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक शख्स ने हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु से दर्याप्त किया कि मैंने खुत्बा में आपको फरमाते सुना है कि ऐ अल्लाह ! हमको वैसी ही सलाहियत अता

फरमा देंगे तूने हिदायतयाद खुलफाए राशिदीन को अता फरमाई थी। अजराहें करन तूने इन हिदायतयाद खुलफाए राशिदीन के नाम बता दें। यह सुनकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आबदीदा हो गये और फरमाया वह मेरे दोस्त अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा थे। इनमें से हर एक इमाने हुदा और सैखुल-इस्लाम था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिन के बाद वह दोनों कुरैश के मुक्तदा थे। जिस शख्स ने उनकी पैरवी की वह अल्लाह तआला की जमाअत में दाखिल हो गया।

(तारीखुल-खुलफा सफ़ा : २६६)

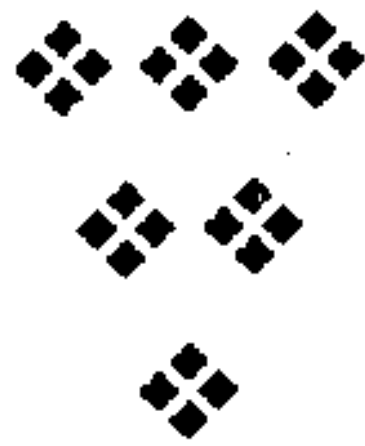
मुहतरम कारिर्न! अमीरुल-मोमिनीन हज़रत सैयदना अली करमल्लाह वजहहू के इन फ़ैसलाकुन इरशादात के बाद किसी तरहद की गुन्ज़ाईश बाकी नहीं रहती। हर वह शख्स जो हुब्बे अली का दावेदार है। उसे फरमाने अली को दिल व जान से तसलीम कर लेना चाहिये। और दिल से इस बात को क़तई तौर से निकाल देना चाहिये कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ही ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ थे। मगर हज़रत अबू-बक्र व उमर व उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उनका हक़ छीन लिया।

मआज़ल्लाह! अल्लाह हम को सहाबाए किराम व खुलफ़ाए राशिदीन की मुहब्बत अता फरमाये—आमीन।

ख़िलाफ़त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद दूसरे रोज़ तमाम सहाबाए किराम, जो मक्का और मदीना मनव्वरा में थे (सिवाये हज़रत तलहा व हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के), हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत की और आप तमाम मुसलमानों के ख़लीफ़ा मुक़र्रर हो गये। उसके बाद हज़रत तलहा और जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का चले गये। हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा को साथ लेकर खूने उसमान का मुतालबा करते हुए बसरा पहुंचे। जिस वक़्त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़बर मिली तो आप भी इराक़ तेशरीफ़ ले गये। और बसरा में हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर और हज़रत आइशा से मिले, आमना-सामना हुआ। फिर जंग शुरू हो गई। यह लड़ाई जंगे जुमल के नाम से जमादिल-आख़िर सन् ३६ हिजरी में हुई। इस जंग में हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा शहीद हो गये। और तरफ़ैन के तेरह हज़ार (१३०००) मुसलमान भी शहीद हो गये।

बराबर में आप पन्द्रह रोज़ रुके, फिर कूफ़ा तशरीफ़ ले गये। आपके कूफ़ा पहुँचने के बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुर्ज किया। उनके साथ शामी लशकर था। आप आगे बढ़े और सिफ़्फ़ीन के मैदान पर माहे सफ़र सन् ३७ हिजरी में ख़ूब मारका आराई हुई। कई रोज़ तक यह सिलसिला चलता रहा। आख़िर एक मुआहिदा पर यह जंग ख़त्म हुई। उसे जंगे सिफ़्फ़ीन कहते हैं।



फ़ज्ज़ाइल

सैयदतुन्निसा जिगर गोशाए रसूल
सैयदतुना हज़रत

फ़ातिमतुज्जोहरा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
इरशाद फ़रमाते हैं :
फ़ातिमतु बिज़अतुम मिन्नी फ़मन अग़ज़बहा अग़ज़बनी
(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०६)

फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है जिसने उनको नाराज़ किया
उसने मुझे नाराज़ किया।

सैयदतुन्निसा हजरत फातिमतुज्जोहरा रजियल्लाहु अन्हा

खूने खैरुसुल से है जिनका खमीर | उनकी बेलोस तीनल पे लाखों सलाम
उस बतूले जिगर पारए मुस्तफा | हुजला आराये इफ्त पे लाखों सलाम
जिसका आंचल न देखा मह व महर ने | उस रिदाये नजाहत पे लाखों सलाम
सैयदा जाहेरा तैयबा ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

(सैयदना आला हजरत फजिले बरैलवी अलैहिर्रहम)

नाम, लक़ब और पैदाइश : आपका नामे नामी इसमे गिरामी फातिमा रजियल्लाहु अन्हा और लक़ब सैयदतुन्निसा, जोहरा, बतूल है। हुजूर सरवर काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी चहेती बेटी मखदूम काइनात रजियल्लाहु अन्हा का नाम फातिमा रखा तो उसके मुतअल्लिक इरशाद फरमाया : इन्नमा सम्मैतु इबनती फातिम त लिअन्नल्लाह फ त म हा व मुहीब्बीहा अनिन्नार यानी मैंने अपनी बेटी का नाम फातिमा इसलिये रखा है कि अल्लाह तआला ने उसको और उसके चाहने वालों को दौजख़ से आज़ाद किया है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ५४०, शरह फ़िक्ह अकबर सफ़ा : १३३)

तबरानी ने अपने सिका आदमियों से ब्यान किया है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : इन्नमा सम्मैतु फातिम त लिअन्नल्लाह तआला क़द फ त म हा व जुरिय त हा अनिन्नारि यौमल क़यामः।

मैंने अपनी बेटी का नाम फातिमा इसलिये रखा है कि अल्लाह तआला ने उसको और उसकी औलाद को क़यामत के दिन कोई अज़ाब नहीं देगा। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ५४०) (शरह फ़िक्ह अकबर सफ़ा : १३३) लक़ब जोहरा यानी 'कली' आप जन्नत की कली थीं आपंके जिस्म से जन्नत की खुशबू आती थी जिसे हुजूर सूँघा करते थे। आप अपने ज़माने की तमाम औरतों से फज़ीलते दीन और हुस्न व जमाल में यक्ताये रोज़गार थीं। चुनांचे हजरत अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने

अपने वालिदा से हजरत फातिमतुज्जोहरा रजियल्लाहु अन्हा के मुतअल्लिक पूछा तो फरमाया सैयदा चौदहवीं रात के चाँद की तरह हसीन व जमील थीं। (सफीनए नूह जिल्द अव्वल सफा : १४) आपके लकब 'बतूल' के माना है 'मुन्कता होना'। चूंकि आप दुनिया में रहते हुए भी दुनिया से अलग और बे-तअल्लुक थीं। आपकी तवज्जह इस फानी दुनिया की ऐश व इशरत की तरफ बिल्कुल नहीं थी बल्कि हर वक्त आप यादे इलाही में मसरूफ रहती थीं। इसलिये आपको 'बतूल' कहा जाता है। (शरह फिक्ह अकबर सफा : १३३)

हजरत अल्लामा मुफ्ती अहमद यार खान साहब नईमी अलैहिर्रहमः ने क्या खूब फरमाया है —

बतूल व फातिमा जोहरा लकब इस वास्ते पाया

कि दुनिया में रहें और दें पता जन्नत की निकहत का

आप के वालिदे गिरामी हुजूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सैयदना मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और वालिदा माजिदा हजरत खदीजतुल-कुब्रा रजियल्लाहु अन्हा हैं। हजरत खदीजा को यह शर्फ हासिल है कि आप हुजूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली जौजए मुतहहरा हैं। जब तक आप जिन्दा रहीं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी और से निकाह नहीं फरमाया। आप ही ने सबसे पहले ईमान कुबूल फरमाया। आपके बत्ने मुबारक से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार साहिबजादियां हजरत रुकैया, हजरत जैनब, हजरत उम्मे कुलसूम और हजरत फातिमतुज्जोहरा रजियल्लाहु अल्लाहु अन्हुन्न हैं और तीन साहिबजादे। एक और रिवायत में दो साहिबजादों के बारे में लिखा है। हजरत कासिम, हजरत अब्दुल्लाह, हजरत इब्राहीम, हजरत मारिया क्बतीया के बतन से हैं।

हजरत फातिमतुज्जोहरा की पैदाइश कै सन् में इख्तिलाफ पाया जाता है। कोई कहता है कि आपकी विलादत एलाने नुबुव्वत से एक साल पहले हुई। बाज कहते हैं कि विलादत इक्तालीसवें साल में हुई। इब्ने जौजी का कहना है कि आपकी पैदाइश इजहारे नुबुव्वत से पांच साल पहले हुई है। मशहूर तर रिवायत यही है। (मदारिजुन्नुबुव्वत : जिल्द दोम सफा : ७८७)

हजरत सैयदा का बचपन शरीफ और जिन्दगी का हर लम्हा निहायत पाकीजा था। ऐसा क्यों न होता कि एक तरफ हुजूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दूसरी तरफ हजरत सैयदा

खदीजतुल- कुब्रा रजियल्लाहु अन्हा की आगोशे रहमत आपकी तरबीयत-गाह थी। आप रात दिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हजरत खदीजतुल- कुब्रा रजियल्लाहु अन्हा की जुबाने पाक से पाकीजा अफवाल और खुदा- शनासी के तजकरे सुनतीं और उनके मुकद्दस आमाल व अफआल का मुशहिदा फरमाती थीं। इसीलिये हजरत आइशा सिदीका रजियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि मैंने फातिमतुज्जोहरा से ज्यादा किसी को भी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीरत व किरदार, राह व रविश और कयाम व कुऊद में मुशाबह नहीं देखा। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह आदते करीमा थी कि जब हजरत सैयदा फातिमा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ लातीं तो हुजूर उनके लिये खड़े हो जाते। उनका हाथ चूमते। उनकी पेशानी को बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते। जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ ले जाते तो यह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये खड़ी हो जातीं और आगे बढ़कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दस्ते मुबारक थाम लेतीं और अपनी जगह पर बिठातीं।

हजरत सैयदा की उम्र शरीफ जब नौ बरस की थी कि आपकी वालिदा मुहतरमा हजरत खदीजतुल-कुब्रा रजियल्लाहु अन्हा आपकी बेहतरीन तरबीयत फरमा कर इंतिकाल फरमा गई। जब आपकी उम्र बड़खतिलाफे रिवायत 23 साल की हुई तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया जिसके बाइस आप हमेशा बीमार रहतीं और उसी ग़म में आपका इंतिकाल हो गया। आपकी सीरत पर मुख्तसरन रौशनी के लिये आपने मुन्दरजा बाला रिवायतों को पढ़ा। अब कुछ और मालूमात के लिये आइन्दा औराक का मुताला कीजिए।

हजरत फातिमतुज्जोहरा का निकाह रजियल्लाहु अन्हा

मखदूमए काइनात जिगर पारए मुस्तफा सैयदतना खातूने जन्नत रजियल्लाहु अन्हा आलमे तुफूलियत से जब आलमे बुलूगियत में पहुंचीं तो हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमते आली में बहुत से पैग़ाम आये। लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर पैग़ाम को यह कह कर रद्द फरमा दिया कि मुझे इस मामले में अल्लाह तआला

के हुक्म का इंतज़ार है। हम ज़रा क़दरे तफ़रील के साथ हज़रत फ़ातिमतुज्जोहरा के निकाह के मुताबिक़ मोतवर व मुस्तनद किताबों के हवालजात की रौशनी में कुछ अहम और ज़रूरी बातें तहरीर कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

सही तरीन रिवायत के मुताबिक़ हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिज़रत के दूसरे साल रमज़ानुल मुबारक में हज़रत खातूने जन्नत की शादी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमा दी। बाज़ ने रज्जब में निकाह होने का ज़िक्र किया है और बाज़ माहे सफ़र भी कहते हैं। वक्ते निकाह हज़रत फ़ातिमतुज्जोहरा की उम्र शरीफ़ १५ साल साढ़े पाँच माह थी। बाज़ कहते हैं सोलह साल और बाज़ अट्ठारह साल भी कहते हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र मुबारक इक्कीस साल पाँच माह थी। हज़रत अली ने हज़रत फ़ातिमा की ज़िन्दगी में कोई दूसरी शादी नहीं की। हां, अलबत्ता एक दफ़ा इरादा किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली! इससे फ़ातिमा को तकलीफ़ पहुंचेगी और फ़ातिमा की तकलीफ़ मेरी तकलीफ़ का बाइस बनती है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। अहमद ने भी एक ऐसी ही रिवायत ब्यान की है वह कहते हैं कि हज़रत अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत फ़ातिमा के निकाह के पैग़ाम के लिये हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़िर हुए तो आपने इंकार फ़रमा दिया। इरशाद फ़रमाया कि फ़ातिमा के निकाह के लिये मुझे वहय-ए-इलाही का इंतज़ार है। दूसरे हज़रत उमर को फ़रमाया कि फ़ातिमा ख़ुर्द साल हैं। फिर उम्मे-ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तरगीब दी।

सवाइके मुहर्रका में है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सिद्दीके अकबर व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पैग़ाम को रद्द फ़रमा दिया तो उन दोनों हज़रत ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को इस मामले में तरगीब दी और फ़रमाया : ऐ अली! आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहल और ख़्वास में से हैं। आप जाकर हज़रत फ़ातिमा के लिये निकाह का पैग़ाम दे दीजिए। चुनांचे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उन दोनों के कहने के मुताबिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की बारगाहे आलिया में पहुंचे और सलाम अर्ज किया हुजूर ने सलाम का जवाब देते हुए फरमाया : ऐ अबू-तालिब के फर्जन्द! क्या बात है, कैसे आना हुआ? हजरते अली अर्ज करते हैं कि मैं आपकी बारगाह में इसलिये हाजिर हुआ हूँ कि मैं फातिमा का पैगाम अपने लिये पेश करूँ। उस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मरहवा व अहलन फरमाया और उससे ज्यादा कुछ न फरमाया।

हजरत अनस रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में मौजूद था कि उस वक्त हुजूर पर वह कैफियत तारी हुई जिसका नुजूले वहय के वक्त जुहूर होता था। फिर जब आपकी हालत मामूल पर आई तो आपने मुझसे फरमाया : ऐ अनस! रब्बुल-अर्श के पास से मेरे हुजूर जिब्रईल अलैहिस्सलाम आये और कहा कि हक तआला इरशाद फरमाता है कि फातिमा का निकाह अली मुर्तजा के साथ कर दो। तो ऐ अनस ! जाओ और अबू-बक्र व उमर व तलहा व जुबैर, और जमाअते अन्सार को बुला लाओ। जब यह सब हाजिर हो गये तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बलीग खुतबा दिया जिसमें अल्लाह तआला की हम्द व सना और निकाह की तरगीब फरमाई। उसके बाद हजरते अली से पूछा कि अदाये महर के वास्ते तुम्हारे पास क्या है? हजरते अली ने जवाब दिया कि एक घोड़ा और एक जिरह है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : तुम मुजाहिद हो और घोड़ा जिहाद के लिये जरूरी है। जिरह को फरोख्त कर डालो। चुनांचे वह जिरह हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु ने ४८० दिरहम में खरीद ली (जो बाद में हजरत उसमान गनी रजियल्लाहु अन्हु ने बतौरे हदिया हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु को वापस कर दिया।) हजरत अली ने पूरी-पूरी रकम लाकर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश कर दी। हुजूर ने उसमें से कुछ हजरत बिलाल को दिया कि खुशबू खरीद लायें और कुछ रकम जहेज वगैरह के लिये उम्मे-सुलैम रजियल्लाहु अन्हा के हवाले कर दिया। उन्होंने उस रकम से दो चादरें, दो कतान वाली चादरें ओढ़ने के लिये, चार बालिशत कपड़ा, दो चांदी के बाजूबन्द, गद्दा, तकिया, एक प्याला, एक चक्की, एक मशकीजा और कुछ मशरूबात वगैरह खरीदे और उनको तरतीब के साथ रख दिया। एक और रिवायत में हजरत फातिमा के जहेज के मुतअल्लिक लिखा है कि इसमें बान की एक चारपाई, एक लिहाफ, एक

चमड़े का तकिया (बिस्तर) जिसमें दरख्ते खजूर की छाल भरी हुई थी। दो चक्कियां, एक मशकीजा और दो घड़े शामिल थे। (सीरते रसूल (अरबी) सफा : ६१६-रौजतुश्शोहदा जिल्द अब्बल सफा : २६२) इसके बाद हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी लाडली बेटी हजरत फातिमा का निकाह हजरत अली के साथ चार सौ मिसकाल चांदी पर महर बांधा और फरमाया : ऐ अली! तुम कुबूल करते हो और इस पर राजी हो? हजरत अली ने अर्ज किया : मैंने कुबूल किया और मैं राजी हुआ। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह पढ़ा दिया। फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक तबाक खजूरों का लिया और जमाअते सहाबा पर बिखेर कर लुटाया। इसी बिना पर फुकहा की एक जमाअत कहती है कि खजूर व बादाम वगैरह का निकाह की मजलिस में बिखेर कर लुटाना मुस्तहब है।

(मदारिजुन्नुबुव्व : जिल्द दोम सफा : १२७)

साहिबे रौजतुश्शोहदा हजरत अल्लामा मुईन काशफी ने अबुल-मुऐयद ख्वार्जमी की किताब 'मनाकिबे ख्वार्जमी' से यह रिवायत नकल फरमाते हैं कि एक रोज हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मुल मोमिनीन हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा के दौलत-कदा पर जलवां अफरोज थे कि एक फरिश्ता खिदमत आलिया में हाजिर हुआ जिसके बीस (२०) सर थे और हर सर में एक हजार (१०००) जुबान थी। हर जुबान से अल्लाह तआला की तस्बीह व तहलील करता था। इसकी हथेली सातों आसमान और सातों जमीन से ज्यादा कुशादा थी। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तिफसार पर उस फरिश्ते ने कहा : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं सरसाईल फरिश्ता हूं। हक तआला ने मुझे आपकी खिदमत में नूर की नूर के साथ शादी के लिये भेजा है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : ऐ सरसाईल! किसका किसके साथ अक्द करूं? तो फरिश्ता सरसाईल ने अर्ज किया हजरत फातिमा का निकाह हजरत अली (रजियल्लाहु अन्हुमा) के साथ फरमा दीजिए। पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत जिबरील व हजरत मीकाईल को गवाह बनाकर उस फरिश्ते की मौजूदगी में अपनी बेटी फातिमा का निकाह हजरत अली के साथ कर दिया।

(रौजतुश्शुहदा जिल्द अब्बल सफा २८६)

खतीब बगदादी ने हजरत सैयदना इब्ने-अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत

सैयदतना फातिमतुज्जोहरा रजियल्लाहु अन्हा का निकाह हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु से कर दिया तो सैयदा फातिमा रोने लगीं। (साहिबे रौजतुशुहदा ने लिखा है कि यह रोना हजरत फातिमा का अपने बाप के घर से जुदाई की वजह से था। उन लोगों का यह ख्याल ग़लत है जो कहते हैं कि हजरत फातिमा इसलिये रोई थीं कि हजरत अली के घर में दुनियावी माल व मता नहीं थी। इसलिये कि सैयदा फातिमा ने पहले ही अपने बालिदे गिरामी की तालीम व तरबीयत से अपने आप को दुनिया से अलग-थलग कर लिया था। फ़क्र व फ़ाका तो उनकी इम्तियाज़ी शान थी।) इस पर हुजूर ने उनसे दर्याफ़्त फ़रमाया : मेरी लख्ते जिगर किस बात से तुम रोने लगीं? उन्होंने कहा : या रसूलुल्लाह! आपने ऐसे शख्स के साथ निकाह कर दिया है जिसके पास न माल है और न कोई चीज़। इस पर हुजूर ने अकरम ने इरशाद फ़रमाया : अमा तरजी न या फातिमा त इन्नल्लाह इख़्ता र मिन अहल्लि-अर्जे रिजलैने ज अल अ ह दु हुमा अबा क वल आ ख रु बि अ लि क यानी ऐ फातिमा! क्या तुम इस पर राजी नहीं कि हक़ तआला ने ज़मीन से दो शख्सों को बरगुज़ीदा बनाया है जिनमें से एक तुम्हारा बालिद है और दूसरा तुम्हारा शौहर है। हाकिम ने हजरत अबू-हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अमा तरजी न इन्नी जौ ज त क अक़दमु उम्मती सलमौ व अक़सरुहुम इल्मौ व आज़मु हिल्मन। ऐ फातिमा ! क्या तुम इससे राजी नहीं कि मैंने तुम्हारी शादी उससे की है जो अज़रुये इस्लाम सबसे पहले मुसलमानों में से है और इल्म व हिल्म के एतेबार से उन सबसे दानातरीन है। साहिबे मदारिजुन्नुबुव्वः लिखते हैं कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी का अक़द हजरत अली के साथ फ़रमा दिया तो उनके काशाना पर तशरीफ़ ले गये। हजरत सैयदा फातिमा से फ़रमाया : थोड़ा पानी लाओ। फिर सैयदा फातिमा ने लकड़ी का प्याला लिया और उसमें पानी भरा। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश कर दिया। हुजूर ने पानी लेकर अपना लुआबे दहन मुबारक उसमें डाला और सैयदा फातिमा से फ़रमाया : करीब आओ। वह करीब आई तो हुजूर ने उस पानी को उनके सीना के दरमियान और सर पर छिड़का और फ़रमाया : अल्लाहुम्म म इन्नी उईजुहा बि क व जुरियतहा मिन शैतानिर्ज़ीम। ऐ अल्लाह ! मैं इनको और इनकी औलाद को तेरी ताह में देता हूँ शैताने

रजीम से। फिर फ़रमाया : पानी और लाओ। हज़रत अली फ़रमाते हैं कि मैं समझ गया कि अब हुज़ूर क्या करेंगे ? तो मैं खड़ा हुआ और पानी भर कर लाया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पानी को लिया। उसमें लुआब दहने मुबारक डाला और मुझसे फ़रमाया : मेरे सामने आओ। मैं हुज़ूर के सामने खड़ा हो गया। हुज़ूर ने पानी के छींटे मेरे सर पर और मेरे चेहरे पर दिये और फ़रमाया : अल्लाहुम्म म इन्नी उईजु बि क व जुरियतहू मिन शैतानि रजीम। ऐ अल्लाह! मैं इनको और इनकी औलाद को तेरी पनाह में देता हूँ शैताने रजीम से। उसके बाद फ़रमाया : बिस्मिल्लाहि वल बरकते कह कर अपनी ज़ौजा के पास जाओ।

(मदारिजुन्नुबुव्व : जिल्द दोम सफ़ १२६)

दूसरे दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने वलीमा किया और सहाबए किराम में अनसार व मुहाजिरीन मिला कर सात सौ आदमियों ने उसमें शिकत फ़रमाई। वलीमा के खाने में बइख़्तलाफ़े रिवायत खुर्मा, रौगन, पनीर चन्द सा खजूरें और जौ का खाना था।

आसमान पर हज़रत फ़ातिमा व हज़रत अली का निकाह

साहिबे रौज़तुश्शुहदा हज़रत अल्लामा हुसैन अहमद काशफ़ी 'मनाकिबे ख़्वार्ज़मी' के हवाले से लिखते हैं कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए और आसमान पर हज़रत फ़ातिमा व हज़रत अली के निकाह की तफ़सील ब्यान फ़रमाते हुए अर्ज़ किया : कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह तआला ने इनका अक्दे निकाह आसमान पर इस तरह मुनअकिद किया कि सबसे पहले बहिशते बरीं को हुक्म फ़रमाया कि वह खुद को ज़ैब व ज़ीनत से अच्छी तरह आरास्ता व पैरास्ता कर लें। फिर हूराने बहिशती को हुक्म फ़रमाया कि वह अपने आपको ज़ेवर हाये जन्नत से अच्छी तरह मुज़य्यन करें लें। फिर शज़े तूबा को हुक्म दिया कि वह खुद को ज़रीं बर्ग व बार से बारआवर करे। उसके बाद आसमान के तमाम फ़रिशतों को हुक्म फ़रमाया कि सबके सब चौथे आसमान पर बैतुल-मामूर के नज़दीक जमा हो जायें। तो जब यह सब कुछ हो गया तो नूर का वह मिम्बर जो

बैतुल-मामूर के सामने रखा हुआ है उसपर बैठकर हज़रत आदम नवीयना अलैहिस्सलाम वरसलात ने खुत्बा पढ़ा। बादहु अल्लाह तआला ने राहील फ़रिशता को हुक्म दिया कि वह ग़िम्बर पर आये और हमद व राना ब्यान करे क्योंकि वह तमाम फ़रिशतों में सबसे ज़्यादा शीरी कलाम बोलते थे। पस राहील फ़रिशते ने खुत्बा पढ़ा तो आसमान के सारे फ़रिशते इस खुदावन्दी पर झूमने लगे। बादे अज़ां अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया कि जिबरईल ! मैंने अपनी कनीज़ फ़ातिमा बिनते मुहम्मद के साथ अपने बन्दा अली बिन अबी-तालिब का निकाह कर दिया है। तू भी इस निकाहे मुबारका को मलाइकए किराम में मुनअकिद कर। मैंने अल्लाह तयारक द तआला के हुक्म के मुताबिक़ उन दोनों का अक्दे निकाह करके तमाम मलाइका को गवाह किया और यह तमाम वाक़िया दरस्तावेज़ की सूरत में उस रेशमी कपड़े पर तहरीर कर दिया गया है। मुझे हुक्मे खुदावंदी हुआ है कि उसे आपकी ख़िदमत में पेश कर दूँ।

(रौज़तुश्शुहदा जिल्द अव्वल सफ़ा : २८८, मुश्किल-कुशा जिल्द अव्वल सफ़ा ३७६)

हज़रत फ़ातिमा और उमूरे ख़ानादारी रज़ियल्लाहु अन्हा

शहंशाहे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाडली और चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमतुज्जोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर का पूरा काम काज खुद अन्जाम दिया करती थीं। झाड़ू अपने हाथ से देती थी, चक्की अपने हाथ से पीसती थीं जिससे हाथ में घट्टे पड़ गये थे। मशकीज़ा में पानी भर कर लाती थीं जिससे कन्धे छिल गये थे। आग के पास बैठ कर गर्मी की शिद्त के बावजूद खाना खुद पकाती थीं। उन तमाम उमूर को अंजाम देने के बावजूद अपने शौहर हज़रत अली की ख़िदमत में कभी भी कमी वाक़ेय न होने दी। न ही कभी एक वक़्त की नमाज़ कज़ा हुई।

एक बार हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में माले ग़नीमत में कुछ बांदी और गुलाम आये। आप अपने शौहर के बेहद इसरार पर डरते-डरते हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आलिया में एक बांदी घरेलू काम-काज के लिये तलब करने गयीं तो हुजूर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा! क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बता दूँ जो उससे बेहतर है जिसका तुमने मुझसे सवाल किया है? फ़रमाया रसूलु करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि जब तुम सोने का इरादा करो तो ३३ बार सुब्हानल्लाह ३३ बार अलहम्दुलिल्लाह और ३४ बार अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। यह तुम्हारे लिये खादिम से बेहतर है।

(बुख़ारी शरीफ़ सफ़ा ४०३)

हज़रत फ़ातिमा और अहादीसे करीमा रज़ियल्लाहु अन्हा

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नूरे नज़र, लख्ते जिगर, अइले-बैते अतहार में सबसे ज़्यादा चहेती और प्यारी बेटी फ़ातेहे ख़ैबर हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी-तालिब कर्मल्लाह वजहहू की अहलिया मुहतरमा। हज़रत हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की वालिदए माजिदा और तमाम जहां की औरतों की सरदार खातूने जन्नत हज़रत सैयदा फ़ातिमतुज्जोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा, जिनसे परवरदिगारे आलम ने अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद का सिलसिला जारी फ़रमाया। उनके फ़जाइल व मनाकिब में भी कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। हम यहां मुख़्तसरन चन्द अहादीसे करीमा तहरीर करने की सआदत हासिल कर रहे हैं —

(१) हज़रत मिसवर बिन मख़ज़िमा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फ़ातिमतु बिजअतुम मिन्नी फ़मन अग़ ज़ ब हा अग़ ज़ ब नी फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है जिसने उन्हें नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०६)

(२) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : फ़ातिमतु सैयदतुन निसाइ अहल्लिजन्न : फ़ातिमा जन्नती औरतों की सरदार है।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा ४०५)

(३) हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अला तरज़ी न अन तकूनी सैइदतु निसाइल आलमीन व सैयदतु निसाइल मूमिनी न व सैइदतु निसाइ हाज़िहिल उम्मः ऐ फ़ातिमा! क्या तू इसपर

राजी नहीं है कि तू सारे जहान की औरतों की सरदार हो, तमाम मोमिन औरतों की सरदार हो और इस उम्मत की औरतों की भी सरदार हो।

(ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफ़ा ४६५)

(४) हज़रत अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में अर्ज किया : या रसूलल्लाह! हममें से कौन आपका ज़्यादा महबूब है? मैं या फ़ातिमा? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : फ़ातिमतु अहब्बु इलैया मिन क व अन त अअज़्जु अलैया मिन्हा। यानी फ़ातिमा मुझे तुमसे ज़्यादा महबूब है और मेरे नज़दीक तुम उनसे ज़्यादा इज़्ज़त वाले हो।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६३५)

(५) हज़रत अबू-अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : का न यौमल कियामति ना दा मुनादिम मिन्बराइल हिजाबि या अहलल जमइ गुज़्जू अबसारकुम हत्ता तमुर्र फ़ातिम त बिनते मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ त मुरू म अ हा सबऊ न अल फ़ जारि यतिन मिन हूरिल ऐनि कल-बरकिल्लामिअ। क़ियामत के दिन एक निदा करने वाला परदे में से निदा करेगा। कि हंश्र के मैदान में जमा होने वालो! अपनी निगाहें झुका लो, यहां तक कि फ़ातिमा बिनते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (पुल-सिरात) से गुज़र जायें। चुनांचे आप सत्तर हज़ार बांदियों के साथ जो हूरें होंगी बिजली की तरह।

(पुल-सिरात) से गुज़र जायेंगी।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ ६३३ 'ख़साइसे कुबरा' जिल्द दोम सफ़ा ४९३)

(६) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया इन्नल्ला ह यग़ज़िबु बि ग़ ज़ बि फ़ातिम त व यरज़ा बिरज़ाइहा। बेशक अल्लाह तआला फ़ातिमा के ग़ज़बनाक होने से ग़ज़बनाक होता है और उसके राजी होने से राजी होता है। ('ख़साइसे कुबरा' जिल्द दोम सफ़ा ४६५)

(७) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इबनती फ़ातिम त हौराउ आ द मीयतु लम तहिज़ वलम ततमुस। मेरी साहिबज़ादी फ़ातिमा इंसानी हूर है कि नजासतों के आरजे (हैज़ व निफ़ास) से पाक व मुनज़्ज़ह है। (अल-अम्न वल-उला सफ़ा २०२)

हज़रत फ़ातिमा और इबादते खुदावन्दी रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अपनी वालिदा माजिदा हज़रत सैयदतना फ़ातिमतुज्जोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा को हमेशा देखा है कि वह घर के मेहराब में रात-रात भर नमाज़ में मशगूल रहती थीं यहां तक कि सुबह तुलू हो जाती। मैंने उन्हें अल्लाह तबारक व तआला के हुज़ूर गिरया व ज़ारी और निहायत आजिज़ी से इल्तिजा व दुआ करते हुए देखा है। मगर मैंने कभी यह नहीं देखा कि दुआ में अपने वास्ते कोई दरख्वास्त की हो बल्कि आपकी तमाम दुआयें नाना जान हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत की बख़्शिश और भलाई के लिये होतीं।

(मदारिजुन्नुबुव्व : जिल्द दोम सफ़ा ७६०)

वह शब बेदार व सिर्फ़ रुकू व सज्दए पैहम

वह जिनकी ज़ात पर नाज़ां हुज़ूरे रहमते आलम

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत उम्मे-ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रमज़ान शरीफ़ का महीना दोपहर का वक़्त था और निहायत शिदत की गर्मी पड़ रही थी। मैं हज़रत फ़ातिमा के मकान पर हाज़िर हुई दरवाज़ा बन्द था, चक्की चलने की आवाज़ आ रही थी। मैंने रोज़न दर से झांक कर देखा कि सैयदा तो चक्की के पास ज़मीन पर सो रही हैं और चक्की खुद-बखुद चल रही थी। पास ही हसनैन करीमैन का गहवारा भी खुद-बखुद हिल रहा था। मैं यह देखकर निहायत हैरान व मुतअज्जिब हुई और उसी वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह माजरा ब्यान किया। आपने फ़रमाया : इस शिदत की गर्मी में फ़ातिमा रोज़े से है। परवरदिगारे आलम ने फ़ातिमा पर नींद ग़ालिब कर दी ताकि उसको गर्मी की शिदत और तिशनगी महसूस न हो और फ़रिशतों को हुक्म दे दिया कि वह फ़ातिमा के काम सर अन्जाम दें।

वह ख़ातूने जनां, मासूम हूरें बांदियां जिनकी

मलक जन्नत से आकर पीसते थे चक्कियां जिनकी

(सफ़ीनए नूह जिल्द दोम सफ़ा ३५)

विसाल हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा

हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाले मुबारका का हज़रत फ़ातिमा को इतना संख़्त सदमा था कि उसके दाद आप कभी हंसी नहीं और हमेशा अपने वालिद माजिद की जुदाई में रोती रहीं। यहां तक कि विसाले सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के छः महीने बाद ३ रमज़ानुल मुबारक सन् ११ हिजरी मंगल की रात को हिज़्र व फ़िराक और दर्द व ग़म की कठिन मन्ज़िलों से गुज़र कर अपने वालिद माजिद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जा मिलीं। उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ २२ साल थी। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

इंतिकाल के रोज़ आपने मुबालिगा के साथ गुस्ल फ़रमाया और पाकीज़ा कपड़े पहनकर नमाज़ अदा फ़रमाई और उम्मत मुहम्मदिया के लिये मग़फ़िरत की दुआयें कीं। बादे अज़ा अपना दाहिना हाथ रुख़सार के नीचे रख कर क़िबला-रू लेट गई और फ़रमाया कि मैं अपनी जान खुदावन्दे कुद्स के सुपुर्द करती हूँ। आपकी वफ़ात से हज़रत अली, हज़रत हसनैन करीमैन, और हज़रत ज़ैनब व कुलसूम रिज़वानुल्लाह अलैहिम को बेहद सदमा हुआ।

तजहीज़ व तकफ़ीन : हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा में शर्म व हया बहुत ज़्यादा थीं। इसलिये वफ़ात से कुछ रोज़ पहले हज़रत असमा बिनत उमैस रज़ियल्लाहु अन्हा (जौजए हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु) से फ़रमाया : ऐ असमा! आजकल जिस तरह औरतों का जनाज़ा लेकर जाते हैं मुझे यह अच्छा मालूम नहीं होता कि उससे औरतों की बेपर्दगी होती है। हज़रत असमा ने फ़रमाया : ऐ जिगर गोशए रसूल! मैंने हबशा में एक तरीका देखा है जिससे औरतों के जनाज़ा का पूरा-पूरा पर्दा हो जाता है। अगर आप फ़रमायें तो मैं उसे आपके सामने करके दिखा दूँ। फिर असमा ने खुजूर की तांज़ा शाख़ें मंगवाई और उनको चारपाई पर कमान की तरह लगाकर ऊपर कपड़ा डाल दिया हज़रत फ़ातिमा ने यह देखकर फ़रमाया : यह तो बहुत-ही हसीन व जमील तरीका है। इससे मर्द व औरत के जनाज़े की पहचान भी हो जाती है। तो जब मैं वफ़ात पाऊँ तो मेरा जनाज़ा भी इसी तरह बनाना। तुम और मेरे शौहर दोनों मिलकर मुझे गुस्ल देना। और किसी को शामिल न करना। पस जब हज़रत सैयदा

फातिमा रजियल्लाहु अन्हा की वफात हुई तो हज़रत असमा व हेज़रत अली ने उनको गुरल दिया। उसी तरह आपकी वसीयत के मुताबिक आपके जनाज़ा पर दो रुइया ताज़ा खजूर की शाखें लगाकर ऊपर कपड़ा डाल दिया गया। बइख़िलाफ़ रिवायात हज़रत अली या हज़रत अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) ने आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और हज़रत अली व अब्बास व फ़जल ने आपको कब्र में उतारा। सही व मुख्तार कौल के मुताबिक जन्नतुल-बकी में आपको मदफून किया गया।

(सीरते रसूले अरबी-व-रौज़तुशशुहदा वगैरह)

सैयदुल-मुहक्किनीन हज़रत अल्लामा शैख अब्दुल-हक़ मुहदिस देहलवी अलैहिरेर्रहमः मदारिजुन्नुबुव्वः जिल्द दोम सफ़ा : ७५६ पर तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली की इजाज़त से हज़रत सैयदा की नमाज़ पढ़ाई और चार तकबीरें कहीं।

औलाद अमजाद : खातूने जन्नत हज़रत सैयदा फ़ातिमा रजियल्लाहु तआला अन्हु को छः औलाद हुई। तीन साहिबज़ादे और तीन साहिबज़ादियां :

तीन साहिबज़ादे (१) हज़रत इमाम हसन (२) हज़रत इमाम हुसैन (३) हज़रत मुहसिन-रजियल्लाहु अन्हुम

और तीन साहिबज़ादियां : (१) हज़रत उम्मे कुल्सूम (२) हज़रत ज़ैनब (३) हज़रत रुक़ैया-रजियल्लाहु अन्हुन्न

हज़रत मुहसिन और हज़रत रुक़ैया बचपन ही में इंतिकाल फ़रमा गये थे।

हज़रत उम्मे-कुल्सूम जिनकी शादी हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रजियल्लाहु अन्हु के साथ हुई।

हज़रत ज़ैनब रजियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रजियल्लाहु अन्हु के साथ हुआ।

हज़रत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु को ज़हर देकर और हज़रत इमाम हुसैन का मैदान में बुलाकर तीन दिन भूखा प्यासा रखकर शहीद किया गया। (रजियल्लाहु अन्हुमा)

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिलए औलाद क़यामत तक उन्हीं साहिबज़ादों से जारी हुआ है।



फ़ज़ाइल

नवासा-ए-रसूल सैयदना हज़रत

इमाम हसन

रज़ियल्लाहु अन्हु

इरशादे रसूले अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
के कन्धे पर सवार थे। आप फ़रमाते हैं :

अल्लाहुम्म म इन्नी उहिब्बुहू फ़ अहिब्बुहू
(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ ४१४)

या अल्लाह ! मैं इससे मुहब्बत करता हूँ
तू भी इससे मुहब्बत कर।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत सैयदना

इमाम हसन

रज़ियल्लाहु अन्हु

हसने मुजतबा, सैयदुल-असखिया | राकिबे दोशे इज़्ज़त पे लाखों सलाम
औजे महरे हुदा बहरे मौजे नुदा | रुहे रौहे सखावत पे लाखों सलाम

शहद-ख्वारे लुआबे जुबाने नबी

चाशनी-गीर इस्मत पे लाखों सलाम

(सैयदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहम :)

नाम व नसब व पैदाइश : सैयदुस्सादात, साहिबे करामात, इमामे शरीअत व तरीक़त, अक्से जमाले मुस्तफ़ा, नूरे चश्मे शेरे खुदा व खातूने जन्नत, खातिमे ख़िलाफ़ते राशिदा, जन्नत के जवानों के सरदार और हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लख्ते जिगर, आपका नामे नामी इस्मे गिरामी हसन है। अइम्मा-ए-इसना अशरीया (बारह इमामों) में दूसरे इमाम हैं। आपकी कुन्नीयत अबू-मुहम्मद और अलकाब तक़ी व सैयद व रैहानतुन्नबी है। नसबनामा इस तरह है : अबू-मुहम्मद हसन बिन अली बिन अबी-तालिब बिन अब्दुल-मुत्तलिब कुरैशी मुत्तलबी है। आपकी वालिदा माजिदा का नाम सैयदा बतूल फ़ातिमा जिगर गोशए रसूल है। आपके वालिद माजिद का नाम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु है। आपके नाना जान हुज़ूर सैयदुल-अंबिया वल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। इस लिहाज़ से आपकी फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा हो जाती है।

आपकी विलादते बा-सआदत १५ रमज़ानुल मुबारक सन् ३ हिजरी शब मंगल ब-मक़ाम मदीना मनव्वरह हुई। हज़रत असमा फ़रमाती हैं कि मैं हसन के पैदा होने के वक़्त हज़रत फ़ातिमा के पास थी। जिस तरह कि औरतों को पैदाइशे बच्चा के बाद लहू आता है हज़रत फ़ातिमा को न आया। मैंने यह तअज्जुब आमेज़ और हैरत अंगेज़ बात रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ की तो आपने फ़रमाया : मेरी बेटी फ़ातिमा इस नजासत की आलूदगी से पाक है। वह हैज़ व

निफास से बिल्कुल मुनज्जह है। (सआदतुल-कौनैन सफा : २०) एक रिवायत में आया है कि हज़रत इमाम हसन और हज़रत ईसा इब्ने मरयम और हज़रत यह्या बिन ज़करिया अलैहिमस्सलाम छः महीने में पैदा हुए। इसी वजह से शरीअत ने हमल की कम-से-कम मुद्दत छः महीने करार दी है।

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मरिजदे नब्वी शरीफ़ के सहन में तशरीफ़ फ़रमा थे। हज़रत असमा बिनते उमैस ने आपको (हज़रत इमाम हसन की) विलादते बा-सआदत की खुशख़बरी पहुंचाई तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतिहाई खुशी के आलम में हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ लाये और हज़रत असमा से फ़रमाया : असमा ! मेरे फ़र्जन्द को लाओ। हज़रत असमा ने शहज़ादए बतूल को ज़र्द रंग के कपड़े में लपेटा और आपकी आग़ोशे रहमत में दे दिया। हुजूर रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि ने शहज़ादे के जिस्म पर ज़र्द रंग का कपड़ा देखा तो फ़ौरन उस कपड़े को अलाहेदा कर दिया और हज़रत असमा से फ़रमाया : मेरे शहज़ादे को ज़र्द कपड़े में न लपेटा करो। चुनांचे हज़रत असमा फ़ौरन सफ़ेद कपड़ा ले आयीं और शहज़ादे को उस सफ़ेद कपड़े में लपेट कर बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शहज़ादे के दायें कान में अज़ान और बायें कान में इक़ामत कही। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से दरियाफ़त फ़रमाया : ऐ अली! तुमने इसका नाम क्या रखा है? उन्होंने अर्ज किया : या रसूलल्लाह मेरी क्या मजाल कि मैं आपसे पहले इस फ़र्जन्द अर्जमन्द का नाम रख लूं। ताहम अगर आप इजाज़त फ़रमायें तो मेरे दिल में एक ख़्याल आता है कि इसका नाम 'हरब' रखूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हम इस फ़र्जन्द का नाम तजवीज़ करने में अल्लाह तआला के हुक्म पर सबक़त नहीं कर सकते। यकायक़ हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और अर्ज किया : या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला सलाम के बाद इस फ़र्जन्द की विलादत पर आपको मुबारकबाद पेश करता है और फ़रमाता है कि (हज़रत) अली मुर्तज़ा को आपकी बारगाह में वह कुर्ब हासिल है जो हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बारगाह में था। लिहाज़ा इस फ़र्जन्द का नाम हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के फ़र्जन्द शब्बर के नाम पर रखो जिसके मायने हसन के होते हैं। चुनांचे हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुक्मे खुदावन्दी अपने फ़र्जन्द

अर्जमन्द का नाम 'हसन' रखा। पैदाइश के सातवें दिन स्याह धव्यों वाले सफेद रंग के दो मेढे ज़बह किये और हज़रत इमाम हसन का अकीका फ़रमाया। बाद शहज़ादे के सर के बाल उतरवाकर उनकी हम-वज़न चाँदी ख़ैरात कर दी।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २७७, रौज़तुशशुहदा जिल्द अव्वल सफ़ा : ३६७ सआदतुल-कौनैन सफ़ा : २१)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबहत

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत ज़्यादा मुशाबहत थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं। अल हसनु अशबहु बिरसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मा बैनरसदरे इलर्रासे वल हुसैनु अशबहु बिरसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मा का न असफ़लि मिन ज़ालि का हज़रत हसन सर से लेकर सीना तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत ज़्यादा मुशाबहत थे हज़रत हुसैन सीना शरीफ़ से नीचे तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत ज़्यादा मुशाबहत थे। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा ७३३)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : लम यकुन अह दुन अश बह बिन्नबीइ मिनल हसनिब्ने अलीइन। कोई शख्स हज़रत इमाम हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा से बढ़कर हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबहत न था। (बुख़ारी शरीफ़, जिल्द दोम, सफ़ा : ४१५)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खां फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं :

एक सीना तक मुशाबहत एक वहां से पांच तक
हुरने सिबतैन उनके जामों में है नीमा नूर का
साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अयां
ख़त्ते तवाम में लिखा है यह दो वरका नूर का
(हदाइके बरिश्श, जिल्द दोम, सफ़ा १२२)

दूसरी जगह इरशादे आला हज़रत है :

मादूम न था सायए शाहे सकलैनं
वह साया था जलवए गर बज़ाते हसनैन
तमसील ने उस साया के दो हिस्से किये
आधे से हसन बने हैं आधे से हुसैन

हजरत इमाम हसन और अह्द नबी

हजरत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने लख्खे जिगर हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु के साथ बहुत ज्यादा मोहब्बत और प्यार से पेश आते थे। यह सआदत बहुत कम खुश किस्मतों के हिस्से में आई है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़े नाज़ व निअम से उनकी परवरिश फ़रमाई। कभी आगोशे रहमत में लेते तो कभी कांधे पर सवार फ़रमाते। उनकी अदना-अदना तकलीफ़ पर बेकरार हो जाते। रोज़ाना हजरत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ लाते थे। हजरत इमाम हसन व हजरत इमाम हुसैन भी आप से बेहद मानूस थे। कभी नमाज़ की हालत में पुश्ते मुबारक पर चढ़कर बैठ जाते तो आप उस वक़्त तक सज्दे से सर न उठाते जब तक खुद इमाम हसन पीठ पर से उतर न जाते। गर्ज ये कि नाना जान ने इतिहाई प्यार व मुहब्बत और शफ़क़त से उनकी परवरिश फ़रमाई। कभी तादीबन भी आपने उनको नहीं झिड़का बल्कि हमेशा उनकी बचपन की शोखियों को देखकर हंस दिया करते थे। अभी इमाम हसन की उम्र ब-इख़्तिलाफ़े रिवायात ६ साल या तक़रीबन ७ साल की थी कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मर्जे वफ़ात का दौर शुरू हुआ। उन आख़री लम्हात में हजरात हसनैन करीमैन के मासूम दिलों पर ग़म व अलम का जो तूफ़ान बरपा हुआ था उसका ब्यान हमारे कलम की ताक़त से बाहर है। हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अपने उन अय्याम में अपने महबूब फ़र्जन्दों का हद दर्जा ख़्याल फ़रमाया है। चुनांचे रिवायतों में आया है कि हजरत फ़ातिमा जोहरा रजियल्लाहु अन्हा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मर्जे वफ़ात में अपने दोनों शाहज़ादों हजरत इमाम हसन और हजरत इमाम हुसैन (रजियल्लाहु अन्हुमा) को लेकर हाज़िर हुई। अर्ज किया : या रसूलल्लाह! हाज़ाने अबना य फ़व रिसहुमा शैअन या रसूलल्लाह! यह मेरे दोनों बेटे हैं। उन्हें अपनी मीरासे करीम से कुछ अता फ़रमाइये। इरशाद हुआ अम्मा ह स नून फ़लहु हैबती व सरवरी व अम्मा हुसैनुन फ़लहु जुअती व जूदी हसन के लिये तो मेरी हैबत और मेरी सरदारी है और हुसैन के लिये मेरी जुअत और मेरा करम। एक दूसरी रिवायत में फ़रमाया कि हसन के लिये अपना हिल्म व हैबत अता फ़रमाया और हुसैन के लिये मुहब्बत व रज़ा की नेमत दी।

(अल-अमन वल-उला सफ़ा ८६)

इमाम हसन अह्द सिद्दीकी में

हज़रत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपने अहल व अयाल से ज़्यादा हज़रात हसनैन करीमैन का ख़्याल फ़रमाया करते थे। उनकी मुहब्बत से अपने दिल को मनव्वर व मुजल्ला फ़रमाये हुए थे। एक रोज़ हज़रत सिद्दीक़े अकबर नमाज़े अख़्त अदा फ़रमाने के बाद बाहर निकले। हज़रत अली भी आपके साथ थे। देखा कि हज़रत हसन बच्चों के साथ खेल रहे हैं। फ़ौरन उनको अपने कांधे पर सवार कर लिया और उसी आलम में इरशाद फ़रमाया : बिअबी शबीहुन बिन्नबीइ लै स शबीहुन बिअलीइन व अलीयुन यज़हकु। मेरे बाप की क़सम! तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह हो, अली के मुशाबह नहीं हो। हज़रत अली हंस पड़े। (बुख़ारी जिल्द दोम सफ़ा : ४१५)

इमाम हसन अह्द फ़ारूकी में

हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में हज़रात हसनैन करीमैन के साथ ऐसा ही मोहब्बत आमेज़ बरताव रखा। चुनांचे एक मर्तबा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास यमन के हुल्ले आये। (कपड़े कीमती हों तो उसे 'हुल्ला' कहते हैं। यह क़दीम अरबों में वही दरजा रखता था जो आज के दौर में 'सूट' का है।) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में तक़सीम कर दिए। इतने में हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा तशरीफ़ लाये। उनके जिस्म पर कोई हुल्ला न था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें देख कर अफ़सुरदा और मग़मूम हो गये। लोगों ने पूछा : क्या बात है? आपने फ़रमाया : मैं इन बच्चों की वजह से मग़मूम हूँ कि इनके बदन के मुताबिक़ कोई हुल्ला नहीं है। फिर आपने यमन अपने आमिल को लिखा कि हसन व हुसैन के लिये दो हुल्ले भेजो और जल्दी रवाना करो। उन्होंने दोनों को हुल्ले भेजे। आपने उन दोनों को पहनाया तब इतमिनान हुआ। (दीने/इस्लाम और दो मुतज़ाद तस्वीरें सफ़ा : ४०)

हज़रत इमाम हसन अह्द उसमानी में

हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी ऐसा ही शफ़क़्त आमेज़ तर्ज अमल हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ

रखा। सिद्दीकी व फारूकी अहद में तो यह दोनों साहिबजादे अपनी कमसिनी के बाअस किसी काम में हिरसा न ले सके थे। लेकिन हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में यह पूरे जवान हो चुके थे। चुनांचे सबसे पहले सन् ३० हिजरी में तबरिस्तान की फौजकुशी में मुजाहिदाना शिकत फ़रमाई।

जब हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का बलवाइयों ने मुहासरा कर लिया और आपके खिलाफ़ फ़ित्ना व शोरिश हद से ज्यादा बढ़ गई तो हज़रत मौला अली मुश्किल-कुशा ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन से फ़रमाया कि अपनी-अपनी तलवारें लेकर उसमान के दरवाजे पर खड़े हो जाओ और किसी को उन तक पहुंचने न दो। चुनांचे आप दोनों ने इंतिहाई शुजाअत व बहादुरी के साथ हमला-आवरों की मुदाफ़अत की और बागियों को अन्दर घुसने से रोके रखा। इस मुदाफ़अत में आप ज़ख्मी भी हुए लेकिन किसी बागी को मकान के अन्दर दाख़िल होने नहीं दिया। बिल-आख़िर जब बलवाइयों की तमाम तदबीरें नाकाम हो गई तो दूसरी तरफ़ जाकर दीवार फाँदी और अन्दर जाकर उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया। अगर हज़रात हसनैन करीमैन की तरह बनी-उमैया के नौजवान भी मकान के हर तरफ़ खड़े हो कर हिफ़ाज़त करते तो यकीनन बलवाई नाकाम हो जाते।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा २२४ 'सियरुस्सहाबा' सफ़ा : २)

हज़रत इमाम हसन और अहदे मुर्तज़वी

मारकए जुमल व सिफ़फ़ीन जो हज़रत मौला अली मुश्किल-कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे खिलाफ़त में हुए। उन दोनों मारकों में भी हज़रात हसनैन करीमैन ने शिकत फ़रमाई और आख़िर तक अपने वालिदे गिरामी के साथ रहे। जब भी कोई अहम काम हुआ यह दोनों शहजादे बराबर अंजाम देते रहे। हज़रत मौला अली मुश्किल-कुशा के बाद खिलाफ़त की जिम्मेदारी आपको ही सौंपी गई। तफ़सील आइन्दा सफ़हात में मुलाहज़ा फ़रमाइये।



हज़रत इमाम हसन

और अहादीसे करीमा

हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लहु अन्हु के फ़ज़ाइल में कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। हम उनमें से चन्द को ज़िक्र करने की सआदत हासिल कर रहे हैं —

(१) हज़रत अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक गोद में थे और वह अपनी उंगलियां हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ीए मुबारक में डाल रहे थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी जुबान पाक उनके मुंह में डालते और फ़रमाते अल्लाहुम्म म इन्नी उहिब्बुहू फ़अहिब्बहु ऐ अल्लाह ! मैं इसको महबूब रखता हूँ ! तू भी इसको महबूब रख। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ४६७)

(२) हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिम्बर पर देखा। इमाम हसन आपके पहलू में तशरीफ़ फ़रमा थे। हुजूर कभी लोगों की तरफ़ देखते और कभी हज़रत हसन की तरफ़ और फ़रमाते कि इन्नबनी हा ज़ा सैयिदुंय युसलिहुल्लाहु अला यदैहि बै न फ़िअतैन। मेरा यह फ़र्जन्द सरदार है अल्लाह तआला इस के हाथ से दो बड़े गरौहों में सुलह करायेगा।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जिल्द दोम सफ़ा ७३२)

(३) हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत हसन इब्ने अली को अपने कन्धे पर उठाये हुए थे कि एक शख्स ने कहा कि शहज़ादे तुम बहुत अच्छी सवारी पर सवार हो। तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया व नेमर्राकिबु हु व और सवार भी कितना अच्छा है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जिल्द दोम, सफ़ा : ७३५)

(४) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लहु अन्हुमा से मरवी है कि मैंने ब-चशमे खुद देखा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे में होते थे और हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी गर्दन या पीठ

पर आकर बैठ जाते थे और जब तक वह खुद नहीं उतरते थे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको नहीं उतारते थे। मैंने यह भी मुशाहिदा किया है कि सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हालते रुकू में होते और हजरत हसन तशरीफ लाते। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाहाए मुबारक के अन्दर से होकर दूसरी तरफ निकल जाते।

(तारीखुल-खुलफा सफा : २७८)

(५) अबू-दाऊद तयालिसी हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जो मुझे दोस्त रखना चाहे वह पहले हसन को दोस्त रखे।

(सआदतुल-कौनैन सफा २७)

(६) हजरत अबू-हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक बार हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत बतूल जोहरा रजियल्लाहु अन्हा के मकान पर तशरीफ ले गये और सैयदना इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु को बुलाया। हजरत जोहरा बतूल ने भेजने में कुछ देर की तो मैंने समझा कि उन्हें हार पहनाती होंगी या नहला रही होंगी। इतने में इमाम हसन दौड़ते हुए हाजिर हुए। गले में हार था। सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस्ते अक़दस बढ़ाए। हुजूर को देखकर इमाम हसन ने भी हाथ फैलाये यहां तक कि दोनों लिपट गये। हुजूर ने गले लगाकर दुआ की। इलाही! मैं इसे दोस्त रखता हूं, तू भी इसे दोस्त रख। और जो इसे दोस्त रखे उसे भी दोस्त रख। अपना दस्ते अक़दस हजरत हसन के सीने पर रखा।

(फ़तावा रजवीया, जिल्द दहम निस्फ़ अव्वल, सफ़ा : २६ बहवाला इब्ने माजा जिल्द अव्वल, सफ़ा : ७२)

हजरत इमाम हसन के दीगर मनाकिब

रजियल्लाहु अन्हु

हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु के मनाकिब बेहद व बेशुमार हैं। आप बड़े बुर्दबार, हलीमुत्तबा, इज्जत व शान वाले, पुर-वकार, साहिबे जाह व हश्म थे। आप फित्ना व फ़साद और खूरेजी को नापसन्द फ़रमाते थे। आप सखावत में बे-बदल थे। बसा औकात एक-एक शख्स को एक-एक लाख दिर्हम अता फ़रमा देते थे। इब्ने-सअद अली बिन जैद बिन जदआन

से रिवायत करते हैं कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो मर्तबा अपना तमाम माल अल्लाह की राह में खर्च कर दिया और तीन बार निस्फ़—निस्फ़ माल राहे इलाही में दे दिया। (तारीखुल—खुलफ़ा सफ़ा : २८०)

एक मर्तबा एक बुढ़िया ने हज़रत हसनैन की दावत की तो आपने उसे एक हज़ार दीनार और एक हज़ार बकरियां दे दीं। हज़रत हुसैन ने भी इसी कदम दिया। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ४६६)

हाकिम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमर से रिवायत की है कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने बग़ैर झवारी के पचीस हज पैदल अदा फ़रमाए। हालांकि आला किस्म के ऊँट आपके पास होते थे। लेकिन आप उन पर सवार नहीं होते और फ़ा—प्यादा रास्ता तय फ़रमाते थे। जब लोगों ने आपसे इसके मुतअल्लिक दर्याफ़्त किया तो आपने फ़रमाया : मुझे अपने ख़ब से इस हाल में मिलते हुए शर्म महसूस होती है कि मैं उसके घर की तरफ़ पैदल न जाऊँ।

(तारीखुल—खुलफ़ा सफ़ा : २७६—सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ४६८)

आप बहुत शीरी कलाम थे। आपकी शीरी कलामी का यह आलम था कि जब आप किसी से तकल्लुम (बातचीत) फ़रमाते तो सुनने वाले का जी चाहता कि बस आप इसी तरह सिलसिले कलाम जारी रखें और ख़ामोश न हों। इसी तरह आप बड़े बुर्दबार और हलीमुत्तबा थे। आपकी बुर्दबारी और सब्र व तहम्मूल के बारे में इब्ने सअद उमर बिन इसहाक से रिवायत करते हैं कि मरवान जब हाकिम था तो वह मिम्बर पर अलल—एलान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा भला कहता था। इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु (कमाले तहम्मूल के साथ) उसकी उनकी गुस्ताख़ियों को सुना करते थे और ख़ामोश रहा करते थे। एक मर्तबा मरवान ने आपके सामने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को गालियां देनी शुरू कर दीं। हज़रत हसन ख़ामोश रहे। इसी असना में मरवान ने अपने सीधे हाथ से नाक साफ़ की तो हज़रत हसन ने उससे फ़रमाया : अफ़सोस! तुझे इतना भी नहीं मालूम कि सीधा हाथ धोने के लिये और बायां हाथ बौल व बराज के लिये है। यह सुनकर मरवान ख़ामोश हो गया। (तारीखुल—खुलफ़ा सफ़ा : २७६)



इमाम हसन की खिलाफत से दस्तबदारी

हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु अपने वालिदे गिरामी हजरत सैयदना मौला अली रजियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद छः माह तक खिलाफत के मन्सब पर फाइज रहे। चालीस हजार अहालियाने कूफा ने आपके दस्ते हक-परस्त पर बैअत की। उसके बाद हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु आपके पास आये और अल्लाह तआला को हकम और फ़ैसला दहिन्दा तस्लीम करके मुन्दरजा जेल शर्तों के साथ खिलाफत अमीर मुआविया के सुपुर्द फ़रमाने का अहद किया। (१) फिलवक्त अमीर मुआविया खलीफा बनाये जाते हैं लेकिन उनके इतिकाल के बाद इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु खलीफतुल-मुसलिमीन होंगे। (२) मदीना, इराक और हिजाज के बाशिन्दों से कोई टैक्स नहीं लिया जायेगा। बल्कि सिर्फ वही टैक्स वसूल किया जायेगा जो हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु के जमाने से लिया जा रहा है। (३) हजरत इमाम हसन के जिम्मे जो कर्ज है उसकी तमाम तर अदायगी हजरत अमीर मुआविया करेंगे।

इन तमाम शर्तों को हजरत अमीर मुआविया व हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हुमा ने कुबूल कर लिया। आपस में सुलह हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह मोजिजा जाहिर हो गया जो आपने फ़रमाया था कि "मेरा यह बेटा मुसलमानों की दो अजीम जमाअतों में सुलह करायेगा।"

हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु ने उस सुलह के बाद तख्ते खिलाफत हजरत अमीर मुआविया के सुपुर्द फ़रमा दिया। यह सुपुर्दगी माहे रबीउल-अव्वल सन् ४१ हिजरी मुताबिक ६२२ ई० में और बकौले बाज माहे रबीउरस्सानी सन् ४१ हिजरी में हुई। (तारीखुल-खुलफा सफा २८१)

हजरत इमाम हसन का खिलाफत से दस्तबदार होना आपके बाज अहबाब को सख्त नागवार हुआ तो उन्होंने तरह-तरह की गुस्ताखियां आपके साथ कीं। यहां तक कि बाज ने आपको आरुल-मुसलिमीन कह कर पुकारा तो आपने उनसे फ़रमाया कि अल-आरु खैरुम्मिनन्नार आर नार से बेहतर है। एक शख्स ने आपको यह कह कर पुकारा : ऐ मुसलमानों को जलील करने वाले, अस्सलामु अलैकुम! उसपर आपने फ़रमाया : कि मैं मुसलमानों को जलील कराने वाला नहीं हूं। अलबत्ता मैंने यह पसंद नहीं किया कि मैं मुल्क के लिये जिदाल व किताल कराऊँ।

(तारीखुल-खुलफा सफा : २८२)

खिलाफत से दस्तबदार होने के बाद हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु कूफा से मदीना तशरीफ ले गये। फिर वहीं कयाम-पजीर हो गये। हाकिम ने हजरत जुबैर बिन नुफैर की जुबानी लिखा है कि मैंने इमाम हसन से एक रोज अर्ज किया कि लोग कहते हैं कि आप फिर खिलाफत के ख्वास्तगार हैं। यह सुनकर आपने इरशाद फरमाया : जिस वक्त अरबों के सर मेरे हाथ में थे (यानी उन लोगों ने मेरे हाथ पर मरने जीने की बैअत की थी) उस जमाने में जिससे चाहता मैं उनको लड़ा देता और जिससे चाहता सुलह करा देता। लेकिन मैं ने सिर्फ अल्लाह तआला की रजामन्दी के हुसूल के लिये खिलाफत से दस्तबदारी दे दी और उम्मत मुहम्मदी के खून को मुफ्त बहने नहीं दिया। पस जिस खिलाफत से महज अल्लाह तआला की रजामन्दी के हुसूल के लिये दस्तबदार हो गया हूँ अब मैं उसको बाशिन्दगाने हिजाज की खुशनूदी के लिये दोबारा हासिल नहीं कर सकता।
(तारीखुल-खुलफा सफा : २८२)

इमाम हसन का जरिया-ए-मआश

खिलाफत से दस्तबदार होने के बाद हजरत इमाम हसन कूफा से मदीना मुनव्वरह तशरीफ ले आये और अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवारे अकदस में आखिर तक मुक़ीम रहे। आप शुरू ही से बहुत सखी थे। खिलाफत से दस्तबदारी के बाद भी आपकी सखावत में किसी क़िस्म की कोई कमी नहीं हुई। आप हर साल एक लाख रुपया ख़ैरात करते थे। हजरत अमीर मुआविया की जानिब से जो कुछ वज़ाइफ़ आपको मिलते थे उनमें से भी अकसर आप ख़ैरात व बख़्शिश फ़रमा दिया करते थे। बैहकी और इब्ने असाकिर ने हिशाम के वालिद के हवाले से ब्यान किया है कि एक मर्तबा हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु बहुत तंगदस्त हो गये। हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु हर साल उनको एक लाख दिरहम बतौरे वज़ीफ़ा दिया करते थे। वह उन्होंने रोक दिया तो आपको बहुत तंगी पेश आई। आपने हजरत अमीर मुआविया की याद-दहानी के लिये अपनी हालत पर मबनी एक रुक़आ लिखना चाहा। क़लम दवात तलब किया। लेकिन फिर कुछ सोचकर अपने आपको रोक लिया। उसी रोज़ आपने अपने नाना जान हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ फ़र्जन्द!

क्या हाल है? आपने अर्ज किया : नानाजान खैरियत है लेकिन तंग दस्ती आ गई है। आपने इरशाद फ़रमाया : क्या तुमने कलम दवात इसी गर्ज से मंगाई थी कि अपनी तंगदस्ती के लिये एक मखलूक के पास कुछ लिखो। आपने अर्ज किया : हां, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यह दुआ पढ़ा करो।

अल्लाहुम्मकजिफ़ फ़ी क़लबी रजाअ क वक़तअ रिज़ाअ अम्मुन सिवाक हत्ता ला अरजू अ ह दन ग़ैरुक अल्लाहुम्म म वमा ज़उफ़त अन्हु क्रुव्वती व कसु र अन्हु अ म ली वलम तन्त हि इलैहि र ग़ बती वलम तबलुग़हु मसअलती वलम यज़रि अला लिसानी मिम्मा आतै त अ ह दन मिनल अब्वलीन वल-आख़िरीन मिनल यकीनि फ़ख़ुरस्नी बिही या रब्बल-आलमीन। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे यह दुआ पढ़े एक हफ़्ता भी न गुज़रने पाया कि मुआविया ने मुझे पांच लाख दिरहम भेज दिये जिसपर मैंने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए कहा कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला ही के लिये हैं जो अपने याद करने वालों को कमी फ़रामोश नहीं फ़रमाता और अपने मांगने वालों को महरूम व ना-उम्मीद नहीं फ़रमाता। उसके बाद हज़रत इमाम हसन ने फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत फ़रमाई। इमाम हसन फ़रमाते हैं कि मुझसे रसूलुल्लाह ने दरयाफ़्त फ़रमाया : हसन कैसे हो? मैंने अर्ज किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं अच्छा हूँ और पूरा वाक़िया ब्यान कर दिया तो आपने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरे बेटे! अल्लाह से उम्मीदवार होने और मख़लूक से इल्तिजा न करने का नतीजा यही होता है। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८३)

नोट:- उम्मीद है कि जो परेशान हाल इस दुआ को पढ़ता रहेगा इन्शाअल्लाह उसकी परेशानी बहुत जल्द दूर होगी।

करामाते हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की बहुत-सी करामात हैं जिन में से चन्द ज़िक्र की जाती हैं —

हज़रत इमाम हसन एक मर्तबा पैदल हज करने तशरीफ़ ले गये तो आपके पांव में वर्म आ गया। आपके किसी गुलाम ने अर्ज की : काश! आप सवारी पर सवार हो जायें ताकि वर्म कम हो जाये। आपने उसकी

दरख्वास्त कुबूल न फरमाई और इरशाद फरमाया : जब तुम घर पहुंचोगे तो तुम्हें एक हब्शी मिलेगा जिसके पास कुछ तेल होगा। तुम उससे तेल खरीद लेना और झगड़ा मत करना। गुलाम ने कहा : मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान! हमने किसी जगह भी कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जिसके पास तेल हो। जब वह अपनी मन्जिल पर पहुंचे तो वह हब्शी दिखाई दिया। हज़रत इमाम हसन ने अपने गुलाम से फरमाया : यह है वह हब्शी जिसके मुतअल्लिक मैंने बताया था। जाओ उससे तेल खरीद लाओ और कीमत अदा कर आओ। जूं ही गुलाम उस हब्शी के पास गया और तेल तलब किया तो उसने कहा, तेल किसके लिये खरीद रहे हो? गुलाम ने कहा : हज़रत इमाम हसन के लिये। उसने कहा : मुझे उनके पास ले चलो, मैं उनका गुलाम हूं। जब वह हब्शी आपके पास पहुंचा तो कहा : मैं आपका गुलाम हूं तेल की कीमत नहीं लूंगा। आप बस मेरी बीवी के लिये, जो दर्दे जेह में मुबतला है, दुआ फरमायें कि अल्लाह तआला उसे एक सहीहुल आज़ा बच्चा अता फरमाये। आपने फरमाया : अपने घर लौट जाओ। अल्लाह तआला तुम्हें ऐसा ही बेटा अता फरमाएगा जैसा तुम चाहते हो। वह हमारा पैरोकार होगा। हब्शी घर गया तो देखा कि आपके फरमान के मुताबिक बच्चा पैदा हो गया।

(शवाहिदुन्नुबुव्व : सफ़ा : ३०२, मतबूआ मकतबा नब्वीया, लाहौर)

दूसरी बड़ी करामत आपकी यह है कि एक दिन आप हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के किसी बच्चे के साथ कहीं सफ़र पर थे कि एक ऐसे नख़लिस्तान में क़याम-पज़ीर हुए जो बिल्कुल खुश्क था। और खजूरों के दरख़्त भी खुश्क पड़े हुए थे। हज़रत हसन नख़लिस्तान के एक कोने में और इब्ने जुबैर दूसरे कोने में आराम फरमा रहे थे कि इब्ने जुबैर ने अर्ज किया : ऐ काश! इस नख़लिस्तान में ताज़ा खजूरें होतीं जिन्हें हम खाते। हज़रत इमाम हसन ने फरमाया : क्या ताज़ा खजूरें चाहते हो? इब्ने जुबैर ने कहा : हां। आपने दुआ के लिये हाथ उठाया और ज़ेरे लब कुछ पढ़ा जो किसी को मालूम न हुआ। फ़ौरन खजूर का एक दरख़्त तरब तरब ताज़ा और बार-आवर हो गया। इसमें ताज़ा खजूरें लग गईं। उनका साथी शुत्रबान बोला। ब-ख़ुदा यह तो जादू है, हज़रत हसन ने फरमाया : यह जादू नहीं, बल्कि फ़र्जन्दे रसूल की दुआए मुस्तजाब का असर है। इसके बाद लोगों ने ख़ूब शिकम सैर होकर खाया।

(शवाहिदुन्नुबुव्व : सफ़ा : ३०२)

तीसरी करामत यह है कि किसी शख्स ने आपकी कब्र शरीफ पर पाखाना कर दिया तो वह फौरन दीवाना हो गया। कुत्ते की तरह भोंकता रहा। उसी हाल में बुरी तरह से मर गया। फिर उसकी कब्र से भी भोंकने की आवाज सुनाई देती थी। (सआदतुल-कौनैन सफ़ा : ३४)

हज़रत इमाम हसन और कसरते इज़दवाज

इब्ने-सअद ने हज़रत अली बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु औरतों को बहुत तलाक़ दिया करते थे। जो औरत आपके निकाह में आ जाती वह आपसे जुदाई हरगिज़ नहीं चाहती थी। आप पर फ़रेफ़ता हो जाती थी। इस तरह आपने नव्वे (६०) शादियां कीं। जाफ़र बिन मुहम्मद के हवाले से लिखा है कि इमाम हसन निकाह करते और तलाक़ दे देते। आपकी इस रविश से हमें ख़ौफ़ पैदा हो गया कि अब क़बाइल में दुशमनी हमेशा-हमेशा क़ाइम रहेगी। इब्ने-सअद ने जाफ़र बिन मुहम्मद के हवाले से और उन्होंने अपने वालिद की जुबानी ब्यान किया है कि वह कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एलान फ़रमा दिया कि ऐ कूफ़ा वालो! हसन के साथ अपनी बेटी की शादी मत करो। वह तलाक़ देने के आदी हैं। यह सुनकर एक हमदानी ने कहा : खुदा की क़सम! हम उनसे अपनी बेटियां ज़रूर ब्याहेंगे जिसको वह पसंद फ़रमायें रखें और जो नापसंद हो उसको तलाक़ दे दें। लोगों की इस मुहब्बत और हज़रत इमाम हसन से अपनी बेटी की शादी करने की सबसे बड़ी वजह यह थी कि आप नवासए रसूल थे। इसीलिये लोग उसकी परवाह न करते थे, और अपनी बेटियां आपकी निकाह में दे दिया करते थे।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २८०)

हज़रत शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहदिस देहलवी अलैहिर्रहमः इस सिलसिले में फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हसन औरतों से निकाह फ़रमाते और फिर उनको तलाक़ दे देते थे। फिर दूसरी औरतों के साथ निकाह करते थे, ऐसा बनीयते सवाब करते थे। जब हज़रत इमाम हसन से कसरते तज़व्वुज का सबब पूछा गया तो आपने फ़रमाया : मैं चाहता हूं कि बहुत-से लोगों को मेरी वजह से पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिशता हो जाये। जो क़यामत के दिन उन्हें काम आये। (फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा : २३७)

बीवियों से अच्छा सुलूक

जब तक जो भी औरत आपके हवाले अक़द में रहती थी आप उससे बड़ी मुहब्बत और उसकी बड़ी कद्र फ़रमाते थे। तलाक़ देने के बाद भी आपको उतना सब कुछ अता फ़रमाते थे कि वह बक़िया ज़िन्दगी इन्तिहाई सुकून व इतमीनान से गुज़ारती थी। चुनांचे रिवायतों में आता है कि आपने एक मर्तबा फुज़ारी और एक असदी औरत को रजई तलाक़ दी तो उनकी दिलदेही के लिये दस-दस हज़ार दिरहम और एक-एक मशकीज़ा शहद बतौरे मता दी।

जब फुज़ारी औरत को यह रक़म मिली तो उसने शुक्रिया के साथ कुबूल कर ली। लेकिन जब असदी औरत को मिली तो यह तोहफ़ा देखकर बे-इख़्तियार हसरत भरा शे'र फ़रमाया : मत्. उन कलीलुम मिन हबीबिम मुफ़ारिकुन जुदा होने वाले दोस्त के मुक़ाबिले में यह मताएहकीर है।

(सआदतुल-कौनैन सफ़ा : ३६)

हज़रत इमाम हसन की शहादत और ज़हर-ख़ोरानी

इब्ने-सअद ने हज़रत इमरान बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से ब्यान फ़रमाया है कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़्वाब देखा कि उनकी दोनों आंखों के दरमियान कुल हुअल्लाहु अहद लिखा हुआ है। जिस वक़्त आपने यह ख़्वाब ब्यान किया तो अहल-बैत बहुत खुश हुए। लेकिन जब हज़रत सईद बिन मुसैइब ने यह ख़्वाब सुना तो उन्होंने फ़रमाया कि अगर आपका यह ख़्वाब सच्चा है तो आपकी हयात के चन्द रोज़ बाकी रह गये हैं। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि उस ख़्वाब के देखने के बाद आप सिर्फ़ चन्द रोज़ बक़ैदे हयात रहे। फिर ज़हर देकर आप शहीद कर दिये गये।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २८२)

ज़हर-ख़ोरानी की तफ़सील इस तरह ब्यान की जाती है कि सबसे पहले आपको शहद में ज़हर मिलाकर दिया गया। आप दर्दमन्दों के दारुशशिफ़ा अपने नानाजान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए अक़दस पर हाज़िर हुए और अपने जिस्म अनवर को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की चौखट पाक के साथ मला तो आपको शिफ़ाए कुल्ली हासिल हो गई और आप सेहतयाब होकर अपने मकान पर तशरीफ़ ले आये।

(औराके ग़म सफ़ा २४४, रौज़तुशशुहदा सफ़ा : ४१७)

दूसरी बार आपको ज़हर—आलूद ख़ुजूरें खिलाई गई। अभी आपने सात ख़जूरें ही खाई थीं कि आपको सख़्त घबराहट पैदा होने लगी। आपने फ़ौरन ख़जूरों से हाथ खींच लिया और अपने भाई इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान पर तशरीफ़ ले गये। शिद्दते तकलीफ़ से रात भर तड़पते, कराहते रहे। सुबह हुई तो फिर अपने नानाज़ान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िर हुए और दुआ फ़रमाई तो इस बार भी खुदाए तआला के फ़ज़ल व करम और अपने नाना जान के तुफ़ैल ज़हर का असर ख़त्म हो गया।

(रौज़तुशशुहदा, जिल्द अव्वल सफ़ा : ४१७)

तीसरी बार, रात के अंधेरे में हीरे की कनी के साथ ज़हर मिलाकर आपकी सुराही में डाल दी गई। उस वक़्त आप आराम फ़रमा रहे थे कि अचानक उठे और अपनी हमशीरा हज़रत ज़ैनब को बुलाया और फ़रमाया : बहन! अभी ज़दे अमजद सरकारे मदीना को ख़्वाब में देखा है। उनकी ख़िदमत में अब्बाजान, अम्मी जान भी हाज़िर थे। लिहाज़ा पानी लाओ ताकि वुजू करूं। हज़रत ज़ैनब पानी लेने गयीं और आपने उस सुराही में से पानी नोश फ़रमा लिया। बस पानी पीते ही एक सर्द आह भरी और फ़रमाया : यह कैसा पानी है कि मेरे हलक़ से नाफ़ तक टुकड़े—टुकड़े हो गये हैं। फिर बहन से फ़रमाया कि जल्दी जाओ और भाई हुसैन को बुला लाओ। आपने फ़ौरन भाई को बुलवाया। आप भाई को देखकर आँबदीदा हो गये। बग़ल—गीर होकर ख़ूब मिले। फ़रमाया : भाई जान! आप पर अल्लाह तआला की रहमत हो, अब क़यामत के दिन ही मुलाक़ात होगी।

(रौज़तुशशुहदा, जिल्द अव्वल सफ़ा : ४२३)

हज़रत इमाम हसन को ज़हर किसने दिया?

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को आपकी बीवी जादा बिनते अशअस ने ज़हर दिया था। किसी ने यज़ीद और किसी ने अमीर मुआविया के बारे में लिखा है। लेकिन यह महज़ क़्यास है जिसको सही मानने का कोई क़तई सबूत नहीं। अल्लाह व रसूल ही बेहतर जानते हैं कि यह नापाक हरकत किसने की है। लेकिन इस मामले में साहबे

जहर जिनको जहर दिया गया वह खुद फरमाते हैं कि मुझे जिसने जहर दिया है उसका मामला मुन्झमे हकीकी के सुपुर्द करता हूं। हजरत इमाम हुसैन ने बा-इसरार पूछा कि भाईजान बताइए आपको जहर किसने दिया? मगर उस सब व तहम्मूल के ताजदार ने नाम नहीं बताया। फरमाया कि मैं जिसको इस फेल का मुर्तकिब समझता हूं अगर वाकई वही इसका मुर्तकिब है तो अल्लाह बेहतर बदला लेने वाला है और अगर वह मुर्तकिब नहीं तो मैं नहीं चाहता कि कोई बेकसूर मारा जाये। इस सिलसिले में हम कदरे तफसील के साथ एक मुहक्किकाना मजमून जो हजरत सदरुल अफ़ाज़िल अल्लामा मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः का है, तहरीर कर रहे हैं, मुलाहज़ा फरमाइये :

आप लिखते हैं कि मुअरिखीन ने जहर-खोरानी की निसबत जादा बित्ते अशअस बिन कैस की तरफ की है और उसको हजरत इमाम की जौजा बताया है। यह भी कहा है कि यह जहर-खोरानी ब-ईमाये यज़ीद हुई है। यज़ीद ने उससे निकाह का वादा किया था। इस तमा में आकर उसने हजरत इमाम को जहर दिया। लेकिन इस रिवायत की कोई सही सनद दस्तियाब नहीं हुई। बगैर सनदे सही के किसी मुसलमान पर क़त्ल का इल्ज़ाम किस तरह जाइज़ हो सकता है? कतये नज़र इस बात के, कि रिवायत के लिये कोई सनद नहीं है मुअरिखीन ने बगैर किसी मोतबर ज़रिया या मोतमिद हवाला के लिख दिया है।

यह ख़बर वाकिआत के लिहाज़ से भी नाकाबिले इतमिनान मालूम होती है। वाकिआत की तहकीक खुद वाकिआत के ज़माने में जैसी हो सकती है, मुश्किल है कि बाद को वैसी तहकीक हो। ख़ास कर वाकिआ जबकि इतना अहम हो — मगर हैरत है कि अहले-बैते अतहार के इस इमाम जलील का क़त्ल (और आपके) कातिल की ख़बर ग़ैर को तो क्या होती खुद हजरत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को पता नहीं है। यही तारीखें बताती हैं कि वह अपने बिरादरे मुअज़्ज़म से जहर-देहिन्दा का नाम दर्याफ़्त फरमाते हैं। इससे साफ़ जाहिर है कि हजरत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को जहर देने वाले का इल्म न था। अब रही यह बात कि हजरत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु किसी का नाम लेते। उन्होंने ऐसा नहीं किया तो अब जादा को कातिल होने के लिये मुअय्यन करने वाला कौन है? हजरत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को, या इमामैन के साहबज़ादों में से किसी साहब

को अपनी आखिर हयात तक जादा की ज़हर-खोरानी का कोई सबूत न पहुंचा और न उनमें से किसी ने उन पर शरई मवाखज़ा किया।

एक और पहलू इस वाकिआ का ख़ास तौर पर काविले लिहाज़ है। वह यह कि हज़रत इमाम की बीवी को ग़ैर के साथ साज़-बाज़ करने की शनीअ़ तोहमत के साथ मुत्तहिम किया जाता है। यह एक बदतरीन तवर्रा है। अजब नहीं कि इस हिकायत की बुनियाद ख़ारजियों के इफ़तराआत हों। जबकि सही और मोतबर ज़राए से यह मालूम है कि इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु कसीरुत्तज़ौवुज थे और आपने सौ के करीब निकाह किये और तलाक़ दीं। लेकिन कभी किसी के साथ ज़्यादती नहीं की। तलाक़ के बाद भी वह अपनी बक़िया ज़िन्दगी हज़रत इमाम की मोहब्बत में गुज़ार देती थीं। ऐसी हालत में यह बात बहुत बर्इद है कि इमाम की बीवी हज़रत इमाम के फ़ौज़ की कद्र न करे और यज़ीद पलीद की तरफ़ एक तमए फ़ासिद से इमामे जलील के क़त्ल जैसे सख़्त जुर्म का इर्तिकाब करे। वल्लाहु आलम बिहकीक़तिल हाल। (सवानेह करबला सफ़ा: ६६)

साहिबे तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा तहरीर फ़रमाते हैं — हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को यूं तो कई बार ज़हर दिया गया। लेकिन सन् ४६ हिजरी में ऐसा ज़हरे हालाहल दिया गया कि कलेजे के टुकड़े कट-कट कर गिरने लगे और यही आपके इंतिकाल का सबब बना। उस वक़्त आपके बिरादरे सगीर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पास थे। हज़रत इमाम हसन की घबराहट और बेकरारी में ज़्यादा इज़ाफ़ा हो गया तो आपने फ़रमाया : ऐ बिरादरे मुअज़्ज़म! यह घबराहट कैसी? आप तो नानाजान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अपने बाबाजान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जा रहे हैं। अपनी जद्दह करीमा हज़रत ख़दीजतुल-कुब्रा और वालिदए मुहतरमह हज़रत फ़ातिमतुज्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना से मुलाकात करेंगे। अपने चचा हज़रत हमज़ा और हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मिलेंगे। अपने मामू हज़रत कासिम व हज़रत ताहिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से भी मुलाकात करेंगे। यह सुनकर हज़रत इमाम हसन ने फ़रमाया : ऐ बिरादरे अज़ीज़ ! मैं ऐसी जगह जा रहा हूँ जहां अब से पहले कभी नहीं गया था। मैं ऐसी मख़लूक़ को देख रहा हूँ जिसे मैं ने पहले कभी नहीं देखा था। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८४)

इसके साथ ही आपने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ

पेश आने वाले वाकिआत और कूफियों की बद-सुलूकी व ईजा रसानी का भी तजक़िरा फ़रमाया। इरशाद फ़रमाया कि मैंने हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी कि वह मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहलू में दफ़न की इजाज़त दे दें। चुनांचे उन्होंने मुझे इजाज़त दे दी है। लेकिन मेरी वफ़ात के बाद तुम फिर दोबारा वहां दफ़न करने की इजाज़त हासिल कर लेना। मैं गुमान करता हूँ कि बनू-उमैया ऐसा करने न देंगे। अगर वह लोग मज़ाहिम हुए तो तुम ज़्यादा इसरार मत करना। चुनांचे जब हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का सन् ४६ हिजरी पांचवी रबीउल-अव्वल को ४५ साल छः माह चन्द रोज़ की उम्र में मदीना मनव्वरा में इंतिकाल हो गया तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने इमाम हसन की वसीयत के मुताबिक़ हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से इजाज़त चाही। तो आपने फ़रमाया : इजाज़त है। मगर मरवान (हाकिमे मदीना) माने हुआ। जिसपर हज़रत इमाम हुसैन और आपके साथियों ने हथियार संभाल लिए। मगर हज़रत अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इमाम हुसैन को अपने भाई की वसीयत याद दिलाकर वापस किया। यह फ़र्जन्द अर्जमन्द जिगर गोंशए बतूल अपनी वालिदए मुहतरमा खातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहलू में जन्नतुल-बकी में दफ़न किये गये।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८४)

आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई।



फ़ज़ाइल

सहाबिए रसूल व कातिबे वहय

हज़रत

अमीर मुआविया

रज़ियल्लाहु अन्हु

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन अल्फ़ाज़
में आपके लिये दुआ फ़रमाई है :

अल्लाहुम्मजअलहु हादियम महदोयों वहदे बिही

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जिल्द दोम, सफ़ा : ८१३)

ऐ अल्लाह ! (मुआविया को) हिदायत देने वाला, हिदायत याफ़ता
बना और उसके ज़रिए से हिदायत दे।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु

नाम व नसब : हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू सुफियान रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे और बहुत ही मशहूर व मारुफ़ सहाबी हैं। अव्वल मुलूक यानी बादशाह हैं। उनकी विलादत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जुहूरे नुबुव्वत से आठ साल पहले मक्का में हुई। आपको भी यह शर्फ़ हासिल है कि आपके वालिदैन भी दौलते इस्लाम से मुशरफ़ हो गये थे।

आपका नाम मुआविया और कुन्नीयत अबू-अब्दुर्रहमान है। आपके वालिद का नाम अबू-सुफियान और वालिदा का नाम हिन्दा है। बाप की तरफ़ से आपका सिलसिलए नसब यह है। मुआविया बिन अबू-सुफियान सख़र बिन हर्ब बिन उमैया बिन अब्द-शम्स बिन मनाफ़ बिन कुसय अल-उमवी। माँ की तरफ़ से नसब यूँ है : मुआविया बिन हिन्दा बिनते उतबा बिन रबीआ बिन अब्द-शम्स बिन अब्दे मनाफ़। अब्दे-मनाफ़ हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चौथे दादा हैं। क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिलए नसब यह है - मुहम्मद रसूलुल्लाह इब्ने अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे-मनाफ़। खुलासा यह हुआ कि अमीर मुआविया वालिद की तरफ़ से पांचवे पुश्त में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नसब में शामिल हो जाते हैं। इस लिहाज़ से आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीबी रिश्तादार में से हुए। दूसरे रिश्ता में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हकीकी साले भी होते हैं क्योंकि उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे-हबीबा बिनत अबू-सुफियान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जौजए मुतहहरा हैं। वह हज़रत अमीर मुआविया की हकीकी बहन हैं। इसीलिए मौलाना रुम ने आपको मसनवी शरीफ़ में तमाम मोमिनों का मामू तहरीर किया है। वह इसी लिहाज़ से है।

(हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र सफ़ा : ३४, तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा : २८७)

हज़रत अमीर मुआविया का क़बूले इस्लाम

हज़रत अमीर मुआविया ने कब इस्लाम क़बूल किया इसके बारे में मुफ़तीए आजम हिन्द व पाक अल्लामा अहमद यार खां साहब नईमी अलैहिर्रहमः तहरीर फ़रमाते हैं कि सही यह है कि अमीर मुआविया ख़ास

सुलह हुदैविया के दिन सन् ७ हिजरी में इस्लाम लाये। मगर मक्का वालों के खौफ से अपना इस्लाम छुपाए रखा। फिर फूट्टे मक्का के दिन अपना इस्लाम जाहिर फ़रमाया। जिन लोगों ने कहा कि वह फूट्टे मक्का के दिन ईमान लाये वह जुहूरे ईमान के लिहाज से है।

(‘हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र’ सफ़ा : ३५)

ईमान लाने के बाद ग़ज़वए हुनैन में हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह शरीक हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको सौ ऊँट और चालीस औकिया सोना मर्हमत फ़रमाया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कातिबीन में भी आपका शुमार होता है। बाज़ हज़रात इसके भी कायल हैं कि आप कातिबे वह्य इलाही भी थे।

एक रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वुज़ू कराया तो आपने फ़रमाया : ऐ मुआविया! अगर तुम हुकूमत को पाओ तो अल्लाह से डरना और इन्साफ़ करना। हज़रत मुआविया कहते हैं कि इससे मुझे यकीने कामिल हो गया कि मुझे हुकूमत मिलेगी।

आपके कारनामों का आगाज़ अहदे सिद्दीकी से ही शुरू हो चुका था। सन् १६ हिजरी में हज़रत फ़ारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनके भाई यज़ीद बिन उसमान के विसाल के बाद शाम का हाकिम बनाया। हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ज़माने में उनको पूरे शाम का हाकिम बना दिया। उस उहदे पर बीस साल तक फ़ाइज़ रहे। फिर अहदे मुर्तज़वी में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़ूने उसमान के बदले का मुतालबा किया और नौबत जंग तक पहुंच गई। फिर हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मसालिहत हो गई। इमाम हसन ने छः माह ख़िलाफ़ते राशिदा फ़रमाकर ख़िलाफ़त अमीर मुआविया के सुपुर्द फ़रमा दी। इसके बाद आप तमाम ममलिकते इस्लामिया के अमीर हो गये और चालीस साल तक हुकूमत फ़रमाई। पूरी मुद्दते हाकिमीयत में आपने नुमायां कारनामा अन्जाम दिया है। आपके दौर में शाम के तमाम सरहदी इलाके फ़तह हो गये थे। आप ही ने सबसे पहले हज़रत उसमान ग़नी की इजाज़त से बहरी बेड़ा काइम किया। रोमियों के हमले का मुंह तोड़ जवाब दिया। अस्करी अवाइल में कहते हैं कि इस्लाम में कासिद व पयाम्बर सब से पहले आप ही ने मुक़र्रर फ़रमाये। अपनी ख़िदमत के लिये ख़्वाजासरा रखने वाले सबसे अव्वल आप ही हैं। सबसे अव्वल रिआया आप ही से

नाराज़ हुई। (इससे कबल किसी खलीफ़ा से रियाया नाराज़ नहीं हुई) अशजई कहते हैं कि अब्बल आप ही वह शख्स हैं जिसने खुत्वा बैठ कर दिया। ईद में अज़ान देना भी आप ही की ईजाद है। सबसे पहले आप ही को इस तरह सलाम किया गया अस्सलामु अलै क या अमीरुल-मोमिनीन व रहमतुल्लाहि व ब र कातुहुस्सलातु यरहमुकल्लाह। दफ़्तरी कामकाज के लिये आप ही ने सबसे अब्बल मुहर ईजाद की। मुहर-बर्दारी के लिये अब्दुल्लाह बिन औस गस्सानी को मामूर किया। उस मुहर पर लिफ़ुल्लि अ म लिन सवाबुन कुन्दा था। जामे मस्जिद में सबसे पहले आप ही ने छोटा-सा हुजरा बनवाया। आप ही ने अब्बलन गिलाफ़े काबा उतार कर दूसरा गिलाफ़ चढ़ाने का हुक्म दिया। वरना इससे कबल एक गिलाफ़ पर दूसरा गिलाफ़ (तह-बतह) चढ़ा दिए जाते थे। बैअत से पहले कसम लेने का तरीका भी हज़रत अमीर मुआविया ही ने जारी फ़रमाया।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा, सफ़ा : ६५)

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु दराज़ कद, ख़ूबरू और वजीह शख्स थे। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हु आपको देख कर फ़रमाया करते थे कि यह अरब के किसरा हैं। हज़रत सैयदना मौला अली मुश्किल-कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि आपने फ़रमाया कि मुआविया को बुरा न कहो। जब यह तुम्हारे अन्दर से उठ जायेंगे (यानी उनकी वफ़ात हो जायेगी) तो तुम देखोगे बहुत से सर तन से जुदा किये जायेंगे। (यानी जिदाल व किताल होगा)। मक़बरी कहते हैं कि लोगों पर हैरत है कि वह किसरा (शाहे फ़ारस) और हिरकल (शाहे रोम) का तो ज़िक्र करते हैं मगर हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को भूल जाते हैं।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा, सफ़ा : २८८)

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु निहायत नेक दिल, सखी, बहुत हलीम व करीम थे। उनकी सखावत हर एक पर बिला इम्तियाज़ मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ सब पर यकसां होती थी। बिल-ख़ुसूस अहले-बैते अतहार को हमेशा खुश रखना चाहते थे। क्योंकि वह जानते थे कि खिलाफ़त उन्हीं का हक़ है और उन्हीं के ख़ानदान के बाइस मुझे यह इज़्ज़त व इकराम हासिल हुआ है। चुनांचे एक बार हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात के

लिए तशरीफ लाये तो हजरत अमीर मुआविया ने उन्हें अपनी जगह बिठाया। खुद सामने हाथ बांधकर खड़े हो गये। किसी ने पूछा कि ऐ अमीरुल-मोमिनीन! आप ऐसा क्यों करते हैं? तो आपने फरमाया: इमाम हसन हम-शक्ले मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। इस मुशायहत का एहताराम करता हूं। इसके बाद इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु से फरमाया: आज मैं आपको ऐसा नजराना देता हूं कि इससे पहले किसी ने ऐसा नजराना नहीं दिया और न आइन्दा आपके बाद किसी दूसरे को ऐसा नजराना दूंगा। चुनांचे आप ने चार लाख दिरहम हजरत इमाम हसन की बारगाह में पेश किया जिन्हें आपने कुबूल फरमाया।

('हजरत अमीर मुआविया पर एक नजर' सफा ४८)

हजरत अमीर मुआविया भी खुलफाए राशिदीन की तरह उम्माहातुल मोमिनीन की खिदमत अपने लिये बाइसे सआदत और इफतिखार समझते थे। चुनांचे एक दफा आपने उम्मुल-मोमिनीन हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु अन्हा को एक लाख अशरफी की कीमत का जेवर नजर फरमाया। हजरत हसनैन करीमैन के लिये चालीस हजार अशरफियां पेश कीं।

('तारीखुल-इस्लाम', शौक अमतसरी जिल्द सोम सफा: ५२७)

अल्लामा मुहम्मद बिन महमूद आमली अपनी किताब 'नफाइसुल-फुनून' में किताबुन्नाहिया के हवाले से लिखते हैं कि एक बार हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु ने हाजिरीने मजलिस से फरमाया कि जो कोई हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु के शान में कसीदा पढ़े तो मैं उसे फी शे'र एक हजार दीनार दूंगा। चुनांचे हाजिरीन शोअरा ने हजरत अली के शान में अशआर पढ़े और खूब इनाम लिए। हजरत अमीर मुआविया हर शे'र पर फरमाते थे कि अली इससे भी अफज़ल हैं। यहां तक कि एक शाइर उमरु बिन आस का एक शे'र आपको इस कदर पसंद आया कि उसी शे'र पर उसको सात हजार दीनार दे दिया।

('हजरत अमीर मुआविया पर एक नजर' सफा: ४६)

हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु से एक सौ तिरसठ अहादीस मरवी हैं। आप बड़े आबिद व जाहिद थे। आपकी इबादत के मुतअल्लिक मशहूर है कि एक बार आप रात के वक्त अपने महल में सो रहे थे कि अचानक एक आदमी ने आपको जगाया। आपने उससे पूछा तू कौन है और इस महल में कैसे पहुंच गया? वह बोला कि मैं इबलीस हूं। आप ने फरमाया:

कि तेरा काम नमाज़ के लिए जगाना नहीं है। जब उसे डराया धमकाया तो उसने कहा कि इससे पहले एक दफ़ा मैंने आपको नमाज़े फ़ज़्र के वक़्त सुला दिया था जिससे आपकी नमाज़ कज़ा हो गई थी। आप उसके ग़म में इतना रोये थे कि मैंने फ़रिशतों को आपस में कलाम करते सुना कि अमीर मुआविया को इस रंज व ग़म की वजह से पांच सौ नमाज़ों का सवाब दिया गया। मैंने ख़्याल कि अगर आज फिर आप नमाज़े फ़ज़्र न पढ़ सके तो आज आप फिर रोयेंगे और ऐसा न हो कि एक हजार नमाज़ों का सवाब हासिल कर लें। इसलिए आपको जगा दिया कि एक ही नमाज़ का सवाब हासिल करें।

इस वाकिआ से मालूम हुआ कि अमीर मुआविया बहुत आबिद व ज़ाहिद और मक़बूले बारगाहे इलाही थे। इबलीस जैसा ख़ब्बीस जो किसी के कब्जे में न आए वह आपके कब्ज़ा व गिरफ़्त से न छूट सका। यह सब निगाहे जमाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दैन है कि जो निगाह सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख ले उनकी नज़रों से कौन-सी चीज़ छुप सकती है।

(‘हज़रत मुआविया पर एक नज़र’ सफ़ा : ५३)

फ़ज़ाइल हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु जलीलुल-क़द्र सहाबी और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीबी रिश्तेदार भी हैं। लिहाज़ा सहाबए किराम से मुतअल्लिक जिस क़दर फ़ज़ाइल व मरातिब अल्लाह तआला ने अपने मुक़द्दस क़लाम पाक में ब्यान फ़रमाए हैं उन सब में हज़रत अमीर मुआविया भी दाख़िल हैं। इसलिये उनसे बुग़ज़, कीना व हसद रखना सख़्त क़िस्म की महरूमि और ईमान की कमी का बाइस है।

आपके फ़ज़ाइल व मनाकिब तो कसरत से हैं लेकिन हम उनमें से चन्द यहां ज़िक्र कर रहे हैं :

(१) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू-उमैरा (सहाबिए रसूल) रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अमीर मुआविया के लिए फ़रमाया : अल्लाहुम्मजअलहु हादियम्महदीयों वहदे बिही। ऐ अल्लाह! मुआविया को हिदायत देने वाला हिदायत-याफ़ता बना और उनसे हिदायत दे। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७५५)

(२) हज़रत इरबाज़ इब्ने सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाहुम्म म अल्लिमिल मुआवियतलकिता ब वल-हिसा ब वकिहिल अज़ाब ऐ अल्लाह ! मुआविया को किताब (कुरआन) और हिसाब का इल्म अता फ़रमा और उन्हें अज़ाब से बचा।

(हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र सफ़ा/४१/नुज़हतुल काशी शरह सहीहुल-बुख़ारी जिल्द १ सफ़ा/३६७)

(३) हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाज़ी नसीमुर्रियाज़ शरह शिफ़ाए काज़ी अयाज़ में फ़रमाते हैं : व मैंयकूनु युतइनू फ़ी मुआविय त फ़ज़ा क मिन किलाबिल हादियः। जो शख़्स हज़रत अमीर मुआविया पर तान करे वह जहन्नमी कुत्तों में से एक कुत्ता है।

(‘अहकामे शरीअत’ जिल्द अव्वल सफ़ा/५५)

(४) हाफ़िज़ हारिस इब्ने उसामा ने बहुत तवील हदीस रिवायत फ़रमाई है। उसमें खुलफ़ाए राशिदीन और दीगर सहाबा के फ़ज़ाइल हैं। उसमें यह भी है कि व मुआवियतबनि अबी सुफ़ियान अहलमु उम्मती व अजवदुहा मुआविया मेरी उम्मत के बड़े हिल्म और सखावत वाले हैं।

(हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र सफ़ा/४१ बहवालए तत्हीरुल जनान)

(५) बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से किसी शख़्स ने कहा कि आप हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में क्या फ़रमाते हैं ? तो आपने फ़रमाया कि वह फ़कीह हैं। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/४९८)

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की अलालत और आख़िरी खुतबा

सन् ६० हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु मर्जुल-मौत में मुब्तला हुए। अरसा से आपके कुवा मुज़महिल हो चुके थे और ताक़ते जिसमानी भी जवाब दे चुकी थी। अपनी मौत से कुछ दिनों पहले उन्होंने हस्बे ज़ैल खुतबा दिया जिसके चन्द जुमले हस्बे ज़ैल थे।

लोगो! मैं उस खेती की तरह हूँ जो कटने के लिये तैयार हो। मैंने तुम लोगों पर तबील मुदत तक हुकूमत की कि मैं भी उससे थक गया और गालिबन तुम लोग भी थक गये होंगे। अब मुझे तुमसे जुदा होने की तमन्ना है और गालिबन तुमको भी यही आरजू होगी। मेरे बाद आने वाला मुझसे बेहतर न होगा। किसी का मकूल है कि जो शख्स खुदा से मिलने की तमन्ना करता है खुदा भी उससे मिलने का मुतमन्नी रहता है। इसलिये खुदाया! अब मुझको तुझसे मिलने की आरजू है। इसलिये तू भी मुझे अपनी हाजिरी का शर्फ अता फरमा और उस मुलाकात में बर्कत अता फरमा। इस खुतबा को अभी ज्यादा अरसा नहीं गुजरा था कि आप सख्त बीमार हुए और मर्ज में रोज-बरोज ज्यादाती पैदा होने लगी। वक्ते आखिर आ चुका था। इसलिये इलाज व मुआलजा से भी कोई फायदा नज़र नहीं आता था तो अपने घर वालों से फरमाया : कि मेरे आंखों में सुरमा लगा दो। सर में तेल डाल दो। लोगों से कह दो कि आएँ और खड़े-खड़े सलाम करके चले जाएँ। चुनांचे लोगों ने ऐसा ही किया और आप तकिये से टेक लगाकर आराम से बैठे रहे।

(तारीख इब्ने-खलदून जिल्द दोम सफ़ा : ६४ तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा : १५३)

हज़रत अमीर मुआविया की यज़ीद को वसीयत

हज़रत अल्लामा अबू-इस्हाक अपनी किताब 'नूरुलऐन फी मशहदिल हुसैन' में तहरीर फरमाते हैं कि जब हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त करीब आया तो यज़ीद ने पूछा कि अब्बाजान! आपके बाद ख़लीफ़ा कौन होगा? तो आपने फरमाया : ख़लीफ़ा तो तू ही बनेगा मगर जो कुछ मैं कहता हूँ उसे ग़ौर से सुन। कोई काम हज़रत इमाम हुसैन के मशवरे के बग़ैर मत करना। उन्हें खिलाये बग़ैर न खाना। उन्हें पिलाये बग़ैर न पीना। सबसे पहले उन पर खर्च करना फिर किसी और पर। पहले उन्हें पहनाना फिर खुद पहनना। मैं तुझे इमाम हुसैन, उनके घर वाले और उनके कुम्बे और बल्कि सारे बनी हाशिम के लिये अच्छे सुलूक की वसीयत करता हूँ। ऐ बेटे ! खिलाफ़त में हमारा हक़ नहीं है। वह इमाम हुसैन, उनके वालिद (हज़रत अली) और उनके अहले-बैत का हक़ है। तू चन्द रोज़ ख़लीफ़ा रहना। फिर जब हज़रत इमाम हुसैन पूरे कमाल को पहुँच जायें तो फिर वही ख़लीफ़ा होंगे या जिसे वह चाहें। ताकि खिलाफ़त

अपनी जगह पहुंच जाये। हम सब इमाम हुसैन और उनके नानाजान के गुलाम हैं। उन्हें नाराज न करना। वरना तुझ पर अल्लाह व रसूल नाराज होंगे तो फिर तेरी शफाअत कौन करेगा ?

(‘हजरत अमीर मुआविया पर एक नज़र’ सफा/६८)

तारीखे तबरी व तारीखे इब्ने-खलदून में है कि हजरत अमीर मुआविया ने अपने बेटे को इन अलफ़ाज़ में वसीयत फ़रमाई कि जाने पिदर! मैं तुम्हारे रास्ते में तमाम कांटे हटाकर तुम्हारे लिये रास्ता साफ़ कर दिया है और दुशमनों को ज़ेर करके सारे अरब की गर्दन झुका दी हैं और तुम्हारे लिये इतना माल जमा कर दिया है कि इससे पहले किसी ने जमा न किया होगा। मुझे अब इस बात का अन्देशा नहीं कि अग्रे खिलाफ़त में कोई तुमसे निज़ा करेगा। हां ! अलबत्ता कुरैश में से चार शख्स ऐसे हैं जो तुम्हारी मुखालिफ़त कर सकते हैं। उनमें हजरत हुसैन इब्ने अली, अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर और अब्दुर्रहमान बिन अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। लेकिन अब्दुल्लाह इब्ने-उमर से कोई ख़तरा नहीं। उन्हें इबादत व रियाज़त के अलावा और किसी चीज़ से वास्ता नहीं है। जब सब बैअ्त कर लेंगे तो वह भी बैअ्त कर लेंगे। हुसैन इब्ने अली को इराक़ के लोग जब तक ख़ुरूज पर आमादा न कर लेंगे हरगिज़ न छोड़ेंगे। अगर यह तुम पर ख़ुरूज करें और तुमको उन पर कामयाबी हासिल हो तो दरगुज़र करना। उनका बहुत बड़ा हक़ है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यह नवासे हैं और सीधी सादी तबीयत के मालिक हैं। इब्ने अबी-बक्र की अपनी कोई ज़ाती राय नहीं होती, उनके दोस्त व अहबाब जैसा करेंगे वह भी वैसा ही करेंगे। हां, जो शख्स तुम पर शेर की तरह हमला करेगा और मिस्ल लोमड़ी मक्र व फ़रेब के साथ पेश आयेगा वह अब्दुल्लाह इब्ने-जुबैर हैं। पस अगर वह ऐसा करें और तुमको उन पर ग़ल्बा हासिल हो जाये तो उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालना।

(तारीखे तबरी जिल्द दोम सफा/१५१ तारीख इब्ने-खलदून जिल्द दोम सफा ६५)

वफ़ात हजरत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्ह

हजरत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्ह ने बइख़्तलाफ़े रिवायात ४ या १५ रज्जबुल मुरज्जब सन् ६० हिजरी में लक़वा की बीमारी से वफ़ात पायी। दमिश्क़ में बाबे जाबिया और बाबे सगीर के दरमियान आपको दफ़न

किया गया। सही रिवायत के मुताबिक उस वक़्त आपकी उम्र ७८ साल थी।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु मर्जे वफ़ात में बार-बार फ़रमाते थे कि काश! मैं कुरैश का मामूली इंसान होता जो जी-तवा गांव में रहता और उन झगड़ों में न पड़ता जिनमें पड़ गया। बवक़्ते वफ़ात आपने यह भी वसीयत फ़रमाई थी कि मेरे पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लुंगी शरीफ़, हुज़ूर की चादरे मुबारक, कुर्ता मुबारक और आपके कुछ बाल शरीफ़ और नाख़ून मुबारक हैं। मुझे हुज़ूर की कमीज़ में कफ़न देना। हुज़ूर की चादर में लपेटना, हुज़ूर का तहबन्द (लुंगी) मुझे बांध देना और हुज़ूर के मूए मुबारक और नाख़ून शरीफ़ मेरे आंखों और मुंह के अन्दर रख देना। फिर मुझे अरहमुर्राहिमीन के सुपुर्द कर देना। आपकी नमाज़े जनाज़ा ज़हहाक बिन कैस ने पढ़ाई।

(‘हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र’ सफ़ा ३७),

सियरुरस्सहाबा सफ़ा/५४ मौलाना मुईनुद्दीन नदवी)

(तारीखे तबरी जिल्द पन्जुम सफ़ा/१५३)



फ़ज़ाइल

हज़रत सैयदना

इमाम हुसैन

रज़ियल्लाहु अन्हु

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे आली है :

हुसैनु मिन्नी व अना मिन हुसैनिन अहब्बल्लाहु मन
अहब्ब ब हुसैनन. हुसैनुन सबतुम मिनल असबाते
(‘सुनने तिमिज़ी’ जिल्द दोम। सफ़ा/७३३)

हुसैन मुझ से हैं और मैं हुसैन से हूं।
अल्लाह उससे मुहब्बत करे जो हुसैन से मुहब्बत करे।
हुसैन नवासा है नवासों में से।

मनकबत दर शाने इमाम हुसैन

रज़ियल्लाहु अन्हु

दूटे हुए दिलों का सहारा हुसैन है
डूबे न जो फ़लक पे वह तारा हुसैन है

अहले ख़िरद समझ न सके क्या हुसैन है
नाना के जिस्मे पाक का साया हुसैन है

ईमान और कुफ़्र " निरखत कोई नहीं
दुनिया है रात और सवेरा हुसैन है

यह भी तुम्हें ख़्याल न आया यज़ीदियो
सरकारे दो जहां का नवासा हुसैन है

होकर शहीद, ज़िन्दगीए जाविदां मिली
ज़िन्दा था और आज भी ज़िन्दा हुसैन है

बैअ्त न की क़ुबूल, मगर सर कटा दिया
ऐसा जहां में कौन है जैसा हुसैन है

जन्नत का फूल सैयदे कौनैन के लिए
और फ़ातिमा की आंख का तारा हुसैन है

बज़्मे रसूले पाक में देखा है राज़ ने
सरकार हैं चिराग़, उजाला हुसैन हैं

राज़ इलाहाबादी

सैयदुश्शुहदा

हजरत सैयदना इमाम हुसैन

रजियल्लाहु अन्हु

जुबां पर बारे इलाहा यह किस का नाम आया
कि मेरी नुक् ने बोसे मेरी जुबां के लिए

नाम व नसब : आपका इस्मे गिरामी हुसैन और कुन्नीयत अबु-अब्दुल्लाह है। सैयद शबाबे अहलिल जन्नः और रैहानतुन्नबी लक़ब है। वालिदे गिरामी दामादे रसूल हजरत सैयदना मौला अली मुशकिल-कुशा रजियल्लाहु अन्हु और वालिदा मुहतरमा जिगर गोशए रसूल, खातूने जन्नंत हजरत सैयदतना फ़ातिमतुज्जुहरा रजियल्लाहु अन्हा हैं। नाना जान सैयदुल-अम्बिया वल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और नानी जान हजरत सैयदतना खदीजतुल-कुब्रा रजियल्लाहु अन्हा हैं। आपका शजरए नसब यह है : हुसैन बिन अली बिन अबी-तालिब बिन हाशिम बिन अब्द-मनाफ़ करशी हाशिमी व मुत्तलबी।

विलादत वा-सआदत : सैयदुश्शुहदा हजरत सैयदना इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु तीसरे इमाम और अबुल-अइम्मा हैं। आपकी विलादत के मुतअल्लिक मिशकात शरीफ़ में तहरीर है कि हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चची जान हजरत उम्मुल-फ़ज़ल रजियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज किया : या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ! आज रात मैंने एक ख़तरनाक ख़्वाब देखा है। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या है? बोलीं। हुज़ूर, बहुत ख़तरनाक है। हुज़ूर ने फ़रमाया : वह क्या है? बोलीं : मैंने देखा है कि आपके जिस्म पाक का एक टुकड़ा काटा गया और मेरी गोद में रखा गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुमने बहुत अच्छा ख़्वाब देखा है। इन्शाअल्लाह फ़ातिमा को एक लड़का पैदा होगा और वह तुम्हारी गोद में दिया जाएगा। हजरत उम्मुल-फ़ज़ल कहती हैं कि

हज़रत फ़ातिमा के यहां हुसैन पैदा हुए तो मेरी गोद में दिए गए जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था।

(मिशकात शरीफ़, सफ़ा : ४८६)

हज़रत उम्मुल-फ़ज़ल के ख़्वाब की तावीर ५ शायानुल मुअज़्ज़म सन् ४ हिजरी में बमक़ाम मदीना मनव्वरह जाहिर हुई। इसी तारीख़ को हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत बा-सआदत हुई, जो आलमे ग़ैब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्म अतहर के एक टुकड़े हैं।

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम हुसैन की विलादत बा-सआदत की ख़बर सुनी तो फ़ौरन काशानए खातूने जन्नत पर तशरीफ़ लाए। फ़रमाया : मेरे लख्ते जिगर को दिखाओ। अस्मा बन्ते उमैस ने नन्हें इमाम हुसैन को एक सफ़ेद कपड़े में लपेट कर हुज़ूर की आगोशे रहमत में पेश कर दिया। आपने प्यारे हुसैन के दायें कान में अज़ान दी और बायें कान में इक़ामत पढ़कर इमाम हुसैन के मुंह में अपना लुआबे दहन डाला और दुआएँ फ़रमाई। फिर बहुक्मे इलाही आपका नाम हुसैन रखा। सातवें दिन अक़ीक़ा करके बच्चा के बालों के हमवज़न चांदी ख़ैरात करने का हुक्म दिया। आपके अक़ीक़ा में दो मेंढे ज़बह किए गए। एक रिवायत में एक ही मेंढे के बारे में तहरीर है।

(‘बहारे शरीअत’ हिस्सा पांजदहम सफ़ा १५२)

शक्ल व शबाहत : आप निहायत हसीन व ख़ूबसूरत थे। आपकी शक्ल व सूरत के मुतअल्लिक़ हज़रत सैयदतना फ़ातिमतुज्जुहरा व हज़रत सैयदना अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायतों से पता चलता है कि आप सीने से कदम तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुश़ाबह थे। शवाहिदुन्नुबुव्वः में आपके हुस्न व जमाल का तज़क़िरा इन अल्फ़ज़ में किया गया है कि जब आप अंधेरे में बैठते तो आपकी पेशानी मुबारक और रुख़्सारों से रौशनी निकल कर कुर्ब व जवार को मनव्वर कर देती थी।

(शवाहिदुन्नुबुव्वः सफ़ा : ३०३)

इबादत व रियाज़त : आप बड़े आबिद व ज़ाहिद व तहज्जुद-गुज़ार थे। पूरा-पूरा दिन और सारी-सारी रात नमाज़ें पढ़ने और तिलावते कुरआने हकीम में गुज़ार दिया करते थे। ज़िक़रे खुदावन्दी का यह शौक़ करबला की तप्ती हुई ज़मीन पर तीन दिन के भूखे-प्यासे रह कर भी न

छूटा। शहादत की हालत में भी दो रकअत नमाज़ अदा करके वारागाहे खुदावन्दी में अपना आखिरी नज़राना पेश फ़रमा दिया।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अह्द नब्वी में : हुज़ूर नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने लख्ते जिगर हज़रत इमाम हसन की तरह हज़रत इमाम हुसैन से भी बहुत ज़्यादा प्यार व मोहब्बत फ़रमाते थे। उनकी मामूली से मामूली तकलीफ़ से भी आप बेकरार हो जाया करते थे। उनको देखे बग़ैर आपको सुकून न आता था। रोज़ाना आप उनको देखने के लिये हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ ले जाते थे। एक रोज़ का वाकिआ है कि हज़रत अबू-हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफ़र में थे। एक मक़ाम पर हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के रोने की आवाज़ आई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से वजह दरयाफ़्त फ़रमाया। सैयदतना ने अर्ज किया कि प्यास से रो रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निदा फ़रमाई कि किसी के पास पानी है? मगर किसी के पास एक क़तरा पानी न था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि एक साहबज़ादे को मुझे दे दो। उन्होंने परदे के नीचे से दे दिया। आपने उनको लेकर सीने से लगाया। वह उस वक़्त बहुत रो रहे थे और किसी तरह ख़ामोश न होते थे। आपने अपनी जुबाने मुबारक उनके मुंह में डाल दी। वह चूसने लगे यहां तक कि उनको तस्कीन हो गई। उसके बाद वह नहीं रोये। लेकिन दूसरे साहबज़ादे बदस्तूर रो रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसको भी मुझे दे दो। उन्होंने दे दिया। तो आपने उनके भी मुंह में अपनी जुबाने मुबारक डाल दी। वह चूसने लगे और तस्कीन पाकर ख़ामोश हो गये। उसके बाद उन दोनों के रोने की आवाज़ नहीं सुनी गई।

(‘ख़साइसे कुबरा’ जिल्द दोम सफ़ा ७१ ‘ज़िक्रे जमील’ सफ़ा १८१)

हुज़ूर नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इमाम हुसैन से बे-इन्तिहा मुहब्बत फ़रमाया करते थे। चुनांचे एक दिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम वस्सलाम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से अपने दायें बाजू और अपने बेटे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु को बायें बाजू पर बिठाये हुए थे कि हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और अर्ज किया।

अल्लाह तआला इन दोनों को आपके यहां थकजा न रहने देगा। उनमें से एक को वापस बुला लेगा। अब इनमें से आप जिसे चाहें पसंद फ़रमा लें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अगर हुसैन वफ़ात पा जाएं तो उनके ग़म में (हज़रत) फ़ातिमा, अली और मुझे तकलीफ़ होगी। अगर इब्राहीम वफ़ात पा जाएं तो ज़्यादा अलम मेरी ही जान पर टूटेगा। इसलिये मुझे अपना ही ग़म पसंद है। इस वाकिआ के तीन दिन बाद हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन्तिक़ाल किया। बादे अज़ां जब भी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लहु अन्हु हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में आते तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनकी पेशानी पर बोसा देते और खुश आमदीद कहते हुए फ़रमाते। मरहबा ऐ हुसैन! मैंने तुम पर अपने बेटे को कुर्बान कर दिया है। (शवाहिदुन्नुबुव्वः सफ़ा ३०४)

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाले मुबारक के वक़्त हज़रत इमाम हुसैन की उम्र शरीफ़ बइख़्तलाफ़े रिवायात ७ साल की थी। जब हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिहलत और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त शुरू हुई तो आप सवा दस बरस के थे। अह्द उस्मानी में पूरे जवान हो चुके थे। सन् ३० हिजरी में तबरिस्तान के जिहाद में शिक़त फ़रमाई। अपने वालिदे गिरामी हज़रत अली के अह्द में भी जंगे जुमल व जंगे सिफ़फ़ीन में शिक़त फ़रमाई।

इल्म व फ़ज़ल : तमाम अहले तारीख़ का मुत्तफ़का फ़ैसला है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु इल्म व फ़ज़ल में बड़ा मर्तबा रखते थे। आपके हम-अस्र आपसे फ़तवा दर्याफ़्त करते थे। आपकी तक़रीर व तहरीर की कोई नज़ीर नहीं मिलती। आज भी आपकी तक़रीरें व खुतबात तारीख़ के सफ़हात की ज़ीनत बने हुए हैं। जिन्हें पढ़कर आपके ज़ोरे ब्यान और फ़साहत व बलागत का अन्दाज़ा होता है। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने बड़े भाई इमाम हसन के साथ पचीस हज फ़रमाए।



फ़ज़ाइल

हज़रात हसनैन करीमैन

अहादीसे करीमा की रौशनी में

हज़रत सैयदना इमाम हसन व हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बाज़ इन्फ़िरादी फ़ज़ाइल के इलावा अकसर फ़ज़ाइल मुशतरक हैं। इसीलिए हम उन दोनों कुदसियों के फ़ज़ाइल को एक साथ लिख रहे हैं। मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

(१) हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल हसन वल हुसैन सैय्यदा शबाबि अहलिल जन्नः। हसन और हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७३०)

(२) हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ब्यान फ़रमाते हैं कि एक-रात में किसी काम से हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तरह बाहर तशरीफ़ लाये कि आप किसी चीज़ को उठाए हुए थे जिसे मैं न जान सका। जब मैं अर्ज हाज़त से फ़ारिग़ हुआ तो दर्याफ़्त किया, हुज़ूर यह क्या उठाए हुए हैं। आपने चादर उठाई तो मैंने देखा कि आपके दोनों पहलुओं में हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। आपने फ़रमाया : हाज़ानि बनाय व अबना इबनती अल्लाहुम्म इन्नी उहिब्बुहुमा फ़ अहिब्ब व अहिब्ब मैं युहिब्बु हुमा। यह दोनों मेरे बेटे और मेरे नवासे हैं। ऐ अल्लाह! मैं उन दोनों से मुहब्बत करता हूँ तू भी उनसे मुहब्बत कर, और जो इनसे मुहब्बत करे उससे भी मुहब्बत कर।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७३०)

(३) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन्नल ह स न वल हुसैन हुमा रैहानतै य मिनहुनया हसन और हुसैन यह दोनों दुनिया में मेरे दो फूल हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७३१)

(४) हजरत अनस रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप फरमाते हैं: हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि अहले-बैत में आपको सबसे ज्यादा कौन प्यारा है? तो आपने फरमाया अल हसन वल हुसैन हसन और हुसैन। और हुजूर हजरत फातिमा से फरमाते थे कि उदई यली इबनै य फयशम्मुहुमा व यजुम्मुहुमा इलैह मेरे पास मेरे बच्चों को बुलाओ। फिर उन्हें सूँघते थे और अपने कलेजे से लगाते थे।

(तिर्मिजी जिल्द दोम सफा/७३१)

(५) हजरत बुरीदा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमको खुतबा दे रहे थे कि अचानक इमाम हसन व इमाम हुसैन तशरीफ लाये। उन्होंने सुर्ख रंग की कमीज जैबे तन फरमा रखी थीं और वह चलते-चलते गिर पड़ते थे। उनको गिरते देखा तो इमामुल अम्बिया सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुतबा छोड़ दिया और मिम्बर से नीचे उतर आये और उन दोनों को गोद में उठाया और अपने सामने बिठाकर इरशाद फरमाया: अल्लाह तबारक व तआला ने सच फरमाया है कि - तुम्हारी औलाद और तुम्हारे माल आजमाइश हैं। मैंने इन दोनों बच्चों को गिरते देखा तो सब्र न कर सका हत्ता कि मैं ने अपनी बात बन्द कर दी और इन दोनों को उठा लिया।

(तिर्मिजी शरीफ जिल्द दोम सफा/७३२-मिशकात शरीफ बाब मनाकिबे अहले-बैत सफा/४७८)

(६) एक दिन हजरत इमाम हसन और इमाम हुसैन कुशती लड़ने लगे। हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हजरत हसन से फरमाया: ऐ हसन! हुसैन को पकड़ लो। हजरत सैयदा फातिमा रजियल्लाहु अन्हा कहने लगीं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप बड़े को कहते हैं कि छोटे को पकड़ लो। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ज़िबरील तो हुसैन से कह रहे हैं कि हसन को पकड़ लो।

(शवाहिदुन्नुबुव्व: सफा/३०४ ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफा ४६६)

(७) अबुल-हसन बिन ज़हहाक हजरत अबू-हुसैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि यमतस्सु लुआबल हुसैनि कमा यमतस्सुरजुलुस्सा म र: आप हजरत हुसैन रजियल्लाहु अन्हु का लुआब इस तरह चूस रहे थे जैसे कोई शख्स खजूर को चूसता है। (सआदतुल कौनैन सफा/६४ नूरुल अबसार सफा १३६)

(८) हजरत अबू-हुसैरा रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह ने हजरत इमाम हसन और हजरत इमाम हुसैन के बारे में फरमाया कि मन अहब्बहुमा फ़क़द अहब्बनी व मन अबग़ज़हुमा फ़क़द अब ग़ज़नी जिसने उन दोनों से मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने उन दोनों से दुशमनी की उसने मुझसे दुशमनी की।

(मदारिजुन्नुबुव्व: जिल्द अव्वल सफ़ा/५३०)

(९) हजरत सलमान फ़ारसी रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फरमाया हसन व हुसैन मेरे बेटे हैं। मन अहब्बहुमा अहब्बनी व मन अहब्बनी अहब्बहुल्लाहु व मन अहब्बहुल्लाहु अदखलहुल जन्न: व मन अबग़ज़हुमा अब ग़ज़नी व मन अब ग़ज़नी अबग़ज़हुल्लाहु व मन अबग़ज़हुल्लाहु अदखलहुन्नार जिसने इन दोनों को महबूब रखा उसने मुझको महबूब रखा और जिसने मुझको महबूब रखा उसने अल्लाह को महबूब रखा। और जिसने अल्लाह को महबूब रखा अल्लाह ने उसको जन्नत में दाखिल किया। जिसने इन दोनों से बुग़ज़ रखा उसने मुझसे बुग़ज़ रखा। जिसने मुझसे बुग़ज़ रखा उसने अल्लाह से बुग़ज़ रखा। जिसने अल्लाह से बुग़ज़ रखा अल्लाह ने उसको जहन्नम में दाखिल किया।

(सफीनए नूह जिल्द अव्वल सफ़ा १६ बहवाला अल-मुस्तदरक जिल्द सोम सफ़ा/१६६)

(१०) 'कन्जुल-ग़राइब' में है कि एक बदवी ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर हिरनी का एक बच्चा नज़र किया। इतने में हजरत इमाम हसन आए। आपने हिरनी का बच्चा उनको दे दिया। जब इमाम हुसैन ने देखा तो पूछा— बिरादरे मुअज़्ज़म! यह कहां से लाए हो? कहा : नानाजान ने दिया है। इमाम हुसैन भी हिरनी का बच्चा लेने के लिए ख़िदमते नब्वी में हाज़िर हुए और ज़िद् करने लगे। आपने बहुत बहलाया मगर न माने। क़रीब था कि इमाम की आंखों में आंसू आ जायें कि नागाह हिरनी अपने साथ एक बच्चा लेकर हाज़िर हुई और अर्ज किया : सरकार! मेरा एक बच्चा बदवी ने हाज़िरे ख़िदमत कर दिया है। यह दूसरा बच्चा बहुक्मे खुदावन्दी हुसैन के लिए हाज़िर है कि हुसैन बच्चा तलब फरमा रहे थे। अगर चश्मे हुसैन से एक आंसू भी टपक पड़ता तो कर् व ब्याने अर्श के दिल दहल जाते। (रौज़तुश्शुहदा जिल्द दोम सफ़ा २६)

(११) एक दफा दोनों शहजादों ने तख्तायां लिखीं और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर कहने लगे नाना जान! बताइये किसका खत अच्छा है। आपने इस ख्याल से कि किसी को रंज न हो, खुद फ़ैसला न फ़रमाया : बल्कि हज़रत अली के पास भेज दिया। उन्होंने भी यही ख्याल करके हज़रते सैयदा के पास भेज दिया। सैयदा फ़ातिमा ने फ़रमाया : बेटा! मैं खत की भलाई व बुराई क्या बताऊं ? मगर यह सात मोती हैं। इनको ज़मीन पर डालती हूँ जो ज़्यादा मोती चुन ले उसका खत अच्छा है। आपने मोती डाले। शहजादों ने तीन-तीन मोती चुन लिए। करीब था कि एक भाई चौथा मोती उठा ले कि ज़िबरील अलैहिस्सलाम ने बहुक्मे इलाही एक मोती उठा लिया और उसके दो टुकड़े कर दिये और आधा-आधा मोती दोनों भाईयों के हिस्से में आ गया। हुजूर को जब इस वाकिआ की इत्तिला हुई तो फ़रमाया :

अल्लाहु अकबर! आज अल्लाह तआला को इनकी इतनी रंजीदगी भी नामंजूर है। एक दिन वह होगा जब यह भूखे-प्यासे ग़रीबुल-वतन ज़ख्मों से चूर होकर मैदाने करबला में शहीद होंगे।

(औराके ग़म मुअल्लिफ़ सैयद मुहम्मद अहमद साहब कादरी सफ़ा/२५७)

(१२) रिवायतों में आता है कि चाँद रात को हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपनी वालिदए मुहतरमा के पास तशरीफ़ लाए और अर्ज किया। अम्मी जान! सुबह ईद का दिन है। मदीना के लोगों के बच्चे नए-नए लिबास पहनेंगे। क्या इमामुल-अंबिया और खातूने जन्नत के शहजादे नये कपड़े न पहनेंगे? बच्चों के सवाल से माँ की मामता तड़प उठी। बच्चों को तसल्ली दी कि मेरे बेटो! कोई फ़िक्र की बात नहीं तुम्हें भी नए जोड़े मिल जाएंगे। सैयदतुन्निसाउल-आलमीन खातूने जन्नत ने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर बारगाहे रब्बुल-इज़ज़त में अर्ज किया : मौला! तेरे महबूब नबी के नवासों ने मुझसे नए कपड़े मांगे हैं। ऐ मौला! मैंने उनसे वादा कर लिया है। ऐ मौला! मेरे उठे हुए हाथों की लाज रख ले। दुआ से फ़ारिग़ हुई तो किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। पूछा, कौन? आने वाले ने जवाब दिया। अहले-बैत का दरज़ी शहजादों के लिये नये कपड़े लेकर आया है। सैयदा ने वह कपड़े ले लिए। सुबह दोनों शहजादों को पहना दिये। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : बेटा! क्या तुम्हें मालूम है कि यह कपड़े कहां से और कौन लेकर आया था? अर्ज

किया : अब्बा जान! आप ही बता दें। तो आप ने फ़रमाया : वह ज़िबरील अमीन थे जो खुदाए तआला की तरफ़ से जन्नत से कपड़े लेकर हाज़िर हुए थे। (रौज़तुशशुहदा जिल्द दोम सफ़ा/१३८)

मुहतरम कारिर्दन! अल्लाह तआला के यहां हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का यह मक़ाम है कि उनके लिए जन्नत से जोड़े भेजे गए और उन शहज़ादों की दिलशिकनी नहीं की गई। तो जो लोग उनकी शान में गुस्ताखियां करते हैं वह किस क़दर ज़ालिम और अज़ाबे खुदावंदी के मुस्तहिक होंगे !

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की शोहरत

मुख़बिरे सादिक़ ग़ैब-दां नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नवासे हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की पैदाइश के साथ ही आपकी शहादते उज़मा के बारे में भी ख़बर दे दी थी। हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और खुद हज़रत इमाम हुसैन भी जानते थे कि एक दिन करबला के मक़ाम पर शहीद किया जाऊंगा। लेकिन किसी ने भी और खुद इमाम हुसैन ने भी कभी किसी किस्म का शिकवा जुबान पर नहीं लाया। बल्कि निहायत ख़न्दा-पेशानी के साथ अपनी शहादत की ख़बर सुनते रहे। उसके लिये अपने आपको तैयार किया। हम ज़ैल में चन्द अहादीसे करीमा पेश कर रहे हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप की शहादत की ख़बर दी है।

(१) हज़रत उम्मुल-फ़ज़ल बिनते हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा ज़ौजए हज़रत सैयदना अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाती हैं कि मैंने एक रोज़ हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को आपकी गोद में दिया। फिर मैं क्या देखती हूँ कि हुज़ूर की चशमाने मुबारक से लगातार आंसू बह रहे हैं। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान। यह क्या है? फ़रमाया : मेरे पास ज़िबरील आए और मुझे ख़बर दी कि मेरी उम्मत मेरे इस फ़र्ज़न्द को शहीद करेगी? मैंने अर्ज़ किया : या

रसूलुल्लाह! क्या इस फ़र्जन्द को शहीद करेगी? हुजूर ने फ़रमाया—हां, और ज़िबरील मेरे पास उसकी शहादतगाह की सुर्ख मिट्टी भी लाए।

(‘मिअतुल मनाजीह’ शरह मिशकातुल—मसावीह सफ़ा ४६०)

(२) इब्ने सअद व तंबरानी हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे ज़िबरील ने ख़बर दी कि मेरे बाद मेरा फ़र्जन्द हुसैन तफ़ में शहीद किया जाएगा। ज़िबरील मेरे पास यह मिट्टी लाए और मुझसे बताया कि यह हुसैन के ख़्वाबगाह (मक़तल) की ख़ाक है। तफ़ करीबे कूफ़ा उस मक़ाम का नाम है जिसको करबला कहते हैं।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा/६३६ मासबत—बिस्सुन्न: सफ़ा/२६)

(३) बग़वी ने अपनी मौजम में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बारिश के फ़रिश्ते ने मेरी मुलाक़ात के लिए अल्लाह तआला से इजाज़त तलब की तो अल्लाह ने इजाज़त अता फ़रमा दी। वह फ़रिश्ता मेरी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उस वक़्त हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मेरी गोद में थे और मैं उनको प्यार कर रहा था। फ़रिश्ते ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! क्या आप हुसैन से प्यार करते हैं ? हुजूर ने फ़रमाया : हां। उस फ़रिश्ते ने कहा आपकी उम्मत हुसैन को शहीद कर देगी। अगर आप चाहें तो मैं आपको वह जगह दिखा दूँ जहाँ यह शहीद होंगे। चुनांचे उसने आपको वह जगह दिखाई और सुर्ख मिट्टी भी लेकर आया जिसे उम्मुल—मोमिनीन हज़रत उम्मे—सलमा ने अपने कपड़े में ले लिया। ‘ज़्यारतुल मुस्नद’ में है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ उम्मे सलमा! जब यह मिट्टी ख़ून बन जाए तो समझ लेना कि मेरा बेटा हुसैन शहीद कर दिया गया। हज़रत उम्मे—सलमा फ़रमाती हैं कि मैंने उस सुर्ख मिट्टी को एक शीशी में रख दिया जो हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के शहादत के दिन ख़ून बन गई। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६३६—६४०)

(४) इब्ने सअद हज़रत शाबी से रिवायत करते हैं कि हज़रत सैयदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु जंगे सिफ़फ़ीन के मौक़ा पर करबला से गुज़र रहे थे कि फ़ुरात के किनारे ठहर गये और उस ज़मीन का नाम दर्याफ़त फ़रमाया। लोगों ने कहा इस ज़मीन का नाम करबला है। करबला का नाम

सुनते ही आप इस कदर रोये कि ज़मीन आंसुओं से तर हो गई। फिर फ़रमाया : मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक रोज़ हाज़िर हुआ तो देखा कि आप रो रहे हैं। मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आप क्यों रो रहे हैं? फ़रमाया : अभी ज़िबरील आये थे। उन्होंने मुझे ख़बर दी कि मेरा बेटा दरियाए फ़ुरात के किनारे उस जगह पर शहीद किया जायेगा जिसको करबला कहते हैं। वहां की मिट्टी भी मुझे सुंघाई।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६४१)

(५) अबू-नईम ने असबग़ बिन नबाता से रिवायत की कि हम लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की कब्र की जगह पर आए तो हज़रत अली ने फ़रमाया : यहां उन शोहदा के ऊंट बंधेंगे। यहां उनके कजावे रखे जायेंगे। यहां उनके ख़ून बहेंगे। और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक ग़िरोह इस मैदान में शहीद होगा और उन पर ज़मीन व आसमान रोयेंगे।

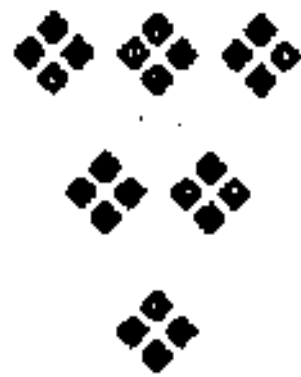
(ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफ़ा २०८)

(६) हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हम अहले-बैत बिल-इतिफ़ाक़ जानते थे कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु करबला में शहीद होंगे।

मज़कूरा बाला अहादीसे करीमा से यह वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का इज़हार व एलान फ़रमा दिया था। सहाबए किराम और अहले-बैत की अक्सरियत को यह मालूम था कि हुसैन शहीद होंगे। उनकी शहादतगाह करबला है। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और न ही हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा व दीगर अहले-बैत व अज़वाजे मुतहहरात ने अल्लाह तआला की बारगाह में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को इस हादसे से महफूज़ रखने की दुआ की और न ही अल्लाह के महबूब की बारगाह में दुआ की दरख़्वास्त की। करते भी क्यों? इसलिये कि सब जानते थे कि यह इमाम हुसैन की आजमाइश और इम्तिहान है। इम्तिहान में किसी को कुछ बताया नहीं जाता बल्कि यह दुआ की जाती है कि अल्लाह तआला उसको इम्तिहान में कामयाबी अता फ़रमाए और उसके दरजात बुलन्द से बुलन्द तर फ़रमाये।

अब अगर कोई नादान, कम अकल, जाहिल यह एतराज करे कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु को नहीं बचा सके तो किसी और को क्या बचा सकते हैं? तो ऐसे जाहिल का जवाब यह है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इमाम हुसैन को कब बचाने की कोशिश की थी बल्कि उनको तो खुद शहादत के लिये तैयार किया था। फिर जब इमाम हुसैन मुकम्मल हो गए तो फिर इम्तिहानगाह में शहीद होने के लिए भेजा। करबला हजरत इमाम की इम्तिहानगाह थी। यहां आपको अपनी शहादत देकर इस्लाम की बका व तहफ़फ़ुज़ करना था। जो आप की शहादत ही से होना था।

यह शहादत गहे उल्फ़त में क़दम रखना है
लोग आसां समझते हैं मुसलमां होना!



यजीद पलीद

का मुख्तसर तजकिरा

यजीद पलीद हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु का बेटा है। उसकी कुन्नीयत अबू-खालिद थी। उमैया खानदान का यह वह बदनसीब इन्सान है जिसकी पेशानी पर नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, हजरत सैय्यदना इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु के कत्ल का सियाह दाग है। जिस पर हर जमाने में दुनियाए इस्लाम मलामत करती रही है और क़यामत तक उस पर मलामत होती रहेगी। यह बद-बातिन, सियाह दिल, नंगे खानदान सन् २५ हिजरी में अमीर मुआविया के घर मैसून बिन बख़दल कलबी के पेट से पैदा हुआ। यजीद बहुत मोटा, बदनुमा, कसीरुशशार, बद-खुल्क, फ़ासिक व फ़ाजिर, शराबी, बदकार, ज़ालिम, बेअदब गुस्ताख़ था। उसकी शरारतें और बेहूदगियां ऐसी हैं जिनसे बदमाशों को भी शर्म आए। हजरत अब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला (ग़सीलुल-मलाइका) रजियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वल्लाह! यजीद पर हमला की तैयारी हमने उस वक़्त की जब हमको यकीन हो गया कि अब हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश होगी। क्योंकि उसके फ़िस्क व फ़ुजूर का यह आलम था कि लोग अपनी माँ, बहनों बेटियों से निकाह कर रहे थे। शराबें पी जा रही थीं। यजीद खुद उन औरतों से शादियां कर रहा था जिनको इस्लाम ने मुहरमात में शुमार किया है। लोगों ने नमाज़ें छोड़ दी थीं। दीगर बहुत सारी ख़ुराफ़ात व मन्हीयात का एलानिया रिवाज हो गया था।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०१ व ३०६ सवानेह करबला)

यजीद पलीद ने मदीना तैयबा और मक्का मुकर्रमा की बेहुरमती कराई। इन दोनों मुक़द्दस मक़ामात पर हमला किया। हजारों सहाबा-ए-किराम व सहाबिया शहीद हुए। हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की मस्जिदे नब्वी शरीफ़ में घोड़े बांधे गए। यहां घोड़ों ने लीद और पेशाब किया। तीन दिन तक मस्जिदे नब्वी में नमाज़ नहीं हुई। इसी तरह मक्का मुअज़्ज़मा में ख़ानए काबा पर पत्थर बरसाए। ग़िलाफ़े काबा को जलाया

गया। और सैय्यदानियों की इसमतादरी की गई। हजारों सहाबए किराम को यहां भी शहीद किया गया। ऐसे शख्स की हुकूमत गुर्ग की चौपानी से ज्यादा खतरनाक थी। अरबाबे फिरासत और असहाबे असरार उस वक्त से डरते थे जबकि अनाने सलतनत उस शकी के हाथ में आई। चुनांचे रिवायतों में आता है कि सन् ५६ ई० में हजरत सैय्यदना अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु, जो साहिबे असरार व फिरासत बुजुर्ग सहाबी थे, उन्होंने दुआ की अल्लाहुम्म म इन्नी अऊजुबि क मिररिसितीनि व अमारतिरिसब्यान। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं सन् ६० हिजरी के आगाज़ और लड़कों की हुकूमत से। ख़साइसे कुबरा की रिवायत में यह भी ज़्यादा है कि उस वक्त दुनिया अहमक और बद-सरिशत के लिए होगी।

(‘ख़साइसे कुबरा’ जिल्द दोम सफ़ा २२६)

हजरत अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की इस दुआ से मालूम होता है कि आपको मालूम था कि सन् ६० हिजरी में लड़कों की हुकूमत और फ़िल्नों का वक्त है। उनकी दुआ कुबूल हुई और उन्होंने ने सन् ५६ हिजरी में बमक़ाम मदीना तैय्यबा रिहलत फ़रमाई। (सवानेह करबला सफ़ा ७६)

यज़ीद

अहादीसे करीमा और अक़वाले अम्मा की रौशनी में

(१) रूयानी ने अपनी मुसनद में सहाबिए रसूल हजरत अबूदर्दा रज़ियल्लहु अन्हु से एक हदीस रिवायत की है। वह फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से सुना कि हुज़ूर ने फ़रमाया अब्वलु मैय युबदिलु सुन्नती रजुलुमि बनी उमैय त युक़ालु लहू यज़ीदुन। मेरी सुन्नत का पहला बदलने वाला बनी—उमैया का एक शख्स होगा जिस का नाम यज़ीद होगा। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०५)

(२) अबू याला ने अपनी मुसनद में हजरत अबू-उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया ला यज़ालु अमरु उम्मती क़ाइमम बिलकिस्ति हत्ता यकू न अब्वलु मैयुसलिमुहू रजुलुम मिम बनी उमैय त युक़ालु लहू यज़ीद।

मेरी उम्मत हमेशा अदल व इन्साफ़ पर क़ाइम रहेगी। यहां तक कि

बनी—उमैया में यजीद नामी एक शख्स होगा जो उस अदल में रखना अन्दाजी करेगा। (तारीखुल—खुलफा सफा ३०५ 'सवाइके मुहर्रका' सफा ७३०)

(३) नौफल बिन अबुल—फुरात कहते हैं कि एक रोज हजरत उमर बिन अब्दुल—अजीज (उमवी खलीफा) के पास एक शख्स बैठा हुआ था कि यजीद का कुछ जिक्र आ गया। उस शख्स ने यजीद को अमीरुल—मोमिनीन यजीद बिन मुआविया कहा। हजरत उमर बिन अब्दुल—अजीज ने उस शख्स से फरमाया : तकूलु अमीरुल-मोमिनीन? फ अ म र बिही फजुरि ब इशरी न सौतन। ऐ शख्स! तू (यजीद को) अमीरुल—मोमिनीन कहता है? फिर आपने हुक्म दिया कि यजीद को अमीरुल—मोमिनीन कहने वाले शख्स को (२०) बीस कोड़े लगाए जाएँ।

(तारीखुल—खुलफा सफा ३०५—सवाइके मुहर्रका ७३२)

(४) आला हजरत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहले सुन्नत सैयदना इमाम अहमद रजा खां फाजिल बरैलवी अलैहिर्हरमः वरिजवान अपने फतावे में फरमाते हैं कि यजीद पलीद अलैहि मा यस्तहिक्कुहू मिनल अजीजिल मजीदे क़त्तअन यकीनन बि-इजमा अहले सुन्नत फासिक व फाजिर व जर्री अलल—कबाइर था। इस पर अइम्मए अहले—सुन्नत का इत्तिबाक व इत्तिफाक है। सिर्फ उसकी तकफीर व लअून में इख़्तिलाफ़ फरमाया। इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके इत्तिबा व मुवाफ़िकीन उसे काफ़िर कहते हैं और बतरख़्सीसे नाम उस पर लान करते हैं। इस आयते करीमा से उस पर सनद लाते हैं :

फ़हल असैतुम इन तवल्लैतुम अन तुफ़सिदू फ़िलअर्जे व तुक़त्तिऊ अरहामकुम। उलाइकल्लजी न लअनहुमुल्लाहु फ़असम्महुम व आमा अबसारहुम

(सूर: मुहम्मद प/२६ रुकू/७)

“क्या करीब है कि अगर वालिए मुल्क हो तो ज़मीन में फ़साद करो और अपने नसबी रिश्ते काट दो। यह हैं वह लोग जिन पर अल्लाह तआला ने लानत फ़रमाई तो उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखें फोड़ दीं।”

शक नहीं कि यजीद ने वालिए मुल्क होकर ज़मीन में फ़साद फैलाया। हरमैन तैय्यबैन और खुद काबा मुअज़्जमा और रौजा तैय्यबा की सख़्त बेहुर्मतियां कीं। मस्जिदे करीम में घोड़े बांधे, उनकी लीद और पेशाब मिम्बरे अतहर पर पड़े। तीन दिन तक मस्जिदे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम बे—अज़ान व नमाज़ रही।

मक्का व मदीना व हिजाज़ के हजारों सहावा व ताविईन वेगुनाह शहीद किए। काबा मुअज्जमा पर पत्थर फेंके। गिलाफे काबा शरीफ फाड़ा और जलाया। मदीना तैयबा की पाक दामन पारसाएं तीन शबाना रोज़ अपने ख़बीस लशकर पर हलाल कर दीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिगर पारे को तीन दिन बे-आब व दाना रखकर अपने हमराहियों के तेरे जुल्म से प्यासा ज़बह किया। मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाले हुए तने नाज़नीन पर बादे शहादत घोड़े दौड़ाए गए कि तमाम उस्तुख़वाने मुबारका चूर हो गए। सरे अनवर, कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बोसागाह था, काट कर नेज़ा पर चढ़ाया और मन्ज़िलों फिराया। हरमे मुहतरम मुहज्ज़रात मशकूए रिसालत कैद किए गए, और बेहुरमती के साथ उस ख़बीस के दरबार में लाए गए। इससे बढ़कर क़तए रहम और ज़मीन में फ़साद क्या होगा? मलऊन है जो इन हरकाते मलऊना को फ़िस्क व फ़ुजूर न जाने। क़ुरआने अज़ीम में सराहतन इस पर लानहुमुल्लाह फ़रमाया। लिहाज़ा इमाम अहमद बिन हम्बल और उनके मवाफ़िक़ीन इस पर लानत फ़रमाते हैं। हमारे इमाम आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने लान व तकफ़ीर से इहतियातन सुकूत किया कि इससे फ़िस्क व फ़ुजूर मुतवातिर हैं, कुफ़्र मुतवातिर नहीं। बहाले इहतिमाल निस्बते कबीरा भी जाइज़ नहीं, न कि तकफ़ीर। अमसाल वर्इदात मशरूत बिही अदमे तौबा हैं। लिक्वौलिही तआला फ़सौ फ़ यलकौ न ग़ैयन इल्ला मन ता ब (प/१६रुकू/७) तौबा तादमे गरगरा मक़बूल है और उसका अदम पर जज़्म नहीं। यही अहवत व असलम है। मगर उसके फ़िस्क व फ़ुजूर से इन्कार करना और इमामे मज़लूम पर इल्ज़ाम रखना ज़रूरियाते मज़हबे अहले-सुन्नत के खिलाफ़ है। ज़लाल व बद-मज़हबी साफ़ है। बल्कि इन्साफ़न यह उस क़ल्ब से मुतसव्वर नहीं जिसमें मुहब्बत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शम्मा हों। व स यालमुल्लज़ी न ज़ ल मू ऐय य मुन्कलबि यनकलिबून। ('फ़तावा रज़वीया' जिल्द शशुम सफ़ा १०७-१०८)

और दूसरी जगह फ़रमाते हैं : यज़ीद बेशक पलीद था उसे पलीद कहना और लिखना जाइज़ है और उसे रहमतुल्लाह अलैहि न कहेगा मगर नासिबी कि अहले-बैते रिसालत का दुशमन है।

('फ़तावा रज़वीया' जिल्द शशुम सफ़ा ११४)

तीसरी जगह यज़ीद पलीद की बख़्शिश के बारे में एक रावाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाया यज़ीद के फलीद के बारे में अइम्मा-ए-अहले-सुन्नत के तीन अक़वाल हैं। इमाम अहमद वग़ैरह अकाविर काफ़िर जानते हैं। हरगिज़ बख़्शिश न होगी। इमाम ग़ज़ाली वग़ैरह मुसलमान। उसपर कितना ही अज़ाब हो बिलआख़िर बख़्शिश ज़रूर होगी। हमारे इमाम (अबू-हनीफ़ा) सुकूत फ़रमाते हैं कि न हम मुसलमान कहें, न हम काफ़िर।
(‘फ़तावा रजवीया’ जिल्द शशुम सफ़ा १५४)

मुहतरम कारिर्दन! आप जलीलुल-क़द्र उलमाए मुहक्किनीन के ब्यानात से ख़ूब अच्छी तरह वाकिफ़ हो गए कि यज़ीद कैसा था और उसने कैसे-कैसे मज़ालिम ढाए। यह भी आपने पढ़ लिया कि यज़ीद को क्या कहना चाहिए, और क्या न कहना चाहिए? इस सिलसिले में हमने अपने इमामे आजम अबू-हनीफ़ा रज़ियल्लहु अन्हु का फ़तवा भी नक़ल कर दिया है। इसलिए जो लोग इमामे आजम अबू-हनीफ़ा के मानने वाले हैं उनको चाहिए कि इमाम के फ़त्वे पर अमल करते हुए यज़ीद के लान व तकफ़ीर यानी उसपर लानत करने और उसको काफ़िर कहने से ख़ामोशी एख़्तियार करें। लेकिन उसके फ़िस्क़ व फुजूर को ज़रूर मानें। जो लोग उसके फ़िस्क़ व फुजूर का इन्कार करें और उसको रहमतुल्लाह अलैह और अमीरुल-मोमिनीन कहें या लिखें। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को मआज़ल्लाह! बागी या ख़ताकार कहें या लिखें, ऐसे लोगों को गुमराह, बददीन, अहले-बैत का दुश्मन और ख़ारजी समझें। न उनका ब्यान सुनें, न उनकी किताबें पढ़ें और न ही उनके साथ नशिस्त करें।

ऐसे ही ग़दार और ख़ारजी बोली बोलने वालों के बारे में हज़रत मुल्ला अली कारी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं कि बाज़ जाहिल जो यह कहते हैं कि इमाम हुसैन ने यज़ीद से बगावत की तो यह अहले-सुन्नत व जमाअत के नज़दीक बातिल है। इस तरह की बोली ख़ारजियों के हिज़यानात में से है जो अहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज हैं।

(शरह फ़िक्ह अकबर सफ़ा ८७ मतबूआ अशरफी बुक डिपो)

हज़रत शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहदिस देहलवी अपने फ़तावे में, यज़ीद पर लानत करना चाहिए या नहीं — उसके मुतअल्लिक़ तहरीर फ़रमाते हैं कि तवक्कुफ़ इस वजह से है कि रिवायाते मुतख़ालिफ़ा व मुतआरिज़ा यज़ीद पलीद के बारे में मामलाए शहादते हुसैन अलैहिस्सलाम में वारिद हुई

हैं। चुनांचे बाज रिवायात से मफहूम होता है कि हजरत इमाम की शहादत पर यजीद राजी हुआ और आपकी शहादत से खुश हुआ। उसने अहले-वैत और खानदाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इहानत की। तो जिन उलमा के नज़दीक यह साबित हुआ कि यह रिवायात मुरज्जह हैं तो उन उलमा ने यजीद पलीद पर लान किया। चुनांचे इमाम अहमद बिन हम्बल और कियामरासी जो फुक्हाए शाफ़ईया से हुए हैं और दीगर उलमाए कसीर ने यजीद पलीद पर तान किया है। और बाज रिवायात से मफहूम होता है कि यजीद को शहादते इमाम अलैहिस्सलाम से रंज व ग़म था और शहादत की वजह से यजीद ने इब्ने-ज़्याद और उसके आवान पर इताब किया। यजीद को उस काम से नदामत हुई कि उसके नाइब के हाथ से यह वाकिआ वकू में आया। तो जिन उलमा के नज़दीक यह साबित हुआ कि यह रिवायात मुरज्जह हैं तो उन उलमा ने यजीद के लान से मना किया। चुनांचे हुज्जतुल-इस्लाम इमाम गज़ाली अलैहिर्रहमः और दीगर उलमाए शाफ़ईया और अकसर उलमाए हनफ़ीया यजीद के लान से मना किया है। और बाज उलमा के नज़दीक साबित हुआ कि दोनों तरह के रिवायात में तआरुज़ है और कोई वजह ऐसी साबित न हुई कि उसके एतबार से एक जानिब की रिवायात को तरजीह हो सके। तो उन उलमा ने इहतियातन इस मसअला में तवक्कुफ़ किया। इमामे आजम अबू-हनीफ़ा का यही कौल है। अलबत्ता शिमर व इब्ने-ज़्याद शहादते इमाम हुसैन से राजी थे और यह दोनों खुश थे। इसलिए शिमर व इब्ने-ज़्याद पर लान करने में उलमा से किसी ने तवक्कुफ़ नहीं किया। बिलइतिफ़ाक़ सब उलमा के नज़दीक क़तई तौर पर साबित है कि शिमर व इब्ने-ज़्याद बद-निहाद पर लान करना जायज़ है।

(‘फ़तावा अजीजी’ सफ़ा ३५२/२५३)



अह्दे हज़रत अमीर मुआविया

और

बैअूते यज़ीद

नीज़

यज़ीद पक्षीद

की

तख़्त-नशीनी

और

हज़रत इमाम हुसैन

रज़ियल्लाहु अन्हु

व

दीगर सहाबा से बैअूते यज़ीद का मुतालबा

अहदे अमीर मुआविया और यजीद की बैअत

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने सन् ५० हिजरी में शामियों को बुलाया कि उनके बाद उनके बेटे यजीद की जानशीनी के लिए अहले शाम बैअत करें। इस एतबार से आप इस्लाम में पहले शख्स हैं जिन्होंने अपनी हयात ही में अपने बेटे के लिए मुसलमानों से बैअत ली। और अपने बेटे यजीद को अपना वली-ए-अहद बना दिया। जब शामियों ने बैअत कर ली तो आपने गवर्नरे मदीना मरवान बिन हकम को एक फ़रमान लिखा कि वह अहले मदीना से भी यजीद की बैअत लें। चुनांचे मरवान बिन हकम ने मदीना मनव्वरा में खुत्बा देते हुए कहा कि मुझे अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अमीर मुआविया की तरफ़ से हुक्म मिला है कि उनके बेटे यजीद के लिए आप लोगों से हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा की सुन्नत पर बैअत लूं। जैसे कि उनके अहद में नामजदगी का तरीका रायज था। यह सुनकर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा फौरन खड़े हो गए, और फ़रमाया कि नहीं-नहीं! यह सुन्नते हज़रत अबू-बक्र व उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा नहीं है। बल्कि यह कहो कि कैसर व किसरा की सुन्नत (तरीका) पर बैअत लूं। इसलिए कि हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ और हज़रत फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कभी अपने औलाद या अपने किसी अहले ख़ानदान व अहले-बैत के लिए बैअत नहीं ली।

(तारीखुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा/२८६ मासबत बिस्सुन्नः सफ़ा ३५-तारीखे इब्न-ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ५५)

हज़रत अमीर मुआविया का हज और यजीद की बैअत

सन् ५१ हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज अदा किया। और अपने बेटे यजीद के लिए तमाम लोगों से बैअत लेने के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़र्जन्द हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया। उनसे कहा ऐ इब्ने उमर! तुम तो यह कहते थे कि जिस दिन मुझ पर कोई अमीर नहीं होगा उस रोज़ मुझे चैन नहीं होगा और अब तुम मामला-ए-ख़िलाफ़त में रखना-अन्दाज़ी कर रहे हो। यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फौरन खड़े हो गए और एक बलीग़ खुत्बा दिया जिसमें हम्द व नात के बाद फ़रमाया कि ऐ अमीर!

आपसे पहले भी खुलाफा गुज़रे हैं और उनके भी फ़र्जन्द थे। उनके फ़र्जन्दों से आपका फ़र्जन्द (यज़ीद) बेहतर नहीं है। मगर उन्होंने कभी भी अपनी औलाद में से किसी बेटे को वली-ए-अहद मुक़र्रर नहीं किया। बल्कि उन्होंने तो इस इन्तिखाबे आम को मुसलमानों पर छोड़ दिया। परस आज भी वह किसी शख्स की खिलाफ़त पर इजमा कर लें तो मैं भी उसको कुबूल कर लूंगा। आप मुझे इस बात से डराते हैं कि मैं मुसलमानों में रखना-अन्दाज़ी करने वाला हूँ। बख़ुदा! मैं मुसलमानों में इन्तिशार करने वाला नहीं हूँ। यह तक़रीर करके आप वहां से उठकर चले आए।

फिर हज़रत अमीर मुआविया ने फ़र्जन्दे सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। जब वह तशरीफ़ लाए तो उनसे भी वही सब कुछ कहा जो हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उनकी बात बीच में काट कर कहा कि क्या आपने यह समझ रखा है कि इन्तिखाबे ख़लीफ़ा के मामले में हमने आपको अपना वकील बना लिया है? ख़ुदा की क़सम! हमने आपको अपना वकील नहीं बनाया। ख़ुदा की क़सम! हम चाहते हैं कि इस मामिला में तमाम मुसलमान जमा हों और बाहम मशवरत करें और फिर इन्तिखाब करें। वरना मैं बताए देता हूँ कि तफ़र्का अन्दाज़ी का बार आपके कन्धों पर रहेगा। इतना कह कर आप उठ कर खड़े हो गए। उस वक़्त हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ की कि इलाही! जो कुछ मैं चाहता हूँ इसमें तू मेरी मदद फ़रमा। इलाही! मैं अगर यज़ीद को उसकी लियाक़त और होशमन्दी के बाइस वली-ए-अहद बना रहा हूँ तो इस काम में मेरी मदद फ़रमा। महज़ शफ़क़ते पिदरी के बाइस ऐसा कर रहा हूँ और वह खिलाफ़त के काबिल नहीं है तो उसके तख़्तनशीन होने से पहले उसको मौत दे दे। फिर हज़रत इब्ने अबू-बक्र सिद्दीक़ से फ़रमाया कि तुम सख़्ती और दुरुश्ती से काम मत लो। ज़रा नरमी का रवैया इख़तियार करो। कहीं तुम अहले शाम तक इस बात को न पहुंचा देना। क्योंकि मैं डरता हूँ कि कहीं अहले शाम सबक़त करके आपसे बैअत न कर लें। आप कुछ सब्र करें ताकि मैं रात उनको इतिला दे दूँ कि तुम ने यज़ीद की बैअत कर ली है। उसके बाद तुम से जो कुछ बन पड़े वह कर गुज़रना।

उसके बाद हज़रत अमीर मुआविया ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया और उनसे कहा: ऐ इब्न-जुबैर! तुम एक शातिर लोमड़ी की तरह हो जो एक बिल से निकल कर झट दूसरी बिल में जा घुसती है। तुमने ही इब्न-उमर और इब्ने अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा के कानों में कुछ फूंक दिया है और उन्हें भड़का दिया है और किसी दूसरे शख्स की बैअत पर तैयार कर रखा है। हज़रत इब्न-जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुनकर कहा कि अगर आपका दिल खिलाफत से भर गया है या आप अपनी खिलाफत से बेज़ार हैं तो फिर इस तरह खिलाफत को तर्क क्यों नहीं कर देते ताकि हम आपके बेटे से ही बैअत कर लें। ज़रा आप ही सोचिए कि अगर उसकी भी बैअत कर लें तो फिर हम किसकी सुनें और किसकी बात मानें। क्योंकि आने वाहिद में या एक वक़्त में दो बादशाहों की तो बैअत हो ही नहीं सकती। यह कह कर आप भी वापस आ गए। इन हज़रात के चले जाने के बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और हम्द व नात के बाद कहा कि मैं ने कज-रू लोगों की बातों को सुना है। उनकी बातों से जाहिर है कि वह (यानी इब्न-उमर, इब्ने अबू-बक्र, और इब्न-जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम) यज़ीद की बैअत कभी नहीं करेंगे। हालांकि वह तीनों यज़ीद की बैअत कर चुके हैं। उसकी इताअत कुबूल कर ली है। यह सुनकर अहले शाम ने कहा: खुदा की क़सम! वह लोग जब तक हमारे सामने यज़ीद की बैअत नहीं करेंगे हम इस बात को नहीं मानेंगे। अगर उन्होंने हमारे सामने ऐसा नहीं किया तो फिर हम उन तीनों के सर उड़ा देंगे। यह सुनकर अमीर मुआविया ने कहा कि वाह! वाह! कुरैश की शान में ऐसी गुस्ताख़ाना बातें? आज के बाद से मैं आइन्दा तुम्हारी जुबान से ऐसी बातें न सुनूँ। यह कहकर आप मिम्बर से उतर आए। इस वाकिआ के बाद लोगों में यह मशहूर हो गया कि इब्न-उमर इब्न-अबू-बक्र और इब्न-जुबैर ने यज़ीद से बैअत कर ली है। हालांकि यह तीनों हज़रात बराबर इस बात से इन्कार करते रहे। हज से फ़रागत के बाद हज़रत अमीर मुआविया शाम वापस चले गए।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सफ़ा २८६ ता २६९, मासबत बिस्सुन्न: सफ़ा ३६ तारीख़ इब्न-ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ५६)

उसके बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु अक़सर बीमार रहे और माहे रज्जब सन् ६० हिजरी में आपका इन्तिक़ाल हो गया।

नोट : बाज लोग हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु पर यह एतराज करते हैं कि आपने अपनी हयात में अपने बेटे यजीद को अपना वली-ए-अहद मुकर्रर फरमा दिया। यह आपकी सबसे बड़ी भूल थी। इसका जवाब हजरत अल्लामा मुफ्ती अहमद यार खां साहब नईमी अलैहिर्रहमः तहरीर फरमाते हैं कि खलीफा का अपनी जिन्दगी में दूसरे को खलीफा बनाना जायज है। इसलिए कि हजरत अबू-बक्र सिद्दीक रजियल्लाहु अन्हु ने अपने जिन्दगी में हजरत उमर फारुक रजियल्लाहु अन्हु को खलीफा मुकर्रर किया था। रहा बेटे को अपना जानशीन बनाना, तो यह कुरआन व हदीस से मना नहीं। जिन लोगों को उस पर एतराज है वह दलील पेश करें। रहा यह सवाल कि खुलफ़ाए राशिदीन में से किसी ने अपने बेटे को जानशीन मुकर्रर नहीं किया इसलिए यह नाजाइज है, तो यह दलील ग़लत है। क्योंकि खुलफ़ाए अरबआ के न करने के सबब अगर ना जायज हो जाए तो उन्होंने बहुत-सा काम नहीं किया है। जैसे : कुरआन हकीम पर आराब लगाना, हदीस व फ़िक्ह को किताबी शक़ल में जमा करना वगैरह। यह सब काम नाजायज हो जाएंगे।

रहा यजीद का फ़िस्क व फ़ुजूर तो यह कहीं साबित नहीं कि हजरत अमीर मुआविया की जिन्दगी में यजीद फ़ासिक व फ़ाजिर था। न यह साबित है कि उन्होंने यजीद को फ़ासिक व फ़ाजिर मानते हुए अपना जानशीन बनाया। यजीद का फ़िस्क व फ़ुजूर दरअसल हजरत अमीर मुआविया की वफ़ात के बाद ज़ाहिर हुआ। फ़िस्क ज़ाहिर होने के बाद फ़ासिक करार दिया जाता है न कि पहले। देखिए इबलीस लईन पहले फ़रिशतों का उस्ताद था। फिर जब उससे कुफ़्र ज़ाहिर हुआ तब उसे काफ़िर करार दिया गया। तो फ़िस्क व फ़ुजूर ज़ाहिर होने से पहले यजीद को फ़ासिक कैसे ठहराया जा सकता है? हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु कैसे मौरिदे इल्ज़ाम हो सकते हैं ?

(हजरत अमीर मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा ६५)

यजीद की तख़्त-नशीनी और तलबे बैअत

हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु के वफ़ात के बाद यजीद तख़्त-नशीन हुआ तो उसको सबसे पहले यह फ़िक्र लाहिक हुई कि जिन लोगों ने उसकी बैअत नहीं की उन्हें अपनी बैअत पर मजबूर करे। चुनांचे उसने अपनी बैअत लेने के लिए अतराफ़ के तमाम ममालिक में खुतूत व

हुक्म—नामे रवाना किए। चुनांचे उसने आमिले मदीना वलीद बिन उत्तबा को खत लिखा कि हर खास व आम से मेरी बैअत लो। हुसैन बिन अली, अब्दुल्लाह बिन उमर और अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से पहले बैअत लो। जब तक उनसे बैअत न ले लो उन्हें अपने पास से जाने की इजाज़त न दो। और तशद्दुद एखतियार करो, मोहलत न दो।

(तारीखे तबरी जिल्द पन्जुम सफ़ा १६३)

जब यज़ीद का खत वलीद के पास पहुंचा तो वह बहुत घबराया। फौरन उसने एक शख्स को भेजकर मरवान बिन हकम को, जो वलीद से पहले मदीना का गर्वनर था, बुलाया और यज़ीद का खत दिखा कर उससे मश्वरा तलब किया।

यहां पर एक बात बता देना ज़रूरी है कि मरवान बिन हकम यह वह शख्स है कि जब उसकी पैदाइश हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में तहनीक (कोई चीज़ नरम करके खिलाने) के लिए बुलाया गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया हुवल वज़्जुबनुल वज़्जो। यह गिरगिट का बेटा गिरगिट है। सवाइकें मुहर्रका में यह भी है कि मलऊन बिन मलऊन है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६०५)

बुख़ारी, नसाई और इब्ने अबी हातिम अपने तफ़सीर में रिवायत करते हैं कि हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मरवान के बाप पर लानत फ़रमाई जबकि मरवान सुल्बे पिदर में था। तो वह भी अल्लाह की लानत से हिस्सा पाने वाला हुआ। (तारीखुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा २६८ सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६०६)

हज़रत शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहदिस देहलवी अलैहिर्रहमः अपने फ़तावा में मरवान की हकीकत ब्यान करते हुए फ़रमाते हैं कि अहले-बैत की मुहब्बत फ़राइजे ईमानी से है। यह लवाज़िमे सुन्नत और मुहब्बते अहले-बैत से है कि मरवान अलैहिल्लानः को बुरा कहना चाहिए। उससे दिल बेज़ार रहना चाहिए। अलल-ख़ुसूस उसने निहायत बदसुलूकी हज़रत इमाम हुसैन और अहले-बैत के साथ की। कामिल अदावत उन हज़रात से रखता था। इस ख़्याल से इस शैतान से निहायत ही बेज़ार रहना चाहिए।

(फ़तावा अज़ीज़ी मुतर्जम सफ़ा ४४३)

मुहतरम कारिर्इन! अहादीसे करीमा और फ़तावा की रौशनी में आपने मरवान बिन हकम की दुशमनी मुलाहज़ा फ़रमाई कि यह शख्स इतना

मबगूज है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे और उसके बाप को गिरगिट फरमा रहे हैं और उन पर लानत भेज रहे हैं। हज़रत शाह अब्दुल-अजीज़ मुहदिस देहलवी उसे शैतान करार दे रहे हैं। तो ऐसे शख्स से क्या खैर की उम्मीद की जा सकती है ?

चुनांचे जब मदीना मनव्वरा के गवर्नर वलीद ने मरवान से मशवरा लिया तो उसने कहा कि उन तीनों को फौरन इसी वक़्त बुलाओ और उनसे बैअत के लिए कहो। अगर वह बैअत कर लें तो बेहतर, वरना तीनों को क़त्ल कर दो।

इस मशवरे के बाद गवर्नर मदीना वलीद ने अब्दुल्लाह बिन उमर बिन उस्मान नामी एक नौ-उम्र लड़के के ज़रिया उन तीनों हज़रात को बुला भेजा। यह हज़रात उस वक़्त मस्जिद में थे। इस ग़ैर मामूली वक़्त के बुलावे से फौरन मामले की तह को पहुंच गए। उन्होंने आपस में कहा: मालूम होता है कि हज़रत अमीर मुआविया का इन्तिक़ाल हो गया है और हमें बैअत के लिए बुलाया जा रहा है। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साथ चन्द जवानों को लेकर पहुंचे। उन्हें हिदायत की कि तुम दरवाज़े पर बैठे रहो। अगर मैं तुम्हें बुलाऊं या तुम सुनो की मेरी आवाज़ बुलन्द हो गई है तो सब के सब मकान के अन्दर चले आना। लेकिन अगर ऐसा न हो तो दरवाज़े से न हटना यहां तक कि मैं बाहर आ जाऊं। फिर आप अन्दर तशरीफ़ ले गए। वलीद ने आपको हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात की ख़बर सुनाई और यज़ीद की बैअत के लिए कहा। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा और फ़रमाया: मेरे जैसा आदमी छुप कर बैअत नहीं कर सकता और न मेरे लिए इस तरह बैअत करना मुनासिब है। आप बाहर निकल कर सब लोगों से बैअत तलब करें और उनके साथ मुझसे भी बैअत के लिए कहें। वलीद अमन व सुलह पसंद आदमी था। उसने कहा: अच्छा आप तशरीफ़ ले जाएं। जब आप तशरीफ़ ले जाने लगे तो मरवान ने बहुत बरहम होकर वलीद से कहा: अगर तुमने इस वक़्त इनको जाने दिया और बैअत न ली तो फिर इन पर काबू न पा सकोगे। अगर यह बैअत कर लें तो ख़ैर, वरना क़त्ल कर दो। इमाम हुसैन यह सुनकर खड़े हो गए और फ़रमाया: ओ इब्नुज़्ज़रका! क्या तू मुझे क़त्ल करेगा या यह करेंगे? खुदा की क़सम! तू झूठा है और कमीना है। यह कहकर आप तशरीफ़ ले आए। मरवान ने वलीद से कहा: तुम ने मेरी बात न मानी। खुदा की क़सम! अब

तुम उन पर काबू न पा सकोगे। यह बेहतरीन मौका था कि तुम उनको कत्ल कर देते। वलीद ने कहा : तुम पर अफ़सोस! तुम मुझे ऐसा मशवरा दे रहे हो जिसमें मेरे दीन की तबाही है। क्या मैं नवासाएँ रसूल को सिर्फ़ इस वजह से कत्ल कर देता कि उन्होंने यज़ीद की बैअत नहीं की। कसम है रब्बे जुल-जलाल की! अगर मुझे सारी दुनिया का माल व मत्ता मिल जाए तो भी मैं उनके खून से अपने हाथों को आलूदा हरगिज़ नहीं कर सकता। वल्लाह! मैं तो समझता हूँ कि क्यामत के दिन जिस शख्स से खूने हुसैन के बारे में बाज़-पुर्स की जाएगी वह खुदा के सामने ख़फीफ़ुल-मीज़ान ठहरेगा। मरवान ने कहा : अगर तुम्हारी यही राय है तो ठीक है। यह उसने सिर्फ़ ज़ाहिर में कहा। वरना दिल से वह वलीद का दुश्मन बन गया।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १६४ तारीख़ इब्न-ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ७६ शामे करबला सफ़ा २३)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जानते थे कि यज़ीद की बैअत से इन्कार उसके लिए इशतिआल का बाइस होगा। नाबकार जान का दुश्मन और खून का प्यासा हो जाएगा। लेकिन इमाम की दियानत व तक्वा ने इजाज़त न दी कि अपनी जान की खातिर ना-अहल के हाथ पर बैअत कर लें और मुसलमानों को तबाही और शरअ व अहकामे शरअ की बेहुरमती और दीन की मज़रत की परवाहन करें। यह इमाम जैसे जलीलुशान फ़र्जन्दे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किसी तरह मुम्किन न था।

अगर इमाम हुसैन उस वक़्त यज़ीद की बैअत कर लेते तो वह आपकी बहुत क़द्र व मन्ज़िलत करता और आपकी आफ़ियत व राहत में कोई फ़र्क़ न आने देता। बल्कि दुनिया की बहुत सारी दौलत आपके क़दमों पर जमा कर देता। लेकिन इस्लाम का निज़ाम दरहम-बरहम हो जाता। यज़ीद की हर बदकारी के जवाज़ के लिए इमाम की बैअत सनद हो जाती। शरीअते इस्लामिया और मिल्लते हनफ़ीया का नक्शा मिट जाता। शीओं को आंख खोल कर देख लेना चाहिए कि इमाम ने जान को ख़तरा में डाल दिया लेकिन तक़िय्या का तंसव्वुर भी खातिरे मुबारक पर न गुज़रा। अगर तक़िया जाइज़ होता तो इसके लिए उससे ज़्यादा ज़रूरत का और कौन-सा वक़्त हो सकता था?

बहरहाल, आप यज़ीद की बैअत से बराबर किनाराकशी एख़्तियार

फरमाते रहे। उसके लिए कभी तैयार नहीं हुए। शाम के वक्त वलीद ने फिर इमाम के पास आदमी भेजा। आपने फरमाया कि इस वक्त तो मैं नहीं आ सकता। सुबह होने दीजिए फिर देखेंगे क्या होता है? वलीद ने इमाम की बात मान ली। आप उसी रात यानी २८ रज्जब सन् ६० हिजरी मुताबिक ४ मई सन् ६८१ ई० को अपने अहल व अयाल, बहनों, भांजों और अजीज व अकारिब के साथ मदीना मनव्वरा से मक्का मुअज्जमा रवाना हो गए। अब्दुल्लाह इब्न-जुबैर एक रात पहले मदीना मनव्वरा से मक्का मुकर्रमा रवाना हो चुके थे। (तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफा १६६)

हजरत इमाम हुसैन की मदीना तैयबा से रिहलत

हजरत इमाम आली मक़ाम सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना मनव्वरह को छोड़ते वक्त अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए अनवर पर हाज़िर हुए होंगे और सलात व सलाम अर्ज़ करके रुख़सत की इजाज़त तलब की होगी। उस वक्त आपकी क्या कैफ़ियत हुई होगी? बिला शुब्हः दीदए खूबाज़ ने अशक़ ग़म की बारिश की होगी। कल्बे हर्ज़ी सदमए जुदाई व फिराक़ से घायल हो रहा होगा। लबों पर यह अल्फ़ाज़ होंगे : कन्धों पर चढ़ाकर खिलाने वाले नाना जान! आग़ोशे रहमत व मुहब्बत में लेकर लोरियां देने वाले नाना जान! माथे, रुख़सार और लबों को चूमने वाले नाना! आज मेरा हाल देखो। मैं ग़मगीन व परेशान हूँ अशक़बार हूँ, इसलिए कि आपका यह मुक़द्दस शहर छोड़ रहा हूँ। वह शहर जो मुझे सबसे ज़्यादा अजीज़ और महबूब है। लेकिन मैं क्या करूँ? मेरा यहां रहना दुशवार हो गया है। मैं जा रहा हूँ मुझे इजाज़त दीजिए। इधर रौज़ए अनवर में नाज़ व निअम से पालने वाले नाना जान, जिन्होंने अपने नवासे हुसैन के लिए अपने लख्ते जिगर फ़र्ज़न्द इब्राहीम को कुर्बान कर दिया था, उनकी क्या हालत हुई होगी? यह तसव्वुर दिलों को पाश-पाश कर देता है। यह दिन कैसा दिन था? सख़्त रंज व अलम का दिन था कि नवासे रसूल जिगर गोशए बतूल अपने नाना जान से जुदा हो रहे हैं। जुदा भी कैसे? हमेशा-हमेशा के लिए जुदा हो रहे हैं।

‘साहिबे रौज़तुश्शुहदा’ लिखते हैं कि इसके बाद हजरत इमाम आलीए मक़ाम अपनी वालिदा माजिदा हजरत खातूने जन्नत सैय्यदतना फ़ातिमतुज्जुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा और अपने बिरादरे मुअज्जम सैयदना इमाम हसन

रजियल्लाहु अन्हु की ज़्यारत के लिए जन्नतुल-बकी में हाजिरी दी। फिर अपने नाना जान से आखिरी सलाम पेश करने के लिए रौजए मुक़दसा पर हाजिरी दी। सलात व सलाम अर्ज करने के बाद आप पर नींद का ग़ल्बा तारी हुआ तो क्या देखते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाज़िर हैं और मेरे सर को अपनी आगोशे रहमत में ले लिया। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलै क वसल्लम! मैं उम्मत की जफ़ाओं से तंग आकर और यज़ीद पलीद की बैअत न करने की वजह से आपका मुक़दस शहर मदीना छोड़ रहा हूँ। मैं यह देख रहा हूँ कि दोबारा आपकी ज़्यारत नहीं कर सकूंगा। हुज़ूर रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ हुसैन! अन्क़रीब तू मेरे पास आ जाएगा और मैं देख रहा हूँ कि तू भूखा-प्यासा करबला की ज़मीन पर शहीद हो रहा है। ऐ मेरे हुसैन! सब्र करना और अपना काम पूरा करना। ज़्यादा देर नहीं गुज़रेगी कि तू भी अपने बाप, अपनी माँ और मेरे पास पहुँच कर हमारे साथ ख़्वाने बहिश्त पर बैठ कर ख़ालिकुल-इबाद की रहमतों से मालामाल होगा। इसके साथ ही इमाम हुसैन बेदार हो गए। आपको अपनी शहादत का यकीन हो गया। बाद अज़ां इसी शौके शहादत में आपने मक्का मुअज़्ज़मा जाने का अज़्म मुसम्मम कर लिया। अपने नानाजान को आखिरी सलाम और अलविदा फ़रमाते हुए ४ शाबानुल-मुअज़्ज़म सन् ६० हिंजरी मुताबिक १० मई सन् ६८१ ई० बरोज़ जुमरात मअ् अहल व अयाल इस आयते करीमा फ़ ख़ र ज मिन्हा खाइफ़ै यतरक्कबु का ल रब्बि नज्जिनी मिनल कौमिज़्ज़ालिमीन पढ़ते हुए मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रवाना हो गए। रास्ते में एक मक़ाम पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुतीअ से मुलाकात हुई। उन्होंने आपको मअ् अहल व अयाल मदीना मुनव्वरा से जाते हुए देख कर पूछा : मैं आप पर फ़िदा हूँ! आप-कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे हैं? आपने फ़रमाया : फ़िलहाल तो मक्का जा रहा हूँ। अब्दुल्लाह ने कहा : अल्लाह आपको ख़ैर व आफ़ियत से रखे और हमें आप पर फ़िदा करें। जब आप मक्का पहुँच जाएं तो कूफ़ा का इरादा हरगिज़ न फ़रमाएं। क्योंकि वह एक मन्हूस शहर है। वहीं आपके वालिद माजिद शहीद हुए और वहीं आपके बिरादरे मुअज़्ज़म हज़रत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु को बे-यार व मददगार छोड़ दिया गया। उनपर नेजे का वार किया गया। जान जाते-जाते बची। आप हरमे मुहतरम मक्का शरीफ़ ही में रहिए। आप अरब

के सरदार हैं। अहले हिजाज आपके वरावर किरसी को नहीं समझते। हर तरफ से लोग आपके पास आएंगे। मेरे चचा और मामू आप पर निरार हैं। आप हरमे काबा को हरगिज—हरगिज न छोड़िएगा। खुदा की करामा! नसीब दुश्मनां! आप पर कोई आंच आई तो हम सब गुलाम बना डाले जाएंगे। जब आप मक्का मुकर्रमा में दाखिल हुए तो यह आयत पढ़ी व लम्मा तवज्जह तिल्काअ मद य न का ल असा रब्बी ऐंयहदियनी सवाअरसवील।

(शामे करबला सफा २७ 'तारीखे तबरी' जिल्द पंजुम सफा १६८ ता १७७)

आपके मक्का मुकर्रमा पहुंचने की खबर सुनकर लोग जूक—दर—जूक आपके पास आने लगे और ज़्यारत का शर्फ हासिल करने लगे। अब्दुल्लाह इब्न—जुबैर भी मक्का ही में थे। वह भी आपके पास आते जाते। अहले मक्का को आपके आने की खुशी हुई थी। वह आपके दीदारे पुरअनवार से अपने दीदा व दिल को रौशन और मनव्वर करते हुए कह रहे थे —

मरहबा सरवरे आलम के पिसर आए हैं
सैय्यदा फातिमा के लख्ते जिगर आए हैं
नख्ले बुरस्ताने नुबुव्वत के समर आए हैं
जिनसे रौशन है जहां, वह कमर आए हैं
वाह किस्मत! कि चिरागे हरमैन आए हैं
ऐ मुसलमानों ! मुबारक ! कि हुसैन आए हैं

अहले कूफा के खुतूत और वफ़ूद की आमद

कूफा हज़रत सैय्यदना अली कर्रमल्लाह वजहहू के वफ़ादार और मुहिब्बों का मरकज़ और गढ़ था। इसलिए आपने अपने अहदे ख़िलाफ़त में दारुल—ख़िलाफ़ा कूफा को ही करार दिया था। लिहाज़ा आपके तमाम मुहिब्ब वहीं जाकर आबाद हो गए थे। यह लोग हंज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे—ख़िलाफ़त ही में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में तशरीफ़ आवरीए कूफा की दरख्वास्तें भेज चुके थे। मगर आपने साफ़ इन्कार कर दिया था। अब जबकि अहले कूफा को हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल करना और इमामे आली मक़ाम का बैअते यज़ीद से इन्कार करना मालूम हुआ तो कूफा के तमाम शीआ सुलैमान बिन सर्दअल खुज़ाई के मकान पर जमा हुए और हंज़रत अमीर मुआविया के मरने का ज़िक्र करके सबने अल्लाह तआला का

शुक्र अदा किया। फिर सुलैमान ने कहा : मुआविया का इन्तिकाल हो गया है और हजरत इमाम हुसैन ने यजीद की वैअत से इन्कार कर दिया है और मक्का चले गए हैं। तुम लोग उनके और उनके वाप के शीआ हो। पर तुम खूब जान लो कि अगर तुम उनके मददगार बन सकते हो और उनके दुशमनों से जिहाद कर सकते हो तो उनको लिखो। और अगर तुम्हें अपनी कमजोरी और बुजदिली का अन्देशा हो तो उनको धोखा न दो। सबने कहा : हम उनको धोखा न देंगे, बल्कि हम उनके दुशमनों से जंग करेंगे। उनपर अपनी जानें निसार करेंगे। सुलैमान ने कहा : फिर लिखो। तो उन्होंने आप की तरफ खत लिखा।

(तारीखे तबरी—जिल्द पंजुम सफ़ा १७७ शामे करबला सफ़ा २६)

खत का मजमून यह था :

बिरमिल्लाहिरहमानिर्रहीम।

हुसैन बिन अली को सुलैमान बिन सर्द खुजाई, सुहैब बिन लजबा, रिफ़ाआ बिन शदाद, हबीब बिन मज़ाहिर और कूफ़ा के तमाम शीआ मोमिनीन की तरफ़ से सलाम अलैक। बाद हम्द व सलात। अल्लाह आप पर सलामती नाज़िल फ़रमाए। बाद, इसका शुक्र है कि अल्लाह तआला ने आपके सरकश व गुमराह दुशमन को खाक में मिला दिया। जिसने उम्मत का निज़ाम दरहम—बरहम कर दिया। लोगों की मरज़ी के खिलाफ़ उन पर हुकूमत की। और उम्मत के नेक लोगों को शही किया और शर—पसंदों को रहने दिया। हम लोगों पर कोई इमाम नहीं है। आप तशरीफ़ लाइए कि खुदा तआला आपकी बरकत से हमें हक़ की हिमायत नसीब फ़रमाए। दमिशक़ का गर्वनर नोमान बिन बशीर सरकारी महल में है मगर हम उसके साथ जुमा की नमाज़ में शरीक नहीं होते और न उसके साथ ईदगाह जाते हैं। जब हमें मालूम हो जाएगा कि आप तशरीफ़ ला रहे हैं तो हम उसको यहां से निकाल कर मुल्के शाम की हुदूद में ढकेल देंगे। वस्सलाम व रहमतुल्लाह अलैक।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १७८)

यह अहले कूफ़ा की जानिब से पहला खत था। जो अब्दुल्लाह बिन सबा हमदानी और अब्दुल्लाह बिन वाल के हाथों रवाना किया गया। यह दोनों बहुत तेज़ी-से सफ़र करते हुए १० रमज़ानुल मुबारक को मक्का पहुंचे और खत हजरत इमाम हुसैन के हवाले कर दिया।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १७८)

अहले कूफ़ा ज़्यादा सब्र न कर सके। उस ख़त के भेजने के दो रोज़ बाद ५३ अर्जियां और तैयार हो गईं जो एक, दो, तीन, और चार आदमियों के दस्तख़त से थीं। जो हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में इरसाल की गई। उसके बाद फिर कुछ मख़सूस लोगों की अर्जियां आपकी ख़िदमत में रवाना की गईं। एक रिवायत के मुताबिक़ तक़रीबन डेढ़ सौ (१५०) ख़ुतूत इमाम आली मक़ाम की बारगाह में इरसाल किए गए। सब से आखिरी ख़त जो हानी बिन हानी सबीई और सईद बिन अब्दुल्लाह हन्फ़ी की तरफ़ से पहुंचा था। उसके बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा वालों को उन तमाम ख़ुतूत का जवाब दिया कि तुम लोगों के बहुत-से ख़ुतूत हम तक पहुंचे जिनके मज़ामीन से हम मुत्तला हुए। तुम लोगों के जज़्बात और मुहब्बत का लिहाज़ करते हुए नाचार हमने अपने भाई, चचा के बेटे हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अक़ील को तहकीके हाल के लिए कूफ़ा भेजने का फैसला किया है। अगर उन्होंने कूफ़ा के हालात के बारे में लिखा कि यहां के हालात साज़गार हैं तो इन्शाअल्लाह मैं भी तुम लोगों के पास जल्द चला आऊंगा। ('तारीखे तबरी' जिल्द पंजुम सफ़ा १७६)

हज़रत सदरुल-अफ़ज़िल मौलाना सैयद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी अलैहिर्रहमः तहरीर फ़रमाते हैं कि अगरचे इमाम की शहादत की ख़बर मशहूर थी। कूफ़ियों की बेवफ़ाई का पहले भी तजरबा हो चुका था। मगर जब यज़ीद बादशाह बन गया और उसकी हुकूमत व सलतनत दीन के लिए ख़तरा थी। उसकी वजह से उसकी बैअत ना रवा थी। और वह तरह-तरह की तदबीरों और हीलों से चाहता था कि लोग उसकी बैअत करें। इन हालात में कूफ़ियों का बपासे मिल्लत यज़ीद की बैअत से दस्तकशी करना और हज़रत इमाम से तालिबे बैअत होना इमाम पर लाज़िम करता था कि उनकी दरख़्वास्त कुबूल फ़रमाएं। जब एक क़ौम ज़ालिम व फ़ासिक की बैअत पर राजी न हो और साहिबे इस्तिहकाके अहल से दरख़्वास्ते बैअत करे तो, अगर उनकी इसतिदआ कुबूल न करे तो उसके यह माना होते हैं कि वह उस क़ौम को उस जाबिर ही के हवाले करना चाहता है। इमाम अगर उस वक़्त कूफ़ियों की दरख़्वास्त कुबूल न फ़रमाते तो बारगाहे इलाही में कूफ़ियों के उस मुतालबा का इमाम के पास क्या जवाब होता कि हम हर चन्द दरपै हुए मगर इमाम बैअत के लिए राजी न हुए। बई वजह हमें यज़ीद के जुल्म व तशद्दुद से मजबूर होकर उसकी बैअत करनी पड़ी।

अगर इमाम हाथ बढ़ाते तो हम उन पर जानें फिदा करने के लिए हाजिर थे। यह मसअला ऐसा दरपेश आया जिसका हल बजुज इसके और कुछ न था कि हजरत इमाम उनकी दावत पर लब्बैक फरमाएं। अगरचे अकाबिर सहाबा—ए—किराम हजरत इब्ने अब्बास, हजरत इब्ने उमर, हजरत जाबिर, हजरत अबू—सईद, हजरत अबू वाकिद लैशी वगैरहुम हजरते इमाम की उस राय से मुत्तफिक न थे और उन्हें कूफियों के अहद व मीसाक का एतबार नहीं था।

इमाम की मुहब्बत और शहादते इमाम की शोहरत उन सबके दिलों में इख्तिलाज पैदा कर रही थी। गोया कि यह यकीन करने की भी कोई वजह न थी कि शहादत का वक्त यही है और इसी सफर में यह मरहला दरपेश होगा। लेकिन अन्देशा माने था। हजरत इमाम के सामने मसअला की यह सूरत दरपेश थी कि इसतिदआ को रोकने के लिए उज्जे शरई क्या है? इधर ऐसे जलीलुल—कद्र सहाबा के शदीद इसरार का लिहाज।

उधर अहले कूफा की इसतिदआ रद्द फरमाने के लिए कोई उज्जे शरई न होना — हजरत इमाम के लिए निहायत पेचीदा मसअला था जिसका हल बजुज इसके कुछ नजर न आया कि पहले हजरत इमाम मुस्लिम को भेजा जाए। अगर कूफियों ने बद—अहदी व बे—वफाई की तो उज्जे शरई मिल जाएगा। और अगर वह अपने अहद पर काइम रहे तो सहाबा को तसल्ली दी जा सकेगी। (सवानहे करबला सफा ८१)



हजरत इमाम मुस्लिम की कूफा खानगी

शाह ने अपनी नियाबत के लिए उनको चुना
अहले कूफा को यह खुद शाह ने नामा लिखा
आप लोगों की तलब पर उन्हें हमने भेजा
उनकी सब लोग इआनत व हिमायत करना
चल दिए मक्का से उस नामे को लेकर मुस्लिम
आखिरश पहुंच गए कूफा के अन्दर मुस्लिम

इमाम मुस्लिम बहुक्मे इमामे आली मकाम कूफा खाना हुए तो अपने दो

कमसिन कम उम्र साहबजादों—मुहम्मद और इब्राहीम को भी साथ लेकर कूफा पहुंचे। और मुख्तार बिन उबैद के मकान पर क़याम फ़रमाया। आपकी तशरीफ़ आवरी की ख़बर सुनकर शीआने अली जूक—दर—जूक आपकी ज़्यारत के लिए आए और बारह (१२) हजार तक, और एक रिवायत के मुताबिक़ चालीस (४०) हजार लोगों ने आपके दस्ते मुबारक पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की।

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अहले कूफा के जज़्बात, अकीदत व मुहब्बत को देखा तो इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में एक अरीज़ा लिखा जिसमें यहां के हालात की इत्तिला दी और इलतिमास की कि ज़रूरत है कि आप जल्द तशरीफ़ लाएं ताकि बन्दगाने खुदा नापाक के शर व फ़साद से महफूज़ रहें और दीने हक़ की ताईद हो।

अहले कूफा का यह जोश और अकीदत व मुहब्बत देख कर हज़रत नोमान बिन बशीर सहाबीए, रसूल ने जो उस वक़्त कूफा के गर्वनर थे, अहले कूफा को मुत्तला किया कि यह बैअत यज़ीद की मर्जी के खिलाफ़ है और वह इस बैअत पर भड़केगा। लेकिन इतनी इत्तिला देकर ज़ाबता की कारवाई पूरी करके हज़रत नोमान बिन बशीर ख़ामोश हो बैठे और इस मामला में किसी किस्म की दस्त—अन्दाज़ी न की।

यज़ीद को इत्तिला : हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु के मुहिब्बों से नोमान बिन बशीर का ख़िताब पूरा हुआ तो अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम हज़रमी, जो बनी—उमैया के हवाख़्वाहों में से था, उठ खड़ा हुआ और कहा : यह जो आप देख रहे हैं सख़्तगीरी के बग़ैर इस्लाह नहीं हो सकती। अपने और अपने दुश्मन के दर्मियान आपने जो राय काइम की है यह कमज़ोरों की राय है। हज़रत नोमान बिन बशीर ने फ़रमाया : खुदाए तआला की इताअत व फ़रमांबरदारी के साथ मेरा शुमार कमज़ोरों में हो यह इस बात से बेहतर है कि उसकी नाफ़रमानी के साथ मेरा शुमार इज़्ज़त वालों में हो। यह फ़रमाकर आपने अपना ख़िताब पूरा फ़रमा दिया। अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम हज़रमी ने वहां से उठकर यज़ीद को ख़त लिख दिया कि मुस्लिम बिन अकील कूफा आ गए हैं। शीओं ने हुसैन बिन अली के नाम पर उनसे बैअत कर ली है। अगर तुम्हें कूफा चाहिए तो किसी ज़बर्दस्त आदमी को हाकिमे कूफा बना कर भेजो जो तुम्हारे हुक्म को यहां जारी करे। नोमान बिन बशीर या तो कमज़ोर हैं या कमज़ोरी दिखा रहे हैं।

(‘तारीखे तबरी’ जिल्द पंजुम सफ़ा १८२)

इस खत के पहुंचते ही यज़ीद सख्त ग़ज़वनाक हुआ और उसने अपने खास मुशीरों से मूशव्वरा किया। उन्होंने कहा कि फौरन किसी सख्त तरीन आदमी को कूफ़ा का गवर्नर बनाया जाए जो किसी लिहाज़ की परवाह न करे और वह शख्स उबैदुल्लाह इब्न-ज़्याद है। चुनांचे यज़ीद ने हज़रत नौमान बिन बशीर (गवर्नरे कूफ़ा) को माज़ूल कर दिया। उनकी जगह उबैदुल्लाह बिन-ज़्याद जो उन दिनों बसरा का गवर्नर था, उसे कूफ़ा का गवर्नर बना दिया। और हुक्म दिया कि वह फौरन कूफ़ा पहुंच जाए। मुस्लिम बिन अक़ील को गिरफ़्तार करके मुल्के बदर कर दे। अगर वह इसमें मज़ाहमत करें तो क़त्ल कर दे। बैअत करने वालों को डराए और धमकाए कि वह बाज़ आ जाए वरना उनको भी ख़तम कर दे और हुसैन आएंगे तो उनसे भी मेरी बैअत तलब करे अगर वह बैअत कर लें तो बेहतर वरना उनको भी क़त्ल कर दे।

इब्न ज़्याद का कूफ़ा आना

यज़ीद का हुक्म मिलते ही उबैदुल्लाह इब्न-ज़्याद ने अपने भाई उस्मान बिन-ज़्याद को अपना जानशीन मुक़र्रर किया। दूसरे दिन मुस्लिम बिन उमरू बाहिली व शरीक बिन आवर हारसी और तमाम खुदाम और अहल व अयाल को साथ लेकर बसरा से कूफ़ा रवाना हुआ। कादसीया पहुंच कर उसने अपने सिपाहियों को वहीं छोड़ा और बराहे फ़रेब हिजाज़ी लिबास पहनकर ऊंट पर सवार हुआ और बीस आदमियों को अपने हमराह लेकर हिजाज़ी रास्ते से मग़रिब व इशा के दर्मियानी वक़्त कूफ़ा में दाख़िल हुआ। इस मक्र व फ़रेब से उसका मतलब यह था कि इस वक़्त कूफ़ियों में बहुत जोश है। यज़ीद के खिलाफ़ एक लहर दौड़ी है। इसलिए ऐसे तौर से दाख़िल होना चाहिए कि लोग पहचान न पाएं कि वह इब्न-ज़्याद है। बल्कि यह समझें कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले आए ताकि वह बे ख़तर व अन्देशा अमन व आफ़ियत के साथ कूफ़ा में दाख़िल हो जाए। चुनांचे ऐसा ही हुआ। अहले कूफ़ा जिनको हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का शिद्दत से इन्तिज़ार था उन्होंने शब की तारीकी में हिजाज़ी लिबास और हिजाज़ी राह से आते देख कर धोखा खा गए और समझे कि इमाम हुसैन तशरीफ़ ले आए।

सब ने नारा-हाए मुसरत बुलन्द किया और मरहबा बि क या इब्न

रसूलिल्लाह और क़दिम त खै र मक़दमिन कहते हुए उसके आगे पीछे चले। शोर सुनकर और लोग भी घरों से बाहर आ गए और एक अच्छे खासे जुलूस की शकल बन गई। इब्न-ज़्याद बद-निहाद दिल में जलता और कुढ़ता हुआ चुपचाप चलता रहा। उसने अच्छी तरह समझ लिया कि यह लोग इमाम के सख्त मुन्तज़िर हैं और उनके दिल किस क़दर उनकी तरफ़ माइल हैं। जब मज्मा ज़्यादा हो गया और नौबत यहां तक पहुंची कि रास्ता चलने में रुकावट पैदा होने लगी तो मुस्लिम बिन उमरू बाहली जो इब्न-ज़्याद के साथ आया था उसने पुकार कर कहा रास्ता छोड़ दो। यह मेरा अमीर उबैदुल्लाह इब्न-ज़्याद है। इन अल्फ़ाज़ को सुनकर लोगों को बेइन्तिहा रंज व क़ल्क़ हुआ और लोग अफ़सोस करते हुए अपने घरों को वापस हो गए। इब्न-ज़्याद सिर्फ़ दस या बीस आदमियों के साथ गवर्नर हाऊस में दाख़िल हुआ। (तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १८४)

इब्न-ज़्याद का ख़िताब

उबैदुल्लाह इब्न-ज़्याद ने रात गुज़ार कर सुबह लोगों को जमा किया और लोगों के सामने यह तक़रीर की। अमीरुल-मोमिनीन यज़ीद ने मुझे कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर किया है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं मज़लूम के साथ इन्साफ़ करूँ और मुती व फ़रमांबरदार के साथ एहसान करूँ और नाफ़रमानों के साथ सख़्ती करूँ। मैं इस हुक्म की सख़्ती से पाबन्दी करूँगा जो शख़्स मुती व फ़रमांबरदार है उसके साथ शफ़क़त से पेश आऊँगा और जो शख़्स नाफ़रमान है उसके लिए मेरा चाबुक और मेरी तलवार है। तुम्हें चाहिए कि तुम अपनी ख़ैर मनाओ और अपने ऊपर रहम करो।

इस तक़रीर के बाद उसने मशाहीरे कूफ़ा को गिरफ़्तार किया और उन सबसे कहा कि तहरीरी ज़मानत दो कि तुम और तुम्हारे कबीले के लोग किसी मुख़ालिफ़ को अपने यहां पनाह नहीं देंगे, और न किसी किस्म की मुख़ालिफ़ाना सरगर्मियों में हिस्सा लेंगे। किसी ने अगर मुख़ालिफ़ को पनाह दे रखी है तो वह उसको पेश करेगा। जो लिख कर देगा उस पर पाबन्दी करेगा, वह बरी हो जाएगा। और जो ऐसा न करेगा, उसका माल व जान दोनों हम पर हलाल होंगे। हम उसको क़त्ल करके उसी के दरवाज़े पर लटका देंगे। उसके तमाम मुतअल्लिकीन को भी न छोड़ेंगे। इब्न-ज़्याद की इस कार्रवाई से अहले कूफ़ा घबरा गए और ख़ौफ़ज़दा हो गए और

उनके ख्यालात में तब्दीली आने लगी। हालात के पेशे नज़र हज़रत इमाम मुस्लिम ने मुख्तार बिन उबैद के यहां रहना मुनासिब न समझा और रात की तारीकी में मुहिब्बे अहले-बैत हानी बिन उरवा के मकान पर मुन्तकिल हो गए। जो कबीलए बनी मुजहिज के सरदार थे। हानी ने एक महफूज़ कमरे में आपको छुपा के रखा। सिवाए चन्द मख़सूस और मोतमद लोगों के दूसरों को इस राज से मुत्तला न किया।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १८४)

हज़रत इमाम मुस्लिम की तलाश और इब्न-ज्याद का जासूस

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने हानी के मकान पर क़याम फरमाया तो आपके मोतकिदीन वहां पर भी खुफ़िया तौर पर आते जाते थे। और बैअत का सिलसिला भी बराबर जारी था। बाज़ रिवायतों में आता है कि चालीस हज़ार या बीस हज़ार अफ़राद ने बैअत कर ली थी। इधर इब्न-ज्याद को इस बात का इल्म हो चुका था कि इमाम मुस्लिम बिन अकील कूफ़ा ही में हैं। उसने उनकी क़यामगाह का पता लगाने की बहुत कोशिश की लेकिन नाकाम रहा। बिल-आख़िर उसने अपने शामी गुलाम माक़ल को इस काम पर मामूर किया और उसको तीन हज़ार दिरहम देकर सुराग़ लगाने के तरीक़े समझा दिए। कहा कि किसी भी तरह से मुस्लिम बिन अकील का सुराग़ लगाओ।

गुलाम सीधा जामा मस्जिद पहुंचा। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त एक मुहिब्बे अहले-बैत मुस्लिम बिन औसजा असदी मस्जिद के गोशा में नमाज़ पढ़ रहे थे। माक़ल देर तक उनको देखता रहा। जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो माक़ल उनके पास गया और कहा : मैं एक शामी गुलाम हूं और मुहिब्बे अहले-बैत हूं। मेरे पास तीन हज़ार दिरहम हैं। मैंने सुना है कि ख़ानदाने रिसालत के एक बुजुर्ग कूफ़ा तशरीफ़ लाए हैं और लोगों से फ़र्जन्दे रसूल इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत लेते हैं। मैं उनकी ख़िदमत में यह रक़म बतौर नज़रानए अकीदत पेश करना चाहता हूं ताकि वह इस कारे ख़ैर में सर्फ़ करें। लेकिन मुझे मालूम नहीं है कि वह बुजुर्ग कहां ठहरे हुए हैं। मुस्लिम बिन औसजा ने कहा मस्जिद में और लोग भी थे। तुमने उन लोगों से क्यों नहीं पूछा, मुझसे क्यों कह रहे हो? गुलाम ने कहा : आपके चेहरे पर ख़ैर व बरक़त के आसार बता रहे हैं कि आप ज़रूर अहले-बैते

रसूल के दोस्तों में से हैं। इसलिए मैं ने आपसे पूछा है। खुदारा! आप मुझे इस सआदत से महरूम न करें और उनका पता जरूर बता दें। मुस्लिम बिन औसजा असदी उसके फरेब में आ गए। कहा : तुमने सही पहचाना। मैं भी अहले-बैत का मुहिब्ब हूं और मेरा नाम मुस्लिम बिन औसजा है। फिर उससे अहद व पैमान लेकर हजरत इमाम मुस्लिम बिन अकील रजियल्लाहु अन्हु के पास ले गए और उसकी अकीदतमन्दी की खुद भी तौसीक कर दी। उसने हजरत इमाम मुस्लिम के दस्ते मुबारक पर बैअत की और तीन हजार दिरहम आपकी खिदमत में पेश कर दिया। आपने यह रकम अबू सुमामा साइदी को दे दी। बैअत के बाद वह गुलाम रोजाना आपकी खिदमत में सबसे अक्ल आता और सब के बाद जाता। जो कुछ देखता सुनता रात तक उसकी पूरी रिपोर्ट इब्न-ज्याद तक पहुंचा देता।

हानी बिन उरवा कूफा में एक मुक्तदिर शख्सीयत थे। इब्न-ज्याद के साथ उनके पहले से तअल्लुकात अच्छे थे। हजरत इमाम मुस्लिम के आने से पहले वह रोजाना इब्न-ज्याद के पास जाया करते थे। लेकिन जिस दिन हजरत मुस्लिम उनके यहां आए थे उस दिन हानी बिन उरवा ने बीमारी का बहाना करके इब्न-ज्याद के पास आना जाना बन्द कर दिया। उधर इब्न-ज्याद को तमाम हालात मालूम हो चुके थे। अपने गुलाम माकल की बात पर मुकम्मल यकीन हो गया तो एक दिन उसने मुहम्मद बिन अशअस और असमा बिन खारिजा और उमरु बिन हज्जाज जुबैदी को हुक्म दिया कि वह इसी वक्त जाकर हानी बिन उरवा को मेरे पास ले आए। चुनांचे वह गए और हानी बिन उरवा को इब्न-ज्याद के हुक्म की इतिला दी। हानी मकान के अन्दर गए और हजरत मुस्लिम से बात-चीत की और तैयार होकर आ गए और उनके साथ चले गए। दारुल-इमारत के अन्दर पहुंचकर इब्न-ज्याद को सलाम किया तो उसने जवाब नहीं दिया। कुछ देर खड़े रहे। उसके बाद इब्न-ज्याद ने बड़े गुस्से में कहा : हानी तुम अमीरुल मोमिनीन यज़ीद के खिलाफ अपने घर को साजिशों को अड्डा बनाए हुए हो। मुस्लिम बिन अकील को अपने घर में छुपा कर उनकी हिफाजत के लिए हथियार खरीदते हो। लोगों से जंग करने पर बैअत लेते हो और यह समझते हो कि यह सारी बातें मुझसे पोशीदा रहेंगी। हानी ने कहा कि यह बिल्कुल ग़लत है। इब्ने ज्याद ने उसी वक्त उस जासूस माकल को तलब किया। वह आ गया तो कहा : इसको पहचानते हो?

माकल को देखकर हानी के होश व हवास उड़ गए। अब वह समझे कि यह जालिम अकीदत व मुहब्बत के परदे में दुशमनी और जासूसी कर रहा था। उस ऐनी शाहिद के होते हुए इन्कार की गुन्जाइश न थी। इसलिए उन्होंने इकरार करके साफ ब्यान कर दिया कि खुदा की कसम! मैंने मुस्लिम को बुलाया नहीं और न उन्होंने मुझे इत्तिला दी थी कि मैं तुम्हारे घर आ रहा हूं। अचानक जब वह मेरे दरवाजे पर आ गए तो मैं इन्कार नहीं कर सका। इस तरह मैंने उन्हें मेहमान बना लिया। और खानदाने रिसालत का एक फर्द होने के नाते उनको अपने घर में पनाह दे दी। अब मैं आपसे पक्का वादा करता हूं कि मैं उन्हें अपने घर से निकाल दूंगा। आप मुझे इतनी मोहलत दीजिए कि मैं जाकर उनसे कह आऊं कि आप मेरे घर से निकल कर जहां चाहें चले जाएं। ताकि मैं पनाह देने की जिम्मेदारी से बरी हो जाऊं। इब्न-ज्याद ने कहा: खुदा की कसम! जब तक तुम उन्हें मेरे हवाले करने का अहद व पैमान नहीं करते मैं तुम्हें इस जगह से जाने की इजाजत नहीं दे सकता। हानी ने कहा: खुदा की कसम! मैं अपने मेहमान को कत्ल करने के लिए तुम्हारे हवाले कर दूँ, ऐसा हरगिज़-हरगिज़ नहीं हो सकता। इब्ने ज्याद ने कहा: तुम्हें हवाले करना होगा। हानी ने कहा खुदा की कसम! मैं मुस्लिम को तुम्हारे हवाले हरगिज़ नहीं करूंगा। यहां तक कि बात और बढ़ती। तो इब्न-ज्याद ने कहा: तुम उन्हें सुपुर्द नहीं करोगे तो हम तुम्हारा सर कलम कर देंगे। हानी ने कहा: अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे इर्द गिर्द तलवारें चमकेंगी। यह सुनकर इब्न-ज्याद आग बगोला हो गया और कहा: अच्छा! तुम मुझे धमकी देते हो। फिर इब्न-ज्याद ने हानी के सर और मुंह पर डण्डे मारना शुरू किया। यहां तक कि उनकी नाक फट गई। अबरू की हड्डी टूट गई। पूरा कपड़ा खून में लत-पत हो गया। हानी ने अपने करीब खड़े हुए एक सिपाही की तलवार के कुब्जे पर हाथ डाला मगर उसने जोर से छुड़ा लिया। इब्न-ज्याद ने कहा: अब तो तूने अपने खून को भी हमारे लिए मबाह कर दिया। फिर अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इसे खींचकर ले जाओ और एक कमरे में बन्द कर के पहरा बिठा दो। असमा बिन खारिजा उठे और इब्न-ज्याद से कहा: ओ दगाबाज़! इनको छोड़ दे। तूने हमें हुक्म दिया था कि हम उन्हें तेरे पास लाएं। जब हम ले आए तो तूने उनका मुंह तोड़ दिया और उनका खून बहाया। उनके कत्ल की धमकी दे रहा है। इब्न-ज्याद ने कहा: इसको भी पकड़ो और मारो। चुनांचे सिपाहियों

ने उसको भी बहुत मारा पीटा और कैद कर दिया। मुहम्मद बिन अशअस ने कहा : हम तो अमीर की राय पर राजी हैं। अमीर जो कुछ भी करे हम उस पर राजी और खुश हैं। (तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफा १६१)

शहर में यह अफवाह फैल गई कि हानी कत्ल कर दिए गए हैं। इस अफवाह को सुनकर उमरु बिन हज्जाज कई हजार सिपाहियों को लेकर इन्तिकाम का नारा लगाते हुए आए और गवर्नर हाऊस को घेर लिया। पुकार कर कहा : मैं उमरु बिन हज्जाज हूँ और मेरे साथ कबीले मुज्जिन के हजारों सहसवार हैं। हमने कभी इताअत से इन्हें नहीं किया और न जमाअत से अलाहदगी एख्तियार की। फिर भी हमारे सरदार को कत्ल कर दिया गया है। हम उसका इन्तिकाम लिए बगैर नहीं रहेंगे। फिर सारे मजमा ने इन्तिकाम—इन्तिकाम! का फलक शिगाफ नारा लगाया।

इन्ने ज्यादा इस नाजुक सूरते हाल को देखकर बहुत घबराया। उसने काजी शुरैह से कहा : आप पहले हानी को अपने आंखों से देख लीजिए। फिर उस कबीला वालों से कहिए कि हानी जिन्दा हैं, उनके कत्ल की अफवाह ग़लत है।

काजी शुरैह हानी को देखने गए। हानी अपने कबीला के लोगों का शोर व हंगामा सुन रहे थे। उन्होंने काजी साहब को देखकर कहा : यह आवाज़ मेरे कबीला के लोगों की है। आप उनसे मेरा हाल बताकर सिर्फ इतना कह दें कि अगर दस (१०) आदमी भी इस वक्त अन्दर आ जाएं तो मैं यकीनन छूट जाऊंगा। जब काजी साहब बाहर निकले तो इब्न—ज्याद ने अपने एक मुशीर और जासूस हमीद बिन बक्र अहमरी को उनके साथ कर दिया। इसलिए मजबूरन काजी साहब ने हानी का पूरा हाल उनके कबीला वालों को नहीं बताया बल्कि सिर्फ इतना कह दिया कि वह जिन्दा हैं और उनके कत्ल की जो ख़बर तुम्हें पहुंची है, वह ग़लत है। काजी साहब की शहादत सुनकर उन लोगों ने कहा : अगर वह कत्ल नहीं किए गए तो खुदा का शुक्र है। और सब मुन्तशिर हो गए। (तारीखे तबरी—जिल्द पंजुम सफा १६२)

गवर्नर हाऊस का घेराव

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु हानी बिन उरवा की गिरफ्तारी और उन पर हमला की ख़बर सुनकर बरआमद हुए और अपने मुतवस्सिलीन को निदा की। जूक—दर—जूक आदमी आने शुरू हुए और चालीस हजार

की जमईयत ने आपके साथ क़स्मे शाही का इहाता कर लिया। सूरत बन आई थी। हमला करने की देर थी। अगर हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु हमला करने का हुक्म देते तो उसी वक़्त क़िला फ़तह हो जाता। इब्न-ज़्याद और उसके हमराही हज़रत मुस्लिम के हाथ गिरफ़्तार होते। फिर यही लशकर सैलाब की तरह उमड़कर शामियों को तख़्त व ताराज कर डालता और यज़ीद को जान बचाने के लिए कोई राह न मिलती। नक़शा तो यही जमा था। मगर कारे बदस्त कारकुनाने कदरस्त। बन्दों का सोचा क्या होता है ? हज़रत मुस्लिम ने क़िला का इहाता तो कर लिया और बावजूदे कि कूफ़ियों की बद-अहदी और इब्न-ज़्याद की फ़रेबकारी और यज़ीद की अदावत पूरे तौर पर साबित हो चुकी थी। फिर भी आपने अपने लशकर को हमला करने का हुक्म न दिया। एक बादशाहे दाद-गुस्तर के नाइब की हैसियत से आपने इन्तिज़ार फ़रमाया कि पहले गुफ़्तगू से क़तए हुज्जत कर लिया जाए। सुलह की सूरत पैदा हो सके तो मुसलमानों में खूरेज़ी न होने दी जाए। आप अपने इस पाक इरादा से इन्तिज़ार में रहे और अपनी इहतियात को हाथ से न जाने दिया। दुश्मन ने उस वक़्फ़ा का फ़ायदा उठाया और कूफ़ा के रुउसा व अमाइदीन जिनको इब्न-ज़्याद ने पहले से क़िला में बन्द कर रखा था उन्हें मजबूर किया कि वह अपने रिश्तादारों और ज़ेरे अस्र लोगों को मजबूर कर के हज़रत मुस्लिम की जमाअत से अलाहदा कर दें। यह लोग इब्न-ज़्याद के हाथ में कैद थे और जानते थे कि अगर इब्न-ज़्याद को शिकस्त भी हुई तो वह क़िला फ़तह होने तक उनका खातमा कर देगा। इस ख़ौफ़ से वह घबरा उठे और उन्होंने दीवारे क़िला पर चढ़कर अपने मुतअल्लिकीन और मुतवस्सिलीन से गुफ़्तगू की और उन्हें हज़रत मुस्लिम की रिफ़ाक़त छोड़ देने पर इन्तिहा दर्जा का जोर दिया। बताया कि अलावा इस बात के कि हुक्ूमत तुम्हारी दुश्मन हो जाएगी। यज़ीद नापाक तीनत तुम्हारे बच्चा-बच्चा को क़त्ल कर डालेगा। तुम्हारे माल लुटवा देगा। तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त हो जाएंगे। यह और मुसीबत है कि अगर तुम इमाम मुस्लिम के साथ रहे तो हम जो इब्ने ज़्याद के हाथ में क़िला में कैद हैं, क़िला के अन्दर मारे जाएंगे। अपने अन्जाम पर नज़र डालो। हमारे हाल पर रहम करो और अपने घर चले जाओ।

यह हीला कामयाब हुआ और इमाम मुस्लिम का लश्कर मुन्तशिर होने लगा। यहां तक कि ता-बवक्ते शाम हजरत मुस्लिम ने मस्जिदे कूफा में जिस वक्त मग़रिब की नमाज़ शुरू की तो आपके साथ पांच सौ आदमी थे। जब आप नमाज़ से फ़ारिग हुए तो आपके साथ एक भी न था। तमन्नाओं के इज़हार और इल्तिजाओं के तूमार से जिस अजीज़ मेहमान को बुलाया था इसके साथ यह वफ़ा है कि वह तन्हा हैं और उनकी रिफ़ाक़त के लिए कोई एक भी मौजूद नहीं। कूफ़ा वालों ने हजरत मुस्लिम को छोड़ने से पहले ग़ैरत व हमैयत से क़ता-तअल्लुक किया और उन्हें ज़रा परवा न हुई कि क्यामत तक तमाम आलम में उनकी बेहिम्मती का शुहरा रहेगा। इस बुज़दिलाना बे-मुख्यती और नामर्दी से वह रुस्वाए आलम होंगे। हजरत मुस्लिम इस ग़ुरबत व मुसाफ़िरत में तन्हा रह गए। किधर जाएं, कहां क्याम करें? हैरत है कूफ़ा के तमाम मेहमानख़ानों के दरवाज़े मुक़फ़ल थे जहां ऐसे मुहतरम मेहमान को मदद करने के लिए रस्ल व रसाइल का तांता बांध दिया गया था। मासूम बच्चे साथ हैं। कहां उन्हें लिटाएं, कहां सुलाएं। कूफ़ा के वसी ख़ित्ता में दो-चार गज़ ज़मीन हजरत मुस्लिम के शब गुज़ारने के लिए नज़र नहीं आती थी। उस वक्त हजरत मुस्लिम को इमाम हुसैन की याद आती है और दिल तड़पा देती है। वह सोचते हैं कि मैं ने इमाम की जनाब में ख़त लिखा, तशरीफ़ आवरी की इल्तिजा की है और इस बद-अहद क़ौम के इख़लास व अक़ीदत का एक दिलकश नक्शा इमाम आली मक़ाम के हुज़ूर पेश किया है और तशरीफ़ आवरी पर ज़ोर दिया है। यकीनन हजरत इमाम मेरी इल्तिजा रद्द न फ़रमाएंगें और यहां के हालात से मुतमइन होकर मअअहल व अयाल चल पड़े होंगे। यहां उन्हें क्या मसाइब पहुंचेंगे और चमने जुहरा के जन्नती फूलों को इस बेमुहरी की तपिश कैसी गज़न्द पहुंचाएगी।

यह ग़म अलग दिल को घायल कर रहा था। अपनी तहरीर पर शर्मिन्दगी व इन्फ़आल और हजरत इमाम के लिए ख़तरात अलाहदा परेशान कर रहे थे। मौजूदा परेशानी जुदा दामनगीर थी।

(सवानेह करबला सफ़ा ८५)

हजरत मुस्लिम इन तसव्वुरात में घिरे हुए इन्तिहाई परेशानी के आलम में इधर-उधर फिरने लगे। उनकी समझ में न आता था कि अब कहां जाएं। फिरते-फिरते वह कबीलए किन्दा की औरत तौआ के मकान पर

पहुंचे। वह अशअस बिन कैस की लौंडी थी जिसे अशअस ने आजाद कर दिया था। आजादी के बाद एक शख्स उसैद हज़रमी ने उस से निकाह कर लिया जिससे एक लड़का बिलाल पैदा हुआ। उस वक़्त बिलाल कहीं बाहर गया हुआ था। तौआ उसका इन्तिज़ार कर रही थी। हज़रत इमाम मुस्लिम ने आगे बढ़कर उसे सलाम किया और पानी मांगा। उसने पानी लाकर दिया। आपने पानी पिया। वह बरतन रख कर फिर बाहर आई तो देखा आप वहीं बैठे हुए हैं। उसने कहा : आप तो पानी पी चुके हैं। अब अपने घर जाइए। आपने कोई जवाब न दिया और अपनी जगह बैठे रहे। उसने तीन बार यही कहा। फिर भी आप खामोश रहे तो उसने कहा : आपका रात के वक़्त मेरे दरवाज़े पर बैठना मुनासिब नहीं है। मैं कहती हूँ आप अपने घर जाइए। तो फिर आपने फ़रमाया : ऐ नेकबख़्त! मेरा इस शहर में कोई घर नहीं। मैं एक मुसाफ़िर हूँ और सख़्त मुसीबत में मुब्तला हूँ। ऐसे में क्या तुम मेरे साथ कोई नेकी कर सकती हो? शायद मैं किसी वक़्त उसका बदला दे सकूँ। वरना अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हें उसका अज़्र देंगे। औरत ने हैरान होकर पूछा : आप कौन हैं? किस किस्म की नेकी चाहते हैं? फ़रमाया : मैं मुस्लिम बिन अकील हूँ। कूफ़ा वालों ने मेरे साथ ग़दारी की है, मुझे धोखा दिया है। मुझसे मदद का वादा किया था और सबने मेरा साथ छोड़ दिया है। उसने कहा : मुस्लिम आप ही हैं। फ़रमाया : हाँ! मैं ही मुस्लिम बिन अकील हूँ। इतना सुनना था कि उस खुदा-तर्स औरत ने फ़ौरन आपको मकान के अन्दर ले लिया और अपने ख़ास कमरे में आपके लिए फ़र्श बिछा दिया। आप उस पर बैठ गए। उसने खाना पेश किया मगर आपने खाया नहीं, और उसको दुआएं दीं। थोड़ी देर बाद उसका लड़का आया। जब उसने माँ को बार-बार उस कमरे ख़ास में आते-जाते देखा तो सबब दर्याफ़्त किया। तौआ ने तो पहले छुपाने की कोशिश की लेकिन जब बेटे ने बहुत इसरार किया तो राज़दारी का अहद व पैमान लेकर बता दिया। यह सुनकर वह बिल्कुल खामोश हो गया और रात गुज़रने का शिद्दत से इन्तिज़ार करने लगा। साहिबे तारीख़ तबरी इस के बारे में लिखते हैं कि यह लड़का शराबी और आवारा किस्म का था। (तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १६६)

उधर इब्न-ज्याद को मालूम हो गया कि तमाम अहले कूफ़ा मुस्लिम का साथ छोड़ चुके हैं और अब कोई भी उनके साथ नहीं है तो उसने एलाने

आम कर दिया कि जिसने मुस्लिम को अपने घर में पनाह दी उसके लिए अमान नहीं है। जो उनको गिरफ्तार करके लाएगा या गिरफ्तार कराए उसे इनाम व इकराम से नवाजा जाएगा। इस एलान के बाद उसने रईसुशुर्त (आई जी पुलिस) हुसैन बिन नुमैर को हुक्म दिया कि शहर की नाकाबन्दी करके गली कूचों में आदमी मुकर्रर कर दो और घर-घर की तलाशी लो। खबरदार यह शख्स (मुस्लिम) किसी रास्ते और किसी तरीके से भी जाने न पाए। अगर यह शख्स निकल गया और तुम उसको गिरफ्तार करके मेरे पास न लाए तो तुम्हारी खैर नहीं। इब्न-ज्याद का यह एलान जब तौआ के लड़के बिलाल बिन उसैद ने सुना तो उसको ख्याल आया कि अगर उसकी घर की तलाशी ली गई तो फिर उसकी भी खैर नहीं। उसने यह राज अफ़शा करने का फैसला कर लिया। सुबह होते ही वह घर से निकला और अब्दुर्रहमान बिन अशअस के पास गया और उसे बताया कि मुस्लिम बिन अकील मेरे मकान में छुपे हुए हैं। अब्दुर्रहमान का बाप मुहम्मद बिन अशअस उस वक्त इब्न-ज्याद के पास गया हुआ था। वह फौरन उसके पास पहुंचा और सारा माजरा कह सुनाया। इब्न-ज्याद ने मुहम्मद बिन अशअस की सरकारदगी में फौज का एक दस्ता इमाम मुस्लिम की गिरफ्तारी के लिए रवाना कर दिया। हज़रत मुस्लिम ने जब घोड़ों की टाप और लोगों की आवाज़ें सुनीं तो समझ गए कि इब्न-ज्याद की फौज मेरी गिरफ्तारी के लिए आ गई। आपने तलवार संभाली और फौरन कमरे से बाहर निकल पड़े। इतने में फौज अन्दर घुस गई। आपने निहायत शुजाअत व बहादुरी के साथ उन सबका मुकाबला किया और उन सबको घर से बाहर निकाल दिया। सिपाहियों ने दोबारा फिर घुसकर आप पर हमला कर दिया। आपने बड़ी बहादुरी के साथ उनका मुकाबला किया। इतने में बुकैर बिन हमरान अहमरी ने आपके चेहरा मुबारक पर ऐसा वार किया कि आप के ऊपर और नीचे का होंट कट गया। और सामने के दो दांत भी शहीद हो गए। हज़रत मुस्लिम ने उसके सर पर तलवार मारी जिससे उसका सर फट गया। और दूसरा वार उसके कंधे पर ऐसा किया कि आपकी तलवार उसके सीना तक उतर गई। जब उन लोगों ने आप की शुजाअत व बहादुरी का ऐसा आलम देखा तो आप की खूंखार और ज़र्बे हैदरी से बचने के लिए बाहर भाग गए और मकान की छत पर चढ़ गए और वहां से आप पर संगबारी करने लगे। बांस की जलती हुई लकड़ियां मकान की छत पर

फेंकने लगे। हज़रत मुस्लिम ने जब यह बुज़दिलाना तरीक़ा जंग देखा तो तलवार खींचते हुए घर से बाहर निकल आए और उन लोगों से मर्दानावार लड़ने लगे। मुहम्मद बिन अशअस ने जब आपकी शुज़ाअत और अपने साथियों की बुज़दिली और कमजोरी देखी तो पुरफ़रेव चाल चली। आगे बढ़कर कहने लगा : आप क्यों अपनी जान गंवाते हैं? मैं आपको अमान देता हूँ अपने आपको मेरे हवाले कर दें। मगर आप बराबर अपनी शमशीर चलाते रहे और रिज्ज़ पढ़ते रहे जिसका आखिरी मिसरा यह था अखाफु अन अक ज़ ब औ अगर्रा मुझे इस बात का अन्देशा है कि मुझसे झूठ बोलेंगे या मुझे धोखा देंगे। मुहम्मद बिन अशअस ने कहा : नहीं, आप से झूठ नहीं बोला जा रहा है न आपको धोखा दिया जाएगा।

हज़रत इमाम मुस्लिम ज़ख्मों से चूर हो चुके थे इसलिए उसी मकान की एक दीवार से टेक लगाकर खड़े हो गए। इब्ने अशअस आपके पास आकर कहने लगा कि आपके लिए अमान है। आपने फ़रमाया : मेरे लिए अमान है? कहा : हाँ, अमान है। सब लोगों ने भी पुकार कर कहा : आपके लिए अमान है। सिर्फ़ उमरू बिन उबैदुल्लाह सुलमा अलग हो गया और बोला : मुझे इस मामले में कोई दख़ल नहीं।

हज़रत मुस्लिम ने कहा : अगर तुम लोग मुझे अमान नहीं देते तो मैं कभी अपने आपको तुम्हारे हवाले नहीं करता। इतने में एक ख़च्चर लाया गया। आपको इस पर सवार कराया गया। जब आप ख़च्चर पर सवार हो गए तो सिपाहियों ने चारों तरफ़ से योरिश करके आपकी तलवार आपके हाथ से छीन ली। यह देखकर आपको यकीन हो गया कि मुझसे धोखा किया गया है और आपने अपनी ज़िन्दगी से मायूस होते हुए फ़रमाया : यह पहली ग़दारी है। इब्ने अशअस ने कहा : मुझे उम्मीद है कि आपको कोई नुक़सान न पहुंचेगा। आपने फ़रमाया : बस उम्मीद ही है और अमान जो तुमने दी थी वह क्या हुई? फिर इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहा और रोने लगे। उमरू बिन उबैदुल्लाह सुलमा जिसने अमान से इत्तिफ़ाक़ नहीं किया था, वह बोला जिस काम के लिए तुम्हें मुक़र्रर किया गया था अगर किसी दूसरे को इस काम पर मुक़र्रर किया जाता, और उस पर भी वही मुसीबत पड़ती जो तुम पर पड़ रही है तो वह कभी न रोता। आपने फ़रमाया : मैं अपनी जान के लिए नहीं रो रहा हूँ बल्कि मैं नवासए रसूल हज़रत इमाम हुसैन और उनकी औलाद के लिए रो रहा हूँ। उसके बाद

आपने मुहम्मद बिन अशअस से कहा : मैं देखता हूँ कि थोड़ी देर बाद तुम अपनी दी हुई अमान को पूरा करने में आजिज़ हो जाओगे। वहरहाल! हमारे साथ इतना सुलूक करो कि किसी तरह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लहु अन्हु के पास मेरे यह हालात और पैग़ाम भेज दो कि अहले कूफ़ा ने मेरे साथ ग़दारी व धोखा किया है। यह वही अहले कूफ़ा हैं जिनसे छुटकारा हासिल करने के लिए आपके वालिद माजिद हमेशा कोशिश करते रहे। कह देना कि अहले कूफ़ा आपकी मुख़ालिफ़त पर कमर-बस्ता हैं। इसलिए अपने अहल व अयाल को लेकर वतन लौट जाएं। इब्ने अशअस ने कहा : खुदा की क़सम! मैं ज़रूर ऐसा करूंगा। चुनांचे उसने अपने वादे के मुताबिक़ अयास बिन असल तार्ई को जो एक शाइर था और उसके पास अकसर आया जाया करता था, बुला भेजा और एक ख़त में वह तमाम बातें लिखकर जो हज़रत मुस्लिम ने कही थीं, हवाले करते हुए कहा कि यह ख़त हज़रत इमाम हुसैन को जिस क़दर जल्दी मुमकिन हो पहुंचा दो।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १६८ ता २००)

उसके बाद इब्ने अशअस हज़रत मुस्लिम को लिए हुए क़से इमारत (गवर्नर हाऊस) के पास पहुंचा। आपको दरवाज़े के पास छोड़कर खुद अन्दर गया और इब्न-ज़्याद से सारा हाल ब्यान किया और कहा कि मैंने उनको अमान दी है। इब्न-ज़्याद ने कहा तुम कौन होते हो अमान देने वाले? मैंने तुम्हें सिर्फ़ गिरफ़्तार करने के लिए भेजा था, अमान देने के लिए नहीं भेजा था। इब्ने अशअस यह सुनकर ख़ामोश हो गया।

हज़रत मुस्लिम जब गवर्नर हाऊस के दरवाज़े पर पहुंचे तो वहां बहुत से लोग अन्दर जाने की इजाज़त के इन्तिज़ार में बैठे हुए थे। एक घड़ा ठण्डे पानी से भरा हुआ दरवाज़े के करीब रखा हुआ था। हज़रत मुस्लिम बहुत प्यासे थे। फ़रमाया : मुझे थोड़ा पानी पिला दो। मुस्लिम बिन उमरु बाहली, ख़बीस ने कहा। देखते ही रहो यह कैसा ठण्डा पानी है। खुदा की क़सम! तुम्हें इसमें से एक बूंद भी नहीं मिलेगा। अब तो तुम्हारी क़िस्मत में जहन्नम का खौलता पानी ही है। (मआज़ल्लाह!) आपने फ़रमाया : तू कौन है? उसने कहा मैं वह हूँ जिसने हक़ को पहचाना जबकि तुमने उसे तर्क कर दिया। मैं मुस्लिम बिन उमरु बाहली हूँ। आपने फ़रमाया : खुदा करे तेरी माँ तुझे रोए, तू कैसा ज़ालिम और संगदिल है। ऐ बाहिला के बच्चे! तू ज़्यादा नारे जहीम और माए हमीम का मुस्तहिक़ है।

अम्मारह बिन उक्बा को आपकी हालत पर तरस आया। उसने अपने गुलाम कैस को भेजा। वह ठण्डे पानी की एक मटकी और कटोरा लाया। कटोरा भर कर आपको दिया। जूँ ही आपने उसको मुँह लगाया उसमें आपके मुँह से खून गिरा और वह खून पानी में गिर कर पानी भी खून बन गया। गुलाम ने दूसरी बार कटोरा भर दिया। वह भी खून से भर गया। तीसरी मर्तबा फिर दिया तो सामने के दो दांते मुबारक टूट-टूट कर कटोरे में गिर गए। आपने फ़रमाया : अल्हमदुलिल्लाह! अब मेरी किस्मत में दुनिया का पानी नहीं है। उसके बाद आपको उसी हालत में जबकि आपके मुँह और कपड़े लतपत थे इब्न-ज्याद के पास ले गए। आपने दस्तूर के मुताबिक इब्न-ज्याद को सलाम नहीं किया। एक सिपाही ने कहा : तुम अमीर को सलाम नहीं करते? अगर अमीर मुझको क़त्ल करना चाहता है तो उसको मेरा सलाम नहीं। अगर क़त्ल का इरादा नहीं तो फिर उस पर बहुत से सलाम हों। इब्न-ज्याद ने कहा : बेशक मैं तुम्हें क़त्ल ज़रूर करूँगा। आपने फ़रमाया : वाकई? उसने कहा : हां। फ़रमाया : अच्छा मुझे इतना मौका दो कि मैं अपने क़ौम के किसी शख्स को कुछ वसीयत कर लूँ। कहा : हां कर लो हज़रत मुस्लिम ने दरबारियों की तरफ़ नज़र दौड़ाई तो उनमें इब्ने साद नज़र आया। आपने उससे फ़रमाया : तुम कुरैश ख़ानदान के हो और तुममें मुझमें क़राबतदारी भी है। इसलिए मैं तुमसे कुछ राज़ की बात कहना चाहता हूँ इसे तन्हाई में सुन लो। हुकूमत का चापलूस इब्न-साद हज़रत मुस्लिम की बात सुनने को तैयार न हुआ। तो इब्न-ज्याद ने कहा : सुनने में क्या हर्ज है। जाओ और उसकी बात सुनो। चुनांचे वह उठा और हज़रत इमाम मुस्लिम उसे लेकर महल के एक गोशे में चले गए जहाँ से इब्न-ज्याद उन्हें देख सकता था। वहाँ पहुँचकर हज़रत मुस्लिम ने इब्न-साद से फ़रमाया : पहली बात तो यह है कि मैं ने कूफ़ा में फ़लां शख्स से सात सौ दिरहम क़र्ज़ लिया है तुम मेरी तलवार और ज़िरह बेचकर यह क़र्ज़ अदा कर देना। दूसरी बात यह है कि क़त्ल के बाद मेरी लाश को दफ़न कर देना। तीसरी बात यह है कि हज़रत इमाम हुसैन के पास किसी को भेज कर मेरे पूरे हालात की इत्तिला कर देना। ताकि वह वापस चले जाएं।

हज़रत इमाम मुस्लिम ने यह बातें इब्न-साद से राज़दाराना तौर पर फ़रमाई थीं। लेकिन उस बदबख़्त ने यह सारी बातें इब्न-ज्याद से कह दीं।

फिर उन वसीयतों के बारे में इब्न-ज्याद से पूछा। इब्न-ज्याद ने कहा : जो वसीयत कर्ज के बारे में है उसमें तुम्हें एखतियार है, जैसा चाहो करो। हुसैन के मुतअल्लिक यह है कि अगर वह यहां नहीं आएंगे तो हम भी उनका पीछा नहीं करेंगे। अगर वह यहां आए तो फिर हम उन्हें भी नहीं छोड़ेंगे। लाश के बारे में हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे कि जिस शख्स ने हमारी इस कदर मुखालिफत की हो उसकी लाश किसी रिआयत की मुस्तहिक नहीं।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफा २०१, शामे करबला सफा

५० अल-हुसैन (अरबी) सफा ८६)

हजरत इमाम मुस्लिम और इब्न-ज्याद बद-निहाद

इब्न-साद को वसीयत के मुतअल्लिक जवाब देने के बाद इब्न-ज्याद ने हजरत मुस्लिम से कहा : ऐ इब्ने अकील! लोग आपस में मुत्तहिद व मुत्तफिक थे। तुमने आकर लोगों में तफर्क और इख्तिलाफ पैदा कर दिया। उनको हमारी मुखालिफत पर बरअंगेखता किया। आपने फरमाया : ऐसा हरगिज नहीं है। मैं इसलिए नहीं आया था। बल्कि कूफा के लोगों ने हमें खुतूत लिखे और हमें बताया कि तुम्हारे बाप ने उनके बुजुर्गों और नेक लोगों का कत्ल किया और खूरेजी की। इस्लाम का तरीका छोड़कर कैसर व किसरा की तरह हुकूमत की। इसलिए उन लोगों ने हमें बुलाया। हम यहां आए कि लोगों में अदल व इन्साफ काइम करें और लोगों को किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम पर अमल करने की दावत दें। इब्न-ज्याद यह सुनकर गजबनाक हो गया। उसने कहा : ओ बदकार! तू और तेरा यह दावा! जब तू मदीना में शराब पिया करता था उस वक्त तुझे अदल व इन्साफ और तालीमाते कुरआन व सुन्नत का ख्याल न आया। आपने फरमाया : मैं शराब पीता था? वल्लाह! खुदा खूब जानता है कि तू झूठा है और तू खुद भी जानता है कि तू झूठ बोल रहा है और नापाक इत्तिहाम लगा रहा है। मैं हरगिज ऐसा नहीं हूं। शराब तो वह पियेगा जो बेगुनाह मुसलमानों का खून पिया करता है। खुदाए तआला ने जिसका कत्ल हराम किया है, उसे कत्ल करता है, जिसने कोई खून नहीं किया उसका खून बहाता है। बुग़ज़ व हसद और बद-गुमानी की वजह से खूरेजी करता है, फिर इस तरह भूल जाता है जैसे कुछ किया ही नहीं।

इब्न-ज्याद ने कहा : खुदा मुझे मारे अगर मैं तुझे इस तरह कत्ल न

करुं कि आज तक इस्लाम में इस तरह कोई क़त्ल न हुआ हो। आपने फ़रमाया : बेशक इस्लाम में जो जुल्म आज तक नहीं हुआ उसका ईजाद करने का तू ही सज़ावार है। बुरी तरह क़त्ल करना और बुरी तरह मुस्ला करना तेरा ही हिस्सा है और दुनिया भर में तुझसे बढ़कर इसका कोई मुस्तहिक नहीं।

इन बातों को सुनकर ज़ालिम इब्ने ज़्याद झल्ला उठा और वेकावू होकर हज़रत मुस्लिम के वालिद हज़रत अकील और हज़रत अली और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम को गालियां देने लगा तो आप बिल्कुल ख़ामोश हो गए।
(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०३)

हज़रत मुस्लिम की शहादत

उसके बाद ज़ालिम इब्ने-ज़्याद ने जल्लादों को हुक्म दिया कि उनको महल की छत पर ले जाओ और बुरी तरह क़त्ल करने के बाद सर को धड़ के साथ नीचे गिरा दो ताकि हड्डियां चकनाचूर हो जाएं। आपने इब्ने अशअस की तरफ़ देखकर फ़रमाया कि तूने मुझे अमान न दी होती तो वल्लाह! मैं इस तरह अपने आपको हवाले न करता। अब मुझको बचाने के लिए तलवार लेकर उठ और बरीउज़्जिम्मा हो। मगर वह ख़ामोश रहा। फिर इब्ने-ज़्याद ने बुक़ैर बिन हमरान असदी को बुलाया। जब वह आया तो इब्ने-ज़्याद ने उसे हुक्म दिया कि कोठे पर ले जाकर इस का सर कलम कर दो।

जब हज़रत मुस्लिम को कोठे पर ले कर चले तो आप इन्तिहाई सब्र व सुकून के साथ तकबीर व इस्तिग़फ़ार और दुरूद शरीफ़ पढ़ रहे थे और साथ में यह भी पढ़ रहे थे कि खुदावंद हमारे और इस क़ौम के दर्मियान तू खुद ही फैसला फ़रमा। जिसने हमें धोखा दिया और जिसने हमें झुठलाया और हमें ज़लील किया। इसके बाद जल्लादों ने आपको महल की छत पर शहीद कर दिया। सरे मुबारक को जिरम के साथ नीचे फेंक दिया। आपकी शहादत ३ ज़िलहिज्ज सन् ६० हिजरी को हुई। नामवर फ़ाज़िल उमर अबुन्नसर ने अपने अरबी किताब अल हुसैन के सफ़ा ८६ पर हज़रत मुस्लिम की शहादत की तारीख़ ६ ज़िलहिज्जा सन् ६० हिजरी मुताबिक़ १० सितम्बर सन् ६८० ई० बरोज़ बुध तहरीर की है।

हानी की शहादत

हजरत मुस्लिम की शहादत के बाद इब्न-अशअस को हानी बिन उरबा की फिक्र लगी जिसे इब्न-ज्याद ने अपने महल में कैद कर रखा था। उसने इब्न-ज्याद से कहा : आपको मालूम है कि हानी किस रक्तया का इन्सान है और कूफा में उसका और उसके खानदान का कितना अग्र है। लोगों को मालूम है कि मैं ही उसे आपके पास लाया था इसलिए मैं आपसे इल्तिजा करता हूँ कि आप हानी को कोई ज़रर न पहुँचाएं वरना मेरी ख़ुश नहीं होगी।

इब्न-ज्याद ने इब्ने अशअस को यकीन दिलाया कि किसी किस्म की कोई तकलीफ़ हानी को नहीं दी जाएगी। लेकिन वह बदकार अपने वादे पर काइम न रहा। बाद में हुक्म दे दिया कि हानी को बाज़ार में ले जाकर क़त्ल करो। जब सिपाही हानी की मश्कें बांध कर बाज़ार की तरफ़ चले तो हानी पुकार-पुकार कर कहते थे। कहां हैं मेरे कबीला बनी मुजिहज के लोग! कहां हैं मेरे घर वाले? लेकिन एक आदमी भी नज़र नहीं आया जो हानी की मदद करता। जब उन्हें हर तरफ़ से मायूसी हो गई तो अपने कुव्वते बाज़ू का सहारा लेते हुए अपना हाथ रस्सी से खींच लिया और कहा : अरे कोई लाठी नहीं! कोई पत्थर नहीं। अरे क्या ऊंट की कोई हड्डी भी नहीं कि मैं उसी को लेकर अपनी जान बचा सकूँ।

सिपाहियों ने फिर हानी को रस्सी से बांध दिया। रशीद नामी एक तुर्की गुलाम ने आपको शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०५)

इब्न-ज्याद ने मुस्लिम व हानी के सरों को हानी बिन हय्या अलबिदाई और जुबैर बिन अल-अरवाह तमीमी के हाथ वाकिआ की मुख़्तसर रिपोर्ट के साथ यज़ीद के पास रवाना कर दिया। उन दोनों ने जुबानी तमाम हालात से यज़ीद को मुत्तला किया।

यज़ीद ने जवाबन उस कारनामा पर बड़ी शाबाशी दी। एक ख़त लिखा कि तुमने वही किया जिसकी हमें तुम से उम्मीद थी। अब खुद हुसैन इब्ने अली के बारे में तुम्हारी कारगुज़ारी देखना है।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०६)



फर्जन्दाने हजरत मुस्लिम की शहादत

आज खानवादे नुबुव्वत के चश्म व चिराग हजरत मुस्लिम रजियल्लाहु अन्हु के मुकद्दस खून से कूफे की जमीन सुख हो गई थी। नबीजादे के खंर मकदम के लिए आंखों का फर्श बिछाने वाले उसकी तड़पती हुई लाश के सामने खड़े मुस्कुरा रहे हैं। अचानक रात के सन्नाटे में इब्न-ज्याद का एक मुनादी एलान करता है कि मुस्लिम के दोनों बच्चे जो उनके हमराह आए थे, कूफा ही में कहीं रूपोश हो गए हैं। हुकूमत की तरफ से हर खास व आम को मुतनब्बह किया जाता है कि जो भी उन्हें अपने घर में पनाह देगा उसे इबरतनाक सजा दी जाएगी और जो इन्हें गिरफ्तार करके लाएगा उसे इनाम व इकराम से नवाजा जायेगा।

हजरत मुस्लिम रजियल्लाहु अन्हु के दोनों यतीम बच्चे जिनमें से एक का नाम मुहम्मद था और उनकी उम्र आठ (८) साल की थी और दूसरे का नाम इब्राहीम था उनकी उमर छः साल थी। कूफा के आशिके रसूल काजी शुरैह के घर में पनाहगुर्जीं थे। इब्न-ज्याद की जानिब से यह एलान सुनकर काजी साहब का कलेजा हिल गया। हजरत मुस्लिम के जिगर गोशों का दर्दनाक अन्जाम निगाहों के सामने नाचने लगा। देर तक उसी फिक्र में रहे कि किस तरह उन्हें जालिमों के खूनी हाथों से बचाया जाए। काफी गौर व खोज के बाद यह सूरत समझ में आई कि रातों-रात बच्चों को कूफा के बाहर मुन्तकिल कर दिया जाए। इजतिराब की हालत में अपने बेटे असद को आवाज दी और बेटे से फरमाया : निहायत इहतियात के साथ किसी महफूज रास्ते से बच्चों को शहर-पनाह के बाहर पहुंचा दो। आज रात बाबुल-इराकीईन से मदीना की तरफ एक काफिला जाने वाला है उन्हें किसी तरह उनके साथ लगा दो और ताकीद कर दो कि बच्चों को बहिफाजत मदीना मनव्वरा पहुंचा दे।

जादे राह मुकम्मल हो जाने के बाद रुख्सत करने के लिए दोनों बच्चों को पास बुलाया। जूं ही उन पर नजर पड़ी फर्ते ग़म से आंखें भीग गई, जब्त का पैमाना छलक उठा, मुंह से एक चींख निकली और बेताब होकर दोनों बच्चों को सीने से लगा लिया। पेशानी चूमी, सर पर हाथ रखा और सक्ते की हालत में देर तक दम-बख़ुद रहे।

बाप की शहादत की खबर से बच्चे अब तक बे-ख़बर रखे गए थे। न

उन्हें यही बताया गया था कि अब खुद उनकी नन्ही गर्दन में भी खून आया तलवारों की ज़द पे हैं। काज़ी शुरैह की इस कैफ़ियत पर बच्चे हैरत से एक दूसरे का मुंह तकने लगे। बड़े भाई ने हैरानी के आलम में दर्याफ़्त किया। हमें देखकर यह गिरया बेएख़तियार की वजह समझ में नहीं आ रही है। अचानक इतनी रात को पास बुलाकर हमारे सरों पर शफ़क़त का हाथ रखना बे-सबब नहीं है। इस तरह तो फूट पड़ने वाली हमदर्दी हमारे ख़ानदान में यतीमों से की जाती है। तीर व नशतर की तरह आर-पार हो जाने वाला यह जुमला अभी ख़त्म भी न होने पाया था कि फ़िज़ा में एक चीख़ बुलन्द हुई। काज़ी शुरैह ने बरस्ती हुई आंखों के साथ ग़लुगीर आवाज़ में बच्चों को जवाब दिया : गुलशने रसूल के महकते गुन्चो! कलेजा मुंह को आ रहा है; जुबान में ताबे गोयाई नहीं है; किस तरह ख़बर दूं कि तुम्हारे नाज़ का चमन उजड़ गया और तुम्हारी उम्मीदों का आशियाना दिन दहाड़े ज़ालिमों ने लूट लिया। हाय! तुम परदेस में यतीम हो गए। तुम्हारे बाप को कूफ़ियों ने शहीद कर डाला। और अब तुम्हारी जान भी ख़तरे में है। आज शाम ही से खून के प्यासे तुम्हारी तलाश में हैं। यह ख़बर सुनकर दोने बच्चे हैबत व खौफ़ से कांपने लगे। नन्हा-सा कलेजा सहम गया। मुंह से एक चीख़ निकली और गंश खाकर ज़मीन पर गिर पड़े। होश आया तो काज़ी शुरैह ने बच्चों से फ़रमाया कि रात का सन्नाटा है तुम दोनों इसी वक़्त हमारे बेटे के हमराह कूफ़े से बाहर निकल जाओ और जो काफ़िला मदीने की तरफ़ जा रहा है उसमें शामिल हो जाओ। जब मदीना पहुंचना तो अपने नाना जान की बारगाह में हमारी तरफ़ से दुरूद व सलाम का नज़राना पेश कर देना। अच्छा जाओ, खुदा तुम्हें अपने हिफ़ज़ व अमान में रखे।

काज़ी शुरैह का बेटा असद जब उन बच्चों को लेकर बाबुल-इराकीईन पहुंचा तो मालूम हुआ काफ़िला थोड़ी देर पहले चला गया। वह बच्चों को लेकर उस राह पर तेज़ी से चला। कुछ दूर चला और काफ़िला की गर्द नज़र आई तो बच्चों को गर्द दिखाकर कहा : देखो, वह काफ़िला की गर्द नज़र आ रही है, तुम लोग जल्दी से जाकर उस में मिल जाओ। मैं वापस जाता हूं।

असद वापस आ गया। बच्चे तेज़ी के साथ चलने लगे। मगर थोड़ी देर बाद गर्द ग़ायब हो गई और उन्हें काफ़िला न मिला। नन्हें बच्चे तन्हाई में

इन्तिहाई परेशानी का शिकार होकर आपस में गले मिल कर रोने लगे और नाजों से पालने वाले माँ बाप का नाम लेकर जान खोने लगे।

इब्न-ज्याद का एलान सुनकर माल व ज़र की हवस रखने वाले सिपाही बच्चों की तलाश में निकले हुए थे। थोड़ी देर बाद उन्होंने बच्चों को पा लिया और पकड़ कर इब्न-ज्याद के पास पहुंचा दिया। उसने हुक्म दिया कि उन बच्चों को उस वक्त तक जेल में रखा जाए जब तक इनके मुतअल्लिक यज़ीद से पूछ न लूं कि इनके साथ क्या सुलूक किया जाए।

जेल का दारोगा मशकूर नामी एक मुहिब्बे अहले-बैत था। उसे बच्चों की बेकसी पर बहुत तरस आया। उसने फैसला कर लिया कि बच्चों की जान किसी भी कीमत पर बचानी है चाहे फिर अपनी ही जान क्यों न चली जाए। चुनांचे उसने रात के अन्धेरे में बच्चों को जेल से निकाला। अपने घर लाकर खाना खिलाया। शहर के बाहर कादसीया की राह पर लाकर अपनी अंगूठी बतौरे निशानी दी और कहा : यह सीधा रास्ता कादसीया को जाता है, इस राह पर चले जाओ। जब कादसीया पहुंच जाना तो कोतवाल से मिलना, हमारी अंगूठी दिखलाना और सारे हालात बताना। वह हमारा भाई है, तुम लोगों को बहिफ़ाज़त मदीना पहुंचा देगा।

मुसीबत के मारे दोनों भाई चल पड़े। लेकिन कज़ा व क़दर के अहकाम नाफ़िज़ हो चुके थे। और उन्हें भी इस नन्हीं-सी उम्र में शहादत से सरफ़राज़ होना था। इसलिए वह रास्ता भूल गए। रात भर चलते रहे और सुबह हुई तो घूम फिर कर उसी जगह पहुंचे कि जहां से कूफ़ा के बाहर कादसीया के रास्ते पर चले थे। नन्हा-सा कलेजा दहल गया कि कहीं फिर न कोई पकड़ कर इब्न-ज्याद के पास पहुंचा दे। करीब ही एक खोखला दरख़्त नज़र आया। वहीं एक चश्मा भी बहता हुआ नज़र आया। दोनों बच्चे दरख़्त की आड़ में बैठ गए। थोड़ी देर बाद एक लौंडी पानी भरने आई। जब उन बच्चों को इस तरह छुपे बैठे देखा तो करीब आई। उनका हुस्न व जमाल और शाने शहज़ादगी देखकर कहा : शहज़ादो! तुम लोग कौन हो और यहां कैसे छुपे बैठे हो ? उन्होंने कहा : हम यतीम व बेकस और सितम रसीदा व राह भटके हुए मुसाफ़िर हैं। लौंडी ने कहा : मैं गुमान करती हूं कि तुम दोनों हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के फ़र्ज़न्द हो। बाप का नाम सुनते ही वह दोनों फूट-फूट कर रोने लगे। लौंडी ने कहा :

साहबजादो! ग़म न करो। मैं उस खातून की कनीज़ हूँ जो अहमद-शाह
नुबुव्वत के साथ सच्ची अकीदत व मुहब्बत रखती है। आओ, मेरा साथ
चलो। मैं तुम्हें उसके पास ले चलूँ। दोनों साहबजादे उसके पास हो गए।
लौंडी ने उनको अपनी मालिका के सामने पेश किया और सारा वाकिआ
ब्यान किया। उस खातून का साहबजादों की तशरीफ़ आवरी पर बेइन्तिहा
मुसररत हुई। इसी खुशी में उसने अपनी लौंडी को आज़ाद कर दिया।
साहबजादों के साथ बड़ी मुहब्बत से पेश आई। उन्हें हर तरह की तसल्ली व
तशफ़ी दी कि फ़िक्र न करो। लौंडी से कहा कि इन साहबजादों की तशरीफ़
आवरी का राज़ पोशीदा रखना और मेरे शौहर हारिस को न बताना।

इधर इब्न-ज़्याद को जब मालूम हुआ कि दारोगा जेल मशकूर ने दोनों
बच्चों को रिहा कर दिया है तो उसने मशकूर को बुलाकर पूछा कि तूने
मुस्लिम के बच्चों का क्या किया? मशकूर ने कहा : कि मैं अल्लाह तआला
की रज़ा व खुशनूदी हासिल करने के लिए उनको रिहा कर दिया है। इब्ने
ज़्याद ने कहा: तू मुझसे न डरा। मशकूर ने कहा : जो अल्लाह तआला से
डरने वाला है वह किसी और से नहीं डरता। इब्न-ज़्याद ने कहा : तुझे उन
बच्चों को रिहा करने से क्या मिला? मशकूर ने कहा : ओ सितमगार
नाबकार! उन बच्चों के पिदरे बुजुर्गवार को शहीद करने में तुझे तो कुछ न
मिलेगा मगर मुझे उन बच्चों को जो अपने जिगर पर यतीमी का दाग़ लिए
हुए कैद व बन्द की सज़ाबतें उठा रहे थे रिहा करने में उम्मीदे क़वी है कि
मैदाने हश्र में हुज़ूर सैयदे कौनैन मालिके जन्नत सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम
मेरी शफ़ाअत फ़रमाएंगे। तू हज़रत मुस्लिम के शहीद करने के इवज़ उस
नेमत से महरूम रहेगा। इब्न-ज़्याद उस जवाब पर बहुत ग़ज़बनाक हुआ
और कहा : मैं अभी तुझे इसकी सज़ा देता हूँ। मशकूर ने कहा : मेरी हज़ारों
जानें उन पर फ़िदा हैं। इब्न-ज़्याद ने जल्लाद से कहा : उसे लकड़ी के
सुतूनों पर खींच कर पहले पांच सौ कोड़े लगाओ और फिर इसका सर तन
से जुदा कर दो। जल्लाद ने जब कोड़े मारने शुरू किए तो पहले कोड़े पर
मशकूर ने कहा : बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। दूसरे कोड़े पर कहा: इलाही!
मुझे सब्र अता फ़रमा। तीसरे कोड़े पर कहा : खुदाया! मुझे माफ़ फ़रमा।
चौथे कोड़े पर कहा : इलाही मैं रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
के बेटों की मुहब्बत में अपनी जान कुर्बान कर रहा हूँ। पांचवें कोड़े पर कहा : इलाही
मुझे हुज़ुरे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के

मासूम बच्चे अपना ही घर समझ रहे होंगे। कहीं यह राज फाश हो गया तो उनके नन्हें दिल पर क्या गुजरेगी? वह मुझे अपने तई क्या समझेंगे? लेकिन मेरे दिल का हाल तो अल्लाह और उसके रसूल से छुपा हुआ नहीं है। कुछ भी हो जीते जी लाडलों पर कोई आफत नहीं आने दूंगी।

आधी रात के बाद बच्चों ने एक निहायत दर्दनाक और हैजान-अंगेज़ ख्वाब देखा। चश्मए कौसर की सफ़ेद मौजें से नूर की किरण फूट रही है। बागे फिरदौस की शाहराहों पर चांदनी का गिलाफ़ बिछा दिया गया। करीब ही कुछ फासले पर शहंशाहे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, मौलाए काइनात हज़रत अली मुश्किल-कुशा, बित्ते रसूल सैय्यदा फातिमतुज्जुहरा और शहीद मज़लूम हज़रत इमाम मुस्लिम रिज़वानुल्लाह अलैहिम जल्वा अफ़रोज़ हैं। दोनों बच्चों पर नज़र पड़ते ही सरकार ने इमाम मुस्लिम से मुखातिब होकर फ़रमाया :

मुस्लिम! तुम खुद तो आ गए हो और जौर व सितम का निशाना बनने के लिए हमारे जिगरपारों को अशकिया के हाथों छोड़ आए। हज़रत मुस्लिम ने नीची निगाह किए जवाब दिया : वह भी पीछे-पीछे आ रहे हैं हुज़ूर! बहुत करीब आ चुके हैं। बस दो चार कदम का फासला रह गया है। खुदा ने चाहा तो कल सूरज तुलू होते ही दामने रहमत में पहुंच जाएंगे। यह ख्वाब देखकर दानों भाई चौंक पड़े। बड़े ने छोटे को झिंझोड़ते हुए कहा : अब सोने का वक़्त नहीं है। हमारी ज़िन्दगी का आखिरी वक़्त आ चुका है। भैया उठो! बाबा जान ने ख़बर दी है कि अब हम चन्द घन्टों के मेहमान हैं। हौज़े कौसर पर नाना हुज़ूर हमारे इन्तिज़ार में खड़े हैं।

छोटे भाई ने डबडबाती आंखों से जवाब दिया : भाईजान! मैंने भी इसी तरह का ख्वाब देखा है। क्या सचमुच हम दोनों सुबह क़त्ल कर दिए जाएंगे। हाय! एक दूसरे को जबह होते हम कैसे देख सकेंगे, भैया?

यह कह कर दोनों भाई एक दूसरे के गले में बाहें डाल कर लिपट गए और फूट-फूट कर रोने लगे। हवा ने यह आवाज़ हारिस के कानों तक पहुंचा दी। मुतहैयर होकर उठा और बीवी को जगा कर पूछने लगा : यह बच्चों के रोने की आवाज़ कहां से आ रही है ? सूरते हाल की नज़ाकत से बीवी का कलेजा सूख गया। उसने टालते हुए जवाब दिया। सो जाइए। कहीं पड़ोस के बच्चे रो रहे होंगे। संगदिल ने तेवर बदल कर कहा। पड़ोस से नहीं, हमारे घर से यह आवाज़ आ रही है। हो न हो यह वही मुस्लिम

के बच्चे हैं जिनकी तलाश में कई दिन से सर गरदां हूँ। यह कहते हुए उठा और उस कोठरी के पास जाकर खड़ा हो गया। ताला तोड़कर दरवाजा खोला। अन्दर जाकर देखा तो दोनों बच्चे रोते-रोते बेहाल हो गए थे। करख्त लहजे में दरयापत किया। तुम कौन हो? अचानक उस अजनबी आवाज़ पर बच्चे सहम गए। लेकिन चूँकि उस घर को दारुल-अमान समझे हुए थे इसलिए साफ़ कह दिया कि हम मुरलिम बिन अकील के यतीम बच्चे हैं। ज़ालिम यह सुनते ही गुस्से से बेकाबू हो गया और कहा : मैं सारा दिन ढूँढ़ते-ढूँढ़ते परेशान हो गया और तुम लोगों ने हमारे ही घर में ऐश का बिस्तर लगाया है। यह कहते हुए आगे बढ़ा और निहायत बेरहमी के साथ उन नन्हें यतीमों के रुख़सारों पर तमाचे बरसाना शुरू कर दिया। शिद्दते कर्ब से दोनों भाई बिलबिला उठे। बेतहाशा बीवी दौड़ती हुई आई और यह कहती हुई दर्मियान में हायल हो गई। अरे ज़ालिम! यह क्या कर रहा है? यह फ़ातिमा के राज दुलारे हैं। उनकी चांदनी-जैसी सूरतों पर तरस खा। हाथ रोक ले सितमगर! जन्नत के फूलों का सुहाग मत लूट। चमनिस्ताने कुदुस की नाज़ुक कलियों को ज़ख्मी मत कर। फिर मामता की झोंक में उठी और उसके कदमों पर अपना सर पटकने लगी और कहा : ले मेरा सर कुचल कर अपने हवस की आग बुझा ले लेकिन फ़ातिमा के जिगरपारों को बख़्श दे। गुस्से में चूर संगदिल ज़ालिम शौहर ने उसे इतने जोर की ठोकर मारी कि वह पत्थर कि एक सुतून से टकरा कर लहलुहान हो गई।

ज़ालिम जब बच्चों को मारते-मारते थक गया तो दोनों भाईयों की मश्कें कस दीं और जुल्फों को खींचकर आपस में एक दूसरे को बांध दिया। उसके बाद यह कहता हुआ कोठरी से बाहर निकल आया कि जिस क़दर तड़पना है सुबह तक तड़प लो। दिन निकलते ही मेरी चमकदार तलवार तुम्हें हमेशा के लिए चैन की नींद सुला देगी।

सुबह होते ही ज़ालिम ने तलवार उठाई, ज़हर में बुझा हुआ खंजर संभाला और खूँख़ार दरिन्दे की तरह कोठरी की तरफ़ बढ़ा। नेक बख़्त बीवी ने दौड़कर उसकी कमर थाम ली। हारिस ने इस जोर का झटका दिया कि उसका सर दीवार से टकरा गया और वह आह कर के ज़मीन पर गिर पड़ी। बीवी को ज़ख्मी करने के बाद जब वह कोठरी में दाख़िल हुआ तो हाथ में नंगी तलवार और चमकता हुआ खंजर देखकर दोनों बच्चे

कांप उठे। बदबख्त ने आगे बढ़कर दोनों भाईयों की जुल्फें पकड़ लीं और निहायत बेदरी के साथ धसीटता हुआ बाहर लाया। तकलीफ से दोनों भाई तिलामेला उठे लेकिन जालिम हारिस को तरस न आया। सामान की तरह एक खच्चर पर लाद कर दरियाए फुरात की तरफ चल पड़ा। जब उसके किनारे पहुंचा तो उन्हें खच्चर से उतारा। मशकें खोलीं और सामने खड़ा किया। फिर म्यान से तलवार निकाला ही था कि इतने में उसकी बीवी हांपती-कांपती आई और आते ही उसने अपने शौहर का हाथ पकड़ लिया और खुशामद करते हुए बोली : खुदा के लिए अब भी मान जाओ। अहले बैसे रिसालत के खून से अपना हाथ रंगीन न करो। हारिस पर शैतान पूरी तरह सवार था। जालिम ने बीवी पर ऐसा वार किया कि वह ज़ख्मी होकर गिरी और तड़पने लगी। लौंडी सामने आई तो वह भी उसके तेगे सितम से घायल हुई। यह दर्दनाक मन्ज़र देखकर बच्चे सहम गए। अब सियाह बख्त जल्लाद अपनी खून आलूद तलवार ले कर बच्चों की तरफ बढ़ा। छोटे भाई पर वार करना ही चाहता था कि बड़ा भाई चीख पड़ा। खुदारा! पहले मुझे ज़बह कर। जान से ज़्यादा अजीज़ भाई की तड़पती हुई लाश मैं नहीं देख सकूंगा। छोटे भाई ने सर झुकाते हुए खुशामद की। बड़े भाई के कत्ल का मन्ज़र मुझसे हरगिज़ न देखा जा सकेगा। खुदारा! पहले मेरा सर कलम करो।

जालिम हारिस की तलवार चमकी। दो नन्हीं चीखें बुलन्द हुई और यतीम बच्चों के कटे हुए सर खून में तड़पने लगे। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। (नक्शे वफ़ा सफ़ा ३० शामे करबला सफ़ा ५४)

सलाम तुम पर ऐ मुहम्मद व इब्राहीम !

ऐ इमामे मुस्लिम के राज दुलारो

तुम्हारे मुक़द्दस खून की सुखी से आज तक गुलशने इस्लाम की बहारों का सुहाग काइम है। खुदाए रब्बे कदीर तुम्हारी तुरबतों पर शाम व सहर रहमत व नूर की बारिश बरसाए।

कातिल हारिस का अन्जाम

जालिम हारिस ने जब पिसराने मुस्लिम को शहीद कर दिया तो उनकी लाशों को दरियाए फुरात में फेंक दिया और सरों को एक बड़े थैले में रखकर इब्न-ज़्याद के सामने पेश किया। उसने पूछा : इस थैले में क्या

है? हारिस ने कहा : इनाम व इकराम की उम्मीद में आपके दुश्मनों का सर काट कर लाया हूं। इब्न-ज्याद ने कहा : यह मेरे दुश्मन कौन हैं? जाओ और उन सरों को साफ करके लश्त में रखकर मेरे सामने पेश करो। हारिस ने कहा : मुस्लिम बिन अकील के फ़र्जन्द हैं। इब्न-ज्याद इतना सुनते ही ग़ज़बनाक हो गया और कहा तुझको क़त्ल करने का हुक्म किस ने दिया था? कम्बख़्त! मैंने यज़ीद को लिखा है कि अगर हुक्म हो तो मैं इन्हें आपके पास ज़िन्दा रवाना कर दूँ। अगर यज़ीद ने ज़िन्दा भेजने का हुक्म दिया तो फिर मैं क्या करूँगा? तू मेरे पास उनको ज़िन्दा क्यों नहीं लाया? हारिस ने कहा : मुझे अन्देशा था कि अहले शहर हमला करके मुझसे छीन लेंगे। इब्न-ज्याद ने कहा : अगर तुझे छीन लेने का डर था तो किसी महफ़ूज़ जगह पर उनको ठहरा कर मुझे इतिला कर देता। मैं खुद मंगवा लेता। तूने मेरे हुक्म के बग़ैर उनको क़त्ल क्यों किया? फिर इब्न-ज्याद ने मजमा पर निगाह डाली और फिर एक शख्स जिसका नाम मक़ातिल था, जो ख़ानदाने अहले-बैत का दिल व जान से मुहिब्ब था, उसको बुलाकर कहा। इस शख्स को फुरात के किनारे ले जा और जहां इसने उन दोनों बच्चों को शहीद किया था वहीं पर इसे क़त्ल कर दे। इन बच्चों का सर भी साथ लेता जा और वहीं डाल दे जहां इसने उनके जिस्मों को डाला था। मक़ातिल ने निहायत खुशी का इज़हार किया और अपने साथियों से कहा : अगर उबैदुल्लाह इब्न-ज्याद मुझे तमाम बादशाही दे देता तो भी मुझे इतनी खुशी न हासिल होती जितनी इस मरदूद को क़त्ल करके होगी। फिर उसने हुक्म दिया कि उसका हाथ पीछे की तरफ़ बांध कर नंगे सर कूफ़ा के बाज़ारों में फिराते हुए नहरे फुरात के पास ले चलो। दरियाए फुरात के पास जब मक़ातिल अपने साथियों के साथ पहुंचे तो देखा एक लौंडी शहीद पड़ी हुई है और एक औरत ज़ख्मी हालत में कराह रही है। मक़ातिल के पूछने पर खातून ने बताया कि मैं इस बदबख़्त, रू-सियाह की बीवी हूँ और यह उसकी लौंडी है। हारिस ने मक़ातिल से कहा : मैं तुझको दस हज़ार सुर्ख़ दीनार देता हूँ तू मुझे छोड़ दे। मैं कहीं रूपोश हो जाऊँगा। मक़ातिल ने कहा : अगर तमाम दुनिया तेरे कब्ज़े में हो जाए और तू वह सब मुझको दे दे तो भी मैं तुझको न छोड़ूँगा। तूने जब उन नौनिहालों पर रहम नहीं किया तो मैं भी तुझपर रहम नहीं कर सकता और तुझे उससे बुरी तरह क़त्ल कर के अल्लाह तआला की बारगाह में सवाबे उम्मीद लेकर जाऊँगा। फिर

मकातिल घोड़े से उतरा और जब उसने इमाम मुस्लिम के साधवजानों का खून देखा तो उसकी आंखों में खून जारी हो गया। उसने रोते हुए शमजानों के खून अपने चेहरे पर मला और हक तआला से इस मुबारक खून की तुफैल अपनी मगफिरत की दुआ मांगी। फिर उन सरों को फुरात के किनारे कर दिया। रिवायतों में आता है कि मकातिल ने जैसे ही उन शमजानों के सरों को फुरात में डाला जिस्म पानी के ऊपर आ गए और हर एक का मुबारक अपने जिस्म के साथ जुड़ गया। दोनों ने एक दूसरे के गर्दन में बाहें हाइल कर दीं और पानी के बहाव पर बहने लगे।

रिवायतों में यह भी आता है कि फिर उन दोनों को पानी से निकाल कर फुरात के किनारे मदफून कर दिया गया।

मर्वी है कि मकातिल ने गुलामों को हुक्म दिया कि सबसे पहले हारिस के हाथ काट दिए जाएं। फिर उसके पांव काटे जाएं। फिर दोनों कान काटे जाएं। फिर उसकी आंखें निकाल दीं। फिर उसका पेट फाड़कर उस में कटे हुए आज़ा रखो और उस पर पत्थर बांध कर दरिया में डाल दो। जैसे ही उस जालिम की लाश को दरिया के अन्दर डाला गया उसी वक्त दरिया की एक मौज उभरी और उसे किनारे पर उछाल दिया। मकातिल के गुलामों ने उसे तीन बार दरिया में डाला मगर दरिया ने उसे तीनों बार बाहर फेंक दिया। उसके बाद उन्होंने एक गढ़ा खोदा और उसमें उसे डाल कर ऊपर से मिट्टी और पत्थर भर दिए। थोड़ी देर गुज़री थी कि ज़मीन लरज़ने लगी। ज़मीन ने बाहर उगल दिया। उसके बाद वह लोग जंगल से लकड़ियां लाए और उसमें उस ख़बीस नारी को जला दिया।

बाद अज़ां हारिस की लाँडी को बाबे बनी खुज़ैमा में मदफून कर दिया गया।

(रौज़तुशशुहदा जिल्द दोम सफ़ा १२४)

न खुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के रहे, न उधर के रहे



क़यामत-नुमा हादसा

जमीने करबला

का

खूनी मन्ज़र

और

हक़ व बातिल की एक बेमिसाल जंग

हज़रत इमाम हुसैन

को

कूफ़ा आने की दावत

मनकबत दर शाने शहीदे करबला

जो जवां बेटे की मैय्यत पर न रोया वह हुसैन
जो दहकती रेत के विस्तार पे सोया वह हुसैन
जिसने अपने खून से दुनिया को धोया वह हुसैन
जिसने सब कुछ खोके फिर भी कुछ न खोया वह हुसैन
मर्तबा इस्लाम का जिसने दोवाला कर दिया
खून ने जिसके दो आलम में उजाला कर दिया

शेर की मानिन्द जो मकतल में आया वह हुसैन
वह बहत्तर जख्म खाकर मुस्कुराया वह हुसैन
राहे हक में जिसने अपना सर कटाया वह हुसैन
करबला में जिसने अपना घर लुटाया वह हुसैन
ज़ेरे खन्जर जिसका सज्दा अज़मत इस्लाम है
जिसका हर तेवर रसूले पाक का पैग़ाम है

अल्लाह! अल्लाह! राकिबे दोशे पयम्बर वह हुसैन
फ़ातिमा का नूरे दीदह, जाने हैदर वह हुसैन
अज़मत व इख़लास व कुर्बानी का पैकर वह हुसैन
करबला के गाज़ियों का मीरे लशकर वह हुसैन
परचमे हक़ ता अबद जिस का सलामी हो गया
ज़िन्दए जावेद जिसका नामे नामी हो गया

दीन की खातिर थी जिसकी ज़िन्दगानी वह हुसैन
कट गई इस्लाम में जिसकी जवानी वह हुसैन
खुल्द में की हक़ ने जिसकी मेहमानी वह हुसैन
मिल गई जिसको हयाते जाविदानी वह हुसैन
नामे नामी जिस का लौहे दहर पर मरकूम है
फ़र्श से ता अर्श जिसको अज़मतों की धूम है

(माखूज अज़ 'खुतयाते मुहर्रम')

हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु की मक्का से कूफा रवानगी

हजरत इमाम गुरिलम रजियल्लाहु अन्हु का खत आने के बाद हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु को कूफियों की दरख्वास्त कुबूल फरमाने में कोई वजह तअम्मुल व जाइज़ उज़ बाकी नहीं रहा था। जाहिरी शकल तो यह थी। हकीकत में कज़ा व कद्र के फरमान नाफिज़ हो चुके थे। शहादत का वक्त आ चुका था। इसलिए इमाम आली मक़ाम सैय्यदना इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु ने कूफा जाने का अज़मे मुसम्म कर लिया और असबाबे सफ़र दुरुस्त होने लगे।

जब मक्का वालों को आपकी तैयारी का इल्म हुआ तो उन्होंने आप का मक्का से कूफा जाना पसंद न किया। क्योंकि वह कूफा वालों की बेवफ़ाई व ग़दारी को ख़ूब जानते थे। और उनको इल्म था कि उन कूफियों ने हजरत अली और हजरत हसन रजियल्लाहु अन्हु के साथ क्या सुलूक किया था ? चुनांचे उन्होंने आपको सख़्ती से रोका। उनमें ख़ास तौर से जलीलुल-क़द्र सहाबा हजरत अब्दुल्लाह इब्न-अब्बास, हजरत अब्दुल्लाह इब्न-उमर, हजरत जाबिर, हजरत अबू सईद खुदरी, हजरत अबू वाकिदुलैसी व दीगर सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन आपके पास आए और अर्ज किया कि आप कूफा हरगिज़-हरगिज़ न जाए कि वहां के लोग दरहम व दीनार के बन्दे हैं। बद-अहदी और -वफ़ाई उनका शिआर है। और उनका हाकिम उन पर मुसल्लत है तो आप जान लीजिए कि कूफा वाले आप को जंग व ज़िदाल के लिए बुला रहे हैं। हमें अन्देशा है कि वह लोग आप को धोखा देंगे। आपको झुठलायेंगे और आपको बेयार व मददगार छोड़कर हुकूमते वक्त से मिलकर आप पर हमला कर देंगे। यही लोग जो आप को दावत दे रहे हैं आप के दुश्मन बन जाएंगे। और आपको शहीद कर देंगे। हजरत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : मैं खुदा से ख़ैर का तालिब हूं देखिए क्या होता है।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०६)

हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर जो पहले ही मक्का में मौजूद थे, आपके पास आए और कहा : आप इराक़ जाने का इरादा तर्क फ़रमा दें। तो आपने ने फ़रमाया : हद्सनी अबी अन्न न लिमक्कत कबशन बिही यस्तहिल्लु हुर्मतुहा फ़मा उहिब्बु अन्न अकू न अ न ज़ालिकल कबश। मैंने अपने वालिदे गिरामी हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु से हदीस सुनी है कि एक

मेंढा मक्का मुअज्जमा की हुर्मत को हलाल कर देगा। तो मैं वह मेंढा नहीं बनना चाहता।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २१०—सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६५२)
दूसरी रिवायत यह है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-जुबैर ने आपसे सफ़रे इराक़ मुलतवी करने के लिए इसरार किया और कहा कि आप मस्जिदे हराम में रहिए, मैं आपकी नुसरत के लिए लोगों को जमा कर लूंगा। तो आपने फ़रमाया : अगर एक बालिशत भर मैं उस मस्जिद के बाहर निकलूँ तो क़त्ल किया जाऊंगा। तो वल्लाह! मैं इसे उस बात से बेहतर समझता हूँ कि एक बालिशत भर मस्जिद के अन्दर क़त्ल किया जाऊँ। बख़ुदा ! अगर मैं हशरातुल-अर्ज के किसी सुराख़ में भी छुपूंगा तो लोग मुझे वहां से भी निकाल लेंगे और जो सुलूक मेरे साथ करना चाहते हैं, करेंगे। (तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २११)

ग़र्ज यह कि बड़े-बड़े सहाबा-ए-किराम आपको सफ़रे इराक़ से रोकने के लिए बहुत इसरार करते रहे और आख़िर तक यही कोशिशें करते रहे कि आप मक्का मुकर्रमा से तशरीफ़ न ले जाएं। मगर उनकी कोशिशें बार-आवर न हुई। हज़रत इमाम आली मक़ाम ३ ज़िलहिज्ज : सन् ६० हिजरी को अपने अहले-बैत मवाली व ख़ुदाम कुल ब्यासी (८२) नुफ़ूस को हमराह ले कर मक्का शरीफ़ से इराक़ की तरफ़ रवाना हो गए।

करबला जाने वाले अहले-बैत

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मक्का शरीफ़ से इराक़ की जानिब सफ़र करने वालों में आपके तीन साहिबज़ादे आपके हमराह थे। हज़रत अली औसत जिनको इमाम ज़ैनुल-आबिदीन कहते हैं। यह हज़रत शहरबानो के बतन से थे। उस वक़्त आपकी उम्र २२ साल थी और बीमार थे। आपके दूसरे साहिबज़ादे हज़रत अली अक़बर थे जो याला बिनते अबी मुरह के शिकम से थे। उनकी उम्र १८ बरस की थी। यह करबला में शहीद हुए। आपके तीसरे साहिबज़ादे हज़रत अली असगर थे। उनकी वालिदा रुबाब बिनत इमरउल-कैस कबीलए बनी कुज़ाआ से थीं। आप शीर-ख़्वार बच्चे थे। आपकी एक बहन हज़रत सकीना भी करबला में हज़रत इमाम आली मक़ाम के हमराह थीं। उस वक़्त उसकी उम्र सात (७) साल की थी। करबला में हज़रत कासिम के साथ उनका निकाह होने की जो रिवायत

मशहूर है, वह ग़लत है। उनका निकाह हज़रत मुसअव बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुआ।

हज़रत इमाम रज़ियल्लाहु अन्हु की दो वीवियां आपके पास थीं। एक शहरबानो और दूसरी हज़रत अली असगर की वालिदा रुवाब बिनत इमरउल-कैस।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के चार नौजवान फ़र्जन्द १-हज़रत कासिम २-हज़रत अब्दुल्लाह, ३-हज़रत उमर और ४-हज़रत अबू-बक्र। हज़रत इमाम आली मक़ाम के हमराह थे और करबला में शहीद हुए।

हज़रत मौला अली करमल्लाह वजहहू के पांच फ़र्जन्द। १. हज़रत अब्बास इब्ने अली, २. हज़रत उस्मान इब्ने अली, ३. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अली, ४. हज़रत मुहम्मद इब्ने अली और ५. हज़रत जाफ़र बिन अली हज़रत इमाम के हमराह थे और सब-के-सबने करबला में शहादत पाई।

हज़रत अकील के फ़र्जन्दों में हज़रत इमाम मुस्लिम तो हज़रत इमाम के करबला पहुंचने से पहले ही कूफ़ा में शहीद हो चुके थे। और तीन फ़र्जन्द १. हज़रत अब्दुल्लाह २. हज़रत अब्दुर्रहमान ३. और हज़रत जाफ़र-हज़रत इमाम के हमराह थे और करबला में शहीद हुए।

हज़रत जाफ़र तैयार के दो पोते १. हज़रत मुहम्मद और २. हज़रत औन हज़रत इमाम के हमराह हाज़िर होकर शहीद हुए। उनके वालिद का नाम अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र है। यह दोनों हज़रत इमाम के हकीकी भांजे हैं। उनकी वालिदा हज़रत ज़ैनब हज़रत इमाम की हकीकी बहन हैं। साहबज़ादगाने अहले-बैत में से कुल सतरह हज़रात हज़रत इमामे आली मक़ाम के हमराह हाज़िर होकर रुतबए शहादत को पहुंचे। और हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबिदीन, हज़रत उमर बिन हसन, मुहम्मद बिन उमर बिन अली और दूसरे कम उम्र साहबज़ादे कैदी बनाए गए। हज़रत ज़ैनब हज़रत इमाम की हकीकी हमशीरा और शहरबानो हज़रत इमाम की जौजा और दूसरे अहले-बैत हज़रात की बीबियां हमराह थीं। (सवानेह करबला सफ़ा ८६)

अहले-बैत व दीगर बहत्तर जानिसारों का यह काफ़िला ६१ अफ़राद पर मुश्तमिल था जिसमें १६ अहले-बैत क़िराम और ७२ जानिसार थे जिनके असमा यह हैं :

(१) जुबैर बिन हरसान मुहम्मदी (२) साद बिन हन्ज़ला लमीमी (३) बुरैर बिन हुज़ैर हमदानी (४) वहब बिन अब्दुल्लाह कलबी (५) उमरु बिन ख़ालिद सैदावी (६) ख़ालिद बिन उमरु मक्की (७) अब्दुल्लाह बिन उमरु कलबी

(८) उमरु बिन अब्दुल्लाह सायदी (९) हम्माद बिन अनस मुहम्मदी (१०) वक्कास बिन मालिक अहमदी (११) शुरैह बिन उबैद मक्की (१२) नुरिल्लैम बिन औसजा असदी (१३) बिलाल बिन नाफे बजली (१४) मुरह बिन अबी मुरह गिफारी (१५) कैस बिन मुबत्ता मदनी (१६) हाशिम बिन उतबा मक्की (१७) बशीर बिन अम्र हजरमी (१८) नईम बिन अजलान अंसारी (१९) जहीर बिन कैस बजली (२०) अनस बिन काहिद असदी (२१) खुबैब बिन मजाहिर असदी (२२) कैस बिन रबीई अंसारी (२३) अब्दुल्लाह बिन उर्वा बिन खराक गिफारी (२४) अब्दुर्रहमान बिन उर्वा बिन खराक गिफारी (२५) हुरह बसीर गुलाम आजाद अबूजर गिफारी (२६) शीस बिन अब्दुल्लाह बहिशी (२७) फासित बिन जुहैर सालबी (२८) करदूस बिन जुहैर सालबी (२९) कनाबा बिन अतीक अंसारी (३०) जरआमा बिन मालिक अंसारी (३१) जुवैर बिन मालिक अंसारी (३२) उमर बिन सनीआ सनीई (३३) यजीद बिन मुस्बत कैसी (३४) अब्दुल्लाह बिन मुस्बत कैसी (३५) आमिर बिन मुस्लिम अंसारी (३६) उबैदुल्लाह बिन मुस्बत कैसी (३७) कानब बिन उमरु ननरी (३८) सालिम गुलाम आजाद आमिर बिन मुस्लिम (३९) सैफ बिन मालिक अंसारी (४०) जुहैर बिन बशीर जाफी (४१) बदर बिन माकल जाफी (४२) हज्जाज बिन मसरुक मुअज्जिन लश्करे शाम (४३) मसऊद बिन हज्जाज अंसारी (४४) मजमा बिन अब्दुल्लाह गायदी (४५) अम्मार बिन हस्सान मदनी (४६) हस्सान बिन हारिस सुलैमानी असदी (४७) जुन्दुब बिन हज्ज खौलानी (४८) यजीद बिन ज्याद मजाहिर किन्दी (४९) ताहिर गुलाम आजाद दीनूल-हक खुजाई (५०) जबला बिन अली शैबानी (५१) असलम बिन कसीर आरज अज्दी (५२) जुहैर बिन सुलैम अज्दी (५३) कासिम बिन हबीब अज्दी (५४) उमरु बिन जुन्दुब हजरमी (५५) अबू तमामा अंसारी (५६) सलमान गुलाम आजाद जनाब इमाम आली मकाम (५७) काब गुलाम आजाद जनाब इमाम आली मकाम (५८) उरवा गुलाम आजाद हुर बिन यजीद रियाही (५९) मुअसब बिरादर बिन रियाही (६०) हुर बिन यजीद रियाही (६१) अली बिन हुर बिन यजीद बिन रियाही (६२) अम्मार बिन अबी सलामा अंसारी (६३) शौजब गुलाम आजाद शाकिर अंसारी (६४) साद बिन अब्दुल्लाह अतबकी (६५) शैब बिन हारिस अंसारी (६६) मालिक बिन सुरिअ अंसारी (६७) मुहम्मद बिन अनस अंसारी (६८) मिकदाद अंसारी (६९) मुजाहिदीन बिन मुरव्वक (७०) हन्जला बिन असद शैबानी (७१) अब्दुल्लाह बिन

अब्दुल्लाह बिन कनन अरजनी (७२) आइरा बिन हवीव शाकिरी रिजवानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का शरीफ से रवाना हुए। हाकिमे मक्का अमरु बिन सईद के सवारों ने रोकने की कोशिश की लेकिन आप आगे बढ़ गए। जब आप मक़ामे सफ़ाह पर पहुंचे तो फिरज़ौक़ नामी शाइर मिला। आपने उससे कूफ़ा वालों का हाल दरयाफ़्त किया। उसने कहा: आपने एक बाख़बर शख्स से हाल पूछा है। ऐ इमामे आली मक़ाम! कूफ़ा वालों के दिल तो आप के साथ हैं लेकिन उनकी तलवारें बनी-उमैय्या के साथ हैं। कज़ाए इलाही आसमान से नाज़िल होती है। खुदा जो चाहता है करता है। आपने फ़रमाया: तुम ने सच कहा। लेकिन हर बात अल्लाह तआला के दस्ते कुदरत में है वह जो चाहता है करता है। अगर अल्लाह तआला ने हमारी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ किया तो हम उसका शुक्रिया अदा करेंगे और अगर कज़ाए इलाही हमारे मतलब के खिलाफ़ हुई तो इन्सान के लिए यही क्या कम है कि उसकी नीयत में खुलूस और उसके दिल में पारसाई हो।

(तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २१२)

फ़िरज़ौक़ शाइर से गुफ़्तगू करने के बाद हज़रत इमाम आली मक़ाम आगे बढ़े तो आपके भांजे हज़रत औन व मुहम्मद रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपने वालिदे गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तैयार रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त लेकर आए और आपको रास्ता में मिल कर ख़त पेश किया। इसमें लिखा था कि:

“मैं आपको अल्लाह का वास्ता देकर दरख़्वास्त करता हूं कि मेरा यह ख़त मिलते ही फ़ौरन वापस आ जाएं क्योंकि आप जहां जा रहे हैं वहां आप की हलाकत और आपके अहले-बैत की बरबादी का मुझे अन्देशा है। अगर खुदा-न-ख़्वास्ता आप हलाक हो गए तो इस्लाम का नूर बुझ जायेगा और दुनिया में अंधेरा हो जाएगा। आप अहले हिदायत के रहनुमा और अहले ईमान की उम्मीद हैं। आप ख़ानगी में जल्दी न करें। इस ख़त के पीछे-पीछे मैं भी आ रहा हूं। वरसलाम।”

फ़र्जन्दों के हाथ ख़त रवाना करने के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र हाकिमे मक्का अमरु बिन सईद से जाकर मुलाक़त की और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए अमान का परवाना और उनके साथ नैकी और एहसान करने का वादा तहरीरी तौर पर हासिल किया, और

हज़रत इमाम आली मक़ाम के मज़ीद इतमीनान के लिए हाकिमे मक्का के भाई यह्या बिन सईद को साथ लेकर आपके पास पहुंचे। यह्या ने हाकिमे मक्का का ख़त पेश किया। आपने उसे पढ़ा मगर वापस आने से इन्कार कर दिया। उन लोगों ने कहा : आख़िर क्या बात है ? आप कूफ़ा जाने पर इस क़दर बज़िद क्यों हैं? हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : मैं ने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की ज़्यारत की है। आप ने मुझे इस ख़्वाब में एक हुक्म दिया है जिसको मैं ज़रूर पूरा करूंगा। ख़्वाह वह मेरे मुख़ालिफ़ हों या मेरे मवाफ़िक़। उन लोगों ने कहा : वह ख़्वाब क्या है ? आपने फ़रमाया : वह ख़्वाब न मैं ने अब तक किसी से ब्यान किया है और न ब्यान करूंगा। यहां तक कि अपने खुदा से जा मिलूं। (तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २१३)

छुट जाए अगर दौलते कौनैन तो क्या ग़म

छूटे न मगर हाथ से दामाने मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत इमाम आली मक़ाम ने हाकिमे मक्का की तहरीर का जवाब लिखकर उनके सुपुर्द किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र कुछ मजबूरियों की वजह से हज़रत इमाम हुसैन के साथ न जा सके लेकिन अपने दोनों साहिबज़ादों औन व मुहम्मद को आपके साथ रहने की हिदायत की। और खुद वापस हो गए।

इधर इब्न-ज्याद बदनिहाद को इत्तिला मिल चुकी थी कि हज़रत इमाम हुसैन कूफ़ा की जानिब बढ़ते चले आ रहे हैं। उसने पुलिस के हाकिमे आला हुसैन बिन नुमैर तमीमी को आपके रोकने पर मामूर किया। उसने कादसीया से खुफ़ान, फ़तक्ताना और जबले लाल तक सवारों को मुक़र्र कर दिया कि एक तो वह हज़रत हुसैन के काफ़िले की नक़ल व हरकत की ख़बरें दम-बदम उसे देते रहें। दूसरे अहले कूफ़ा और हज़रत इमाम हुसैन के दर्मियान ख़त व किताबत का सिलसिला काइम न रहे। इस इन्तिज़ाम का नतीजा यह हुआ कि न उस इलाक़े का कोई शख़्स बाहर जा सका और न कोई अन्दर आ सका। (अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा ६६)



हज़रत कैस रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

हज़रत इमाम हुसैन ने मक़ाम हाजिर में पहुँचकर अपने एक शहीद कैस बिन मुसहिर सैदावी को अपनी आमद की इतनाई तशरीफ़ देकर कूफ़ा ख़ाना किया। लेकिन उमवी हुक्काम ने पहले से शरतों की नाकाबन्दी कर ली थी। इसलिए कैस जब कादसीया के करीब पहुँचे तो गिरफ़्तार कर लिए गए। हुसैन ने उनको इब्न-ज़्याद के पास कूफ़ा भेज दिया। इब्न-ज़्याद ने उनको यह गुस्ताख़ाना हुक्म दिया कि क़स्मे इमारत की छत पर चढ़कर कज़़ाब इब्ने कज़़ाब हुसैन बिन अली को गालियाँ दो (मआज़ल्लाह!)। कैस इस हुक्म पर क़स्म के ऊपर चढ़ गए और अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद कहा—

लोगो! हुसैन बिन अली फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहे वसल्लम के लख्ते जिगर, इस वक़्त ख़लक़े खुदा में सब से बेहतरीन शख्स हैं। मैं उन्हीं का भेजा हुआ तुम्हारे पास आया हूँ। वह मक़ामे हाजिर तक पहुँच चुके हैं। इसलिए तुम्हारा फ़र्ज़ है कि उनकी मदद के लिए आगे बढ़ो और उनकी आवाज़ पर लव्वैक कहो। फिर हज़रत कैस ने इब्न-ज़्याद और उसके बाप को बुरा भला कहा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए दुआएं मग़फ़िरत की।

इब्न-ज़्याद आपकी बातों को सुनकर आग वगोला हो गया और हुक्म दिया कि उसको बहुत ऊँची इमारत से इस तरह नीचे गिराओ कि उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। चुनांचे इब्न-ज़्याद के जल्लादों ने हुक्म की तामील की और उनको नीचे गिरा दिया गया। जिससे उनकी हड्डियाँ चकनाचूर हो गईं और वह इन्तिक़ाल कर गए। उस तरह हज़रत इमाम का यह सच्चा मुहिब्ब और कासिद आप पर कुर्बान हो गया। रज़ियल्लाहु अन्हु।

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२०)

अब्दुल्लाह बिन मुती से मुलाक़ात

हज़रत इमाम आली मक़ाम अपने रुफ़का के साथ बराबर आगे बढ़ रहे थे कि बतने रमला से आगे एक चश्मा पर आपकी मुलाक़ात अब्दुल्लाह बिन मुती से हुई। उन्होंने जब आपको देखा तो आगे बढ़कर सलाम किया और कहा फ़िदैतु बिअबी व उम्मी या इब्ने रसूलुल्लाह ऐ इब्ने रसूल! मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! आप यहां कैसे तशरीफ़ लाए? आपने फ़रमाया : कूफ़ा वालों ने हमें बुलाया है कि मआलिमे हक़ ज़िन्दा किया जाए और जुल्म व ज़ौर को ख़त्म किया जाए। अब्दुल्लाह ने कहा : मैं आप को खुदा की क़सम

देता हूं कि आप हुर्मते इस्लाम, हुर्मते रसूल और हुर्मते अरब के चारों तरफ का कसद हरगिज न कीजिए। आप वहां यकीनन शहीद कर दिए जाएंगे। हजरत इमाम हुसैन ने फरमाया लैयूसीबना इल्ला मा कतयल्लाहु लना हमें वही मुसीबत पहुंच सकती है जो खुदाए तआला ने हमारे लिए मुकद्दर कर दिया है। (तारीखे तबरी जिल्द ५ सफा २२१)

जहीर बिन कीन का जज्बा-ए-शहादत

अब्दुल्लाह बिन मुती से मुलाकात के बाद हजरत इमाम हुसैन ने मकामे जरूद में क्याम फरमाया तो वहां करीब ही एक खेमा नजर आया। पूछा : किसका खेमा है? अर्ज किया गया जहीर बिन कीन अल बहेली का। वह हज से फारिग होकर कूफा जा रहे हैं। आपने उनको बुलाया मगर उन्होंने मिलने से इन्कार कर दिया। उनकी इन्कार पर उनकी बीवी ने कहा : सुब्हानल्लाह! फर्जन्दे रसूल तुम को बुलाये और तुम मिलने से इन्कार करो। बीवी की बात सुनते ही वह हजरत इमाम हुसैन के पास गए और बहुत हश्शाश-बश्शाश होकर वापस आए और अपना खेमा और कुल सामान आपकी तरफ भिजवा दिया। बीवी को तलाक देकर कहा : तुम अपने भाई के साथ घर चली जाओ। फिर अपने हमराहियों से कहा : तुम में से जो लोग शहादत के तलबगार हैं वह मेरे साथ चले आएं और जो जाना चाहे चला जाए और यह समझ कर जाए कि यह मेरी आखिरी मुलाकात है। सब हैरान हो गए कि आखिर माजरा क्या है? आप ने कहा : मैं तुम लोगों से ब्यान करता हूं। बलंजर में जंग की थी, खुदाए तआला ने हमको फतह अता फरमाई थी और बहुत-सा माले गनीमत हाथ आया था। जिससे हम बहुत खुश हुए थे। तो हजरत सलमान फारसी सहाबिए रसूल ने हमसे फरमाया : एक वक्त आएगा कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के अहले-बैत के जवानों के सरदार (हजरत हुसैन) से मिलोगे और उनके साथ मिल कर उनके दुश्मनों से जंग करो तो इस फतह और माले गनीमत से ज्यादा खुशी हासिल करोगे। लिहाजा मैं तुम लोगों को अल्लाह के सुपुर्द करता हूं। फिर हजरत जहीर इमाम आली मकाम के साथ रहे। यहां तक कि करबला में आपके दुश्मनों से लड़कर शहादत से सरफराज हुए। (तबरी जिल्द ५ सफा २२२)

अब्रे रहमत उनके मरकद पर गुहर-बारी करे
हश् में शाने करीमी नाजबदारी करे

शहादते हज़रत इमाम मुस्लिम की ख़बर

हज़रत इमाम हुसैन अभी तक कूफ़ा के हालात से बे-ख़बर थे। जब आप मक़ामे सालवीया में पहुंचे तो बुक़ैर बिन शायब अमदी के ज़रिया आप को मालूम हुआ कि हज़रत इमाम मुस्लिम और हानी बिन उरवा दोनों शहीद कर दिए गए हैं और उनकी लाशों के पांव पकड़ कर बाज़ार में घसीटा गया। उस अलमनाक ख़बर को सुनकर आप ने बार-बार इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा।

अब्दुल्लाह बिन सुलैम और मज़री जो हज से फ़ारिग़ होकर मक़ामे ज़रूद में हुसैनी काफ़िले से आकर मिले थे। उन्होंने हज़रत इमाम आली मक़ाम से कहा : हम आपको खुदा की क़सम देते हैं कि अपनी जान और अपने अहले-बैत का ख़्याल कीजिए। यहीं से लौट जाईए इसलिए कि अब कूफ़ा में आप का न कोई हामी है और न मददगार। बल्कि हमें तो यह अन्देशा है कि जो लोग आपको बुलाने वाले हैं आपके कूफ़ा पहुंचने पर वही आपके दुश्मने हो जाएंगे। और आपके खिलाफ़ मैदान में निकल आएंगे। यह सुनकर हज़रत इमाम मुस्लिम के तीनों भाई खड़े हुए और जोश में कहा : खुदा की क़सम! जब तक हम अपने भाई मुस्लिम के ख़ून का बदला नहीं ले लेंगे या उनकी तरह खुद शहीद न हो जायेंगे उस वक़्त तक लौट नहीं सकते। हज़रत इमाम हुसैन के बाद ज़िन्दा रहने में कोई लुत्फ़ नहीं। आपके बाज़ साथियों ने कहा : वल्लाह! आप मुस्लिम बिन अक़ील की तरह नहीं। कुजा मुस्लिम बिन अक़ील और कुजा आप ? जूं ही आप कूफ़ा पहुंचेंगे वहां के सब लोग आपकी नुसरत के लिए दौड़ पड़ेंगे। आप ख़ामोश रहे। और सुबह का इन्तिज़ार फ़रमाने लगे। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२३)

सुबह होने के बाद इमाम आली मक़ाम का काफ़िला यहां से आगे चला। हज़रत इमाम जिन-जिन देहात से गुज़रते थे, लोग जोक-दर-जोक आप के साथ होते जाते थे। जब आप जुबाला के मक़ाम पर पहुंचे तो आपको अब्दुल्लाह बिन बक़तर की शहादत की ख़बर मिली।

हज़रत इमामे आली मक़ाम को जब मुसलसल यह दिल-शिकन ख़बरें मिलीं तो आपने अपने साथियों को जमा कर के तक़रीर फ़रमाई कि मुस्लिम बिन अक़ील, हानी बिन उरवा, और अब्दुल्लाह बिन बक़तर के दर्दनाक क़त्ल की ख़बरें मौसूल हो चुकी हैं। हमारी इताअत के दावेदारों

ने हमें छोड़ दिया है, लिहाजा तुममें से जो शख्स वापस जाना चाहे वह बखुशी जा सकता है। हमारी जानिब से उस पर कोई इल्जाम नहीं।

यह तकरीर सुनकर वह लोग जो रास्ते में आपके साथ हो गए थे, वह छटने लगे। और सिर्फ वही जानिसार बाकी रह गए जो मदीना तैय्या से आपके साथ आए थे। (तबरी जिल्द ५ सफा २२४)



मुहर्रम सन् 61 हिजरी के खूनी साल का आगाज और हुर् की आमद

मुहर्रम सन् ६१ हिजरी मुताबिक सन् ६८१ ई० का आगाज हो चुका था। आप कोहे जी-हश्म के दामन में पहुंचकर खेमाजन हुए। हुर् बिन यजीद-तमीमी एक हजार लश्कर के साथ इब्ने ज़्याद और यजीद की तरफ से आपको गिरफ्तार करने के लिए भेजा गया था, जी-हश्म में आ पहुंचा। ऐन दोपहर की वक़्त चिलचिलाती धूप में हुर् के घोड़े और सारे सिपाही बहुत प्यासे हो गए थे। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने सब को पानी पिलवाया।

हज़रत इमाम हुसैन की इस बुलन्द ज़रफ़ी का जो असर मुख़ालिफ़ सरदार यानी हुर् के दिल पर कायम हुआ उसके ज़ाहिर होने का अभी वक़्त न आया था। लेकिन कम-अज़-कम वह शशदर रह गया होगा कि इस एहसान के बाद अब इस बुजुर्ग़ फ़ितरत इन्सान से किस तरह गुफ़्तगू करूं। इमाम ने भी अपने फ़ितरी इस्तिक़लाल व इतमीनान की वजह से उस वक़्त कुछ न पूछा कि तुम क्यों आए हो और क्या मतलब है? हुर् के सिपाहियों ने कुछ देर आराम किया। यहां तक कि नमाज़ जुहर का वक़्त आया। हज़रत इमाम हुसैन ने हज्जाज बिन मसरूक़ जाफ़ी को अज़ान का हुक्म दिया। अज़ान के बाद आप लश्करे हुर् के सामने तशरीफ़ लाए और हम्द व सना के बाद हुर् और उसकी फौज को मुख़ातब करते हुए इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो! मैं खुदाए तआला की बारगाह में, और तुम्हारे सामने

अपनी सफ़ाई पेश करना चाहता हूँ कि मैं तुम्हारी तरफ़ उस वक़्त तक नहीं आया जब तक कि तुम्हारे खुतूत मेरे पास नहीं आ गए कि आप हमारी तरफ़ आइए। हमारा कोई इमाम नहीं है। शायद खुदाए तआला आप के ज़रिए हम लोगों को हिदायत पर जमा फ़रमा दें। अब अगर तुम लोग अपनी बात पर कायम हो तो मैं आ ही गया हूँ। अगर तुम अहद व पैमान करके मुझे पूरा इतमिनान दिला दो तो मैं तुम्हारे शहर चलूँ। और अगर तुम ऐसा नहीं करते और मेरा आना तुम्हें नागवार है तो मैं जहाँ से आया हूँ वहीं वापस चला जाऊँ।

यह सुनकर सब लोग ख़ामोश हो गए। किसी ने ज़वाब न दिया आपने मुअज़्ज़िन से कहा : इक़ामत कहो और हुर् से पूछा : मेरे साथ नमाज़ पढ़ोगे या अलग? हुर् ने कहा : आप नमाज़ पढ़ाइये हम सब आप के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे। चुनांचे ऐसा ही हुआ। दोनों तरफ़ के लोगों ने इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ी। उसके बाद आप अपने ख़ेमा में तशरीफ़ ले गए। हुर् और उसके लश्कर के सिपाही अपने ख़ेमों में पहुंच गए।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२७)

जब नमाज़े अस्र का वक़्त हुआ तो हज़रत इमाम हुसैन ने अपने असहाब को हुक्म दिया कि रवानगी की तैयारी करो। फिर ख़ेमा से बाहर तशरीफ़ लाकर नमाज़ का एलान फ़रमाया और इसी सूरत से दोनों गिरोहों ने आप के पीछे नमाज़ अदा फ़रमाई। नमाज़ के बाद फिर आप ने मज्मा की तरफ़ रुख़ किया और हम्द व सलात के बाद फ़रमाया : ऐ लोगो! अगर तुम तक्वा इख़्तियार करो और हक़दार का हक़ पहचानो तो अल्लाह तआला की खुशनूदी हासिल करोगे। यकीनन हम अहले-बैत उम्मत इस्लामिया की फ़रमांरवाई के उन लोगों से ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं जो आज इस मन्सब के ग़लत दावेदार हैं और मुसलमानों पर सितम ढाते हैं। लेकिन अगर तुम हम को नापसंद करते हो और हमारे हक़ का इक़रार नहीं पहचानते हो, और तुम्हारी राय उसके खिलाफ़ हो गई है जो तुम्हारे खुतूत और तुम्हारे कासिदों से मालूम हुई थी, तो मैं वापस चला जाऊंगा।

हुर् ने कहा : खुदा की क़सम! हमें तो ख़बर भी नहीं कि वह खुतूत, और कौन कासिद हैं जिन का हवाला आप दे रहे हैं। यह आप ने उक़बा बिन समआन से फ़रमाया : लाओ वह थैले जिनमें उन के खुतूत भरे हुए हैं। उक़बा ने दो थैले खुतूत से भरे हुए लाकर सामने रखा।

और उनमें से खुतूत निकाल कर फैला दिए। Hur ने कहा : हम इन लोगों में से नहीं हैं जिन्होंने आपको यह खत लिखे हैं। हम को तो यह हुक्म दिया गया है कि जहां भी आप मिल जाएं हम आपका साथ न छोड़ें, यहां तक कि इब्न-ज्याद के पास पहुंचा दें। हजरत इमाम हुसैन ने फरमाया : तुम्हारी मौत उस से ज्यादा करीब है। फिर आप ने साथियों को सवार होकर लौटने का हुक्म दिया। Hur ने मुजाहमत की आपने फरमाया : तेरी मां तुझे रोए, तू क्या चाहता है ? Hur ने कहा : खुदा की कसम! अगर आपके अलावा कोई दूसरा अरब यह बात कहता तो मैं उसकी मां को भी ऐसी ही बददुआ देता। लेकिन खुदा की कसम! मैं आप की वालिदा माजिदा का जिक्र अहसन तरीके से ही करूंगा। हजरत इमाम आली मक़ाम ने फरमाया : फिर आखिर तुम क्या चाहते हो? Hur ने जवाब दिया : मैं आपको इब्न-ज्याद के पास ले जाना चाहता हूँ। आपने फरमाया : खुदा की कसम! यह नहीं होगा। Hur ने कहा : फिर बखुदा आप को छोड़ूंगा भी नहीं। यूँ ही तीन मर्तबा रद्द व बदल हुई।

आखिर में Hur ने कहा : मुझे आपसे लड़ने का हुक्म नहीं दिया गया है। मुझे सिर्फ यह हुक्म दिया गया है कि साथ-साथ रहूँ यहां तक कि आप कूफ़ा पहुंच जाएं। अब अगर आप कूफ़ा जाने से इन्कार करते हैं तो एक ऐसा रास्ता इख्तियार कीजिए जो न कूफ़ा की तरफ जाता हो, न मदीना की तरफ। बस मेरे और आपके दर्मियान इन्साफ़ का यही एक तरीका है। इस दर्मियान में मैं इब्न-ज्याद को खत लिखकर उसकी राय मालूम कर लेता हूँ। हजरत इमाम को Hur की यह बात माकूल मालूम हुई। चुनांचे आप कादसीया और उजैब के रास्ते से बाएं समत मुड़कर चलने लगे और Hur भी आपके साथ चलता रहा।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२८)



हजरत इमाम हुसैन का बैजा में खुतबा

हजरत इमाम आली मक़ाम का कारवां चलता रहा और मक़ामे बैजा में पहुँच कर आपने अपने और Hur के साथियों के सामने एक पुरजोश खुतबा दिया। जिसमें आपने फरमाया : लोगो! रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया है कि जो शख्स किसी ऐसे जालिम बादशाह को देखे जो जुल्म व जौर करता हो। सुन्नते रसूल की मुख़ालिफ़त करता हो और

अल्लाह के बन्दों पर गुनाह और ज्यादती के साथ हुकूमत करता हो, तो वह शख्स बकदरे ताकत कौलन व फेलन उसको न बदले तो अल्लाह तआला को हक पहुंचता है कि उसको उस बादशाह की जगह दोजख में दाखिल फरमाएगा।

उसके बाद मौजूदा सूरतेहाल पर तबसिरा फरमाते हुए इरशाद फरमाया : लोगो! तुम्हें मालूम नहीं कि बनी-उमैया ने शैतान की इताअत इख्तियार की और अल्लाह की इताअत से मुंह फेरा। मुल्क में फसाद बरपा कर दिया है। हुदूदे शरा को मुअत्तल कर दिया है। माले गनीमत को अपने लिए मखसूस कर लिया है। इस सूरत में मुझसे ज्यादा किस पर यह फर्ज आइद होता है कि वह इसलाह की कोशिश करे। मेरे पास तुम्हारे खुतूत आए और कासिद पहुंचने की तुमने बैअत कर ली है कि तुम मुझे बैयार व मददगार न छोड़ोगे। पस! अगर तुम अपनी बैअत पूरी करोगे तो राहे रास्त पर पहुंचोगे। मैं अली और फातिमा बिनते रसूल सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का बेटा हुसैन हूं। मेरी शख्सीयत तुम लोगों के लिए नमूना है और अगर तुम ऐसा न करोगे तो अपना अहद और मेरी बैअत तोड़ दोगे। तो वल्लाह! यह भी तुम्हारी जात से बईद और तअज्जुब-अंगेज फेल न होगा। तुम इससे पहले मेरे बाप और मेरे इब्ने उम्म के साथ ऐसा ही कर चुके हो। जिसने भी तुम पर भरोसा किया वह तुम्हारे धोखे में आ गया। तुमने अपने फेल से एक बहुत बुरी मिसाल काइम की है। इन्शाअल्लाह! अन्करीब अल्लाह तआला मुझे तुम्हारी मदद से बेनियाज कर देगा। वस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहु।

यह तकरीर सुनकर हुर् ने कहा : मैं आपको आप ही की जान के बारे में अल्लाह तआला की याद दिलाता हूं और शहादत देता हूं कि अगर आप ने जंग की तो कत्ल कर दिए जाएंगे। हजरत इमाम हुसैन ने फरमाया : क्या तुम मुझे मौत से डराते हो, और क्या तुम्हारी शकावत इस हद तक पहुंच जाएगी कि मुझे कत्ल कर दोगे? मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्या जवाब दूं। मैं सिर्फ वही जवाब दे सकता हूं जो उसके चचाजाद भाई ने उसे उस वक्त दिया था जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहे वसल्लम की मदद को जा रहे थे। और उसने उन्हें कहा था कि तुम कहां जा रहे हो? अगर तुम रसूल की मदद को निकलोगे तो कत्ल कर दिए जाओगे। इस पर उन्होंने यह जवाब दिया।

सअम्जी वमा बिल मौति आरुन अलल

फता : इजा मा नवा खैरन व जाहि द मुसलिमन

मैं अन्करीब अपने मकसद को पूरा करूंगा और मौत जवांमर्द के लिए बाइसे नंग व आर नहीं जबकि उसकी नीयत नेक हो और मुसलमान रह कर जिहाद करे। हुर् ने यह तकरीर सुनी तो अलग हट कर चलने लगा।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२६, अल-हुसैन, अरबी, सफ़ा ११०)

तरमाह बिन अदी की आमद

कारवाने अहले-बैत 'अजीबुल हिजानात' पहुंचा तो इमाम हुसैन और हुर् के लशकर ने एक तीर की मुसाफ़त का फ़ासला दर्मियान में छोड़कर अलग-अलग क्या किया। उसी असना में कूफ़ा के चार आदमी घोड़ों पर सवार वारिद हुए जिनके साथ एक कोतल घोड़ा था। तरमाह इब्ने अदी उनके रहबर थे। और यह शेर पढ़ते हुए आ रहे थे। (तर्जुमा) ऐ मेरी ऊंटनी! तू तुलूए फ़ज्र से पहले हिम्मत से चल खड़ी हो। सब से अच्छे मुसाफ़िरो को सब से अच्छे सफ़र पर ले चले। यहां तक कि शरीफुन्नसब शख्स तक पहुंच जाए जो इज्जत व मर्तबा में बहुत बुलन्द और सखावत व फ़ैयाजी में कुशादा दिल हैं। अल्लाह तआला उसको एक कारे खैर के लिए लाया है। वह उसको रहती दुनिया तक बाकी व सलामत रखे। जब हज़रत इमाम हुसैन ने यह अशआर सुने तो फ़रमाया : खुदा की कसम! मुझे अल्लाह तआला से यही उम्मीद है कि उसकी मशीयत में हम लोगों को क़त्ल होना या फ़तहयाब होना। दोनों अग्रे खैर ही है।

हुर् जो हज़रत इमाम की हर नक़ल व हरकत का निगरां था, आगे बढ़ा और इमाम से कहा : यह कूफ़ा के लोग हैं और आपके साथियों में से नहीं हैं। इसलिए मैं उन्हें कैद कर दूंगा या कूफ़ा वापस कर दूंगा। इमाम ने फ़रमाया : अब जब यह मेरे पास पहुंच ही गए हैं तो उनकी हिफ़ाज़त में अपनी जान की तरह करूंगा। और अब वह मेरे अन्सार व आवान की जमाअत में दाख़िल हो गए हैं। हुर् यह सुनकर ख़ामोश हो गया।

हज़रत इमाम आली मक़ाम ने उनसे अहले कूफ़ा की कैफ़ियत दरयाफ़्त की। मजमा बिन अब्दुल्लाह आयज़ी ने कहा कि कूफ़ा के बड़े आदमियों को रिशवतें दी गई हैं और माल व दौलत से पुर कर दिया गया है। इसलिए वह सब आपके खिलाफ़ मुत्तहिद व मुत्तफ़िक हैं। रह गए दूसरे लोग तो

उनके दिल आपकी तरफ हैं मगर उनकी तलवारें आपके खिलाफ हैं। फिर आपने कैस बिन मुसहिर का हाल दरयाफ्त फरमाया : उन्होंने उनकी जुरते ईमानी और शहादत की तमाम तफसीलात ब्यान कर दीं। कैस की शहादत का हाल सुन कर आपकी आंखों में आंसू डबडबाने लगे और आपने कुरआन पाक की यह आयते करीमा पढ़ी : **फ़मिन्हुम मन कज़ा नहबहू व मिन्हुम मेंयन्तज़िरु व मा बदलू तबदीला।** उसके बाद आपने दुआ फरमाई: **अल्लाहुम्मजअल लना व लहुमुल जन्न त न ज़ ला वज्मअ बै नना व बैनहुम फी मुस्तकिर मिर्हमति क व रगाइब मदखूर सवाबक। ऐ अल्लाह! हमें और उनको नेमते बहिशत अता फरमा और हमें और उनको अपनी रहमत के मुस्तकिर में जमा फरमा। और अपने सवाब के ज़खीरों का बेहतरीन हिस्सा अता फरमा।**

ज़िन्दा हो जाते हैं जो मरते हैं हक के नाम पर

अल्लाह अल्लाह! मौत को किसने मसीहा कर दिया

तरमाह इब्ने अदी का मशवरा

तरमाह बिन अदी ने बारगाहे इमाम आली मक़ाम में अर्ज किया : हुज़ूर! हालात बहुत नाज़ुक सूरते हाल इख़तियार कर गए हैं। मैं चारों तरफ़ नज़र दौड़ाता हूँ मगर मुझे आपके साथ चन्द आदमियों के सिवा कोई लशकर दिखाई नहीं देता। अगर हुर् के साथी, जो आप की पीछे लगे हुए हैं, आप पर टूट पड़ें तो यही काफी रहेंगे। मैंने कूफ़ा से रवानगी से पेशतर वहां लोगों का इतना जम्मे ग़फ़ीर देखा है कि आज तक किसी एक मैदान में कभी न देखा था। मैंने एक शख्स से पूछा कि यह लशकर कहां जाने के लिए जमा हो रहा है? तो उसने कहा : हुसैन के मुक़ाबले के लिए। इसलिए मैं आपका अल्लाह का वास्ता देता हूँ कि अगर हो सके तो एक कदम भी आगे न बढ़ाइए। अगर आप किसी ऐसे मक़ाम पर जाना चाहते हैं जहां अल्लाह तआला आपको हिफ़ाज़त से रखे और जो कुछ आप करना चाहते हैं उसके मुतअल्लिक भी कोई राय और आखिरी फ़ैसला कर लें, तो आप मेरे साथ चलिए। मैं आपको अपने बुलन्द पहाड़ पर, जिससे कोहे आजाह कहते हैं, ले चलूँ। खुदा की क़सम! वह पहाड़ ऐसा है जिस की वजह से हम सलातीन अनान व हमीरा नोमान बिन मुन्ज़िर और हर असवद व अहमर अक़वाम से महफूज़ रहे हैं। वल्लाह हम को कभी कोई मुती नहीं कर सका।

मैं आपके साथ चल कर आपको वहां पहुंचा दूंगा। और फिर कोहे आज्ञाह व सल्मा के वाशिनदों में आपकी दावत पहुंचा दूंगा। खुदा की कसम! दस दिन भी गुजरने न पाएंगे कि आपके पास कबीला तय के सवारों और प्यादों का तीस हजार का लशकर आप के पास जमा हो जाएगा।

हजरत इमाम हुसैन ने तरमाह की मुखलिसाना पेशकश का शुक्रिया अदा किया और उन्हें दुआए खैर दी। लेकिन उनके मशवरे पर अमल करने से माजूरी जाहिर फरमाई। (तबरी जिल्द ५ सफा २३१)

कस्से बनी मकातिल और ख्वाब

अजीबुल हिजानात से चल कर काफिले इमाम कस्से बनी मकातिल में उतरा। थोड़े ही फासले पर हुर्र ने भी क्याम किया। आधी रात के बाद आपने अपने रुफ़का से फरमाया : पानी भर लो और चलो। अभी थोड़ी दूर चले थे कि आप पर गुनूदगी सी तारी हुई। फिर चौंक कर कहा : इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन वल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन। दो या तीन मर्तबा आपने यही कलिमात जुबाने मुबारक से अता फरमाए। यह सुनकर आपके साहबजादे हजरत इमाम जैनुल-आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया : अब्बाजान! मैं आप पर फिदा हो जाऊं। इस वक्त आपने यह कलिमात किस वजह से फरमाए हैं? आपने फरमाया : अभी मेरी आंख लग गई थीं कि मैं ने एक सवार को देखा जो कह रहा था कि यह लोग तो रास्ते पर जा रहे हैं और मौत उनकी तरफ आ रही है। मैं समझता हूं कि इस तरह हमको हमारी मौत की इत्तिला दी गई है। हजरत इमाम जैनुल-आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : बाबा जान! अल्लाह तआला आपको हर बला से महफूज़ रखे, क्या हम लोग हक पर नहीं हैं? आपने फरमाया : उस खुदाए बुजुर्ग व बरतर की कसम जिसकी तरफ सबको लौट कर जाना है, हम हक पर हैं। बहादुर फ़र्जन्द ने कहा : जब हम हक पर हैं तो हमें मौत की क्या परवाह है? हजरत इमाम आली मक़ाम ने फरमाया : बेटा! तुम्हें खुदाए तआला जज़ाए खैर दे। बेहतरीन जज़ा जो किसी बेटे को उसके बाप की तरफ से मिल सकती है।

(तबरी जिल्द ५ सफा २३३)

रंग जब महेश्वर में लाएगी तो तो उड़ जाएगा रंग
यूं न कहिए सुखिए खूने शहीदां कुछ नहीं

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

का नैनवा में क्याम और इब्न-ज़्याद बद निहाद का ख़त

सुबह हुई और बाद नमाज़े फ़ज्र कारवाने इमाम आली मक़ाम ने आगे बढ़ना शुरू किया। हुर् भी आपके साथ-साथ था। यहां तक कि काफ़िला मैदाने नैनवा में पहुंचा तो कूफ़ा की तरफ़ से एक सवार आता दिखाई दिया। सब ठहर कर उसका इन्तिज़ार करने लगे। जब वह पहुंचा तो उसने हुर् और उसके साथियों को तो सलाम किया लेकिन इमाम हुसैन और आपके साथियों को सलाम करना ज़रूरी न समझा और उनकी तरफ़ से मुंह फेर कर इब्न-ज़्याद का ख़त जो हुर् के नाम था, दिया। उसमें लिखा था मेरा कासिद और मेरा ख़त तुम्हें जिस वक़्त पहुंचे हुसैन पर बहुत सख़्ती करो और उन्हें आगे बढ़ने से रोक दो। और एक ऐसे चट्टान में उतरने पर मजबूर करो जहां कोई पनाह की जगह न हो और न पानी हो। मैंने अपने कासिद को हुक्म दिया है कि वह तुम्हारे साथ-साथ रहे और तुम्हारी कारगुज़ारी की मुझे इत्तिला दे। तुम से अलग न हो जब तक मेरे हुक्म की तामील न हो जाए। हुर् ने यह ख़त हज़रत इमाम हुसैन और आपके रुफ़का को सुना दिया। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : अच्छा हमको ज़रा आगे बढ़कर सामने वाले गांव गाज़रिया या रीया में ठहरने दो। हुर् ने कहा : हमें तो चटयल मैदान में, जहां आब व ग्याह न हो, ठहराने का हुक्म दिया गया है। इब्न-ज़्याद का निगरा भी हमारे साथ है जो हमारे हर तर्ज़े अमल की इत्तिला उसको जाकर देगा। हुर् के इस जवाब पर इमाम हुसैन के असहाब में जोश पैदा हो गया। ज़हीर बिन कीन ने कहा : फ़र्ज़न्दे रसूल! इनसे जंग कर लेना हमारे लिए आसान है बनिस्बत उन लोगों के जो इनके बाद आएंगे। क्योंकि इनके बाद इतनी फ़ौजें आएंगी कि उनसे मुकाबला की हममें ताक़त न होगी। मगर इमाम ने फ़रमाया : हम अपनी तरफ़ से जंग की इब्तिदा नहीं करेंगे। फिर इमाम हुसैन ने हुर् से फ़रमाया : अच्छा कुछ तो चलने दो; हुर् ख़ामोश रहा और आप बाएं तरफ़ चल पड़े। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३४—अल हुसैन (अरबी) सफ़ा ११६)



हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सरज़मीने करबला में क्याम

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु बाएं तरफ़ मुड़कर थोड़ा-सा बलें थे कि हुर् के सिपाहियों ने आकर रोक दिया और कहा बस यहीं उतर पड़िए। फ़ुरात यहां से दूर नहीं है। हज़रत इमाम ने पूछा : इस जगह का क्या नाम है? लोगों ने कहा : इसका नाम करबला है। आपने फ़रमाया अच्छा कर्ब व बला की यही मन्ज़िल है। यह कह कर घोड़े से उतर पड़े और फ़रमाया हाज़िही करबलाऊ मौज़उ करबिउं व बलाइन हा जा मनाखु रिकाबिना व महत्तु रिहालिना व मक्तलु रिजालिना यह करबला है जो मक़ामे कर्ब व बला है, यही हमारे माल व असबाब उतरने की जगह और हमारे ऊंटों की बैठने की जगह और हमारे आवान व अन्सार के क़त्ल होने की जगह है। यह मुहर्रहम सन् ६१ हिजरी २ तारीख़ बरोज़ पंजशंबा जुमेरात मुताबिक २० अक्टूबर सन् ६८१ ई० का दिन था।

(सआदतुल-कौनैन सफ़ा ६८ अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा ११७ 'तारीखे तबरी' जिल्द ५ सफ़ा २३६)

जब हुर् ने इब्न-ज़्याद के ख़त की तामील करते हुए हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को करबला में उतरने पर मजबूर कर दिया तो उसने इब्न-ज़्याद को उसकी इत्तिला कर दी। यह वह वक़्त था जबकि मुल्के ईरान में वैलमियों (कुर्दों) ने बगावत कर दी थी। उस वक़्त बगावत को फ़रो करने के लिए इब्न-ज़्याद ने मशहूर सहाबी हज़रत साद बिन वकास रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे अमरु बिन साद को चार हज़ार फ़ौज का सरदार बना कर और रैय की हुकूमत का परवाना लिखकर रवाना कर दिया था। इब्न-साद अपने फ़ौज के साथ निकल कर मक़ामे हम्माम आयुन तक ही पहुंचा था कि इब्न-ज़्याद ने उसे वापस बुलाकर हुक्म दिया कि पहले हुसैन की जो मुहिम दरपेश हुई है उसे सर करो, उसके बाद ईरान की तरफ़ रवाना होना।

अमरु इब्ने साद एक सहाबी का बेटा था। इस निस्बत से वह ख़ूब जानता था कि इमाम नवासए रसूल हैं और उनसे जंग करना गोया अपने आप को आतिशे जहन्नम में डालना होगा। इसलिए उसने इब्न-ज़्याद से

कहा : मुझे इस अम्र से अलग कर दीजिए तो बेहतर होगा। इब्न-ज्याद ने कहा : अगर हुसैन के मुकाबले के लिए नहीं जाते तो रैय की हुकूमत का परवाना, जो तुम्हारे नाम लिखा गया है, उसे वापस कर दो। इब्न-साद ने उस मामले पर गौर करने के लिए एक दिन की मोहलत मांगी। फिर आखिर दुनयवी हुकूमत की लालच में आकर इमामे आली मक़ाम से मुकाबला के लिए तैयार हो गया। और वही चार हजार का लश्कर जो मुल्के ईरान के लिए तैयार था उसे साथ लेकर तीसरी मुहर्रम को करबला पहुंचा। यहां तक कि इब्न-साद के पास बाईस हजार का लश्कर जमा हो गया। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३६)

इब्न-साद करबला पहुंच कर उरवा बिन कैस अल-अहमसी को हुक्म दिया कि वह हज़रत इमाम हुसैन के पास जाए और उनसे पूछे कि वह किस ग़र्ज से यहां आए हैं और क्या चाहते हैं? उरवा उन लोगों में से था जिन्होंने ख़त लिखकर आपको कूफ़ा बुलवाया था इसलिए उसे शर्म महसूस हुई। उसने यह ख़िदमत बजा लाने से इन्कार कर दिया। उसके इन्कार के बाद दूसरे लोगों के सुपुर्द यह काम किया गया। लेकिन उनमें से हर शख्स हज़रत इमाम हुसैन को बुलाने वालों में शामिल था इसलिए कोई भी आपके पास जाने पर आमादा न हुआ। आखिरकार अमरू बिन साद ने कुरह बिन सुफ़ियान हन्ज़ली को आपके पास भेजने के लिए तैयार कर लिया। और उससे कहा कि तुम सिर्फ़ इमाम हुसैन से यह पूछना कि यहां आने से आपकी ग़र्ज क्या है? चुनांचे कुरह बिन सुफ़ियान हज़रत इमाम के पास आया और यही सवाल किया। आपने उससे फ़रमाया : तुम्हारे शहर वालों ने पै-दर-पै खुतूत लिखकर मुझे बुलाया। अब अगर तुम्हें मेरा आना पसंद नहीं है तो मैं वापस चला जाऊंगा। जब अमरू बिन साद को हज़रत इमाम आली मक़ाम का यह जवाब मिला तो उसने अपना सवाल और इमाम आली मक़ाम का जवाब लिखकर इब्न-ज्याद के पास भेज दिया।

ख़त पहुंचा। इब्न-ज्याद ने पढ़ा। और गुरूर व. तकब्बुर और जुल्म व सफ़ेफ़ाकी के जज़्बे के तहत उसने यह शेर पढ़कर अपनी तारीक ज़ेहनीयत का सुबूत दिया :

अलआन इज़ अतक़त मुख़ालिबुना बिही

यरजुन्नजा. त वला त ही न मनास

यानी अब जबकि हमारे पंजों ने उसे जकड़ लिया है तो निकलना

चाहता है हालांकि अब कोई जाए फ़रार नहीं। यह कह कर उसने इब्न-साद को जवाब लिखा।

तुम्हारा ख़त मिला। तुमने जो कुछ तहरीर किया है, मैं उसे अच्छी तरह समझ गया हूँ। तुम हुसैन और उसके तमाम साथियों से कहो कि वह यज़ीद की बैअत करें। अगर वह बैअत कर लें तो उसके बाद हम जो मुनासिब समझेंगे करेंगे। इब्न-साद को जब यह ख़त मिला तो उसने कहा : मैं समझ गया कि इब्न-ज़्याद को आफ़ियत और अमन मन्ज़ूर नहीं।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३७)

हज़रत इमाम हुसैन और साथियों पर पानी बन्द

सातवीं मुहर्रम को इब्न-ज़्याद का दूसरा ख़त अमरु बिन साद के पास पहुंचा जिसमें यह हुक्म लिखा हुआ था कि —

“हुसैन और उनके साथियों पर पानी बन्द कर दो। इस तरह कि उन्हें एक क़तरा पानी न मिलने पाए। जैसा कि अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उसमान बिन अफ़फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ किया गया था।”

उस ख़त को देखते ही अमरु बिन साद ने अमरु बिन हज्जाज जुबैदी को पांच सौ (५००) सवारों की फ़ौज के साथ नहरे फ़ुरात पर मुक़र्रर कर दिया और ताकीद कर दी कि हज़रत हुसैन और उनके साथियों तक पानी का एक क़तरा भी न पहुंचने पाए।

**हाकिम का हुक्म यह है कि पानी बशर पिएं
घोड़े पिएं, सवार पिएं और शूतुर पिएं
काफ़िर तलक पिएं तो मना तुम न कीजियो
पर फ़ातिमा के लाल को पानी न दीजियो**

तारीख़ी किताबें इस बात की गवाह हैं कि इमाम हुसैन की शहादत से तीन रोज़ क़बल पानी बन्द कर दिया गया था।

अब्दुल्लाह इब्ने अबी हुसैन अज़्दी ने पुकार कर कहा : ऐ हुसैन! देखते हो, यह पानी नीला-नीला आसमानी रंग का, किस तरह बह रहा है। लेकिन खुदा की क़सम! तुम्हें इससे एक क़तरा भी नसीब नहीं होगा और तुम इसी तरह प्यासे ही मर जाओगे। (मआज़ल्लाह!) यह सुनकर आपने फ़रमाया : अल्लाहुम्मक़्तलहु अतशौ वला तग़फ़िर अ बदन ऐ अल्लाह! उसको प्यास की हालत में मार और उसको हरगिज़ कभी न बख़्शना।

बाद अजी यह बे-अदब गुरताख बीमार पड़ा। हगीद दिन मुरिलम कहते हैं मैं उसकी अयादत को गया, तो खुदाए वहदहू ला शरीक की कसम! मैंने उसे देखा कि पानी पीता और कय कर देता। फिर प्यास— प्यास कहता। उसको पानी दिया जाता मगर सैराब न होता यहां तक कि उसी हालत में मर गया।
(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३६)

इमाम आली मक़ाम और अमरू बिन साद की मुलाक़ात

हज़रत इमाम आली मक़ाम हरगिज़—हरगिज़ इस बात को पसंद नहीं फ़रमाते थे कि मुसलमानों के दर्मियान खूरेजी हो और उसका धब्बा मेरे ऊपर लगाया जाए। इसलिए आपने इतमाम हुज्जत के लिए दोबारा खुद अपनी जानिब से सुलह की गुफ़्तगू का आग़ाज़ फ़रमाया और उमरू बिन कुर्ज़ा बिन काब अन्सारी के ज़रिए इब्न—साद को यह पैग़ाम भेजा कि आज रात हम तुमसे मिलना चाहते हैं। इब्न—साद ने यह बात मान ली और रात के वक़्त बीस सवारों के साथ लशकरे इमाम हुसैन के सामने आया। हज़रत इमाम हुसैन भी इतने ही साथियों के साथ तशरीफ़ लाए। मगर जब करीब पहुंचे तो आपने अपने साथियों को हटा दिया। उसके बाद इब्न—साद ने भी अपने साथियों को अलाहदगी का हुक्म दे दिया। दोनों में काफी रात गए तक गुफ़्तगू होती रही। जिसको किसी ने नहीं सुना। फिर दोनों अपने—अपने साथियों के साथ अपनी—अपनी क़्यामगाह में आ गए।

इस गुफ़्तगू के मुतअल्लिक किसी को सही इल्म नहीं है कि यह गुफ़्तगू क्या थी लेकिन लोगों ने मुख़तलिफ़ क़्यासात लगाए हैं। पहली रिवायत जो लोगों ने अपने—अपने वहम व गुमान से ब्यान की है वह यह है कि हज़रत इमाम हुसैन ने यह तजवीज़ पेश की कि हम दोनों अपनी—अपनी फौजों को छोड़कर यज़ीद के पास चले चलें। इब्न—साद ने कहा कि मुझे खौफ़ है कि ऐसा करने से मेरा मकान गिरा दिया जाएगा और मेरी सारी जायदाद छीन ली जाएगी। इमाम हुसैन ने फ़रमाया : मैं तुम्हें उससे अच्छा मकान बनवा दूंगा और उससे अच्छी जायदाद दूंगा जो हिजाज़ में है। लेकिन इब्न—साद किसी कीमत पर तैयार न हुआ। दूसरी क़्यासी रिवायत यह ब्यान की जाती है कि हज़रत इमाम हुसैन ने यह तीन बातें पेश कीं :

(१) मैं जहां से आया हूँ मुझे वहीं चले जाने दो। (२) मुझे मम्लकते इस्लाम के किसी भी सरहदी मक़ाम पर ले चलो, मैं वहीं रह कर वक़्त

गुज़ार लूंगा। (३) मुझको सीधा यज़ीद के पास भेज दो, उससे मिल कर मैं अपना मामला तय कर लूंगा। एक वहमी कौल यह पेश किया जाता है कि आपने यह फरमाया कि मैं यज़ीद के हाथ में हाथ दे दूंगा।

मुसन्निफ़ तारीखे तबरी ने उन दोनों रिवायतों को लोगों का वहम व गुमान बताया है। और आगे लिखते हैं कि यह बातें हरगिज़—हरगिज़ हज़रत इमाम हुसैन ने नहीं कहीं, यह लोगों का ख़्याल है। बल्कि सही रिवायत यह है कि इमाम हुसैन ने यह फरमाया कि मुझे इस वसी व अरीज़ ज़मीन में से किसी तरफ़ निकल जाने दो। मैं देखूंगा कि अन्जाम क्या होता है।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २४०)

मुअल्लिफ़े सियरुस्सहाबा मौलाना शाह मुईनुद्दीन नदवी ने भी दूसरी रिवायत के मुतअल्लिक़ लिखा है कि यह रिवायतन और दिरायतन दोनों हैसियतों से कमज़ोर और नाक़ाबिले एतबार है। इसकी रिवायती हैसियत यह है कि इस रिवायत का एक रावी मुजाहिद बिन सईद मुहद्देसीन के नज़दीक पायए एतबार से साक़ित है। अल्लामा हाफ़िज़ ज़हबी और इब्ने हजर दोनों ने इस पर जिरह की है और उसको नाक़ाबिले एतबार करार दिया है। उसके अलावा उक़बा बिन समआन का ब्यान है कि मैं मदीना से मक्का और मक्का से इराक़ तक बराबर हज़रत इमाम हुसैन के साथ रहा। शहादत तक उन से जुदा नहीं हुआ। मगर आप ने मदीना में, मक्का में, रास्ता में, इराक़ में, लश्करगाह में — गर्ज शहादत तक कहीं भी किसी गुफ़्तगू में कोई ऐसा ख़्याल ज़ाहिर नहीं फरमाया जिससे यह मालूम होता कि आप यज़ीद के हाथ में हाथ देने या किसी सरहदी मक़ाम पर बस जाने के लिए आमादा थे। आपने हमेशा यही फरमाया कि मुझे इस वसी व अरीज़ ज़मीन में से किसी तरफ़ निकल जाने दो। अल्लाह की ज़मीन बहुत वसी है और मैं उस वक़्त तक वहां रहूंगा जब तक लोग कोई फैसला न कर लें। दिरायती हैसियत यह है कि इब्न—ज़्याद का तो यही हुक्म था कि अगर हुसैन बैअत कर लें तो फिर उनसे कोई तअरुज न किया जाए। इब्ने—साद भी दिल से चाहता था कि किसी तरह जंग की नौबत न आए। चुनांचे उसने उसे टालने की पूरी कोशिश की थी और इब्न—ज़्याद को लिखा था कि हुसैन वापस जाने पर आमादा हैं और यज़ीद से बैअत करने पर तैयार हैं। तो फिर इब्न—साद और इब्न—ज़्याद का उसको कुबूल न करना और आपके साथ लड़ाई कर के आपको और आपके रुफ़का को शहीद

कर देना क्या माने रखता है ? (शियरुरसहावा जिल्द ६ सफा १४७)

नोट : नदवी गरलाक वालों को अपने आलिम की उस इबारत से सबक हासिल करना चाहिए। ख़ास तौर से औरंगाबाद (महाराष्ट्र) दारुल-उलूम काशिफुल उलूम के एक मुदरिस ने जो मुअल्लिफ़े किताब की हिमायत की है। इस इबारत को पढ़कर अपनी ग़लती से तौबा व इस्तिग़फ़ार करना चाहिए।

हज़रत इमाम हुसैन से मुलाकात करने के बाद इब्ने साद को यह कहना पड़ा कि आप सुलह के रास्ते पर ग़ामज़न हैं। उसने बहुत खुश होकर इब्न-ज़्याद को ख़त लिखा और हज़रत इमाम हुसैन की इस शर्त मसालिहत से इत्तिला दी कि खुदाए तआला ने आग के शोले को बुझा दिया। मुसलमानों के शीराज़ा को बिखरने से बचा लिया है और इत्तिफ़ाक़ पैदा फ़रमा दिया। इब्न-साद को यह ख़त इब्न-ज़्याद के पास पहुंचा तो ख़त पढ़कर इब्न-ज़्याद ने कहा : यह ख़त एक ऐसे शख्स का है जो अपने अमीर का ख़ैर ख़्वाह और अपनी क़ौम पर मेहरबान है। अच्छा मैं इस तजवीज़ को कुबूल करता हूँ। यह सुनकर बदबख़्त शमरज़ील जौशन खड़ा हुआ और कहा : आप यह बात उनकी कुबूल कर रहे हैं। जबकि वह आपके कब्ज़े में आ चुके हैं। वल्लाह! अगर हुसैन हाथ से निकल गए और उन्होंने आपकी इताअत कुबूल न की तो वह आगे चल कर ज़रूर कुव्वत व शौकत हासिल कर लेंगे और आप कमज़ोर व आजिज़ हो जायेंगे। मेरी राय में तो आप उन्हें यह क़द्र व मन्ज़िलत हासिल करने का मौक़ा न दें बल्कि आप उन्हें हुक्म दें कि वह और उनके साथी अपने आपको हमारे हवाले कर दें। इस सूरत में अगर आप उन्हें सज़ा देंगे तो सज़ा देना आप का हक़ होगा और अगर माफ़ कर देंगे तो इसका भी आपको इख़्तियार है। वल्लाह! मुझे तो मालूम हुआ है कि हुसैन और इब्न-साद दोनों लशकरों के दर्मियान रात-रात भर बैठे बातें किया करते हैं।

शिमर ख़बीस की उस खुशामदाना और फ़ितना-परवर तकरीर से इब्ने ज़्याद की राय बदल गई। उसने कहा : ऐ शिमर! तुमने अच्छी राय दी है। और फिर इब्न-साद को लिखा कि मैंने तुम्हें इस लिए नहीं भेजा कि तुम हुसैन के बचाने की फ़िक्र करो और सिफ़ारशी बन कर उनकी सलामती चाहो। देखो, अगर हुसैन और उनके साथी मेरे हुक्म के सामने सरे तरस्लीम ख़म करें तो उनको मेरे पास भेज दो और अगर वह इन्कार करें तो उन पर हमला कर दो। उनके सर काट कर मेरे पास रवाना करो और हुसैन

को लार कर डोढ़े डोढ़ कर रौंद डाले। इसलिए कि वह इसी के मुल्तहिब है। अगर तुम्हने हमारे अहकाम की तामील की तो हम तुम्हें बेरा करार इनामात से नवाजेंगे और अगर तुम्हें यह मन्ज़ूर न हो तो हमारा लशकर शिम्र के हवाले कर दो और खुद अलग हो जाओ।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २४०)

जब शिम्र ने इब्न-ज्याद का ख़त अमरु बिन साद को लाकर दिया तो उसने पढ़कर कहा। खुदा तुझे ग़ारत करे। तू मेरे पास यह क्या लाया है? वल्लाह! मैं समझता हूँ कि तूने ही इब्न-ज्याद को मेरे मशवरा पर अमल करने से रोक दिया और इस बात को बिगाड़ दिया जिसके बन जाने की उम्मीद थी। खुदा की क़सम! हुसैन कभी इब्न-ज्याद के सामने नहीं झुंकेंगे। उनके पहलू में एक खुद्दार दिल है। शिम्र ने कहा : इन बातों को जाने दो। यह बताओ अब क्या करोगे? अमीर के हुक्म की तामील करके उनके दुश्मनों को क़त्ल करोगे या लशकर मेरे हवाले करोगे? इब्न-साद दुनिया पर जान देने वाला और रैय की हुक्मत का मुतमन्नी था। उसने कहा : मैं लशकर तुम्हारे सुपुर्द नहीं करूंगा। बल्कि यह मुहिम मैं खुद सर करूंगा। तुम पैदल फ़ौज की निगरानी करो।

एक रात की मोहलत : ६ मुहर्रमुल-हराम सन् ६० हिजरी बरोज़ जुमेरात शाम के वक़्त इब्न-साद ने अपने साथियों को हमला करने का हुक्म दिया। उस वक़्त हज़रत इमाम आली मक़ाम अपने ख़ेमा के दरवाज़े पर तलवार का सहारा लेकर घुटनों पर सर रखे बैठे थे कि आपकी आंख लग गई थी। अचानक फ़ौज के शोर व गुल की आवाज़ सुनकर आपकी बहन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा परदे के पास आई और इमाम आली मक़ाम को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया : देखिए दुश्मन के फ़ौज की आवाज़ बहुत नज़दीक से आ रही है। आपने सर उठाया और फ़रमाया : मैं ने अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम अन्क़रीब हमारे पास आने वाले हो। हज़रत ज़ैनब ने यह सुनकर रोते हुए कहा या वैलताह (हाय मुसीबत!)। आप ने फ़रमाया : तुम्हारे लिए मुसीबत नहीं। अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमाए। सब्र करो और ख़ामोश रहो। अभी यह गुफ़्तगू हो ही रही थी कि हज़रत अब्बास ने आकर इत्तिला दी कि फ़ौजे आदा ने हमला कर दिया है। यह सुनकर हज़रत इमाम आली मक़ाम अपनी जगह से उठे और फ़ौजे आदा की तरफ़

जाने लगे तो हजरत अब्बास ने कहा : नहीं, आप नहीं, मैं जाता हूँ। आप ने फरमाया : मगर यह पूछ लेना कि इस वक्त हमला का सबब क्या है? हजरत अब्बास यजीदी फौज के सामने आए और पूछा : जवाब मिला इब्न-ज्याद का हुक्म है कि आपलोग उसकी इताअत करो या फिर जंग के लिए तैयार हो जाओ। हजरत अब्बास ने कहा : ज़रा ठहरो, जल्दी न करो, मैं इब्ने रसूलुल्लाह को तुम्हारे मकसद से आगाह करता हूँ। उन्होंने इमाम को इब्न-साद और उनके साथियों के मकसद से आगाह किया तो आपने फरमाया : उन लोगों से कहो कि एक रात की मोहलत दें ताकि आज रात भर हम अच्छी तरह नमाज़ पढ़ लें, दुआए मांग लें और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लें। अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मुझको नमाज़, दुआ और इस्तिग़फ़ार से कितनी मुहब्बत है। हजरत अब्बास ने जाकर इब्ने साद के दरता से कहा कि हमें एक रात की मोहलत दो। इब्न-साद ने शिमार और दूसरे साथियों से पूछा तो सब ने मोहलत की राय दी। इब्न-साद ने सब साथियों से मशवरा करने के बाद हजरत अब्बास से कहा हम लोगों ने तुम्हें कल तक मोहलत दे दी है। यह कह कर इब्न-साद वापस चला गया। हजरत इमाम आली मक़ाम ने अपने साथियों को जमा कर के हस्वे ज़ैल खुतबा दिया।

खुतबा-ए-इमाम आली मक़ाम

तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं और आराम व तकलीफ़ हर हाल में उसका शुक्र है। ऐ अल्लाह! मैं तेरा शुक्र अदा करता हूँ कि तूने हमें (अहलेबैत) को नुबूवत की इज्जत अता फ़रमाई। कुरआन का इल्म अता फ़रमाया और दीन की समझ-बूझ अता की। सुनने वाले कान, देखने वाली आंखें, और दाना दिल की नेमतों से मालामाल फ़रमाया। उसके बाद हजरत इमाम ने फ़रमाया : मैं दुनिया में किसी के सन्धियों को अपने साथियों से ज्यादा वफ़ादार और बेहतर नहीं जानता और मैं किसी के घर वालों को अपने घर वालों से ज्यादा निकोकार और तिनकारही करने वाला देखता हूँ। खुदाए बुजुर्ग व बरतर तुम सबको मेरे लिये सज्जाए खैर अता फ़रमाए। सुन लो! मैं यकीन रखता हूँ कि उन दुश्मनों के हाथों सुबह हमारी शहादत है। इसलिए मैं तुम सबको बख़ुशी इजाज़त देता हूँ कि रात की तारीकी में जहां तुम लोगों का जी चाहे चले जाओ। मेरी बरफ़ से कोई मलामत और रोक नहीं होंगी। बिला शुक्क यह लोग मेरे ही कत्ल के तालिब

हैं और जब मुझे क़त्ल कर लेंगे तो किसी दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह नहीं होंगे।

इस ख़ुतबा को सुनकर सबसँ पहले हज़रत अब्बास, फिर आपके दूसरे भाईयों, बेटों, भतीजों और भांजों ने एक-जुबान होकर कहा : क्या हम सिर्फ़ इसलिए चले जाएं कि आपके बाद ज़िन्दा रहें। ख़ुदा हमें वह दिन न दिखाए। इसके बाद इमाम आली मक़ाम ने ख़ास तौर से औलादे अक़ील की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि मुस्लिम की शहादत तुम्हारे लिए काफी है। इसलिए मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ कि तुम चले जाओ। लेकिन बा-हमिय्यत भाईयों ने कहा : हम, लोगों को क्या जवाब देंगे? क्या हम उन्हें यह कहेंगे कि हम अपने सरदार, अपने आका, और बेहतरीन इब्न-अम को दुश्मनों के नर्गे में छोड़कर आए हैं। न हमने उनके साथ मिलकर कोई तीर चलाया, न नेज़ा मारा, न तलवार का कोई वार किया। और फिर हमें यह भी नहीं मालूम कि उनका क्या हश्र हुआ ? ख़ुदा की क़सम! हम हरगिज़ ऐसा नहीं करेंगे बल्कि हम अपनी जानें, अपना माल और अपने अहल व अयाल सब आप पर कुर्बान कर देंगे। आपके साथ होकर आपके दुश्मनों से लड़ेंगे जो अन्जाम आपका होगा, वही हमारा होगा। ख़ुदा वह ज़िन्दगी न दे जो आपके बाद हो।

उसके बाद असहाब में से हज़रत मुस्लिम बिन औसजा खड़े हुए और कहा : हम आपको छोड़कर चले जाएं! यह हमसे हरगिज़ नहीं हो सकता। ख़ुदा की क़सम! मैं दुश्मनों से नेज़ा के साथ जंग करूंगा, यहां तक कि मेरा नेज़ा उनके सीनों में टूट जाए। और तलवार चलाऊंगा जब तक उस का क़ब्ज़ा मेरे हाथ में ठहर सके। ख़ुदा की क़सम! अगर मेरे पास हथियार न होंगे तो मैं पत्थर मार-मार कर दुश्मनों से लड़ूंगा और आप पर अपनी जान निसार कर दूंगा।

उसके बाद हज़रत सईद बिन अब्दुल्लाह हन्फ़ी ने कहा : ख़ुदा की क़सम! हम आपका साथ नहीं छोड़ेंगे। जब तक अल्लाह तआला की बारगाह में यह साबित न कर लें कि हमने रसूले-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम के बाद आप के नवासे की कैसी हिफ़ाज़त की है ? ख़ुदा की क़सम! अगर मुझको यह मालूम हो जाए कि मैं क़त्ल हो जाऊंगा, फिर ज़िन्दा किया जाऊंगा, और फिर जीते जी जला दिया जाऊंगा और मेरी राख़ हवा में मुन्तशिर कर दी जाएगी और उसी तरह सत्तर मर्तबा मेरे साथ

होगा तब भी मैं आप का साथ न छोड़ूंगा। और यह तो एक ही मरतबा क़त्ल होना है। उसके बाद वह दायमी इज़्ज़त है जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं है।

उसके बाद हज़रत जुहैर बिन कीन खड़े हुए और कहा : मेरी तो यह आरज़ू है कि मैं क़त्ल किया जाऊं फिर ज़िन्दा किया जाऊं, और फिर क़त्ल किया जाऊं। ऐसे ही मेरे साथ हज़ार मरतबा हो, मगर किसी तरह खुदाए तआला आपको और आपके अहले बैत के नौजवानों को बचा ले।

ग़र्ज़ यह कि इसी तरह आपके हर रफ़ीक़ और जां-निसार ने अपनी-अपनी अकीदत और जां-निसारी का इज़हार किया। उसके बाद आप और आपके तमाम साथियों ने नमाज़ व दुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार में सारी रात गुज़ार दी। उसके साथ ही ख़ेमों की पुश्त पर ख़न्दक़ खोद कर लकड़ियां भर दीं ताकि बवक्ते जंग उनमें आग लगा दी जाए तो दुश्मन पीछे से हमला न कर सके।

इधर दुश्मनों के घोड़े बराबर ख़ेमों के गिर्द चक्कर लगाते रहे ताकि कोई शख्स बच कर निकल न सके।

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २४५)



करबला में क़यामते सुवारा

दसवीं मुहर्रम सन् ६१ हिजरी के दिलदोज़ वाकिआत

आशूरए मुहर्रम की रात ख़त्म हुई और दसवीं मुहर्रम सन् ६१ हिजरी मुताबिक २८ अक्टूबर सन् ६८१ हिजरी की क़यामत-नुमा सुबह नमूदाए हुई। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने अहले बैत और अपने तमाम साथियों के साथ नमाज़े फ़ज़्र निहायत ख़ुशू व ख़ुजू के साथ अदा फ़रमाई। पेशानियों ने सज्दे में ख़ूब मज़े लिए और जुबानों ने क़िरअत द तस्बीहात के लुत्फ़ उठाए। यह शुहदाए करबला की आखिरी नमाज़ थी। नमाज़ के बाद इमाम पाक ने सबके लिए सब्र व इस्तिक़ामत की दुआ मांगी। अब दसवीं मुहर्रम का सूरज अन्क़रीब निकलने वाला था। हज़रत इमाम आली मक़ाम और आपके तमाम रूफ़का व अहले-बैत तीन दिन के भूखे प्यासे हैं। एक लुक़मा किसी की हलक़ के नीचे नहीं उतरा। और न एक कतरा पानी किसी को मुयस्सर हुआ। भूख व प्यास से जिस क़दर जोफ़ व तवानाई का ग़ल्बा हो जाता है वही लोग कुछ अन्दाज़ा कर सकते हैं जिन्हें कभी दो-तीन वक़्त फ़ाक़े की नौबत आई हो। उसके अलावा वतन से दूर परदेस और तेज़ धूप, गरम रेत और गरम हवाएं इन सब ने नाज़ परवरगाने आग़ोशे रिसालत को कैसा पज़मुर्दा कर दिया होगा। उन लोगों पर जुल्म व जफ़ा का पहाड़ तोड़ने के लिए बाईस हज़ार का ताज़ा दम लशकर मौँजूद है। बग़ैर इत्तिला के यज़ीदियों ने जंग का नक्क़ारा बजा दिया। आकाए दो ज़हां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़र्ज़न्द और फ़ातिमा जुहरा के जिगरबन्द को मेहमान बना कर बुलाने वाली कौम ने जानों पर खेलने की दावत दी। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मैदाने कारज़ार में तशरीफ़ ले गए और ख़ुतबा फ़रमाया :

हम्द व सलात के बाद आपने फ़रमाया : लोगो! मेरे हसब व नसब पर गौर करो कि मैं कौन हूँ? फिर अपने गिरीबानों में मुँह डाल कर सोचो कि

तुम्हें मेरा खून बहाना और मेरी तौहीन करना जायज है? क्या मैं तुम्हारे नबी का नवासा नहीं हूँ? क्या मैं आप (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) के चचा-जाद भाई हजरत अली का फ़र्जन्द नहीं हूँ? क्या सैयदुश्शुहदा हजरत हमजा मेरे वालिदे बुजुर्गवार के चचा और हजरत जाफ़र तय्यार खुद मेरे चचा नहीं हैं? क्या तुममें से किसी ने यह नहीं सुना कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने मेरे और मेरे भाई के बारे में फ़रमाया है कि यह दोनों जन्नती जवानों के सरदार हैं। अगर तुम मेरी बात को सच समझते हो और हकीकत में वह सच ही है इसलिए कि मैं कभी झूठ नहीं बोलता और अगर तुम मेरी बात को झूठी समझते हो तो अब भी इस्लामी दुनिया में जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी, अबू-सईद खुदरी, अनस बिन मालिक, सहल बिन साद साअदी और जैद बिन अरक़म मौजूद हैं उनसे पूछ लो। तुम मुझे बताओ कि क्या यह हदीस तुम्हें मेरा खून बहाने से रोकने के लिए काफी नहीं है?

शिमर ज़िल-जौशन बदबख़्त ने आपके ख़ुतबे में मुदाख़िलत करते हुए कुछ बदतमीज़ी की तो हबीब इब्ने मज़ाहिर ने उसे सख़्त जवाब देते हुए कहा कि अल्लाह ताअला ने तेरे दिल पर मोहर लगा दी है। इसलिए तू समझ नहीं पा रहा है कि हजरत इमाम क्या फ़रमा रहे हैं? शिमर और हबीब की गुफ़्तगू के बाद इमाम आली मक़ाम ने फिर फ़रमाया : ऐ लोगो! अगर तुम्हें इस हदीस की सेहत में कुछ शक हो तो क्या इसमें भी शक है कि मैं तुम्हारे रसूल का नवासा हूँ। खुदा की क़सम! इस वक़्त मशरिक व मगरिब में कोई भी नबी का नवासा मेरे सिवा मौजूद नहीं है। न तुममें और न तुम्हारे सिवा दूसरी कौमों में। और मैं तो खुद तुम्हारे ही नबी का नवासा हूँ। ज़रू गौर तो करो कि मेरे क़त्ल पर तुम कैसे आमादा हो गए? क्या मैं ने किसी का क़त्ल किया है? या किसी का माल हलाक कर दिया है या किसी को ज़ख्मी किया है जिसका क़सास तुम मुझसे लेना चाहते हो?

जब मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से कोई जवाब नहीं मिला तो आपने पुकार कर कहा : ऐ! शीश बिर रबई! ये हजार बिन अल जबर! ऐ कैस बिन अशअस! क्या तुम लोगों ने मुझे ख़त लिखकर नहीं बुलाया था? उन्होंने कहा : हमने कोई ख़त आपको नहीं लिखा था। आपने फ़रमाया तुम लोगों ने लिखा था, ज़रूर लिखा था। अच्छा अगर बफ़र्ज महाल नहीं भी लिखा था और तुम लोग नहीं चाहते थे कि मैं इधर आऊँ तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी ऐसी जगह चला जाऊँ जहाँ अम्न व अमान की ज़िन्दगी गुज़ार सकूँ।

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २५१)

कैस बिन अशअस ने कहा : तुम अपने कराबंतदार इब्न-ज्याद के सामने सर झुका दो फिर आप के साथ कोई ना-पसंदीदा सुलूक नहीं होगा।

आपने फरमाया : तुम ऐसा क्यों न कहोगे। तुम मुहम्मद बिन अशअस ही के भाई तो हो। क्या तुम्हारे लिए यह काफी नहीं कि मुस्लिम बिन अकील के खून की जिम्मेदारी तुम पर ही है। खुदा की कसम! मैं जिल्लत के साथ अपना हाथ तुम्हारे हाथ में नहीं दूंगा। और न गुलामों की तरह इताअत का इकरार करूंगा।

मुखालिफ़ फौज के मानने की पहले से ही उम्मीद न थी। मगर इमाम हुसैन को अपना फर्ज पूरा करना था, वह हो गया। फिर ऊंटनी बैठाकर उतर पड़े और उकबा बिन सम्आन को हुक्म दिया कि उसे बांध दो।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद आपके साथियों ने भी उसी किस्म की तकरीरें कीं। लेकिन शिमर ज़िल-जौशन और दूसरे तमाम कूफियों की आंखों पर पर्दे पड़ चुके थे और दिलों पर मुहर लग चुकी थी इसलिए हज़रत इमाम हुसैन और आपके साथियों की सारी इफ़हाम व तफ़हीम रायगां गई। किसी पर कोई असर न हुआ और इब्न-ज्याद के लालची कुत्तों ने हज़रत इमाम हुसैन से कहा : आपके तमाम फज़ाइल हमें मालूम हैं। मगर इस वक़्त यह मसला ज़ेरे बहस नहीं है। आप जंग के लिए मैदान में किसी को भेजिए और गुफ़्तगू ख़तम फरमाइए।

हुर की आमद : मुखालिफ़ीन की लशकर में उस वक़्त सिर्फ़ हुर ही वह वाहिद शख्स था जिसके दिल पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की बातों का असर हुआ। हमारी किताब के नाज़रीन के लिए यह नाम कोई अजनबी हैसियत नहीं रखता। यह वही हुर है जिसने सबसे पहले हज़रत इमाम आली मक़ाम और आपके रुफ़का को एक हज़ार फौज की जमईयत के साथ आकर कूफ़ा के रास्ता में रोका था और घेर-घार कर करबला की सरज़मीन तक लाया था।

जब अमरु व बिन साद जंग शुरू करने के लिए आ गया तो हुर बिन यज़ीद रियाही ने आगे बढ़कर कहा : खुदा तेरा भला करे, क्या तू वाकई उनसे जंग करेगा? इब्न-साद ने कहा : हां, खुदा की कसम! और ऐसी जंग कि जिसमें कम-अज़-कम सर कटेंगे और हाथ कलम होकर ज़मीन पर गिरेंगे। हुर ने कहा : क्या इतनी सूरतें मसालिहत की जो इमाम हुसैन ने पेश कीं उनमें से तुम लोगों के नज़दीक काबिले कुबूल नहीं? उमरु बिन

साद ने कहा : खुदा की कसम! अगर मामला मेरे इख्तियार में होता तो मैं जरूर मंजूर कर लेता। मगर क्या करूं? तुम्हारा हाकिम नहीं मानता। उमरु बिन साद का यह जवाब उसकी नेकनीयती पर महमूल नहीं करना चाहिए कि अगर वह यही चाहता तो करबला की सरजमीन पर हजरत इमाम हुसैन को शहीद करने नहीं आता। नाजरीन को याद होगा कि अमरु बिन साद रैय की हुकूमत के लालच में करबला आया था। उसकी तमाम बातों से Hur वाकिफ था। जब उमरु बिन साद की जुबान से यह सुना कि तुम्हारा हाकिम नहीं मानता। तो वह वहां से हट गया।

नवासए रसूल से जंग करने के तसव्वुर ने उसके बदन पर कपकपी तारी करदी और चेहरे पर परेशानी के आसार जाहिर होने लगे। तो मुहाजिर बिन औस जो उसी के कबीला का एक शख्स था, कहने लगा : Hur ! यह तुम्हारी क्या हालत है? तुम पर इस कदर खौफ व हिरास क्यों गालिब है? मैंने इससे पहले तुम्हारी यह कैफियत नहीं देखी। मुझसे जब पूछा जाता कि कूफा में सबसे ज्यादा बहादुर कौन है तो मैं तुम्हारे सिवा किसी का नाम न लेता। मगर इस वक्त मैं तुम्हारी अजीब हालत देख रहा हूं, आखिर उसका सबब क्या है? Hur ने कहा : यह नवासए रसूल से जंग है। मैं इस वक्त जन्नत और दोजख के दो राहे पर खड़ा हूं। मगर मैं जन्नत को किसी चीज के बदले नहीं छोड़ूंगा चाहे मेरे जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जायें और आग में जला दिया जाए। यह कहते-कहते उसने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और हजरत इमाम आली मक़ाम की बारगाह में पहुंच गया। अर्ज किया : ऐ! फ़र्जन्दे रसूल! मेरी जान आप पर फ़िदा। मैं वही गुनाहगार हूं जिसने आपको वापस जाने से रोका। रास्ते में आपके साथ साथ रहा और आपके इस जगह ठहरने पर मजबूर किया। कसम उस खुदा की जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, मैं हरगिज़ यह नहीं समझता था कि यह लोग आप के तमाम शराइत को जो आप पेश करेंगे मुस्तरद कर देंगे। और नौबत यहां तक पहुंच जायेगी। वल्लाह! अगर मुझे यह मालूम होता कि यह लोग आपके साथ ऐसा सुलूक करेंगे तो मैं हरगिज़ उनका साथ न देता, और जो गुरस्ताखियां मुझ से हुई उनका मुर्तकिब न होता। अब मैं अपने किए पर नादिम हूं और अल्लाह तआला के हुज़ूर तौबा करता हूं और आप पर अपनी जान कुर्बान करने के लिए हाज़िर हुआ हूं। फ़रमाइए क्या मेरी यह तौबा कुबूल होगी? आपने फ़रमाया : हां, अल्लाह तआला तुम्हारी तौबा कुबूल फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा। और तुम्हें बशारत हो कि जिस तरह

तुम्हारी मां ने तुम्हारा नाम जिस तरह Hur' रखा है तुम दुनिया व आखिरत में भी इन्शाअल्लाह Hur' (आजाद) हो। घोड़े से तो उतरों। Hur' ने कहा : मेरा आप की मदद में घोड़े पर सवार रहना नीचे उतरने से बेहतर है। अब मैं आखिरी शहीद होकर घोड़े से उतरूंगा। हजरत इमाम हुसैन ने फरमाया : अच्छा जो तुम्हारा दिल चाहे वही करो। खुदाए तआला तुम पर रहम फरमाए। (तबरी जिल्द ५ सफा २५४)

Hur' का कूफियों से खिताब

हजरत इमाम आली मकाम से माफ़ कराने के बाद Hur' फौरन मैदान में आ गये। और पहले तो उसने कूफियों यजीदियों से मुलायम अन्दाज़ में कहा : ऐ लोगो! हुसैन ने जो बातें पेश की हैं उनमें से किसी एक बात को तुम क्यों नहीं मानते? ताकि खुदाए तआला तुम को उनसे जंग करने से बचा ले। कूफियों ने कहा : हमारा अमीर उमरु बिन साद है, जो कुछ कहना है उनसे कहो। Hur' ने उमरु बिन साद से वही गुफ्तगू की जो उससे पहले कर चुका था। तो इब्ने साद ने वही जवाब दिया जो उससे पहले दे चुका था। यह सुनकर Hur' को गुस्सा आ गया और कहा : ऐ कूफ़ा वालो! खुदाए तआला तुम को गारत करे कि तुमने हजरत इमाम हुसैन को बुलाया और जब वह आ गए तो उन्हें दुश्मन के हवाले कर दिया। तुम कहते थे कि हम उन पर अपनी जानें कुरबान कर देंगे। और अब तुम उन्हीं पर हमला कर के उनके क़त्ल पर आमादा हो गए हो। उनको तुमने गिरफ़्तार कर लिया, उनको चारों तरफ़ से घेर लिया। और तुमने उनको खुदाए तआला की लम्बी चौड़ी ज़मीन में, जिधर वह अमन का रास्ता पाए, जाने से रोक दिया और वह अब तुम्हारे हाथों में कैदी की तरह हो गए हैं। तुमने उनको, उनके अहले हरम को, उनके बच्चों को, उनके रुफ़का को दरियाए फ़ुरात के उस बहते हुए पानी से रोक दिया है जिससे यहूदी, मजूसी, और तसरानी तक पीते हैं और इराक़ के सूअर और कुत्ते तक उसमें लोटते हैं। मगर उस पानी के लिए इमाम हुसैन और उनके अहल व अयाल और असहाब तरस रहे हैं। तुम ने रसूलुल्लाह के बाद उनकी औलाद के साथ क्या बुरा सुलूक किया है? अगर आज तुम इसी वक़्त तौबा नहीं करोगे और अपने तर्ज़े अमल से पशीमान होकर बाज़ न आओगे तो क़्यामत के दिन खुदाए तआला तुम्हें भी प्यास से तड़पाएगा।

Hur' की तक़रीर दुश्मन के मफ़ाद के खिलाफ़ बहुत ख़तरनाक साबित

हो सकती थी इसलिए वह हुर्र पर तीर बरसाने लगे। हुर्र ने यह देखा तो तकरीर मौकूफ कर दी। और चूंकि अभी जंग बाकायदा शुरू न हुई थी इसलिए वह वापस आकर इमाम हुसैन के सामने खड़े हो गए।

जंग का आगाज और इब्न-साद का पहला तीर

हुर्र के वापस आने के बाद इब्न-साद ने अपने लशकर को आगे बढ़ाया और अपने गुलाम जुवैद को, जो अलमबरदार था, आवाज दी कि झण्डा मेरे करीब लाओ। वह उसके पास आकर खड़ा हो गया। इब्न-साद ने कमान में तीर जोड़कर हुसैनी लशकर की तरफ चला कर अपनी फौज से पुकार कर कहा : तुम सब लोग गवाह रहना कि सबसे पहला तीर मैं ने ही मारा है। सिपहसालार लशकर के इन अल्फाज को सुनकर लशकरियों में जोश व खरोश पैदा हो गया। और वह सब लोग भी तीर बरसाने लगे। इस तरह जंग का आगाज हुआ। और अब दोनों तरफ से सिपाही निकल निकल कर आने और अपने बहादुरी का मुजाहिरा करने लगे। (तबरी जिल्द ५ सफा २५६)

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमैर कल्बी

यह बनी-अलीम में से हैं। कूफा के रहने वाले थे और कबीलए हमदान के बिरे जआ नाम के कुएं के पास अपने जाती मकान में रहते थे। उनकी बीवी उम्मे वहब जो खानदाने नुमैर बिन फातिमा से थीं, उनके साथ थीं, अब्दुल्लाह ने मकाम नखलीया में एक लशकर जरार देखा तो लोगों से पूछा कि यह लशकर कहां जा रहा है ? किसी ने उनसे कह दिया फातिमा बिनते रसूलुल्लाह के फर्जन्द हुसैन के साथ जंग करने के लिए। अब्दुल्लाह को मुद्त से यह आरजू थी कि मुशिरकीन से जिहाद करें। ख्याल आया कि यह लोग अपने पैगम्बर के नवासे पर लशकर कशी कर रहे हैं इसलिए इन लोगों से जिहाद करना इन्दल्लाह मुशिरकीन के साथ जिहाद करने से अज्र व सवाब में कम नहीं है। फिर अपनी बीवी के पास आए और तन्हाई में बुला कर उसको सब हालात और अपने इरादे से आगाह किया। नेक सीरत बीबी ने कहा : तुम्हारा इरादा बहुत अच्छा है। अल्लाह तआला तुम्हारी आरजू पूरी फरमाए। चलो और मुझे भी अपने साथ ले चलो। अब्दुल्लाह अपनी बीवी के हमराह रातों-रात चल कर लशकरे इमाम में पहुंच गए। उस वक्त जब

फौज इब्ने साद की जानिब से तीरों की बारिश हो चुकी थी, जो पैगामे जंग की हैसियत रखती थी। तो ज़्यादा निब सुफ़ियान का आज़ाद करदा गुलाम सालिम कूफ़ियों की तरफ़ से निकल कर मैदान में आए और मुकाबला के लिए मुबारिज़ तलब किया। हज़रत इमाम आली मक़ाम के दो जानिसार साथी हबीब बिन मज़ाहिर और बरीर बिन हफ़ीर जोश में भरे हुए आगे बढ़े मगर इमाम ने उनको रोक दिया। यह देखकर अब्दुल्लाह बिन उमैर कल्बी खड़े हो गए और जंग की इजाज़त तलब की। हज़रत ने सर से पैर तक उन पर निगाह डाली। और फ़रमाया: अगर तुम्हारा दिल चाहता है तो जाओ। यह तन्हा दोनों के मुकाबिल गए। उन्होंने पूछा, तुम कौन हो? अब्दुल्लाह ने अपना नाम व नसब ब्यान किया तो उन्होंने कहा: हम तुम्हें नहीं जानते। हमारे मुकाबले में ज़हीर बिन कीन, हबीब बिन मज़ाहिर या बरीर बिन हौजेर को आना चाहिए। यसार उस वक़्त सालिम से आगे बढ़ा हुआ था। अब्दुल्लाह ने कहा, ओ फ़ाहिशा के बेटे! तू मुझसे लड़ने में अपनी बेइज़्जती समझता है। यह कहते हुए यसार पर हमला कर दिया। और तलवार की ऐसी ज़र्ब लगाई कि वह एक ही वार में ठण्डा हो गया। सालिम ने एक दम झपट कर हमला कर दिया। अब्दुल्लाह ने उसकी तलवार की वार को बाएं हाथ पर रोका जिससे उसकी हाथ की उंगलियां कट गईं। उसके बाद ही अब्दुल्लाह ने मुड़कर एक ऐसा वार किया कि उसे भी ढेर कर दिया। और जोश में आकर शेर पढ़ने लगे जिसका मतलब यह था कि अगर मुझे नहीं पहचानते तो पहचान लो। मैं ख़ानदाने कलब का एक फ़र्द हूं। मेरे हसब व नसब के लिए इतना काफी है कि ख़ानदाने अलीम में मेरा घराना है। मैं बड़ी कुव्वत वाला हूं और मुसीबत के वक़्त पस्त-हिम्मती से काम लेने वाला नहीं हूं।

अब्दुल्लाह की बीवी ने जब यह सुना तो ख़ेमा की एक चोब (लकड़ी) हाथ में ली और आगे बढ़कर कहा। मेरे मां बाप तुम पर फ़िदा हो जाएं। नवासे रसूल की तरफ़ से लड़ते जाओ। वह अपनी बीवी के पास आए और चाहा कि उन्हें ख़ेमा में पहुंचा दें मगर वह मानने वाली नहीं थीं। कहा, मैं तुम्हारा साथ हरगिज़-हरगिज़ न छोड़ूंगी जब तक कि मैं खुद भी तुम्हारे साथ जान न दे दूंगी। इमाम हुसैन ने देखा तो आवाज़ दी कि अल्लाह तआला तुम दोनों को जज़ाए ख़ैर दे। ऐ मोमिना! अहले-हरम के पास आ जाओ और उनके साथ बैठी रहो, क्योंकि औरतों पर जिहाद वाजिब नहीं है। उम्मे वहब ने हज़रत का हुक्म सुना तो अहले हरम के पास ख़ेमा में

वापस आ गई। उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह ने कूफियों के साथ बहुत दिलेरी और बहादुरी से जंग की। दुशमन के दो सिपाही फिर क़त्ल किए। मगर उसके बाद हानी बिन सबीत हज़रमी और बुकैर बिन हयी तमीमी ने उनपर हमला कर दिया। और उन दोनों के हाथ से दरजाए शहादत पर पहुंच गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहे राजिऊन।

नेक दिल बीवी को जब यह मालूम हुआ कि उनका शौहर हमेशा—हमेशा के लिए उनसे जुदा हो गया तो वह अपने शौहर की लाश पर आई। और अपने शौहर के सिरहाने बैठ कर उनके चेहरा से गर्द व गुबार साफ़ करती जाती थीं और कहती जाती थीं। तुम्हें जन्नत मुबारक हो, बहिश्त की सैर मुबारक हो। मगर दुशमन का जुल्म व तशद्दुद इस दर्जा बढ़ा हुआ था कि शमर ने अपने गुलाम रुस्तम को आवाज़ दी कि इस औरत को भी काम तमाम कर दे। वह बढ़ा और उसने उस नेक दिल ख़ातून के सर पर ऐसा गुर्ज मारा कि वह जगह पर ही शहीद हो गई।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २५६ और सफ़ा २६२)

मैदाने करबला में इमाम आली मक़ाम की करामतें

यज़ीदियों की जानिब से एक शख्स घोड़ा कुदाता हुआ सामने आया जिसका नाम मालिक बिन उरवा था। जब उसने देखा कि लशकरे इमाम आली मक़ाम के खेमों के गिर्द ख़न्दक में आग जल रही है और शोले बुलन्द हो रहे हैं। और इस तदबीर से अहले खेमा की हिफ़ाज़त की जा रही है तो उस गुस्ताख़ बद-बातिन ने हज़रत इमाम आली मक़ाम से कहा: ऐ हुसैन! तुमने वहां की आग से पहले यहीं आग लगा ली है। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया कज़बत या अदूव्वुल्लाह ऐ दुश्मने खुदा! तू झूठा है। तुझे गुमान है कि मैं दोज़ख़ में जाऊंगा। हज़रत मुस्लिम बिन औसजा को मालिक उरवा का यह कलिमा बहुत नागवार हुआ और उन्होंने हज़रत इमाम से उस बद जुबान के मुंह पर तीर मारने की इजाज़त चाही। आप ने उन्हें इजाज़त न दी। मगर खुदाए तआला की बारगाह में हाथ उठा कर दुआ की। या रब! अज़ाबे नार से पहले इस गुस्ताख़ को दुनिया के अन्दर आग के अज़ाब में मुब्तला फ़रमा। इमाम का हाथ उठाना था कि उस के घोड़े का पांव एक सुराख़ में गया और वह घोड़े से गिरा उसका पांव रिकाब में उलझा और घोड़ा उसे लेकर भागा और आग की ख़न्दक में डाल दिया। हज़रत इमाम

ने सज्दए शुक्र अदा किया : अपने परवरदिगार की हम्द व सना की ओर अर्ज किया : ऐ परवरदिगार! तेरा शुक्र है कि तूने अहले-बैत रियासत के बदख्वाह को राजा दी। हजरत इमाम की जुबान से यह जुमला सुनकर दुशमनों की सफ में से एक और बेवाक ने कहा : आपको पैगम्बर इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से क्या निश्चय? यह कलिमा तो हजरत इमाम के लिए इन्तिहाई तकलीफदेह था। आपने बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज किया : ऐ अल्लाह! इस बद-जुबान को फौरन जिल्लत में गिरफ्तार कर। इमाम ने यह दुआ फरमाई और उसको कज़ाए हाजत की ज़रूरत पेश आई। वह घोड़े से उतर कर एक तरफ भागा और किसी जगह कज़ाए हाजत के लिए बरहना होकर बैठा। एक सियाह बिच्छू ने डंक मारा, तो नजासत आलूदा तड़पता फिरता था। उस रुस्वाई के साथ पूरे लश्कर के सामने इस नापाक की जान निकली। मगर सख्त दिलाने बे-हमिय्यत को गैरत न हुई।

(सवानहे करबला सफ़ा १०१)

एक मुज़नी ने इमाम के सामने आकर कहा कि ऐ इमाम! देखो तो दरियाए फ़ुरात कैसा मौजें ले रहा है। खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि तुम्हें इसका एक कतरा न मिलेगा। और तुम प्यासे हलाक हो जाओगे। हजरत इमाम ने उसके हक में फरमाया अल्लाहुम्म म अमितहु अतशान या रब! उसको प्यासा मार। इमाम का यह फरमाना था कि मुज़नी का घोड़ा चमका। मुज़नी गिरा। घोड़ा भागा और मुज़नी उसके पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ा। और उस पर इस शिदत की प्यास ग़ालिब हुई कि अलअतश-अलअतश! पुकारता था। जब पानी उसके मुँह से लगाते थे तो एक कतरा न पी सकता था यहां तक कि उसी शिदते प्यास में मर गया।

(सवानहे करबला सफ़ा १०३)

फ़र्जन्दे रसूल को यह बात भी पेश करनी थी कि उनकी मक़बूलियत बारगाहे हक पर और उनके कुर्ब व मन्जिलत पर उनके ख़्वारिक व करामात भी गवाह हैं। जैसा कि नुसूस कसीरा और अहादीसे शहीरा शाहिद हैं। अपने इस फज़ल का इज़हार भी इतमामे हुज्जत के सिलसिले की एक कड़ी थी कि अगर तुम आंख रखते हो तो देख लो, कि जो ऐसा मुस्तजाबुद्वात है उसके मुक़ाबले में आना खुदा से जंग करना है। उसका अन्जाम सोच लो और बाज़ रहो। मगर शरारत के मुजस्समे उससे भी सबक न ले सके।



हज़रत इमाम के साथियों की शुजाअत और शहादत

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु पर जिन खुशनसीबों ने अपनी जानें फ़िदा करने की सआदत हासिल कीं उस मुक़द्दस जुमरा में हुर् व़िन यज़ीद रियाही काबिले ज़िक्र हैं। अब्दुल्लाह बिन उमैर कलबी की शुजाअत और बहादुरी का मन्ज़र हुर् ने अपनी निगाहों से देखा तो दिल में ख़्याल हुआ कि कहीं नासिर हुसैन मुझसे पहले न क़त्ल हो जाए। यह सोच कर हज़रत इमाम आली मक़ाम से इजाज़त ली और दुशमन के सामने पहुंचे। निहायत शुजाअत का मुज़ाहिरा करते हुए तीन भाइयों को फ़ी नारे जहन्नम किया और बहुत फुर्ती के साथ लशकरे इब्न-साद के मैमना पर हमला किया और ख़ूब ज़ोर की जंग की।

दुशमनों ने चारों तरफ़ से आप को घेर लिया। और वह जांबाज़ सादिक़ दादे शुजाअत दे कर फ़र्जन्दे रसूल के जानूँ मुबारक पर जान फ़िदा कर गया। आपके बाद हज़रत मुस्लिम बिन औसजा, बरीर बिन हज़ीर, हबीब बिन मज़ाहिर असदी व दीगर रुफ़का ने अपनी-अपनी जानें कुर्बान कर दीं और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की खुशनूदी के मुस्तहिक़ ठहरे। करबला की तारीख़ में हज़रत इमाम आली मक़ाम के साथियों की वफ़ादारी का यह बहुत बड़ा कारनामा रहा कि जब तक उनमें का एक भी बाकी रहा इमाम पाक के ख़ानदान के किसी शख्स को उन्होंने मैदाने कारज़ार में जाने नहीं दिया। बल्कि उनके किसी एक फ़र्द को कोई तकलीफ़ भी न पहुंचने दी। उनके बाद ही औलाद हज़रत मौला आली मुशकिल कुशा व दीगर अहले-बैत अतहार की बारी आई कि वह मैदाने कारज़ार में तशरीफ़ लाएं और इमाम पर अपनी जानें निछावर फ़रमाए।

औलादे अकील की शहादत

हज़रत इमाम आली मक़ाम के अक़रबा में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अकील हज़रत इमाम आली मक़ाम से राहे हक़ में कुर्बान होने की इजाज़त तलब की तो आप की आंखों में आंसू आ गए। फ़रमाया : बेटे! अभी तुम्हारे बाप हज़रत इमाम मुस्लिम की जुदाई का दाग़ मेरे दिल से नहीं मिटा है। मैं किस तरह तुम्हें इजाज़त दे दूँ? हज़रत अब्दुल्ला ने

अर्ज किया : ऐ इब्ने रसूलुल्लाह! आप को उस जाते माबूद बरहक की कसम! जिसने आप के नाना जान को हक के साथ मवऊस फरमाया मुझे आप इजाज़त दीजिए। मेरा दिल अपने बाप के पास जाने के लिए बेकरार है। हज़रत इमाम ने उनका शौके शहादत देखकर इजाज़त दे दी।

उस हाशमी जवान ने मैदान में आकर मुकाबला के लिए पुकारा। यज़ीदी लशकर से कुदामा बिन असद फ़ज़ारी जो बड़ा बहादुर समझा जाता था। आपसे मुकाबला करने के लिए निकला। थोड़ी देर तक दोनों में मुकाबला होता रहा। आखिर अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम ने तलवार का एक ऐसा ज़बर्दस्त वार किया कि वह खीरे की तरह कट कर ज़मीन पर आ गया। फिर किसी यज़ीदी में हिम्मत न हुई कि तन्हा आपके मुकाबले में आता। आप तीन दिन के भूखे प्यासे होने के बावजूद दुश्मनों पर शेर बब्बर की तरह हमला आवर होते और उनके सफ़ों को दरहम-बरहम करते चले जाते। आपकी तलवार से बहुत-से यज़ीदी ज़ख्मी हुए और कई एक को जहन्नम रसीद किया। आखिरकार नौफल बिन मज़ाहिम हुमैरी ने आपको नेज़ा मार कर शहीद कर दिया। तारीखे तबरी में है कि उमरु बिन सबीह सदाई ने आप पर तीरों की बारिश कर दी जिससे आप शहीद हुए। रज़ियल्लाहु अन्हु। (रौज़तुशशुहदा जिल्द २ सफ़ा २७७)

हज़रत जाफ़र बिन अक़ील अपने भतीजे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम की शहादत के बाद अशकबार आखों से आगे बढ़े और हज़रत इमाम पाक को सलाम कर के इजाज़त तलब की। इमाम पाक ने उनको सीने से लगाया और इजाज़त दी। आप यह रिज्ज पढ़ते हुए मैदान में आए कि मैं मक्का का रहने वाला हूँ। हाशमी नस्ल और तालिब के घराने का हूँ। बेशक हम तमाम कबीलों के सरदार हैं और हुसैन तमाम पाकीज़ा लोगों में सब से ज़्यादा पाकीज़ा शख्सीयत हैं। उसके बाद आपने लड़ना शुरू किया और शुजाअत व बहादुरी का वह जौहर दिखाया कि बहुत-से यज़ीदियों को वासिले जहन्नम किया। जब यज़ीदी मरदुम-ख़ोर कुत्ते उनसे मुकाबला न कर सके तो चारों तरफ़ से घेर कर आप पर तीरों की बारिश शुरू कर दी। और फ़र्जन्दे अक़ील लहूलहान हालत में अब्दुल्लाह बिन उज़रा ख़शअमी के तीर से जामे शहादत नोश फ़रमा गए। रज़ियल्लाहु अन्हु। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अक़ील ने जब अपने भाई को खाक व खून में तड़पते देखा तो बेताब हो गए और शेर की तरह मैदान में कूद गए। और वह बहादुरी दिखाई कि

यज़ीदियों के खून से मैदाने करबला को लालाज़ार बना दिया। आखिर उस्मान बिन ख़ालिद जोहनी और बशर बिन सौत हमदानी के हाथों शहीद हो गए। रज़ियल्लाहु अन्हु।

फ़र्ज़न्दाने हज़रत अली की शहादत

औलादे हज़रत अकील की शहादत के बाद अब हज़रत मौला अली मुशकिल-कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़र्ज़न्दों की बारी आई। सब से पहले हज़रत मुहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत इमाम आली मक़ाम से इजाज़त लेकर मैदान में तशरीफ़ लाए। और अपनी बहादुरी का वह जौहर दिखाया कि जिससे हज़रत मौला अली मुशकिल-कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु की बहादुरी याद आ गई। आप जिधर रुख़ फ़रमाए दुश्मनों की सफ़ों का सफ़ाया फ़रमा देते। आखिर में इक्कीस कारी ज़ख़्म लगने से कुदामा नौसली के नेज़े से और बकौले बाज़ अब्दुल्लाह बिन उक्बा के तीर से जामे शहादत नोश फ़रमा कर जन्नत की तरफ़ रवाना हुए। रज़ियल्लाहु अन्हु।

(रौज़तुशशुहदा जिल्द २ सफ़ा २१२)

हज़रत मुहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु के शहादत के बाद हज़रत उस्मान बिन अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली और हज़रत जाफ़र बिन अली, यह तीनों भाई एक एक कर के मैदान में गए। और हज़ारों कूफ़ियों पर भारी हुए। और अपनी शुजाअत और कुव्वते हैदरी का वह जौहर दिखाया कि दुश्मनों ने दांतों तले उंगली दबा ली। बिलआखिर बहुत-से यज़ीदियों को क़त्ल और ज़ख़्मी करने के बाद उन तीनों ने भी फ़र्ज़न्दे रसूल पर अपनी जानें कुर्बान कर दीं।

हज़रत कासिम की शहादत

आप हाशिमि ख़ानदान के एक महकते हुए फूल हज़रत कासिम रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उनकी उम्र उन्नीस (१६) साल है। हज़रत इमाम आली मक़ाम के सामने दस्त बस्ता खड़े हैं। हज़रत इमाम देखते ही इरशाद फ़रमाते हैं : बेटा कासिम! क्यों क्या बात है? अर्ज़ किया : हुज़ूर वाला! अब्बा जान का जब इन्तिक़ाल हो रहा था उस वक़्त उन्होंने ने मुझे एक तावीज़ दिया था। और वसीयत फ़रमाई थी कि उसे अपने बाज़ू में बांध लेना। एक वक़्त आएगा जब मेरे भाई हुसैन पर मुशकिल पड़ेगी तब उस तावीज़ को खोल कर देख लेना और जो कुछ उस में लिखा होगा उस पर अमल

करना। चचा जान! इससे ज्यादा और कौन—सी मुश्किल पेश आएगी। मैंने तावीज खोला तो उसमें लिखा हुआ है “कासिम! करबला के मैदान में जब वक्त आ पड़े तो अली अकबर को मैदान में न जाने देना बल्कि खुद पहले जाकर अपनी जान अल्लाह की राह में कुर्बान कर देना” चचा जान! मैं अपने अब्बा जान की वसीयत पूरी करने के लिए इजाजत लेने आया हूँ। हजरत इमाम की आंखों में आंसू भर आये। फरमाया : बेटा! तुम्हें देखकर मैं अपने भाई जान की याद ताजा कर लेता था। तुम ही बताओ किस दिल से इजाजत दूँ। हजरत कासिम ने अर्ज किया : चचा जान! अगर आप इजाजत नहीं देंगे और हजरत अली अकबर शहीद हो गए तो कल क्यामत के दिन मैं अपने अब्बा जान को क्या जवाब दूंगा ? जब हजरत कासिम का असरार ज्यादा बढ़ा तो आपने आंखों में आंसू लिए हुए उन्हें सीने से लगाया और इजाजत मर्हमत फरमा दी।

दुशमन के एक सिपाही हमीद बिन मुस्लिम का ब्यान है कि जब आप मैदाने जंग में आए तो ऐसा मालूम होता था जैसे चांद का टुकड़ा नुमूदार हो गया। उनके जिस्म पर जिरह भी न थी बल्कि सिर्फ एक पैराहन पहने हुए थे शौके शहादत के जोश में आ गए और यजीदियों को मुख़ातब कर के फरमाया : ऐ दीन के दुशमनो! मैं कासिम बिन हसन बिन अली हूँ। मैं ख़ानदाने रिसालत का चश्मे चिराग हूँ। जिसे मेरे मुकाबले में भेजना हो, भेजो। अमरु बिन साद ने मुल्के शाम के एक नामी गिरामी पहलवान अरज़क से कहा : तुम उसके मुकाबले में जाओ। उसने कहा : उस बच्चे के मुकाबले में जाना मेरी तौहीन है। मैं हरगिज़—हरगिज़ नहीं जाऊंगा। इब्न—साद ने कहा : उसे बच्चा न समझो। यह हसन का बेटा और फातेह खैबर का पोता है। तीन दिन का भूखा—प्यासा है मगर उसका मुकाबला आसान नहीं है। अरज़क ने कहा : कुछ भी हो, मैं तो नहीं जाऊंगा। अबबत्ता अपने चार बेटों में से बड़े बेटे को भेज देता हूँ। अभी एक मिनट में उसका सर काट कर ले आएगा।

अरज़क का बड़ा बेटा आपके मुकाबले में आया। आपने उसका मुकाबला किया और चन्द मिनटों में उसे तड़पा कर रख दिया और उसकी तलवार उठा ली। अरज़क का दूसरा बेटा अपने भाई को खाक व खून में तड़पता हुआ देखा तो गुस्से में भरा हुआ सामने आया। आपने पहले ही वार में उसे जहन्नम रसीद कर दिया। अब तीसरा भाई इन्तिहाई गैज़ व ग़ज़ब

ने आया और गालियां बकने लगा। आपने फरमाया कि हम गालियों का जवाब गालियों से नहीं देते कि यह अहले-बैते नुबूव्वत की शान के खिलाफ है। अलबत्ता तुझे भी तेरे भाईयों के पास जहन्नम में पहुंचा देता हूं। यह कह कर उस पर ऐसा हमला किया कि उसके दो टुकड़े हो गए। उसके बाद अरज़क का चौथा बेटा सामने आया तो हज़रत कासिम ने उसके कंधे पर ऐसा वार किया कि वह मुंह के बल ज़मीन पर गिर गया। फिर दूसरा वार उसके सर पर ऐसा मारा कि सर जिस्म से जुदा हो गया।

जब हाशिमि शेर ने अरज़क के चारों बेटों को जहन्नम रसीद कर दिया तो अरज़क का सारा गुरुर खाक में मिल गया और गुस्से में कांपने लगा। जिनके मुकाबले में आना वह अपनी तौहीन समझता था अब उन ही से लड़ने पर मजबूर हो गया। हाथी की तरह चिंघाड़ता और शेर की तरह दहाड़ता हुआ मैदान में आया और हज़रत कासिम को ललकारा कि लड़के, तैयार हो जाओ, अब मौत तुम्हारे सर पर आ गई है। आपने फरमाया : अरज़क! होश की दवा कर, तू औरों के लिए ताक़त का पहाड़ होगा, लेकिन हाशिमि बहादुरों को तूने नहीं देखा है। हमारी रगों में शेर ख़ुदा का खून है। तू हमारे सामने कोई हैसियत नहीं रखता। अरज़क आग बगोला हो गया और हज़रत कासिम पर नेज़ा से हमला कर दिया। आप ने उसके वार को बेकार कर दिया। फिर आपने भी नेज़ा से वार किया जो ख़ाली गया। फिर दोनों तरफ़ से तलवारें चलने लगीं। अचानक हज़रत कासिम ने इरशाद फरमाया : ऐ! अरज़क तू अपने आपको इतना बहादुर समझता है लेकिन हमारे मुकाबले में आकर लड़ाई के सब गुर भूल गया। घोड़े की जीन ज़रा कस ले। आपके उस फरमान पर जैसे ही अरज़क झुका, आप ने तलवार का एक ऐसा कारी वार किया कि वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर गया।

हज़रत कासिम रज़ियल्लाहु अन्हु अरज़क के घोड़े पर सवार हो गए, और खेमे की तरफ़ आकर हज़रत इमाम की खिदमत में आकर अर्ज किया या अम्माहु अल-अतश! ऐ चचा जान! प्यास, प्यास। चचा जान अगर पानी का एक प्याला मिल जाए तो अभी उन सब को मौत के घाट उतार दूं। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फरमाया : बेटा! थोड़ी देर और सब्र करो। अन्क़रीब तुम साकिए कौसर हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के दस्ते अक़दस से जामे कौसर पी कर सैराब हो जाओगे। उस

के बाद फिर कभी तुम्हें प्यास नहीं सताएगी। हज़रत कासिम फिर मैदान में आए। इब्न-साद ने चिल्लाकर कहा : इस नौजवान को घेरे में लेकर कत्ल कर दो। चुनांचे दुशमनों ने आपको घेरे में ले लिया। और घमसान की जंग शुरू हो गई। आप के जिस्म पर सत्ताईस जख्म आए। विल आखिर शीस बिन साद ने आप के सीना पर ऐसा नेज़ा मारा कि आप घोंड़े से गिर पड़े और या अम्माहु अदरिक्नी पुकारा। यानी या चचा जान! आइए और मेरी ख़बरगीरी कीजिए। हज़रत इमाम ने अपने भतीजे की आवाज़ सुनी तो दौड़ते हुए आए। देखा कि जिस्मे नाज़नीन जख्मों से चूर-चूर है। आपने सरे कासिम को गोद में लेकर चेहरा मुबारक से गर्द व गुबार साफ़ करने लगे। इतने में हज़रत कासिम ने आंखें खोलीं। और अपना सर इमाम पाक की गोद में पाकर मुस्कुराए फिर आप की रूह परवाज़ कर गई। (रज़ियल्लाहु अन्हु)। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

(आले मुस्तफ़ा की कहानी सफ़ा १७ शामे करबला सफ़ा १३४)

हज़रत औन व मुहम्मद की शहादत

हज़रत औन व मुहम्मद इमाम आली मक़ाम के हकीकी भांजे और हज़रत बीबी ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के लख्ते जिगर हैं। उनमें से एक की उम्र तेरह साल और दूसरे की उम्र पन्द्रह साल है। चमने जुहरा के उन जन्नती फूलों ने आगे बढ़कर हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में अर्ज किया : मामू जान! हमें भी निसार होने की इजाज़त मर्हमत फ़रमाएं। इमाम पाक ने फ़रमाया : नहीं, तुम्हें इजाज़त नहीं। तुम अपनी मां के पास जाओ। औन व मुहम्मद ने कहा : मामू जान अम्मा जान का भी यही हुक्म है, देखिए वह भी सामने खड़ी हैं। इमाम पाक ने अपनी बहन सैय्यदा ज़ैनब की तरफ़ देखकर फ़रमाया : मेरी बहन! कुछ ख़याल करो। क्या मैं इन फूल-जैसे बच्चों के सीनों पर तीर और नेज़े पार होते देख सकूंगा। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने फ़रमाया : मेरे प्यारे भैया! अपनी बहन का यह हकीर हदिया कुबूल नहीं करोगे? अगर तुमने मेरा यह हदिया कुबूल न किया तो मैं अपनी मां फ़ातिमा जुहरा को क्या जवाब दूंगी। जब वह पूछेंगी : बेटी! तुमने उस वक़्त क्या नज़्र पेश की थी जब सरवरे कौनैन के शहज़ादे के हुज़ूर जानों के हदिए पेश हो रहे थे। मेरे यह दो ही फ़र्जन्द हैं, दोनों आप पर कुर्बान। हज़रत इमाम हुसैन ने बहन की तरफ़ देखा और बच्चों को सीने

से लगाकर रुख़्सत कर दिया। दोनों बच्चों ने मैदान में जाकर बहादुरी के वह जौहर दिखाए कि दुश्मन के दांत खड़े कर दिए। बिलआखिर हज़रत औन को अब्दुल्लाह बिन कुत्बतुत्ताई ने और हज़रत मुहम्मद को आमिर बिन नहशल ने शहीद किया (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)। हज़रत इमाम पाक उन दोनों की लाशों को खेमे में लेकर आए तो हज़रत ज़ैनब ने अपने दोनों लाल को देखकर कहा : खुदा तआला का शुक्र है आज ज़ैनब सुख़ुरु है।

(शामे करबला सफ़ा १३७)

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

हज़रत औन व मुहम्मद की शहादत के बाद हज़रत इमाम आली मक़ाम के अलमबरदार हज़रत अब्बास इब्ने—अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा इमाम पाक की ख़िदमत में आए और मैदाने कारज़ार में जाने की इजाज़त तलब फ़रमाई। साथ ही यह भी अर्ज किया कि मुझसे अली असगर और दूसरे नन्हें—नन्हें बच्चों की प्यास देखी नहीं जाती। आप मुझे इजाज़त दीजिए ताकि मैं नहरे फ़ुरात से एक मशकीज़ा पानी लाऊं और उन प्यासों को पिलाऊं। हज़रत इमाम पाक की आंखें अशकबार हो गई। फ़रमाया : भाई! तुम तो मेरे अलमबरदार हो। अर्ज किया : मेरी जान आप पर क़ुरबान! अब मुझसे नन्हें—नन्हें बच्चों की प्यास और उनका तड़पना देखा नहीं जाता। इसलिए आप इजाज़त दीजिए ताकि नहरे फ़ुरात से पानी लाकर उनकी प्यास बुझा सकूँ। जब हज़रत अब्बास अलमबरदार का इसरार ज़्यादा बढ़ा तो हज़रत इमाम आली मक़ाम ने आपको सीना से लगाया और अशकबार आंखों से रुख़्सत दे दी।

हज़रत अब्बास एक मशकीज़ा कांधे पर लटका कर घोड़े पर सवार हुए और नहरे फ़ुरात की तरफ़ रवाना हुए। यज़ीदी फ़ौज ने आपका रास्ता रोक लिया। हज़रत अब्बास ने यज़ीदी फ़ौज से ख़िताब फ़रमाया कि ऐ कूफ़ियो! अल्लाह तआला से डरो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से शरमाओ! अफ़सोस सद अफ़सोस कि तुम लोगों ने बेशुमार खुतूत और कासिद भेजकर नवासए रसूल हज़रत इमाम आली मक़ाम को बुलाया और जब वह आ गए तो उनके साथ तुम ने बेवफ़ाई की और दुश्मनों से मिल कर उनके तमाम रुफ़का और अज़ीज़ व अक़ारिब को शहीद कर दिया। और रसूलजादियों और नन्हें—नन्हें बच्चों को एक—एक बूंद पानी के लिए तरसाया।

सोचो और गौर करो। मैदाने हश्र में उनके नाना जान हुजूर सरवारे काइनात सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को क्या मुंह दिखाओगे? कूफियों ने जवाब दिया : अगर तमाम रूए जमीन पानी हो जाए तो भी हम लोग तुम्हें पानी का एक कतरा न लेने देंगे। जालिमों का यह जवाब सुन कर आपको जलाल आ गया। एक नारए शेराना लगाया और फरमाया : हुसैन सर कटा सकते हैं लेकिन फासिक व फाजिर के सामने झुका नहीं सकते।

फुरात के मुहाफिजों ने यह कलिमात सुने तो हजरत अब्बास पर टूट पड़े और तलवारों, नेजों और तीरों की बारिश कर दी। हजरत अब्बास ने भी डट कर उनका मुकाबला फरमाया और नहरे फुरात के करीब पहुंच गए। और घोड़े को फुरात में दाखिल कर दिया। मशकीजा भरा और एक चुल्लू पानी का लिया। मगर नन्हें-नन्हें बच्चों का प्यास से तड़पना और बिलकना याद आया तो गैरते इमानी ने यह गवारा न किया कि साकिए कौसर के दुलारे और अली व फातिमा के जिगर पारे प्यासे रहें। और मैं सैराब हो जाऊं, फौरन पानी को फेंका और भरा हुआ मशकीजा बायें कन्धे पर लटकाया और निकल पड़े। चारों तरफ से शोर उठा कि रास्ता रोक लो। मशकीजा छीन लो। अगर यह मशकीजा खीमए हुसैन तक पहुंच गया तो फिर हमारी खैर नहीं। इधर हजरत अब्बास इस कोशिश में थे कि किसी भी तरह अहले बैते नुबूव्वत के प्यासों तक यह पानी पहुंच जाए। जब दुशमनों ने आपको चारों तरफ से घेर लिया तो आपने बिफरे हुए हुए शेर की तरह यजीदियों पर हमला करना शुरू कर दिया। लाश पर लाश गिरने लगी। और खून की नाली बहने लगी। इसी तरह आप बराबर दुशमनों को मारते-काटते और चीरते-फाड़ते हुए खीमा-ए-हुसैन की तरफ बढ़ते हुए चले जा रहे थे कि अचानक एक खबीस जिरारा नामी पीछे से धोखा देकर ऐसी तलवार चलाई कि बायां हाथ कट कर कन्धे से अलग हो गया। आप ने फौरन मशकीजा को अपने दायें हाथ में और उसी हाथ से तलवार भी चलाते रहे कि अचानक नौफल बिन अरजक खबीस ने ऐसा वार किया कि दाहिना हाथ कन्धे से कट कर अलग हो गया। अब आप ने मशकीजा को दांतों से पकड़ लिया। मगर मशकीजा का खेमा-ए-हुसैन तक पहुंचना अल्लाह तआला को मंजूर ही न था। एक बदबख्त ने ताक कर ऐसा तीर मारा की मशकीजा के पार हो गया और सारा पानी बह गया। फिर जालिमों ने आपको चारों तरफ से घेर कर जख्मों से चूर-चूर कर दिया। यहां तक

कि आप घोड़े की जीन से ज़मीन पर आ गए और या अखाह अदरिक्नी फ़रमाया : यानी ऐ भाई जान! मेरी ख़बरगीरी फ़रमाइए। इमाम आली मक़ाम दौड़कर तशरीफ़ लाए। देखा कि अब्बास अलमवरदार ख़ून में नहाए हुए हैं और अन्करीब जामे शहादत नोश फ़रमाने वाले हैं। शिदते गुम से इमाम की जुबान पर यह कलिमात जारी हुए : अल आ न इन्क़स र ज़हरी अब मेरी कमर टूट गई। फिर हज़रत अब्बास की लाश को आप उठाकर ख़ेमा की तरफ़ ला रहे थे कि उनकी रूह क़फ़से अन्सरी से परवाज़ कर गई।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिरुन।

(शामे करबला सफ़ा १३६ 'रौज़तुश्शुहदा' जिल्द २ सफ़ा २२०)

हज़रत अली अकबर की शहादत

हज़रत इमाम आली मक़ाम ने जब देखा कि जुमला अहवाब, अक़रवा और भाईयों, भतीजों में से सबने जामे शहादत नोश फ़रमा लिया है और आपके साथे बजुज़ आपके तीन (३) साहबज़ादों—इमाम ज़ैनुल आबिदीन, हज़रत अली अकबर और हज़रत अली असगर रज़ियल्लाहु अन्हुम के और कोई बाकी न रहा। हज़रत इमाम ज़ैनुल—आबिदीन बीमार थे। हज़रत अली असगर अभी शीरख़्वार थे। और हज़रत अली अकबर की उम्र शरीफ़ अठारह साल की थी। आपने खुद बनफ़से नफ़ीस मैदाने जंग में जाने का इरादा फ़रमाया। हज़रत अली अकबर ने जब वालिदे गिरामी को मैदान में जाते हुए देखा तो आगे बढ़कर हज़रत इमाम से लिपट गए और अर्ज क्या की: अब्बाजान! आप मेरे होते हुए मैदाने जंग में क्यों तशरीफ़ ले जा रहे हैं? मुझे इजाज़त दीजिए। हज़रत इमाम ने मुहब्बत भरी निगाह अपने फ़र्ज़न्द अर्जमन्द पर डाली और फ़रमाया : बेटा! मैं तुम्हें किस दिल से इजाज़त दे दूँ? क्या मैं तुम्हें ख़ाक व ख़ून में ग़ल्तां होने की इजाज़त दूँ? यह सिर्फ़ मेरे ख़ून के प्यासे हैं। मुझे शहीद करने के बाद यह किसी से तआरुज़ न करेंगे। लेकिन हज़रत अली अकबर ने बहुत इसरार किया और क़समें दीं तो इमाम आली मक़ाम को चार व नाचार इजाज़त देनी पड़ी।

हज़रत अली अकबर मैदाने जंग में जाने के लिए तैयार हुए तो इमाम आली मक़ाम ने खुद अपने हाथों से अठारह साला हसीन व जमील जवान बेटे को घोड़े पर सवार किया। अपने दस्ते मुबारक से असलहे लगाए, तलवार हमायल की और नेज़ा अपने दस्ते अक़दस से उनके हाथ में दिया।

बेटे ने अब्बा जान और खेमा में खड़ी हुई दुख रसीदा बीवियों को सलाम किया और मैदाने जंग की तरफ चल पड़े।

यहां पर हम एक लम्हे के लिए अपने कारिर्इन की तवज्जह इब्राहीम व हज़रत इस्माईल अलैहिमस्सलातु वस्सलाम के वाकियए कुर्बानी की तरफ मब्ज़ूल कराते हैं कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को कुर्बान करने के लिए तैयार कर चुके तो कहा : अपनी आंखों पर पट्टी बांध लेता हूं ताकि शफ़क़ते पेदरी की वजह से इसमें नाकामी न हो। करबला की धरती पर हज़रत इमाम अपनी आंखों पर पट्टी नहीं बांधते हैं बल्कि खुद अपने हाथों तैयार कर के अपने बेटे को मैदाने कारज़ार में भेज रहे हैं और उनको कुर्बान होते और लाश लाते हुए देखते हैं।

हज़रत अली अकबर, जो शकल व शमाइल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के बहुत मुशाबह थे, मैदाने जंग में पहुंचे और मुबारिज़ तलब फ़रमाया। लेकिन यज़ीदी लशकर में से कोई सामने न आया तो आपने खुद ही लशकरे आदा में घुसकर हमला कर दिया और अशक़िया को दरहम-बरहम कर दिया। काफी देर तक लड़ते रहे। जब प्यास से बेकरार हो गए तो पलट कर अब्बा की खिदमत में आए और अर्ज किया : या अबताहुल अतश अब्बा जान! प्यास का बहुत ज़्यादा ग़लबा है। हज़रत इमाम ने उनके चेहरे के गर्द व गुबार साफ़ किए और अपनी अंगुशतरी उनके मुंह में डाल दी जिसके चूसने से उन्हें तसकीन हुई। फिर मैदान में आए। मुबारिज़ तलब फ़रमाया। उमरू बिन सअद के बार-बार ग़ैरत दिलाने और मौसम की गवर्नरी के लालच में तारिक़ नामी एक पहलवान आपके मुकाबले में निकला। लेकिन हज़रत अली अकबर ने ऐसा कारी वार किया कि वह घोड़े से गिरा और ढेर हो गया। तारिक़ के बेटे उमरू बिन तारिक़ ने जब अपने बाप का यह हाल देखा तो गुरसे में आग बगोला हो गया और दौड़ कर हज़रत अली अकबर पर हमला कर दिया।

शहज़ादे ने एक ही वार में उसका भी काम तमाम कर दिया। उसके बाद तारिक़ का दूसरा बेटा तलहा बिन तारिक़ आया। उसे भी मौत के घाट उतार दिया। शहज़ादे की हैबत से पूरा यज़ीदी लशकर थर्रा उठा। अब यज़ीदियों में से किसी की हिम्मत न हुई कि आपके मुकाबले में आए। आखिर इब्ने-साद ने मुहकम बिन तुफ़ैल को हज़ार सवारों के साथ

यकवारगी हमला करने के लिए भेजा। उन नायकारों ने चारों तरफ से आप को नरगे में ले लिया और उस चमनिस्ताने फातिमी के फूल को ज़ख्मों से चूर-चूर कर दिया। बिल-आखिर आप पुश्ते जीन से रुए ज़मीन पर आ गए और पुकारा या अबताहु अदरिक्नी ये अब्बा जान! मेरी ख़वरगीरी फ़रमाइए। हज़रत इमाम आली मक़ाम घोड़ा बढ़ाकर मैदान में पहुंचे और शहज़ादे को उठा कर खेमा में लाये। सर को गोद में लिया और उनके चेहरा अनवर से गर्द आलूद खून साफ़ करने लगे। इतने में हज़रत अली अकबर ने आँखें खोली। अब्बा जान का आख़री दीदार किया और बहिश्ते बरी को रवाना हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

(शामे करबला सफ़हा १४४ 'रौज़तुशुहदा' सफ़ा ३२७)

हज़रत अली असगर की शहादत

सैयदुशुहदा हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के छोटे फ़र्ज़न्द अर्जमन्द सैयदना अली असगर रज़ियल्लाहु अन्हु, जो अभी कमसिन हैं, शीर-ख़्वार हैं, प्यास से बेताब हैं। शिद्दते तिशनगी से तड़प रहे हैं। दुशमनाने इस्लाम यज़ीदियों ने मैदाने करबला में नहरे फ़ुरात का पानी ७ मुहर्रमुल-हराम से बन्द कर रखा है। तीन दिन हो गए हैं। अहले-बैते अतहार पर खाना पानी बन्द है। भूखी-प्यासी माँ के सीने में दूध खुश्क हो चुका है और खेमे में कहीं भी पानी का नाम व निशान तक भी नहीं है। ऐसे आलम में उस नन्हें बच्चे की खुश्क जुबान कभी बाहर आती है। और कभी बेचैनी से पूरा बदन हिलने लगता है और ग़श खाकर बेहोश हो जाते हैं। फिर चन्द लम्हा बाद कभी माँ की तरफ़ देखते हैं और अपनी सूखी जुबान माँ की तरफ़ दिखाते हैं। मासूम बच्चा क्या जाने कि ज़ालिमों ने उनके ऊपर दाना पानी बन्द कर रखा है। जब उस नन्हें बच्चे की बेताबी हद से ज़्यादा बढ़ गई तो हज़रत रुबाब बिनत इम्रउलकैस (वालिदए अली असगर) बच्चे को गोद में लिए हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज किया मेरे सरताज! अब अली असगर की प्यास और बेताबी देखी नहीं जाती। उसको गोद में लेकर जाइये और ज़ालिमों को दिखाइए। शायद उन संगदिलों को इस बच्चे की प्यास और बेताबी पर तरस आ जाए और पानी के चन्द घूंट उसको पिला दें। यह नन्हीं-सी जान, छः महीने का अली असगर न जंग करने के लायक है और न मैदाने कारज़ार के काबिल।

हज़रत इमाम आली मक़ाम उस नन्हें से नूरे नज़र को सीना से लगाकर सियाह दिल दुशमनों के सामने तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : ऐ मेरे नाना जान के कलिगा पढ़ने वालो! मैंने अपना तमाम कुम्बा और ख़ानदान व अहबाब को तुम्हारी बेरहमी और ज़ोर व जफ़ा की नज़र कर दिया। अब अगर आतिशे बुज़ व इनाद जोश में है तो उसके लिए मैं हूँ। यह मेरा बच्चा अली असगर शीरख़्वार है, प्यास से दम तोड़ रहा है। उसकी बेताबी देखो और कुछ शाइबा भी रहम का हो तो उसका हलक़ तर करने को एक घूंट पानी दे दो।

हज़रत इमाम आली मक़ाम की इस तक़रीर का ज़ालिमाने संग दिल पर कोई असर नहीं हुआ। और उस बे-ज़ुबान बच्चे पर उनको ज़रा भी रहम नहीं आया। बजाए पानी के एक बदबख़्त अज़ली हरमला बिन काहिल ने तीर का ऐसा निशाना बांध कर मारा कि अली असगर के हलक़ को छेदता हुआ इमाम पाक के बाजू में पैवस्त हो गया। हज़रत इमाम ने तीर खींचा तो हज़रत अली असगर के गले से ख़ून का फ़व्वारा जारी हो गया और बच्चे ने तड़प-तड़प कर बाप की गोद में जान दे दी। रज़ियल्लाहु अन्हु।

जब हज़रत इमाम आली मक़ाम उस शगूफ़े तमन्ना को खेमां में लाए और उनकी वालिदा ने अब्दुल नज़र में देखा कि बच्चा में बेताबाना हरकतें नहीं हैं, सुकून का आलम है तो गुमान किया कि पानी दे दिया गया होगा। हज़रत इमाम से दरयाफ़्त किया और फ़रमाया : यह भी साक़िए कौसर के जामे रहमत व करम से सैराब होने के लिए अपने भाईयों से जा मिले। अल्लाह तआला ने यह छोटी-सी कुर्बानी भी कुबूल फ़रमाली।

अल्हमदुलिल्लाह अला इहसानिहि व नवालिहि।

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए

हसरत उन गुन्चों पे है जो बिन खिले मुरझा गए

(सवानहे करबला, सफ़ा १२३ रौज़तुशशुहदा जिल्द २ सफ़ा ३३८)

नोट : हज़रत इमाम आली मक़ाम हज़रत अली असगर को दुशमनों के सामने सिर्फ़ हुज्जत कायम करने के लिए गए थे कि कल यज़ीदी यह न कहें कि अगर हमें नन्हें शीरख़्वार अली असगर का इल्म होता तो हम ज़रूर उस बच्चे को पानी देते।



ताजदारे करबला सैय्यदना हज़रत

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

जांनिसार एक-एक कर के रुख्सत हो चुके और हज़रत इमाम आली मक़ाम पर अपनी जानें कुर्बान कर दीं। अब तन्हा इमाम आली मक़ाम, राकिबे दोशे रसूल, शहज़ादए बतूल, हज़रत अली कं नूरं नज़र, जन्नती नौजवानों के सरदार, शहनशाहे करबला, पैकरे सब्र व रज़ा हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। आपके फ़र्ज़न्द अर्जमन्द हज़रत सैय्यदना इमाम जैनुलआबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु जो अपनी बीमारी नक़ाहत और कमज़ोरी की वजह से बिस्तरे अलालत पर हैं। हज़रत इमाम आली मक़ाम को तन्हा देखा तो नेज़ा हाथ में लिए हुए हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज किया : बाबाजान! पहले हमें मैदाने कारज़ार में जाने और अपनी जान निसार करने की इजाज़त दीजिए। मेरे होते हुए आप शहीद हो जाएं यह नहीं हो सकता। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने बीमार नूरं नज़र को अपनी आगोशे मोहब्यत में लिया, प्यार किया और फ़रमाया : बेटा! अभी तुम्हारा वक़्त नहीं आया है। अभी तो तुम्हें ग़मज़दा ख़्वातीने अहले-बैत की निगहदाश्त करनी है और इन बेकस्तां अहले-बैत को वतन तक पहुंचाना है। मेरे फ़र्ज़न्द! अल्लाह तआला तुम ही से मेरी नरस्ल और हुसैनी सादात का सिलसिला जारी फ़रमाएगा और जो अमानतें मेरे ज़द् व पिदर की मेरे पास हैं, वह तुमको देना है। तुमसे बहुत सारी उम्मीदें बाकी हैं। देखो, मेरे फ़र्ज़न्द! मेरे लख्ते जिगर! सब्र व इस्तिक़ामत से रहना और राहे हक़ में आने वाली हर तकलीफ़ व मुसीबत को ख़न्दा-पेशानी के साथ वर्दाश्त करना। और हर हालत में अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत व सुन्नत की पाबन्दी करना। और जब भी मदीना पहुंचना तो नाना जान से मेरा सलाम कहना और सारा आंखों देखा हाल सुनाना। मेरे बाद तुम ही मेरे जांनशीन हो, इसलिए तुम्हें मैदाने कारज़ार में जाने की इजाज़त नहीं है।

फ़िर इमामे आली मक़ाम ने उनको तमाम ज़िम्मेदारियों का हामिल किया। अपनी दस्तार मुबारक उतार कर उनके सर पर रखी। और उस सब्र व रज़ा के पैकर को बिस्तरे अलालत पर लिटा दिया। अब इमाम पाक

अपने खेमा में तशीफ़ लाए। सन्दूक खोला। कुवाए मिस्त्री जेवे तन फ़रमाई। अपने नाना जान का अमामए मुबारक सर पर बांधा। सैयदुश्शुहदा हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की ढाल पुश्त पर रखी। शेर ख़ुदा हज़रत सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार जुलफ़िकार गले में हमाइल की और हज़रत जाफ़र तय्यार का नेज़ा हाथ में लिया। और अपने बिरादरे अकबर सैयदना इमाम हसन का पटका कमर में बांधा। इस तरह शहीदों के आका, जन्नत के नौजवानों के सरदार सब कुछ राहे हक़ में कुरबान करने के बाद अब अपनी जाने अज़ीज़ का नज़राना पेश करने के लिए तैयार हो गए। अहले ख़ेमा ने इस मन्ज़र को किस आंखों से देखा होगा? उनका सरदार उनसे तवील अरसा के लिए जुदा होने वाला है। नाज़ परवरदों के सरों पर शफ़क़ते पिदरी का साया उठने वाला है। नौनिहालाने अहले-बैत के गर्द यतीमी मंडला रही है। अज़्वाज़ का सुहाग रुख़्सत हो रहा है। बेकस काफ़िला हसरत भरी निगाहों से इमाम के चेहरे पर नज़र कर रहा है। नूरानी आंखों से आंसू जारी हैं। हज़रत इमाम पाक ने अहले-बैत अतहार को ख़ुदा के सुपुर्द फ़रमाया। सब को सब्र व शुक्र की तलकीन फ़रमाई और सबको अपना आख़री दीदार दिखा कर और आख़री सलाम कर के घोड़े पर सवार हो गए।

तीन दिन के भूखे-प्यासे और अपनी निगाहों के सामने अपने बेटों भाईयों, भतीजों और जां-निसारों को राहे हक़ में क़ुर्बान कर देने वाले इमाम। पहाड़ों की तरह जमी हुई फ़ौजों के मुक़ाबले में शेर की तरह डट कर खड़े हो गए और मैदाने करबला में एक वलवला अंगेज़ रिज्ज़ पढ़ी जो आपके नसब और जाती फ़ज़ाइल पर मुशतमिल थी और इसमें शामियों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाख़ुशी व नाराज़गी और जुल्म के अन्जाम से डराया था। उसके बाद आपने एक फ़सीह व बलीग़ तक़रीर फ़रमाई। उसमें आपने हम्द व सलात के बाद फ़रमाया :

ऐ लोगो! तुम जिस रसूल का कलिमा पढ़ते हो उसी रसूल का इरशाद है कि जिसने हसन व हुसैन से दुशमनी की, उसने मुझसे दुशमनी की और जिसने मुझसे दुशमनी की उसने अल्लाह तआला से दुशमनी की। तो ऐ यज़ीदियो! अल्लाह तआला से डरो और मेरी दुशमनी से बाज़ आओ। अगर वाकई ख़ुदा व रसूल पर ईमान रखते हो तो सोचो, उस ख़ुदाए समी व

बसीर को क्या जवाब दोगे? और मुहसिने आजम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या मुंह दिखाओगे? तुमने मुझे खुतूत और कासिद भेज कर बुलाया और कहा कि हमारी रहनुमाई फ़रमाइए और हमें शरीअत व सुन्नते रसूल पर आमिल बनाइए वरना हम खुदा के हुज़ूर आपका दामन पकड़ कर शिकायत करेंगे। इसलिए मैं चला आया। और जब मैं यहां आ गया तो तुमने मेरे साथ बुरा सुलूक किया और मज़ालिम की इन्तिहा कर दी। ज़ालिमो! तुम ने मेरे बेटों, भाईयों और भतीजों को खाक व खून में तड़पाया। मेरे रुफ़का को शहीद किया और अब मेरे खून के प्यासे हो। ऐ यज़ीदियो! सोचो कि मैं कौन हूं? किस का नवासा हूं? मेरे वालिदे गिरामी और मेरी वालिदा साहिबा कौन थीं? बेग़ैरतो! अब भी वक़्त है शर्म से काम लो और मेरे खून से अपने हाथों को रंगीन कर के अपनी आक़िबत बरबाद न करो। इतने में यज़ीदी लशकर में शोर उठा। किसी ने कहा : ऐ हुसैन! हम कुछ सुनना नहीं चाहते। २ के लिए सीधा रास्ता है कि आप यज़ीद की बैअत कर लीजिए या फिर जंग के लिए तैयार हो जाइये। इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : ऐ बदबख़्तो! मुझे ख़ूब मालूम है कि तुम्हारे दिलों पर मुहर लग चुकी है और तुम्हारी ग़ैरते ईमानी मुर्दा हो चुकी है। ऐ यज़ीदियो! मैं ने यह तक़रीर सिर्फ़ इतमामे हुज्जत के लिए की थी ताकि कल तुम यह न कह सको कि हमने हक़ और इमामे बरहक़ को नहीं पहचाना था। अल्हमदुलिल्लाह! मैंने तुम्हारा यह उज़्र ख़त्म कर दिया। अब रहा यज़ीद की बैअत का सवाल? तो यह मुझसे हरगिज़—हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं फ़ासिक व फ़ाजिर के सामने सर झुका दूं।

मर्दे हक़ बातिल से हरगिज़ ख़ौफ़ खा सकता नहीं।

सर कटा सकता है लेकिन सर झुका सकता नहीं।।

इमाम आली मक़ाम ने जब यह देखा कि यह बदबख़्त मेरे क़त्ल का वबाल अपनी गर्दनो पर ज़रूर लेंगे और मेरा खून बहाए बग़ैर चैन से नहीं बैठेंगे, तो आप ने फ़रमाया : अब तुम लोग जो इरादा रखते हो उसे पूरा करो और जिसे मेरे मुक़ाबले के लिए भेजना चाहते हो भेजो। चुनांचे मशहूर जंगजू और बहादुर जो हज़रत इमाम हुसैन से मुक़ाबला करने के लिए महफूज़ रखे गए थे उनसे इब्ने—साद ने सबसे पहले तमीम बिन क़हतबा को आपके मुक़ाबले के लिए भेजा जो मुल्के शाम का नामी गिरामी पहलवान

था। वह गुरुर व तकब्बुर के कलिमात कहता हुआ और अपनी बहादुरी की डींगें मारता हुआ हज़रत इमाम के सामने आया। और आते ही आप पर हमला करना चाहा कि शेर ख़ुदा के शेर ने जुलफ़िकार का ऐसा कारी वार किया कि उसका सर जिस्म से जुदा हो गया और उसकी तमाम बहादुरी और गुरुर खाक में मिला दिया। यह देखकर यज़ीद ने बड़े कर्र व फ़र्र के साथ आगे बढ़ा और आपके सामने पहुंच कर एक नारा मारा और कहा कि शाम व इराक़ के बहादुरों में मेरी बहादुरी का ग़लग़ला है। मैं रोम व मिस्र में शोहरा—ए—आफ़ाक़ हूँ। बड़े—बड़े बहादुरों को आंख झपकते मैं मौत के घाट उतार देता हूँ। सारी दुनिया के लोग मेरी शुजाअत व बहादुरी का लोहा मानते हैं। किसी में मेरे मुक़ाबले की ताब नहीं। आज तुम मेरी कुव्वत व बहादुरी देख लोगे। इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : तू मुझे नहीं जानता, मैं फ़ातेहे ख़ैबर शेर ख़ुदा अली मुश्किल—कुशा का शेर हूँ। तुम जैसे नामदों की मेरे नज़दीक़ कोई हकीक़त नहीं है। शामी जवान यह सुनकर आग बगूला हो गया और फ़ौरन घोड़ा कुदा कर आप पर तलवार का वार किया। हज़रत इमाम ने उसके वार को बेकार कर के फुर्ती के साथ उसकी कमर पर ऐसी तलवार मारी कि उसके दो टुकड़े हो गए।

बदर बिन सुहैल यह मंज़र देख कर गुस्से से लाल पीला हो गया। और इब्ने साद से कहा : किन बुज़िदलों और बहादुरी के नाम को बदनाम करने वालों को हुसैन के मुक़ाबले में भेज दिया। जो दो हाथ भी जम कर मुक़ाबला न कर सके। मेरे चारों बेटों में से किसी को भेज दे। फिर देख मिनटों में हुसैन का सर काट लाते हैं। चुनांचे इब्ने—साद ने उसके बड़े लड़के को इशारा किया। वह घोड़ा कुदाता हुआ इमाम आली मक़ाम के सामने पहुंच गया। आपने फ़रमाया कि बेहतर होता कि तेरा बाप मुक़ाबला में आता ताकि वह तुझे खाक व ख़ून में तड़पता हुआ न देखता। फिर आप ने जुल—फ़िकारे हैदरी के एक ही वार से उसका काम तमाम करके जहन्नम में पहुंचा दिया।

बदर ने जब अपने बेटे का यह हश्र देखा तो ग़ैज़ व ग़ज़ब में दांत पीसता हुआ घोड़ा दौड़ा कर इमाम के सामने आया। और आते ही नेज़ा से वार किया। आपने नेज़ा को रोका तो उसने फ़ौरन तलवार से हमला कर दिया। आपने उस वार को भी ख़ाली कर दिया और उस शमशीर जुल फ़िकार का

ऐसा वार किया कि बदर का सर कट कर गेंद की तरह दूर जा गिरा। इसी तरह नए-नए शमशीर-जन, नेजेबाज और बहादुराने शाम व इराक आप के मुकाबले में आते और गाजर मूली की तरह कट कर खत्म हो जाते। शेर खुदा के शेर ने तीन दिन के भूख प्यास के बावजूद शुजाअत व बहादुरी का वह जौहर दिखाया कि जमीने करबला बहादुराने शाम व इराक की लाशों से खेत हो गई। दुशमनाने इस्लाम के लश्कर में एक शेर उठा कि अगर जंग का यही अन्दाज रहा तो हमारी जमाअत का एक भी सिपाही न बच सकेगा। लिहाजा मौका मत दो। और चारों तरफ से घेर कर एकबारगी हमला कर दो। अब सैंकड़ों तलवारें चमकने लगीं और दुशमनाने इस्लाम बढ़-बढ़ कर इमाम पाक पर हमला करने लगे। इधर आप की तलवार जुल-फिकार से आप जिस तरह हमला करते परे के परे काट डालते। और दुशमनों के सरों को इस तरह उड़ाते जैसे बादे खजा के झोंके दरख्तों से पत्ते गिराते हैं।

इब्ने-साद को जब इस तरह की जंग में कामयाबी नज़र न आई तो उसने हुक्म दिया कि चारों तरफ से तीरों की बौछार कर दी जाए। और जब खूब जख्मी हो जाएं तो नेजों से हमला किया जाए। तीर अन्दाजों ने आपको चारों तरफ से घेर लिया। और चारों तरफ से तीरों की बारिश शुरू हो गई। हज़रत इमाम पाक का घोड़ा इस क़दर जख्मी हो गया कि उसमें काम करने की ताकत न रही। मज़बूरन हज़रत इमाम को एक जगह ठहरना पड़ा। हर तरफ से तीर आ रहे हैं और इमाम मज़लूम का जिस्म अक़दस तीरों का निशाना बन रहा है। तने नाज़नीन जख्मों से चूर और लहूलहान हो रहा है। बेवफ़ा कूफियों ने जिगर पारए रसूल फ़र्जन्दे बतूल को खुतूत और कासिदों के ज़रिए बुला कर मेहमान बनाने का वादा किया था और वह अपने मेहमान के साथ ऐसा सुलूक कर रहे हैं।

अचानक ज़हर में बुझा हुआ एक तीर आया और हज़रत इमाम की पेशानी पर लगा। यह वह पेशानी है जिसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजारों बार चूमा था। तीर लगते ही चेहरा अनवर पर खून का धारा बह निकला। आप ग़श खाकर ज़मीन पर आ गए। अब ज़ालिमों ने नेज़ा से हमला कर दिया। शैतान सिफ़त सनान ने एक ऐसा नेज़ा मारा जो तने अक़दस के पार हो गया। तीर, नेज़ा और शमशीर के बहत्तर (७२)

जख्म खाने के बाद आप सज्दे में गिरे और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए वासिले बहक हो गए। ६५ साल ५ माह ५ दिन की उम्र शरीफ में जुमा के दिन मुहर्रम की दसवीं तारीखे सन : ६१ हिजरी मुताबिक ६८० ई० को इमाम आली मक़ाम इस दारे फ़ानी से रेहलत फ़रमा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

नज़र बिन ख़रशा आपके सरे मुबारक को तने अक़दस से जुदा करने के लिए आगे बढ़ा मगर इमाम आली मक़ाम की हैबत से उसके हाथ कांप उठे और तलवार हाथ से छूट गई। फिर बदबख़्त अज़्ली ख़ौली बिन यज़ीद, सिनान बिन अनस, शबल बिन यज़ीद, या शिमर ख़बीस ने आपके सरे अक़दस को तने मुबारक से जुदा कर दिया।

यज़ीदियों ने समझा कि हम ने हुसैन को मार डाला। और वह मर गए। लेकिन ज़मीने करबला का ज़री-ज़री जुबाने हाल से हमेशा यह पुकारता रहेगा कि ऐ हुसैन !

तू जिन्दा है वल्लाह, तू जिन्दा है वल्लाह!

मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

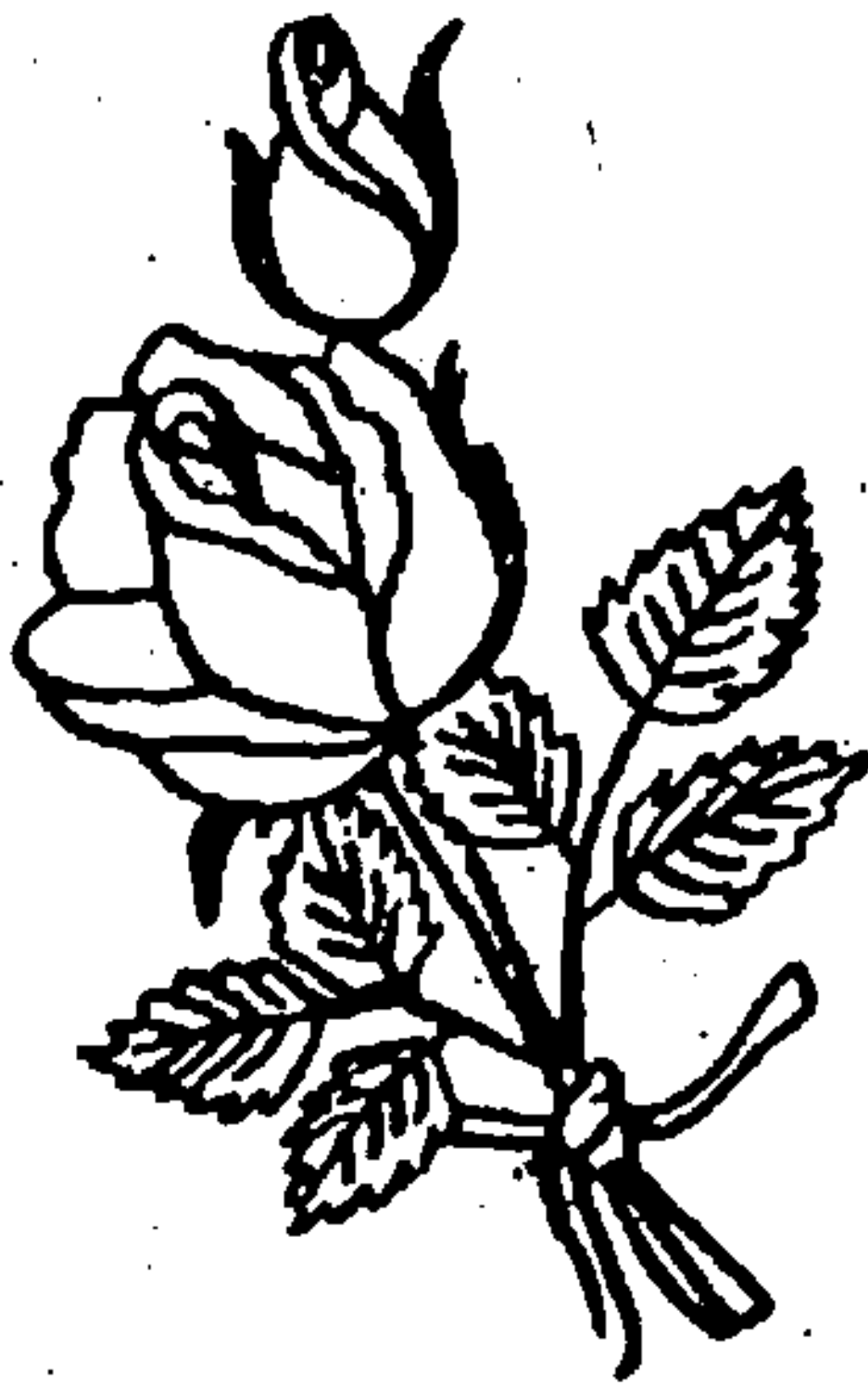
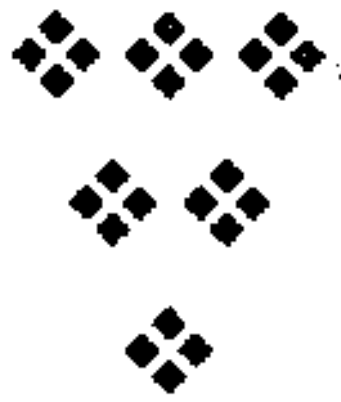
नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर्फ़ बेदर्दी से शहीद करने पर ही यज़ीदियों ने इकतिफ़ा नहीं किया बल्कि आपके जिस्मे मुबारक पर जो कपड़े थे उसको भी लूट लिया गया। चुनांचे इसहाक़ बिन हैवक़ हज़रमी ने कमीज उतार ली। बहर बिन काब ने पाजामा उतारा। कैस बिन अशअस ने चादर उतार ली। जब से उसका नाम कैस क़तीफ़ा मशहूर हो गया। असवद बिन ख़ालिद ने नालैन मुबारक उतार ली। बनी नहशल्ल के एक शख्स ने आपकी तलवार ले ली जो बाद में हबीब बिन बदील के ख़ान्दान में आ गई। इस क़दर जुल्म व सितम करने के बाद भी संगदिल और ख़ूनी शामियों और कूफ़ियों का ज़ब्बए बुग़ज़ व इनाद सर्द न हुआ। उसके बाद यज़ीदी फ़ौज ने ख़्यामे अहले-बैत नब्बी पर छापा मारा और उनमें का तमाम असबाब व सामान लूट लिया। हत्ता कि पर्दा नशीनाने अफ़फ़ाफ़ के सरों से चादरें (ओढ़नियां) उतार लीं। उसके बाद ख़ेमों में आग लगा दी गई।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २७८)

उसके बाद अमरू बिन साद ने अपनी फ़ौज में आवाज़ दी कि

कौन-कौन ऐसे हैं जो लाशे हुसैन को घोड़ों से पामाल करने के लिए तैयार हैं। इस पर दस आदमी तैयार हुए। उनमें इसहाक बिन हैवाह हजरमी भी था। यह दसों सवार आए और अपने घोड़ों से इमाम हुसैन के जिस्मे अक़दस को पामाल करके उनके सीना व पुश्त को चूर-चूर कर दिया।

इस शकावत व संगदिली पर ज़मीन कांप उठी। अर्शे इलाही थर्रा गया। ज़मीन व आसमान खून के आंसू रोए और जिन्न व इन्स में सफ़े मातम बिछ गई। ख़ास तौर से इस शकावत से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितना सदमा पहुंचा होगा। इसका अन्दाज़ा आने वाले सफ़हात से होगा। मुलाहज़ा फ़रमाएं।



ऐ हुसैन !

कल्मा-ए-तौहीद है तेरी शहादत ऐ हुसैन!
 तू न होता तो न रह जाती सदाकत ऐ हुसैन!
 तेरी कुर्बानी ने ज़िन्दा कर दिया इस्लाम को !
 वह रहेगा ता अबद तेरी बदौलत ऐ हुसैन !
 तालिबाने मन्ज़िले अमन व सुकूं के वास्ते!
 तेरी कुर्बानी हुई शमा-ए-हिदायत ऐ हुसैन !
 मिल्लते इस्लाम को मिलता है एक दर्से हया!
 कैसे भूलें हम तेरा यौमे शहादत ऐ हुसैन !
 इहतमाल आने का है फिर से यज़ीदियत का दौर!
 फिर जहाने नौ को है तेरी ज़रूरत ऐ हुसैन !
 हाल मेरा कुछ भी हो, मेरा अकीदा है यही!
 बख्शवाएगी मुझे तेरी मोहब्बत ऐ हुसैन !

(बेकल बलरामपुरी)

सलाम

जिसने हक करबला में अदा कर दिया
 अपने नाना का वादा वफ़ा कर दिया
 घर का घर सब सुपुर्दे खुदा कर दिया
 कर लिया नोश जिसने शहादत का जाम
 उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

ऐ खाके करबला !

ऐ करबला की खाक! उस एहसान को न भूल
 तड़पी है तुझ पे लाशें जिगर गोशए रसूल
 इस्लाम के लहू से तेरी प्यास बुझ गई
 सैराब कर गया तुझे खूने रंगे रसूल

हुजूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

सदम-ए-जानकाह

सरजमीने करबला में हजरत सैयदना इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु के साथ यजीदियों ने जो सुलूक किया उस वाकियए हाइला से हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो रंज पहुंचा और कल्बे मुबारक को जो सदमा हुआ, वह अन्दाजा और क्यास से बाहर है। इमाम अहमद व बैहकी व मिश्कात ने हजरत सैयदना इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है। आप फरमाते हैं रऐतुन्नबीय्य सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फीमा यरन्नाइमु जा त यौमिन बिनिसफिन्नहार अशअ स अगब र बियदिही कारूरतुन फीहा दमुन फक्रुल्लु ब्रिअबी अन त व उम्मी मा हा जाका ल हाजा दमुल हुसैनि व असहाबिही व लम अजलउलकितुह मुन्जुल यौमि फउहसी जालिकल वक त फअजिदु कुति ल जालिकल वक त एक रोज मैं दोपहर के वक्त हुजूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जयारत से ख्वाब में मुशरफ हुआ। मैंने देखा कि सुम्बुल मुअम्बर व गेसूए मुअत्तर बिखरे हुए और गुबार आलूद हैं। दस्ते मुबारक में एक खून भरा शीशी है। मैंने अर्ज किया : मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान! यह क्या है? फरमाया : हुसैन और उनके साथियों का खून है। मैं उसे आज सुबह से उठा रहा हूँ। हजरत इब्ने-अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं ने उस तारीख और वक्त को याद रखा। जब खबर आई तो मालूम हुआ कि हजरत इमाम हुसैन उसी वक्त और उसी तारीख को शहीद किए गए थे। (मिश्कात शरीफ मुतर्जम बाब फजाइले अहले-बैत सफा ४६९

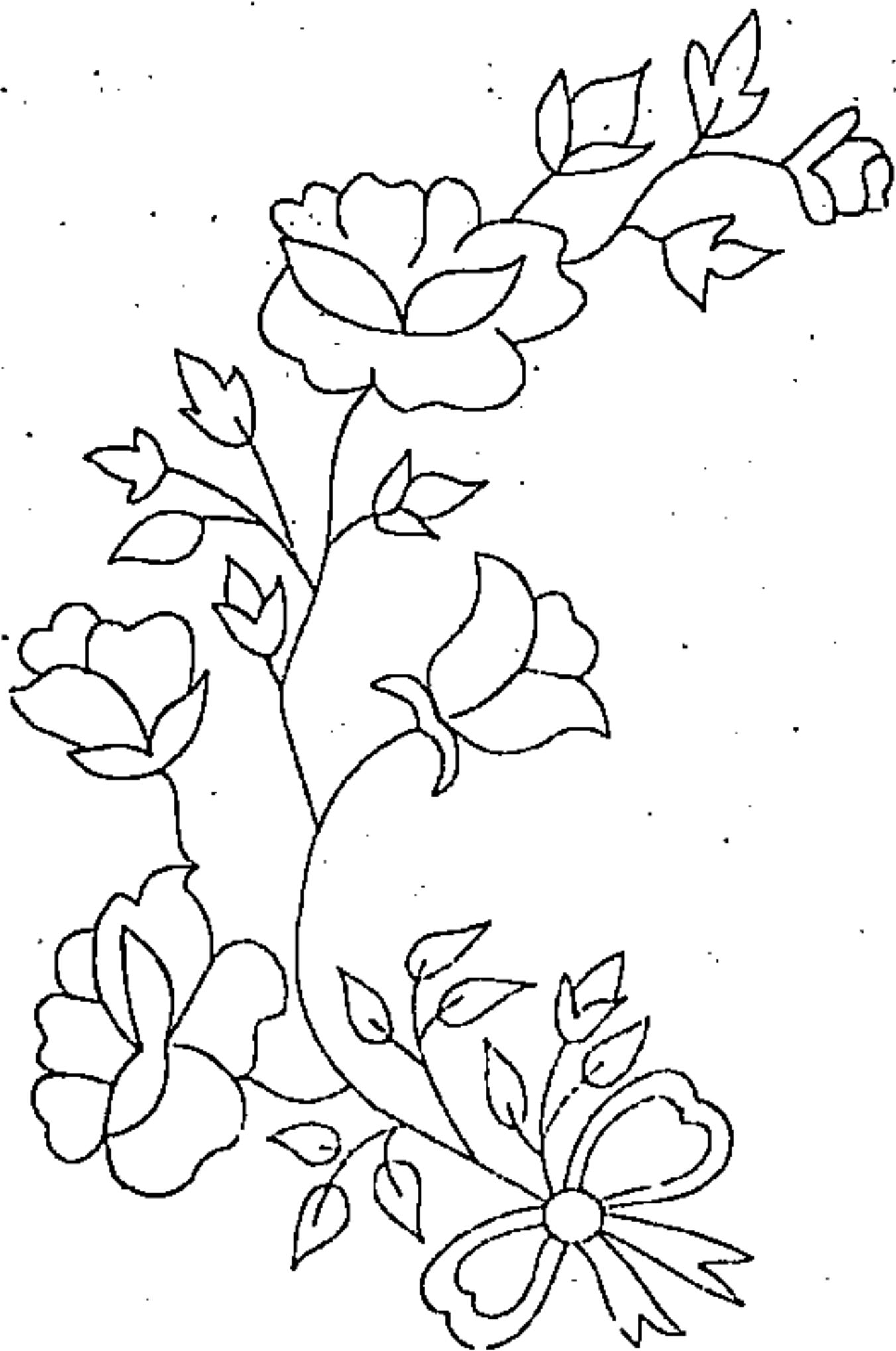
तारीखुल-खुलफा' सफा ३०४)

हजरत सलमा जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आजाद करदा गुलाम अबू राफे की जौजा और हजरत इब्राहीम इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाई हैं, वह ब्यान फरमाती हैं कि मैं उम्मुल-मोमिनीन हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हुमा की खिदमत में हाजिर हुई तो देखा कि वह रो रही हैं। मैं ने अर्ज किया : आप क्यों रो रही हैं ? उन्होंने फरमाया : रऐतु रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तानी फिल मनामि व अला रासिही व लिहयतिहित्तराबु फक्रुल्लु माल क या रसूलुल्लाह! का ल

शहिदतु कल्लल हुसैनि आनिफन। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख्वाब में देखा कि आपके सरे मुबारक व रीशे अक़दस (दाढ़ी मुबारक) पर गर्द व गुबार है। मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आप का यह क्या हाल है? फ़रमाया : मैं अभी हुसैन की शहादतगाह पर गया था।

(तिर्मिजी शरीफ़ जिल्द २ सफ़ा ७३१ शरहुस्सुदूर सफ़ा २५१ तारीखुल खुलफ़ा सफ़ा ३०४)

मुहतरम कारिईन किराम! मज़कूरा बाला दोनों अहादीसे करीमा से यह बात बिल्कुल वाजेह हो रही है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी कब्र अनवर में ज़िन्दा हैं और उम्मत के आमाल से भी बाख़बर हैं। नीज़ उन इब्ने यज़ीद फ़ासिकों और नमक हरामों को भी उससे सबक़ हासिल करना चाहिए। खास तौर से औरंगाबाद के जुहूर अहमद कर्शी और उसके मुत्तबईन को जो वाकिआते करबला का इन्कार करते हैं और उसे अफ़सानवी हैसियत करार देते हैं।



हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

जिसको आगोशे रहमत में पाला गया
 जिसको दोशे नबी पर बिठाया गया
 जिसको कुदरत के हाथों संभाला गया
 जो मदीने से जबरन निकाला गया
 उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम
 उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम
 जिसको झूला फरिशाते झुलाते रहे
 लोरियां दे के नूरी सुलाते रहे
 जिसको सीने से आंका लगाते रहे
 जिस पे सफ़ाक खन्जर चलाते रहे
 उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम
 उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम
 तीन दिन भूखा-प्यासा जो रखा गया
 जो रहा पैकरे शाने सब्र व रज़ा
 जिससे राजी था लारैब उसका खुदा
 जिसके कदमों से जन्नत बनी करबला
 उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम
 उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम
 जो जवानाने जन्नत का सालार है
 जिसका नाना दो आलम का सरदार है
 जो सरापाए महबूबे ग़फ़ार है
 जिस का सर दश्त में ज़ेरे तलवार है
 उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम
 उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम



वाकिआते बादे शहादत

हाफिज़ अबू-नईम ने दलाइलुन्नुबुव्व: में बसरा अजदीया से रिवायत की है कि जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद किए गए तो आसमान से खून बरसा। सुबह को हमारे मटके, घड़े और तमाम वस्त्र खून से भरे हुए थे। हज़रत जुहरी फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन जिस रोज़ शहीद किए गए उस रोज़ बैतुल-मक़दिस में जो पत्थर उठाया जाता उसके नीचे ताज़ा खून पाया जाता। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६४४)

हज़रत उम्मे हिब्बान फ़रमाती हैं कि हज़रत इमाम हुसैन जिस रोज़ शहीद किए गए उस दिन से हम पर तीन दिन तक अंधेरा रहा। और जिस शख्स ने मुंह पर जाफ़रान मला उसका मुंह जल गया। और बैतुल-मक़दिस के पत्थरों के नीचे ताज़ा खून पाया गया। हज़रत अली बिन शेर से रिवायत हैं कि मैं ने अपनी दादी से सुना : वह कहती हैं कि मैं हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के ज़माने में जवान लड़की थी, कई रोज़ तक आसमान रोया यानी खून बरसा। ('ख़साइसे कुबरा' जिल्द २ सफ़ा २०६)

अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के दिन सूरज गहन में आ गया था और मुसलसल छः माह तक आसमान के किनारे सुर्ख रहे। बाद में रफ़ता-रफ़ता वह सुर्खी जाती रही, अलबत्ता उफ़क़ की सुर्खी जिसको शफ़क़ कहा जाता है, आज तक मौजूद है। यह सुर्खी शहादत इमाम हुसैन से पहले मौजूद नहीं थी।

यज़ीदी लश्करियों ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में एक ऊंट पाया और शहादते इमाम के बाद उसको ज़बह किया और पकाया तो उसका गोشت आग की तरह सुर्ख बन गया। और जब उसको पकाया तो वह कड़वा हो गया। और आप फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम की शहादत के बाद सात दिन तक अंधेरा रहा। दीवारों पर धूप का रंग ज़र्द पड़ गया और बहुत सितारे भी टूटे।

(तारीखुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०४ 'सवाइके मुहर्रका' सफ़ा ६४५)



जिन्नों की नौहा-ख्वानी

अबू-नईम ने दलाइलुन्नुबुव्व में हजरत उम्मे सलमा की जुबानी लिखा है कि मैंने शहादते हुसैन पर जिन्नात को अशकबारी और नौहा करते देखा है। सालब ने उमाली में अबी हुबाब कलबी के हवाले से लिखा है कि मैंने करबला में जाकर एक मुअज्जज अरब से दरयाफ्त किया कि क्या तुम ने जिन्नात को गिर्या व ज़ारी करते हुए सुना है। उसने कहा : तुम जिससे चाहो पूछ लो। उनकी गिर्या व ज़ारी हर एक ने सुनी है। मैं ने कहा : जो कुछ तुम ने सुना है, वह मुझे भी बताओ। उस शख्स ने जवाब दिया। मैंने जिन्नात की जुबानी यह अशआर सुने हैं :-

मसाहरर सू लु जबीनहु
फ़ लहू बरीकुन फ़िल-ख़ुदू दि
उस जबी को रसूल ने चूमा था
है नूर वही उनके चेहरे पर
अबवाहु मिन उलिया कुरैशिन
व जदहू खौरल जुदूद
उनके वालिदैनु कुरैश के आला खान्दान
उनके ज़ाना जान तमाम अजदाद से बेहतर।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा ३०५ 'ख़साइसे कुबरा' जिल्द २ सफ़ा २०६)

अहले-बैत अतहार की करबला से कूफ़ा को रवानगी

नवासए रसूल हजरत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद आपकी लाशे मुबारक को घोड़ों की टापों से रौंदने के बाद यज़ीदी लुटेरों ने अहले-बैत का कुल सामान छीन लिया। उस वक्त ख़ानवादए नब्वी में आबिदे बीमार हजरत इमाम जैनुल-आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु बाकी थे। जिस वक्त शिमार की नज़र उन पर पड़ी, अपने साथियों से कहा : उसको क्यों बाकी रखा ? उसको भी क़त्ल कर दो। एक शख्स हमीद बिन मुस्लिम के दिल में अल्लाह ने रहम डाल दिया। उसने कहा :

सुब्हानल्लाह! यह बीमार, कमसिन है, इसको क़त्ल मत करो। इतने में इब्ने साद आया और उसने कहा कि कोई शख्स औरतों के ख़ेमा में न जाए और जो कुछ माल लूटा गया है उसको वापस कर दिया जाए। लेकिन किसी ने कोई चीज़ वापस न की।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २७६)

उसके बाद अमरु इब्ने-साद ने तमाम शोहदा के सर काटने का हुक्म दिया और शिमर ज़िल-जौशन, कैस बिन अशअस, उमरु बिन अल हुज्जाज और उर्वह बिन कैस के हाथ यह सर हज़रत इमाम आली मक़ाम के सर के साथ इब्ने-ज़्याद के पास भिजवा दिए। यह लोग उन सरों को नेज़ों पर लटका कर इब्ने-ज़्याद के पास ले गए। खुद इब्ने-साद उस रोज़ करबला में ठहर गया। और ११ मुहर्रम की सुबह को अपनी फ़ौज के तमाम मक़तूलीन को जमा किया और उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़न कर दिया। मगर शोहदाए राहे हक़ की लाशों को ऐसे ही बे-ग़ोर कफ़न पड़ी रहने दिया। फिर पर्दानशीं ख़्वातीन जो बीमार ज़ैनुल-आबिदीन और चन्द छोटे बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे रात भर पड़ी रहीं, उन्हें कैदी बनाकर कूफ़ा ख़ाना हुआ।

यज़ीदी फ़ौज के एक सिपाही क़ुर्रह बिन कैस तमीमी का ब्यान है कि जब यह तबाहशुदा काफ़िला उस जगह से गुज़रने लगा जहां हज़रत हुसैन और दीगर शोहदा की लाशें बे-ग़ोर व कफ़न चटयल मैदान में पड़ी थीं तो काफ़िले में एक मातम बपा हो गया और हज़रत इमाम की बहन हज़रत ज़ैनब ने इन्तिहाई दर्द के साथ रोते हुए कहा या मुहम्मदाह! या मुहम्मदाह! आप पर अल्लाह और मलाइका का दुरूद व सलाम हो। देखिए, यह हुसैन चटयल मैदान में खाक व ख़ून में गुलतां और टुकड़े-टुकड़े होकर पड़े हैं। या मुहम्मदाह! आपकी बेटियां कैदी बना कर ले जाई जा रही हैं। आप की औलाद क़त्ल की गई, और हवा उन पर खाक उड़ा रही है। यह दिलदोज़ फ़रयाद सुनकर दोस्त व दुश्मन सब रोने लगे। फिर जब अमरु बिन साद करबला से चला गया तो क़बीलए बनी अंसद, जो क़रियए गाज़िरीया के थे, उन लोगों ने आकर उन शोहदा की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और हज़रत इमाम हुसैन और उनके साथियों की लाशों को दफ़न कर दिया।

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २८०/२८१-अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा १५४)

इमाम हुसैन का सरे अनवर और इब्ने-ज़्याद

इब्ने-ज़्याद दारुल-इमारात में बैठा था और लोगों को महल में आने की आम इजाज़त थी। जब दरबार भर गया तो इब्ने-ज़्याद के सामने हज़रत इमाम आली मक़ाम का सरे अक़दस एक तश्त में रख कर पेश किया गया। उस वक़्त ज़ालिम इब्ने-ज़्याद के हाथ में छड़ी थी। जिससे

वह बार-बार आपके लवों और दांतों को मारता था। एक सहाविए रसूल हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु जो उस वक़्त वहां पर मौजूद थे उनसे यह गुस्ताखी न देखी गई। तड़प उठे और रोते हुए कहा : ऐ इब्ने नरजाना! छड़ी को हटा ले। खुदा की क़सम! मैं ने अपनी आंखों से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा है कि आप उन लवों और दांतों को चूमा करते थे। यह कह कर वेइख़्तियार रोने लगे। इब्ने-ज़्याद ने कहा : खुदा तुझे ख़ूब रुलाए। अगर बूढ़ा न होता और तेरी अक़ल ख़राब न हो गई होती तो मैं इसी वक़्त तेरी गर्दन मार देता। हज़रत ज़ैद वहां से उठे और यह कहते हुए चले गए कि ऐ लोगो! आज के बाद से तुम सब गुलाम बन गए। क्योंकि तुम लोगों ने फ़ातिमा के लख्ते जिगर को क़त्ल किया और मरजाना के बेटे को अपना हाकिम बनाया जो तुम्हारे नेक लोगों को क़त्ल कर रहा है और बुरों को गुलाम बना रहा है। तुम ने ज़िल्लत को ग़वारा किया जो ज़िल्लत को ग़वारा करे उस पर खुदा की मार हो।

(तारीखे तवरी जिल्द ५ सफ़ा २८१ सियरुरसहाबा सफ़ा १७४ मुअल्लिफ़ नदवी)

इब्ने-ज़्याद और हज़रत ज़ैनब

सरे इमाम आली मक़ाम के बाद अहले-बैत के दूसरे अफ़राद इब्ने ज़्याद के सामने पेश किए गए। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत इमाम आली मक़ाम की हमशीरा हैं। आपकी कनीज़ों ने आपके गर्द हलका बना लिया था। इब्ने-ज़्याद ने पूछा : यह कौन औरत है? तीन दफ़ा उसने यही कहा। मगर किसी ने जवाब न दिया। आख़िर एक कनीज़ ने कह दिया। यह रसूलुल्लाह की नवासी, फ़ातिमतुज्जुहरा की बेटी और हज़रत इमाम हुसैन की हमशीरा हैं। यह सुन कर इब्ने-ज़्याद, जो फ़तह व ज़फ़र के नशे में चूर था, आपको मुख़ातब करते हुए कहा : अल्लाह का शुक्र है जिस ने तुम्हें ज़लील व ख़्वार किया और झुठलाया। शेर ख़ुदा की बेटी हज़रत ज़ैनब ने फ़रमाया : अल्लाह का शुक्र है जिसने अपने नबी के ज़रिए से हमें इज़्ज़त दी और हमें पाक व साफ़ फ़रमाया। हम नहीं, फ़ारसिक ज़लील होते हैं और फ़ाजिर झुठलाए जाते हैं। ज़ालिम इब्ने-ज़्याद ने कहा : तूने देखा अल्लाह ने तेरे घर वालों से क्या सुलूक किया ? हज़रत सैय्यदा ने जवाब दिया : उनके लिए शहादत मुक़दर हो चुकी थी। इस लिए वह अपने मक़तल में पहुंच गए। अन्क़रीब अल्लाह तुझे और उन्हें एक जगह जमा

फरमायेगा उस वक्त वह उस के सामने इसका इन्साफ़ तलब करेंगे। यह दन्दान शिकन जवाब सुन कर इब्न-ज्याद गुरसा से बेताब होकर बोला : खुदा ने तेरे सरकश सरदार और तेरे अहले-बैत के नाफरमान वागियों की तरफ़ से मेरा दिल ठण्डा कर दिया। उस अजीयतनाक जुमले पर हज़रत जैनब अपने तई संभाल न सकीं बे-इख्तियार रो पड़ीं। वल्लाह! तू ने मेरे सरदार को क़त्ल कर डाला। मेरे ख़ानदान का निशान मिटाया। मेरी शाख़ें काट दीं। अगर इस से तेरा दिल ठण्डा हो सकता तो हो जाए। उस के बाद इब्न-ज्याद बदनिहाद की नज़र बीमार पर पड़ी। वह उन्हें भी क़त्ल करना ही चाहता था कि हज़रत जैनब बेकरार होकर चींख़ पड़ीं और फरमाया : ऐ इब्न-ज्याद! मैं तुझे खुदा का वास्ता देती हूँ। अगर तू इस बच्चे को क़त्ल करना चाहता है तो मुझे भी इस के साथ क़त्ल कर डाल। इब्ने ज्याद पर देर तक सकते का आलम तारी रहा। उसने लोगों से मुख़ातब होकर कहा : ख़ून का रिश्ता भी कैसी अजीब चीज़ है। वल्लाह! मुझे यकीन है कि यह सच्चे दिल से लड़के के साथ क़त्ल होना चाहती है। अच्छा इसे छोड़ दो। यह भी अपने ख़ानदान की औरतों के साथ जायेगा।

एक जानिसार की शहादत

उसके बाद इब्न-ज्याद ने जामा मस्जिद में शहर वालों को जमा किया। और मिम्बरे रसूल पर ख़ुतबा देते हुए कहा : उस खुदा की हम्द व सताइश जिसने अमीरुल-मोमिनीन यज़ीद बिन मुआविया को ग़ालिब किया और कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब हुसैन बिन अली को हलाक कर डाला। इस इजतिमा में मशहूर मुहिब्बे रसूल हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अफीफ़ अज़्दी, जो दोनों आंखों से नाबीना थे, उनसे ख़ुतबे के यह अल्फ़ाज़ सुन कर रहा नहीं गया। फ़र्ते ग़ज़ब में कांपते हुए खड़े हो गए और इब्न-ज्याद को ललकारते हुए कहा : खुदा की क़सम! तू ही कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब है। हुसैन सच्चा, उसके नाना जान सच्चे। इब्न-ज्याद उस जवाब से तिलमिला उठा और जल्लाद को हुक्म दिया कि शाहराह पर ले जाकर इस अन्धे बुढ़े का भी सर कलम कर दो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अफीफ़ शौके शहादत में मचलते हुए उठे और मक़तल पहुंच कर चमकती हुई तलवार का मुस्कुराते हुए ख़ैरमक़दम किया। ख़ून बहा; लाश तड़पी और ठण्डी हो गई। कौसर के साहिल पर जां-निसारों की तादाद में एक अदद का और इज़ाफ़ा हो गया।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २८४)

सरे इमाम की कूफ़ा में तशहीर

इब्न-ज्याद बद-निहाद ने हुक्म दिया कि तमाम सरों को कूफ़ा के बाज़ारों में फिराया जाए उसके बाद दरवाज़ा क़स्र पर आवेज़ा कर दिया जाए।

(तारीखे तबरी जिल्द सफ़ा २८४)

तारीखे तबरी की दूसरी रिवायत यह है कि इब्न-ज्याद ने कूफ़ा में इमाम आली मक़ाम के सरे मुबारक की तशहीर के बाद हज़रत इमाम और उनके तमाम जानिसार शोहदाए किराम के सरों और असीराने अहले-वैत को ज़हर बिन कैस, अबू बुर्दह बिन औफ़ अज़्दी और तारिक़ बिन अबू ज़िब्यान अज़्दी के हमराह शिमर वगैरह की सरकारदगी में यज़ीद पलीद के पास दमिशक़ उस हालत में रवाना किया कि हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पांव को जंजीर से जकड़ दिया गया था। और बीबियों को ऊंटों की नंगी पीठों पर बिठाया गया था। और ज़ालिम इब्न-ज्याद ने हुक्म दिया था कि सरों को नेज़ों पर चढ़ाए हुए आबादियों से गुज़रना ताकि लोगों को इन्त हो और आइन्दा कोई यज़ीद की मुख़ालफ़त पर आमादा न हो। (सआदतुल-कौनैन सफ़ा २३)

असनाए सफ़र में सरे मुबारक से अजीब-अजीब ख़वारिक़ व करामात का जुहूर हुआ। चुनांचे हज़रत ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत है कि जब इब्न-ज्याद ने हुक्म दिया कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के सरे अनवर को नेज़ा पर चढ़ाकर कूफ़ा की गलियों में फिरा या जाए तो उस वक़्त मैं अपने मक़ान की खिड़की में खड़ा क़ुरआने हकीम की सूरतुल कहफ़ की तिलावत कर रहा था। पढ़ते-पढ़ते जब इस आयत करीमा तक पहुंचा अम हसिबत अन्न न असहाबल कहफ़े वरक़ीमे कानू मिन आयातिना अ ज बा तो सरे अक़दस ये आवाज़ सुनी आजबु मिन असहाबिल कहफ़े क़तली व हमली असहाबे कहफ़ के वाकिआ से मेरा क़त्ल और मेरे सर को लिए फिरना अजीबतर है। दरहकीक़त बात यही है। क्योंकि असहाबे कहफ़ पर काफ़िरों ने जुल्म किया था लेकिन क़त्ल नहीं किया था। और हज़रत इमाम हुसैन को उनके नाना जान के कलिमा पढ़ने वालों ने मेहमान बनाकर बुलाया फिर बेवफ़ाई की और तीन दिन भूखे-प्यासे रखकर शहीद कर दिया। यह ज़रूर अजीब बात है।

(शवाहिदुन्नुबुव्व: सफ़ा ३०८ ख़साइसे कुबरा जिल्द २ सफ़ा २१०)

जब अशिक्या की जमाअत इमाम आली मकाम के सरे मुबारक को लेकर पहली मंजिल पर एक गिरजा घर के पास रात गुज़ारने के लिए उतरी और शराबे नबीज़ पी रही थी। उनके सामने लोहे का कलम गेद में नमूदार हुआ। उस कलम ने एक सतर खून से यह शेअर लिखा—

अ तरजू उम्मतुन क़तलत हुसैनन

शफ़ाअतु ज़हिही यौमल हिसाबि

यानी जिन्होंने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल किया है, क्या वह इस बात की उम्मीद रखते हैं कि उनके नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़यामत के दिन उनकी शफ़ाअत करेंगे?

(ख़साइस कुबरा जिल्द २ सफ़ा २१० संवाइके मुहर्रका सफ़ा ४४३)

यज़ीदियों ने जब देखा तो उनको बहुत तअज्जुब हुआ। गिरजा घर के राहिब से पूछा : यह शेअर किसने लिखा है और कब का लिखा हुआ है ?

राहिब ने कहा : किसने लिखा है यह मुझे नहीं मालूम, अलबत्ता इतना जानता हूँ कि तुम्हारे नबी के ज़माने से पांच सौ बरस पहले का लिखा हुआ है।

(हयातुल—हैवान हिस्सा २ सफ़ा १२५)

ख़साइसे कुबरा जिल्द अव्वल में है सफ़ा ७७ पर छः सौ साल लिखा है।

राहिब ने जब शहीदों के सरों को नेज़ों पर और चन्द बीबियों और बच्चों को बहालते कैदी देखा तो उसका दिल भर आया। और दरयाफ़्त करने पर जब पूरा हाल उसको मालूम हुआ तो कहा मआज़ल्लाह! तुम लोग कितने बुरे आदमी हो कि अपने नबी की औलाद को क़त्ल किए हो और फिर उनके बाल—बच्चों को कैदी बनाए हो। फिर उस राहिब ने उन यज़ीदियों से कहा कि अगर रात भर के लिए अपने नबी के नवासे का सर हमारे पास रहने दो तो मैं तुमको दस हज़ार दिरहम देता हूँ। वह लोग राज़ी हो गए। राहिब रक़म अदा करके हज़रत इमाम का सरे मुबारक लिया और अपने मख़सूस कमरे में ले गया। फिर सरे अनवर, चेहरए मुबारक और जुल्फ़ों और दाढ़ी के बालों पर जो गर्द व गुबार और खून जमा हुआ था धोया और इत्र काफ़ूर लगाया और बड़ी ताज़ीम व तकरीम के साथ अपने सामने रख कर ज़यारत करने लगा। खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उसके उस अदब से राज़ी हुआ और अपनी रहम के दरवाज़े खोल दिए। राहिब रोने लगा और उसकी निगाहों से पर्दे उठ गए। उसने देखा कि सरे अक़दस से आसमान तक नूर ही नूर है। जब उसने सरे अक़दस की यह करामत और अनवार व तजल्लियात

का मुशाहिदा किया तो वे—साख्ता सिद्क दिल से ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़कर मुसलमान हो गया। सुवह को सरे अनवर उनके हवाले कर दिया। गिरजा घर को हमेशा—हमेशा के लिए छोड़ कर अहले—बैत का मुती व खादिम बन गया। यहां एक और सख्त इवरतखेज वाकिआ यह हुआ कि लशकरे साद ने वाहम यह फैसला किया कि जो दिरहम राहिब ने दिया है यहीं तकसीम कर लिया जाए। चुनांचे जैसे ही दिरहम से भरी हुई थैलियों का मुंह खोला तो देखा कि सब दिरहम ठेकरी हो गए हैं और उनके एक तरफ यह आयते करीमा लिखी हुई है बला तहसबन्नल्ला ह गाफिलन अम्मा यामलुज्जालिमून। जालिम जो करते हैं खुदाए तआला को उससे गाफिल हरगिज न जानो। और दूसरी तरफ यह आयते मुबारका तहरीर थी : व सयालमुल्लजी न ज ल मू अय्य मुन्कलिबि यन्कलिबून। जुल्म करने वाले अन्करीब जान लेंगे कि वह किस करवट पल्टा खाएंगे। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६६१, सआदतुल—कौनैन सफ़ा १२४)

इमाम आली मक़ाम का सर दरबारे यज़ीद में

जब शोहदा के सर और असीराने अहले—बैत यज़ीद के दरबार (दमिश्क) में पहुंचे तो यज़ीद ने उनके साथ क्या सुलूक किया। इस सिलसिले में मुख़तलिफ़ रिवायतें तारीख़ के सफ़हात पर तहरीर हैं। एक रिवायत यह है कि शहादते इमाम हुसैन से यज़ीद नाराज़ हुआ और अपनी बेज़ारी का इज़हार किया। दूसरी रिवायत यह कि यज़ीद उससे खुश हुआ। महफ़िले सुरूर आरास्ता की और बर सरे महफ़िल सरे इमाम की तौहीन की। और दीगर रिवायतें पेश करके बहुत—से यज़ीदी यज़ीद इब्ने मुआविया को वाकिआते करबला का ज़िम्मेदार होने से बरी करने की नापाक कोशिश कर रहे हैं जैसा कि एक इब्ने यज़ीद जुहूर अहमद कर्शी औरंगावादी ने हाल ही में किया है। लेकिन दर हकीक़त सही तरीन रिवायत जिसको हज़रत इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमः ने तारीख़ुल—ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०५ में ब्यान फ़रमाया है : वह यह है कि जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने तमाम साथियों के साथ शहीद हो चुके तो इब्ने—ज़्याद ने उन तमाम शोहदा के सरों को यज़ीद के पास दारुस्सलतनत में भेज दिया। यज़ीद तो उस सरहाए बुरीदा को देख कर बहुत खुश हुआ मगर जब आम्मंतुल—मुस्लिमीन उसके उस फ़ेल पर उस से नाराज़ हुए

और नलामत की तो उसको भी अफसोस हुआ और अपने फेल पर नदामत हुई। सच तो यह है कि आम्मतुल मुस्लिमीन का यजीद के उस फेल पर नाराज़गी का इज़हार बिल्कुल बजा था।

मुत्तनिफ़े तारीखे तबरी अल्लामा अबी जाफ़र जरीरुत्तबरी लिखते हैं कि जब हज़रत इमाम हुसैन का सर यजीद के सामने पेश किया गया तो उसने लोगों को दरबार में आने की आम दावत दी। जब सब लोग आ गए तो उस वक्त लोगों ने यह देखा कि यजीद के हाथ में एक छड़ी थी जिससे वह आपके सामने के दांतों में ठोंका देता और यह कहता कि अब हमारी और उनकी मिसाल ऐसी है जैसा कि शायर हुसैन बिन अल हम्माम ने कहा है कि हमारी तलवारें ऐसे लोगों की खोपड़ियां तोड़ती हैं जो हम पर ग़ालिब थे और वह निहायत नाफ़रमान और ज़ालिम थे।

रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत अबू-दरज़ा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक्त वहां मौजूद थे। उन्होंने यह देखा तो फ़रमाया : ऐ यजीद! तू अपनी छड़ी हुसैन के दांतों और लबों से लगा रहा है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूमा करते थे। सुन ले क्यामत के दिन तेरा हश्म इब्न-ज़्याद के साथ होगा और हुसैन रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ होंगे। यह कह कर वह दरबारे यजीद से उठे और चले गए। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २६१)

अल्लामा इमाम इब्न-हजर मक्की शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि रिवायत नक़ल फ़रमाते हैं कि जब यजीद ने हज़रत इमाम हुसैन के सरे मुबारक के साथ बे-अदबी की (जैसा कि गुज़रा) तो उस वक्त यजीद के पास कैसरे रोम का सफ़ीर मौजूद था। उसने बहुत मुतअज्जिब होकर कहा कि हमारे यहां एक जज़ीरा के गिरजा में ईसा अलैहिस्सलाम के गदहे के खुर का निशान अभी तक महफूज़ है। हम लोग हर साल हदिए और नज़राने लेकर उसकी ज़यारत को जाते हैं। उसकी उसी तरह ताज़ीम करते हैं जिस तरह तुम लोग अपने काबे की करते हो। बिलाशुब्हः तुम लोग झूठे और बेहूदा हो। इसी तरह उस वक्त एक ज़िम्मी यहूदी भी मौजूद था। उस ने कहा मेरे और मेरे पैग़म्बर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के दर्मियान सत्तर (७०) पुश्तें गुज़र चुकी हैं लेकिन अब तक यहूदी मेरी ताज़ीम व तकरीम करते हैं और तुमने अपने नबी के फ़र्ज़न्द को इस तरह बेदरेग़ क़त्ल कर दिया।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६६०)

अहले-बैत की मदीना मनव्वरा वापसी

सहाबिए रसूल हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु, जो हज़रत मुस्लिम बिन अकील रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ कूफ़ा में सख्ती न करने के सबब बहुक्मे यज़ीद गवर्नरी से माज़ूल कर दिए गए थे, यज़ीद ने उन्हें अहले-बैते नुबुव्वत का हमदर्द समझ कर बुलवाया और कहा कि अहल व अयाल को इज़्ज़त व एहताराम के साथ मदीना पहुंचाने का इन्तिज़ाम करो।

उसके बाद यज़ीद ने अपने आपको क़त्ले हुसैन से बरी ज़ाहिर करने की कोशिश करते हुए हज़रत ज़ैनुल-आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु को तन्हाई में बुलाकर कहा : खुदा इब्न-ज़्याद पर लानत करे। वल्लाह! अगर बराहे-रास्त आपके वालिद का मेरा सामना हो जाता तो जो कुछ वह फ़रमाते, मैं मंज़ूर कर लेता और उनको क़त्ल करना हरगिज़ ग़वारा न करता। लेकिन खुदा को जो मंज़ूर था, वह हुआ। अब आप मदीना तशरीफ़ ले जाइए और मुझको वहां से ख़त लिखते रहिएगा। जो भी ज़रूरत हो उससे मुझे मुत्तला कीजिएगा। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २८७)

हज़रत नोमान बिन बशीर के हमराह तीस आदमियों का हिफ़ाज़ती दस्ता रवाना किया गया। वह अहले-बैत को लेकर मदीना मनव्वरा के लिए रवाना हुए। और रास्ता भर निहायत ताज़ीम व तकरीम से पेश आए। मदीना मनव्वरा के लोगों को वाक़िये करबला की ख़बर पहले ही पहुंच चुकी थी। जब यह लुटा हुआ काफ़िला शहर में दाख़िल हुआ तो एक कुहराम मच गया। क़यामत से पहले क़यामत आ गई। बुफ़ूरे ग़म और ज़ब्बए बे-ख़ुदी में अहले मदीना और हज़रत उम्मे सलमा व हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िया घरों से रोते हुए निकल पड़े। काफ़िला सीधा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िर हुआ। हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबिदीन की नज़र जैसे-ही रौज़ए मुतहहरा पर पड़ी तो बेइख़्तियार रो पड़े और सिर्फ़ इतना ही कह सके। दादा जान! अपने नवासे का सलाम कुबूल फ़रमाइए।

आह व फुगां का उबलता हुआ सागर थम जाने के बाद शहज़ादए कौनैन हज़रत इमाम आली मक़ाम सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक जन्नतुल-बकी (मदीना मनव्वरा) में मादरे मुशफ़िका सैयदा फ़ातिमतुज्जुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहलू में सुपुर्दे ख़ाक किया गया।

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरज़ाहु अन्ना

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

की शहादत के बाद

यज़ीद पत्नीद की दूसरी
नापाक ज़सारत

मस्जिदे नब्वी

और

मदीना मनव्वरा

पर ज़ारिहाना हमला और शर्मनाक बेहुर्मती

वाकिआ-ए-हुर्रह

मदीना मनव्वरा पर हमला और कत्ल व गारतगारी

हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद यजीद पलीद ने अपने चचा—जाद भाई उस्मान इब्ने मुहम्मद इब्न अबी सुफियान को मदीना मनव्वरा रवाना किया ताकि बाशिन्दगाने मदीना को यजीद की बैअत पर दावत दें। उस्मान बिन मुहम्मद मदीना पहुंचते ही एक जमाअत को यजीद की जानिब रवाना किया। बादहू जब यह जमाअत यजीद के पास से मदीना तैय्यबा वापस आई तो उसने यजीद पलीद की दुशनाम—तराजी पर अपनी गुफ्तगू का आगाज किया और उसकी बेदीनी, शराब—नोशी, गाना गाने वालियों से फ़हश और गन्दे गाने सुनने, किस्सा—गोई में वक्त सर्फ करने, हराम—ख़ोरी, बहन भाई का निकाह और कुत्तों के साथ खेलने का जिक्र किया और कहा कि हम लोगों ने उसकी उन तमाम ख़ुराफ़ात को देखकर उसकी बैअत तोड़ दी है। तुम लोगों से भी हमारा कहना यही है कि वह बैअत के काबिल नहीं।

अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहम: 'तारीखुल—खुलफ़ा' संफ़ा ३०६ में लिखते हैं कि उस वफ़द के काइद हजरत हंज़ला रजियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वल्लाह! हम ने यजीद की मुख़ालिफ़त उस वक्त इख़्तियार की जब हमको यकीन हो गया कि अब हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश होगी। क्योंकि यजीद के फ़िस्क व फुजूर का यह आलम था कि लोग अपनी मां, बहनों और बेटियों से निकाह कर रहे थे, शराबें आम तौर से पी जा रही थीं और लोगों ने नमाज़ तर्क कर दी थी। उसी वफ़द के एक रुक्न मुंज़िर बिन जुबैर ने भी क़सम खाकर कहा कि मुझको यजीद ने एक लाख दिरहम दिए हैं और मेरे साथ एहसान भी किया है। लेकिन मैं सच्चाई को हाथ से जाने न दूंगा। यजीद शराब—नोश और तारिके सौम व सलात है। इब्न—जौजी अबुल—हसन बदाहिनी से जो सिकः रावी हैं, नक़ल करते हैं कि अहले मदीना यजीद की अलामाते फ़िस्क व फुजूर के ज़ाहिर होने के बाद मिम्बर पर चढ़कर उसकी बैअत से मुनकिर हो गए। अब्दुल्लाह इब्ने अमरू बिन हफ़स मख़ज़ूमी ने अपना अमामा सर से उतार कर कहा कि अगरचे यजीद ने मुझको सिला और इनाम दिया है नीज़ मेरी जाइदाद में

भी इजाफा किया है लेकिन जो खुदा का दुशमन और दायमुल-खमर हो मैंने उसको इस तरह अपने से अलाहिदा कर दिया, जिस तरह अपनी दरतार को। उसके बाद दीगर और लोगों ने यजीद की बैअत से अपनी बेजारी का इजहार करते हुए उसकी बैअत तोड़ दी। और उस्मान बिन मोहम्मद, जो यजीद शकी की जानिब से गवर्नरे मदीना मनव्वरा मुकर्रर हुआ था उसको मदीना से निकाल कर अब्दुल्लाह बिन हंजला गसीलुल-मलाइका के दस्त पर बैअत कर ली।

जब यजीद पलीद को यह ख़बर पहुंची तो वह बर-अफ़रोख़ता हुआ और मुस्लिम बिन उक़बा को सन् ६३ हिजरी में बीस हजार लशकर के साथ मदीना तैयबा और मक्का मुकर्रमा पर हमला के लिए भेजा। उस बदबख़्त लशकर ने मदीना मनव्वरा में वह तूफ़ाने बदतमीजी बरपा किया कि जिस के तसव्वुर से रूह लरज उठती है। क़त्ल व ग़ारतगरी और तरह-तरह के मज़ालिम का बाज़ार गर्म किया। लोगों के घरों को लूट लिया। सात सौ सहाबा को बे-गुनाह शहीद किया। और ताबईन व हुफ़फ़ाजे कुरआन वग़ैरह मिला कर कुल दस हजार से ज़्यादा शहीद किया। लड़कों को कैद कर लिया और पाक दामन औरतों को तीन शबाना रोज़ अपने और यजीदी फ़ौजियों पर हलाल कर लिया। रौज़ए शरीफ़ व मिम्बर शरीफ़ की दर्मियानी जगह — जिसकी बाबत सही हदीस में आया है कि यह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है — यहां पर घोड़े बांधे और उनके लीद और पेशाब मिम्बरे अतहर पर पड़े। तीन दिन तक मस्जिदे नब्वी में लोग नमाज़ से मुशर्रफ़ न हो सके।

सिर्फ़ सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु, जो क़िबार ताबईन में से थे पागल बन कर वहां हाज़िर रहे। आख़िर में उन ज़ालिमों ने उनको भी गिरफ़्तार कर लिया मगर फिर दीवाना समझ कर छोड़ दिया। इब्न-जौजी ने ऐसी सनद के साथ कि जो हज़रत सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल है ब्यान फ़रमाते हैं कि उन्होंने कहा कि हर्रह की रातों में (जिस वक़्त यजीदियों ने हमला किया) मेरे सिवा दूसरा कोई शख्स मस्जिद नब्वी शरीफ़ में न था। अहले शाम जबकि मस्जिद में आए तो कहते थे कि यह दीवाना बूढ़ा इस मक़ाम पर क्या कर रहा है ? नमाज़ का कोई वक़्त ऐसा न गुज़रता था जब मैं अज़ान व इक़ामत की आवाज़ हुज़रए मुक़द़सा (मस्जिद नब्वी) से न सुनता। फिर मैं उसी अज़ान व इक़ामत से नमाज़

अदा करता था। यजीदी लूट खसूट की गर्म बाजारी और गुंडा-गर्दी का अन्दाजा उस से किया जा सकता है कि हजरत सैय्यदना अबू-सईद खुदरी रजियल्लाहु अन्हु जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जलीलुल-कद्र सहाबी हैं, जब यजीदी फौज उनके मकान में घुसी और कुछ न पाया तो आपकी दाढ़ी के सब बाल उखेड़ लिए। इसी तरह उस खबीस लशकर ने एक नौजवान को पकड़ लिया। उसकी मां फरयाद करती आई तो उसके सामने उसके लड़के को शहीद कर दिया। और उसका सर उसकी मां की गोद में दे दिया। और कहा : तू अपने जिन्दा रहने को गनीमत नहीं समझती कि बेटे को लेने चली आई।

जब मुस्लिम बद-किरदार ने अहले मदीना से ज़बर्दस्ती यजीद पलीद की बैअत व इताअत पर मजबूर किया तो एक शख्स जो कबीलए कुरैश से था उसने बवक्ते बैअत यह कहा कि मैं तरीकाए ताअत पर बैअत करता हूँ, मासियत पर नहीं। मुस्लिम ने उसके कत्ल का हुक्म दे दिया। उस मकतूल की मां यजीद बिन अब्दुल्लाह बिन रबीया ने कसम खाई कि अगर मैं कुदरत पाऊं तो इस जालिम मुस्लिम को जिन्दा या मुर्दा जला-दूंगी। जब वह जालिम मदीना मनव्वरा में कत्ल व गारतगरी के बाद मक्का मुअज्जमा की तरफ़ मुतवज्जह हुआ ताकि वहां अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उन तमाम लोगों का खातेमा कर दे, जो यजीद के खिलाफ़ हैं, तो इत्तिफ़ाक़न रास्ते में उस पर फ़ालिज का हमला हुआ और वह फ़ौरन मर गया। उसकी जगह यजीद के हुक्म के मुताबिक़ हुसैन बिन नुमैर सुकूनी काइदे लशकर बना। मुस्लिम को उन्होंने वहीं दफ़न कर दिया।

जब यह खबीस लशकर आगे बढ़ गया तो उस औरत को मुस्लिम के मरने का पता चला। वह कुछ आदमियों को साथ ले कर उसकी क़ब्र पर आई ताकि उसको क़ब्र से निकाल कर जलाए। जब क़ब्र खोदी तो क्या देखा कि अज़दहा उसकी गर्दन से लिपटा हुआ उसकी नाक की हड्डी पकड़े चूस रहा है। यह देख कर सब डरे और उस औरत से कहने लगे : खुदाए तआला खुद ही उसके आमाल की सज़ा उसको दे रहा है और उसने अज़ाब के फ़रिशता उस पर मुसल्लत कर दिया है। अब तू इसको रहने दे। उस औरत ने कहा : नहीं, खुदा की कसम! मैं अपने अहद और कसम को ज़रूर पूरा करूंगी। और इसको जला कर अपने दिल को ठंडा करूंगी। मजबूर होकर सब ने कहा : अच्छा! फिर इसको पैरों की तरफ़ से निकालना

चाहिए। जब उधर से मिट्टी हटाई तो क्या देखा कि उसी तरह पैरों की तरफ भी एक अजदहा लिपटा हुआ है। फिर सब ने उस औरत से कहा : अब तू इसको छोड़ दे। इसके लिए यही अजाब काफी है। मगर वह औरत न मानी। बुजू करके दो रकअत नमाज़ अदा की और अल्लाह तआला के हुजूर हाथ उठाकर दुआ मांगी। इलाही! तू ख़ूब जानता है कि इस जालिम पर मेरा गुस्सा महज़ तेरी रज़ा के लिए है। मुझे यह कुदरत दे कि मैं अपनी कसम पूरी करूँ और उसको जला दूँ। यह दुआ करके उसने एक लकड़ी अजदहे की दुम पर मारी वह गर्दन से उतर कर चला गया। फिर दूसरे अजदहे को मारी वह भी चला गया। तब उन्होंने मुस्लिम की लाश को कब्र से निकाला और जला दिया।

(‘जज़्बुल-कुलूब’ सफ़ा ३७ ‘शामे करबला’ सफ़ा २२९)

‘जज़्बुल-कुलूब’ में है कि मुस्लिम की मौत मुहर्रम की चांद रात सन् ६४ हिजरी को हुई उसके बाद लोगों ने उसका नाम मुसरिफ़ रख दिया।

फ़जाइले मदीना मनव्वरा

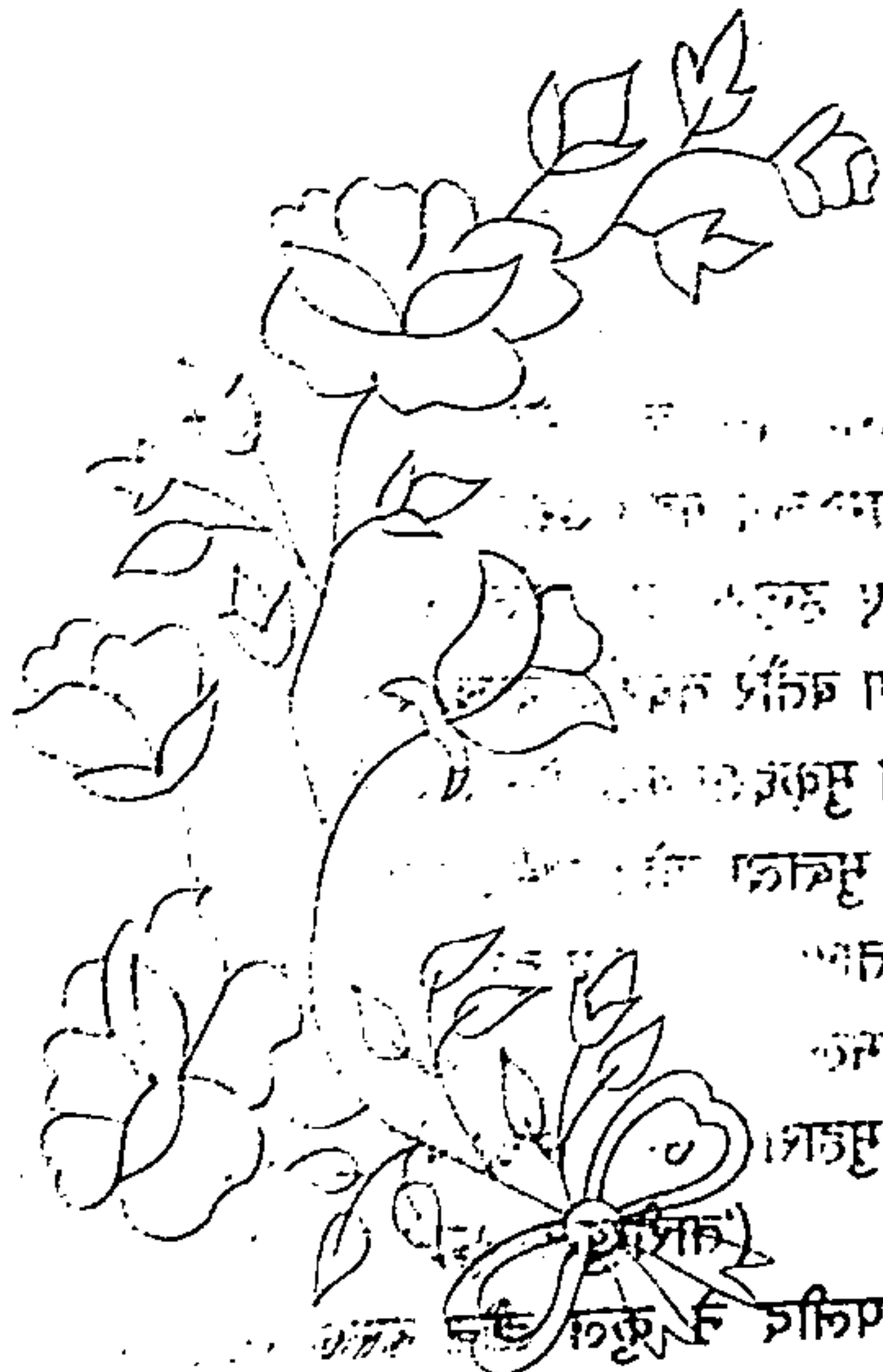
हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ला यकीदु अहलल मदीनति अहदुन इल्ला अनमा अ कमा यनमाउल मिल्हु फ़िल माए जो शख्स अहले मदीना से मक्र व फ़रेब करे या जंग करे तो वह उस तरह पिघल जाएगा जैसे नमक पानी में पिघलता है। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा ६७७) हज़रत साद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ला युरीदु अहदुन अहलल मदीनति बिसूइन इल्ला अजाबहुल्लाहु फ़िन्नारि जौबरसास जो मदीना मनव्वरह वालों के साथ बुराई का इरादा करेगा अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ की आग में रांगे की तरह पिघलायेगा। (मुस्लिम शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा १४४)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मन अखा फ़ अहलल मदीनति जुल्मल लहुम अखाफ़हुल्लाहु व कानत अलैहि लानतुल्लाहि वल मलाइकति वन्नासि अजमईन। ला यकबलुल्लाहु मिन्हु यौमल क़्यामते सरफ़ौ वला अदला जिसने अहले मदीना को अपने जुल्म से ख़ौफ़ज़दा किया खुदाए तआला उसे ख़ौफ़ में मुब्तला करेगा। उसपर अल्लाह तआला, फ़रिशते और सब लोगों की लानत है, क़्यामत के दिन अल्लाह तआला न उसकी फ़र्ज

क़बूल करमायेंगा और न नफ़ल।

(जिज़्युल क़लूब सफ़ा ३२)

इन अहलीयों करीमा से साबित हुआ कि जो अहले मदीना को डराए, उनसे जंग करे, उन पर जुल्म ढाए या उनसे किसी बुराई का भी इरादा करे तो खुदाए तआला उसे दोज़ख की आग में रांगे की तरह पिघलाएगा और उस पर अल्लाह, उसके परिवार और तमाम इन्सानों की लानत है। और उसकी कोई इयादत चाहे वह फ़र्ज हो या नफ़ल अल्लाह तआला क़बूल नहीं करमाएगा।



३३
३४
३५
३६

३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

यजीद की तीसरी शरारत व शैतनत हरमे मक्का और खाना काबा पर मिन्जनीक से हमला और बेहुरमती

मदीना मनव्वरा को ताराज करने के बाद यजीद की यह फौज हजरत अब्दुल्लाह इब्न-जुबैर के मुकाबले के लिए मक्का मुअज्जमा रवाना हो गई। फौज का सिपहसालार मुस्लिम बिन उकबा तो रास्ते ही में हलाक हो गया लेकिन मरने से पहले उसने हुसैन बिन नुमैर को बहुक्म यजीद अपना काइम-मकाम बना गया था। इब्न-नुमैर ने मक्का पहुंच कर हरम का (जहां हजरत अब्दुल्लाह इब्न-जुबैर रजियल्लाहु अन्हु पत्ताहगर्जी थे) मुहासरा कर लिया और मिन्जनीक से संगबारी की। (मिन्जनीक पत्थर फेंकने का आला होता है जिससे पत्थर फेंक कर मारा जाता है। उसकी जड़ बड़ी जबरदस्त और दूर की मार होती है।) संगबारी से सेंहने हरम शरीफ पत्थरों से भर गया। उसके सदमे से मस्जिदे हराम के सुतून टूट गए। काबए मुकर्रमा पर संगबारी करने से उसकी दीवारें शिकस्ता हो गई और छत गिर गई। शामी पत्थर बरसाने के बाद रूई, गंधक और राल के गोले भी बना-बना कर और जला-जला कर फेंकने लगे जिससे खानए काबा में आग लग गई। उसका गिलाफ जल गया। और उस दुंबा का सींग जो फिदयए हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम में जन्नत से भेजा गया था उसकी सींग बतौरे तबरुक काबा शरीफ की छत में आवेजां था, वह भी जल गया। काबा मुकद्दसा कई रोज तक बेलिबास रहा और वहां के बाशिन्दे संख्त मुसीबत में मुब्तला रहे। अभी शामी लशकर काबा शरीफ और अहलियाने मक्का की ताराजी में लगा हुआ ही था कि अचानक यजीद पलीद के मरने की इतिला मली। इब्न-नुमैर ने यह खबर सुनी तो उसके हौसले पस्त हो गए और उसने मुहासरा उठा लिया और हजरत अब्दुल्लाह इब्न-जुबैर से सुलह कर ली। (तारीखुल-खुलफा सफा ३०६ जज्बुल-कुलूब सफा ४५)

यजीद पलीद ने कुल तीन बरस सात महीने हुक्मत की और १५ रबीउल-अव्वल सन् ६४ हिजरी उन्तालीस साल की उम्र में शहर हिम्स मुल्के शाम में हलाक हुआ।

यजीद के मरने के बाद अहलै हिजाज़ व यमन व इराक व खुरासान ने

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-ज़ुबैर के दरस्ते मुबारक पर बैअत की और अहले शाम व मिस्र ने यज़ीद के बेटे मुआविया को उसका ज़ानशीन बनाया। मुआविया अगरचे यज़ीद की औलाद में से था लेकिन आदमी नेक और सालेह था और बाप के नापाक अफ़आल को दिल से बुरा जानता था। अनाने हुकूमत लेते वक़्त ही से बीमार था और आख़िर तक बीमार रहा और चालीस रोज़ या दो तीन महीने हुकूमत करने के बाद इन्तिक़ाल कर गया।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा)

अल्लाह हमें और हमारे तमाम अहबाब व रिशतादारों को अहले-बैत के जुमरे में रखे और यज़ीद पलीद के तमाम हवारीईने के शर् व फ़साद से महफूज़ व मामून फ़रमाए। आमीन बजाहे सैयदुल मुर्सलीन।



क़तिलाने हुसैन का इबरतनाक अंजाम

हज़रत आमिर बिन साद अलबजली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद मैं ने ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा। आपने फ़रमाया : ऐ आमिर! मेरे सहाबी बराअ् बिन आजिब के पास जाकर मेरा सलाम कह और ख़बर दे कि जिन्होंने मेरे बेटे हुसैन को क़त्ल किया है, वह दोज़खी हैं। पस मैं ने बराअ् बिन आजिब की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह ख़्वाब ब्यान किया। उन्होंने सुनकर फ़रमाया : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सच फ़रमाया। ('सआदतुल-कौनैन' सफ़ा १५४)

हाकिम ने सैयदना इब्न-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि औहल्लाहु इला मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्नी क़तलतु वियहया बिन ज़करीया सबईन अल्फ़न व इन्नी क़तिलुन बिइन्ने बिन्तिक सबईन अल्फ़ौ व सबईन अल्फ़ा। यानी अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास वहय भेजी कि मैं ने यहया बिन ज़करीया के इवज़ सत्तर हज़ार को मारा और ऐ महबूब! तुम्हारे नवासे के इवज़ सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार यानी एक लाख चालीस हज़ार मारुंगा।

(सवाइके मुहर्क सफ़ा ६६२, ख़सईसे कुबारा जिल्द २ सफ़ा २०८, मासबत बिस्सुन्न: सफ़ा ३०)
हज़रत सैयद इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद सरज़मीने शाम पर क़हरे इलाही का आतिश-फ़शां फट पड़ा और एक-एक गुस्ताख़ से मवाख़ज़ा हुआ। एक-एक मूजी को सज़ा मिली। दमिशक़ से कूफ़ा और करबला तक के सारे सितमगर लरज़ा देने वाली हलाकतों का निशाना बने। यज़ीदी इक़तिदार क़हर व ग़ज़ब की कड़कती हुई बिजलियों से जल गया। आबादियों में हौलनाक बीमारियां और वबायें फूट पड़ीं।

इब्न-जौजी जुहरी से रिवायत करते हैं कि क़तिलाने इमाम हुसैन में से कोई भी शख़्स दुनिया में सज़ा से न बचा। बाज़ को क़त्ल की सज़ा मिली, बाज़ अन्धे हो गए और जो लोग बरसरे इक़तिदार थे बहुत थोड़ी मुदत में उनका इक़तिदार जाता रहा।

इल्म-कसीर लिखते हैं। हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के बाद जो पिल्ले बरपा हुए और जिनका जिक्र तारीखों में आता है उनमें से अकसर बिल्कुल सही हैं।

(अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा १६४ 'सवाइके मुहर्रका' सफ़ा ६४८)
अब्दुल-मलिक के ज़माने में जब मुख्तार बिन अबी उवैद सकफ़ी कूफ़ा का हाकिम मुक़र्रर हुआ तो उसने सबसे पहले हज़रत इमाम हुसैन के कातिलों से इन्तिक़ाम का नारा बुलन्द किया। और लोगों से कहा कि मुझे हर उस शख्स का नाम व पता बताओ जो हज़रत इमाम हुसैन के मुकाबले में करबला गया था। लोगों ने बताना शुरू किया और मुख्तार सकफ़ी ने एक-एक को गिरफ़्तार करना और शाहराहों पर क़त्ल करना शुरू कर दिया।

यज़ीद बिन मुआविया का अंजाम

दमिश्क के भरे दरबार में अहले-बैते नुबुव्वत के एक मज़लूम ने यज़ीद को मुख़ातब करते हुए कहा था— ऐ यज़ीद सुन लें! हुसैन के ख़ून से जिस सल्तनत की बुनियाद को तूने पानी दिया है तेरी औलाद भी उस पर नहीं थूकेगी।" इस जुरअत-मन्दाना ख़िताब पर सारा दरबार सन्नाटे में आ गया था और सामेईन के दिलों में यह बात उतर गई थी कि ख़ानदाने अहले-बैते रिसालत के मज़लूम की यह आह कभी ख़ाली नहीं जाएगी।

वाक़ियाए करबला के कुछ ही दिनों बाद यज़ीद एक हलाकत आफ़री और इन्तिहाई मूज़ी मर्ज़ में मुब्तला हुआ। पेट के दर्द और आंतों के ज़ख़्म की टीस से माहिए-बे-आब की तरह तड़पता रहता था। हिम्स में जब उसे अपनी मौत का यकीन हो गया तो अपने बड़े लड़के मुआविया को बिस्तरे मर्ग पर बुलाया। और उमूरे सलतनत के बारे में कुछ कहना ही चाहता था कि बेसाख़्ता बेटे के मुंह से एक चीख़ निकली और निहायत ज़िल्लत व हिक़ारत के साथ यह कहते हुए बाप की पेशकश को ठुकरा दिया कि "जिस ताज व तख़्त पर आले रसूल के ख़ून के धब्बे हैं मैं उसे हरगिज़ कुबूल नहीं कर सकता। खुदा इस मनहूस सल्तनत की विरासत से मुझे महरूम रखे जिसकी बुनियादें सिक्ते रसूल के ख़ून पर रखी गई हैं।"

यज़ीद अपने बेटे के मुंह से यह अल्फ़ाज़ सुन कर तड़प गया, और शिद्दते रन्ज व अलम से बिस्तर पर पांच पटकने लगा। मौत से कुछ दिन

पहले यजीद की आंते सड़ गई और उसमें कीड़े पड़ गए। तक्लीफ की शिद्दत से खिन्जीर की तरह चीखता था। पानी का कतरा हलक से नीचे उतरने के बाद नशतर की तरह चुभने लगता था। अजीब कंहरें हलाही की मार थी। पानी के बगैर भी तड़पता था और पानी पीकर भी चीखता था। बिल-आखिर उसी दर्द की शिद्दत से तड़प-तड़प कर उसकी जान निकली। लाश में ऐसी हौलनाक बदबू थी कि करीब जाना मुश्किल था। जैसे-तैसे उसको सुपुर्दे खाक किया गया। (नक्शे करबला सफा ६५)

इब्न-ज्याद का अंजाम

उबैदुल्लाह इब्न-ज्याद यह वह बदबख्त व बद-निहाद इन्सान है जो यजीद की तरफ से कूफा का गवर्नर मुकर्रर किया गया था। उसी बदबख्त के हुक्म से हज़रत इमाम मुस्लिम और उनके यतीम बच्चों की शहादत हुई। और हज़रत इमाम हुसैन और आपके अहले-बैत व असहाब को तमाम ईजाएं पहुंचाई गई। यही इब्न-ज्याद मोसिल में तीस हजार फौज के साथ उतरा। मुख्तार ने इब्राहीम बिन मालिक अशतर को उसके मुकाबले के लिए एक फौज को लेकर भेजा। मोसिल से तक्रीबन २५ किलोमीटर के फासले पर दरियाए फुरात के किनारे दोनों लशकरो में मुकाबला हुआ और सुबह से शाम तक खूब जंग रही। जब दिन खत्म होने वाला था और आफ़ताब गुरुब होने के करीब था उस वक्त इब्राहीम की फौज ग़ालिब आई। इब्न-ज्याद को शिकस्त हुई और उसके हमराही भागे। इब्राहीम ने हुक्म दिया कि फौजे मुख़ालिफ़ में से जो हाथ आए उसको ज़िन्दा न छोड़ा जाए चुनांचे बहुत-से हलाक किए गए। उस हंगामा में इब्न-ज्याद भी फुरात के किनारे मुहर्रम की दसवीं तारीख सन् ६७ हिजरी में मारा गया। उसका सर काट कर इब्राहीम के पास भेजा गया। इब्राहीम ने मुख्तार के पास कूफ़ा भिजवाया। मुख्तार ने दारुल-इमारते कूफ़ा को आरास्ता किया और अहले-कूफ़ा को जमा करके इब्न-ज्याद का सरे नापाक उसी जगह रखवाया जिस जगह उस मगरूरे हुकूमत व बन्दए दुनिया ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक रखा था। मुख्तार ने अहले कूफ़ा को खिताब करके कहा : ऐ अहले कूफ़ा! देख लो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के खूने नाहक ने इब्ने ज्याद को न छोड़ा। आज उस नामुराद का सर इस जिल्लत व रुसवाई के साथ यहां रखा हुआ है। छः

साल हुए हैं। वही तारीख है, वही जगह है। खुदा वन्दे आलम ने इस मगरूर फिरऔन खिसाल को ऐसी जिल्लत व रुसवाई के साथ हलाक किया। उसी कूफा और उसी दारुल-इमारात में उस बे-दीन के कत्ल व हलाक पर जश्न मनाया जा रहा है।

(सवानहे करबला सफ़ा १४२)

तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि जिस वक़्त इब्न-ज़्याद और उसके सरदारों के सर मुख़्तार के सामने लाकर रखे गए तो एक बड़ा सांप नमूदार हुआ। उसकी हैबत से लोग डर गए। वह तमाम सरों में फिरा। जब अबैदुल्लाह इब्न-ज़्याद के सर के पास आया तो उसके नथुने में घुस गया और थोड़ी देर ठहर कर उसके मुंह से निकला। इस तरह तीन बार सांप उसके सर के अन्दर दाख़िल हुआ। और ग़ायब हो गया।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द २ सफ़ा ७६४)

अमरु बिन साद का अंजाम

अमरु बिन साद यह वही शकीए अज़ली है जिसकी दसों उंगलियां आले हैदर के खून में डूबी हुई हैं। जिसकी कमान में करबला का खूँरेज़ मारका सर हुआ। और ख़ानदाने रिसालत के लाल व जवाहिरे खाक व खून में आलूदा हुए। मुल्क रैय की लालच में उस ज़ालिम ने बीबी बतूल का हरा भरा चमन ताराज किया। जब मुख़्तार के हुक्म से यज़ीदी कुत्तों का कत्ले आम शुरू हुआ तो इब्न-साद कुत्तों की तरह धर-उधर भागने लगा। लेकिन मुख़्तार के जांबाज़ सिपाहियों ने उसको पकड़ लिया। जिस वक़्त इब्न-साद सामने आया तो मुख़्तार की आंखों से चिंगारियां बरसने लगीं। गरजते हुए कहा : ओ दुशमने रूसल! बता तुझे क्या सज़ा दूं जिससे दुनियाए इस्लाम के कलेजों की वह आग टंडी हो जाए जो तेरे नापाक हाथों ने करबला में लगाई है। इब्न-साद ने जवाब दिया। मैं बेगुनाह हूं वाकिआते करबला की सारी जिम्मेदारी यज़ीद और इब्ने ज़्याद पर है। मैं ने सिर्फ़ हुक्म की तामील की है। मुख़्तार की आंखें गुरसा से सुर्ख हो गई और कहा : ओ नंगे इस्लाम! सच बता, यज़ीद अगर तेरे खून की औलाद के कत्ल का हुक्म देता तो क्या उसकी तामील कर सकता था? यज़ीद के हुक्म की तूने तामील की और नबी के हुक्म का जनाज़ा निकाल दिया।

उसी दर्मियान ख़बर मिली कि इब्न-साद का बेटा हफ़स, जो करबला में इमाम आली मक़ाम के खिलाफ़ अपने बाप की मदद कर रहा था, वह

भी गिरफ्तार करके लाया गया है। मुख्तार ने हुक्म दिया : उस कोरस हाज़िर किया जाए। जब वह सामने आया तो जल्लाद से कहा : इब्न-साद की आंखों के सामने उसके बेटे का सर तन से जुदा कर ताकि उसे मालूम हो जाए कि हज़रत अली अकबर और हज़रत अली असगर की तड़पती हुई लाश देखकर हज़रत इमाम आली मक़ाम के दिल पर क्या गुज़री होगी? जल्लाद आगे बढ़कर जूं ही गर्दन पर तलवार चलाई इब्न-साद चीख पड़ा। अभी वह अपना सर पीट ही रहा था कि इशारा पाते ही जल्लाद ने इब्न-साद की गर्दन भी उड़ा दी। इस तरह जुल्म व शकावत के एक बहुत बड़े इफ़रीयत के नापाक वुजूद से धरती का बोझ हल्का हुआ। तारीख़ तबरी में है कि मुख्तार के सिपाहियों ने इब्न-साद को उसके मक़ान में क़त्ल करके उसका सर मुख्तार के सामने पेश किया। उस वक़्त उसका बेटा हफ़स वहीं मौजूद था। बाप का सर देख कर तड़प उठा। उसके बाद मुख्तार ने उसका भी सर क़लम कर देने का हुक्म दिया। और दोनों सर हज़रत मुहम्मद विन हनफ़ियां रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेज दिया।

(नक़शे करबला सफ़ा ७० 'तारीखे तबरी' जिल्द ५ सफ़ा ५०४)

शिमर का अंजाम

यह वही सियाहबख़्त है जिसने ज़िगर गोशए रसूल की गर्दन पर तलवार चलाई थी। और फ़ातिमा के चांद को खाक व खून में डुबोया था। इब्न साद के क़त्ल से फ़ारिग होकर मुख्तार ने उसे सामने खड़ा किया। मारे ख़ौफ़ व दहशत के शिमर थर-थर कांपने लगा। मुख्तार ने गरजते हुए कहा : नाहन्ज़ार! तुझे ज़रा भी ग़ैरत नहीं आई कि तूने अपने हाथों से काबा की दीवार ढा दी। ऊंट और बकरी की तरह फ़ातिमा के लाल को ज़बह किया। अफ़सोस! हरम का चिराग़ और अर्श की क़न्दील तूने फूँकों से बुझा दी। ऐ शकीयुल-क़ल्ब! तीन दिन भूखे-प्यासे नाज़नीन को तहे तेग़ करते हुए तुझे ज़रा भी तरस नहीं आया। तेरा ज़िन्दा जिस्म फूँक कर उसकी राख़ हवाओं में उड़ा दी जाए तब भी हुसैन के खून का बदला नहीं हो सकेगा। संगदिल कातिल! ज़री-ज़री हुसैन का नारा बुलन्द कर रहा है। तेरे हाथों ने बहर व बर में आग लगा दी है। अब उसे कौन बुझा सकता है? आलमे ग़ैज़ में जूं ही मुख्तार ने तलवार उठाई, शिमर ने गिड़गिड़ाते हुए कहा : प्यास से तड़प रहा हूँ, एक घूंट पानी पिला दे। मुख्तार ने कहा :

शिमर! वह वक्त याद कर जब तेरी फौज ने फुरात की लहरों पर २२ हजार तलवारों का पहरा बिठा दिया था और अहले-वैत के मासूम बच्चों और पर्दा-नशीन सैय्यदानियां तीन शबाना रोज पानी के एक-एक कतरे का तरस के रह गई। तुझे पानी नहीं मिल सकता। जहन्नम का माए हर्मीम तेरे इन्तिज़ार में है। शिमर कुछ कहना ही चाहता था कि मुख्तार ने इशारा किया और जल्लाद ने आगे बढ़कर सर तन से जुदा कर दिया।

(नक्शे करबला सफ़ा ७२)

तारीखे तबरी में है कि मुख्तार के सिपाहियों ने शिमर लईन पर हमला किया और उसके सर को काट कर मुख्तार के पास भेज दिया और लाश कुत्तों के लिए फेंक दिया। 'सवाइके मुहर्रका' में हैं कि शिमर की लाश को घोड़ों की टापों से रौंद डाला गया।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा ४६६, सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६५८ अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा १६५)

खौली बिन यज़ीद का अंजाम

यह वही ज़ालिम व बेरहम इन्सान है जिसने सिद्धे रसूल के कलेजे में बरछा मारा था। सर को नेजे में चढ़ाकर खुशी में नाचता था। मुख्तार के सामने जब लाया गया तो बेद की तरह कांप रहा था। उसे देखते ही मुख्तार के ग़ज़ब की आग भड़क उठी। जल्लाद को हुक्म दिया कि उसके दोनों हाथ काट डालो। जब उसके दोनों हाथ काट डाले गए तो दोनों पांव काटने का हुक्म दिया। तकलीफ़ की शिद्दत से ज़मीन पर उछलने लगा। मुख्तार ने कहा : ज़ब्त से काम ले। तेरे क़त्ल के बाद भी तेरी लगाई हुई आग मुसलमानों के सीनों में भड़कती रहेगी। यह भी तेरे आमाल की काफी सज़ा नहीं है। तू जिस दर्दनाक अज़ाब का मुस्तहिक़ है उसका सिलसिला तेरी आखिरी हिचकियों के बाद शुरू होगा। (नक्शे करबला सफ़ा ७३)

तारीखे तबरी और अल-हुसैन (अरबी) तसनीफ़ में है कि मुख्तार ने खौली के घर वालों के सामने उसे क़त्ल किया। और फिर उसको जला दिया। और उस वक्त तक उसकी लाश के पास खड़ा रहा जब तक उसकी लाश जल कर राख नहीं हो गई।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा ५०२-अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा १६५)

हकीम बिन तुफ़ैल अत्ताई का अंजाम

हकीम बिन तुफ़ैल अत्ताई, वह बदनसीब इन्सान है, जिसने करबला में हज़रत अब्बास अलम बरदार को शहीद कर के उनके लिबास और असलहा

पर कब्जा कर लिया था। और आपके गशकीजा पर तीरों की बारिश करके उसमें छेद कर दिया था। जिससे तमाम पानी गिर गया था। जब मुख्तार के सामने पेश किया गया तो उसने जल्लाद को हुक्म दिया कि उसके चेहरे पर तीरों की बारिश कर दो। तुनांचे जब तीर लगने लगे तो हकीम बिन तुफैल उसकी तकलीफ़ से चीखने लगा। मुख्तार ने कहा : बस यही तकलीफ़ और यही सदमा! हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अब्बास पर तीरों की बारिश की तो उस वक़्त यह ख़्याल नहीं आया था। आख़िरकार तीरों ही की बौछार में वह मर गया। (शहादतुल-कौनैन सफ़ा ७४)

दीगर अशिक्या का अंजाम

हज़रत इमाम आली मक़ाम की शहादत के बाद जब्बार बिन यज़ीद ने आपका अमामा शरीफ़ ब-नीयते इस्तिहज़ा अपने नापाक सर पर रख लिया था। उस जुर्म की पादाश में वह कुछ दिनों के बाद पागल हो गया और फौलाद की जंजीरों से टकरा कर ज़िल्लत की मौत मरा।

अब्दुर्रहमान बिन हुसैन नामी गुस्ताख़ व बेअदब ने ख़ेमा-ए-मुबारक से इमाम आली मक़ाम का पैराहन शरीफ़ लूट कर पहना था। उस गुस्ताख़ी की उसे यह सज़ा मिली कि वह बर्स की नापाक बीमारी में मुब्तला हो गया। कोई उसके करीब न जाता था। कुत्तों की तरह उसे दाना पानी देते। मरते वक़्त उसका चेहरा मस्ख़ हो गया।

यज़ीदी फौज का एक सिपाही असवद बिन हंज़ला ने इमाम आली मक़ाम की तलवार अपने कब्जे में कर ली। उस बेअदबी की उसे यह सज़ा मिली कि वह जज़ाम में मुब्तला हो गया। सारा बदन फूट-फूट कर बहने लगा। (नक्शे करबला सफ़ा ७४)

कातिलाने हुसैन पर तरह-तरह के अज़ाब

हज़रत अबू-शैख़ फ़रमाते हैं कि एक मजलिस में लोग आपस में गुफ़्तगू कर रहे थे कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल में जिस किसी ने भी किसी भी तरह की कोई इआनत की वह मरने से पहले किसी न किसी अज़ाब में ज़रूर मुब्तला हो गया। इसी मजलिस में एक बूढ़ा बैठा हुआ था। उसने कहा : मैंने भी तो मदद की थी मगर मैं किसी अज़ाब में मुब्तला नहीं हुआ। इतने में वह चिराग़ दुरुस्त करने के लिए उठा तो उसकी आग ने बूढ़े को पकड़ लिया। जिससे उसका पूरा बदन जलने लगा। वह

आग-आग चिल्लाता हुआ दरियाए फुरात में कूद पड़ा मगर वह आग नहीं बुझी और उसी में वह मर गया। इसी तरह का एक वाकिआ इमाम सुदी से भी मन्कूल है। उन्होंने फरमाया : खुदा की कसम! मैंने उसे देखा कि जलते हुए वह कोयले की तरह हो गया। (सवाइके मुहर्रका सफा ६४८)

सब्त इब्ने-जौजी ने वाकदी से ब्यान किया है कि एक बूढ़ा आपके कत्ल में शरीक हुआ तो वह अंधा हो गया। उस से अंधेपन का सबब पूछा गया तो उसने बताया कि मैंने रसूलुल्लाह को ख्वाब में देखा कि आप आस्तीन मुबारक चढ़ाए हुए और हाथ शरीफ में नंगी तलवार लिए हुए खड़े हैं। और आपके सामने एक चमड़ा बिछा हुआ है। और दस कातिलाने इमाम हुसैन जबह किए हुए पड़े हैं। जब आपकी निगाह मुझ पर पड़ी तो बहुत लानत मलामत की और खून में डुबो कर एक सलाई मेरी आंखों में फेर दी। उसी वक्त से मैं अन्धा हो गया। (सवाइके मुहर्रका सफा ६४९)

मुसन्निफे सवाइके मुहर्रका हजरत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह तहरीर फरमाते हैं कि यजीद का एक सिपाही जिसने हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु के सरे मुबारक को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था। कुछ दिनों के बाद उसका चेहरा काला हो गया। लोगों ने उससे उसका सबब पूछा कि तू इतना खूबसूरत था फिर इतना ज्यादा काला कैसे हो गया? उसने कहा : जिस रोज मैं ने इमाम हुसैन के सर को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था उसी रोज से हर रात को दो आदमी मेरे पास आते और मुझे पकड़ कर ऐसी जगह ले जाते हैं जहां आग होती है। फिर मुझे मुंह के बल उस आग में डाल कर निकालते हैं। इसी वजह से मेरा मुंह काला हो गया है। उसके बाद वह बहुत बुरी मौत से मरा।

(सवाइके मुहर्रका सफा ६४९)

इसी तरह मर्वी है कि एक बूढ़े ने ब्यान किया कि मैं ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख्वाब में देखा कि आपके सामने एक तश्त रखा हुआ है जो खून से भरा हुआ है और लोग आपके सामने पेश किए जा रहे हैं। आप उस खून से उनकी आंखों में लगा रहे हैं। यहां तक कि मैं भी आपके सामने हाजिर किया गया। तो मैं ने अर्ज किया : या रसूलल्लाह! मैं तो कत्ले हुसैन के वक्त मौजूद नहीं था। तो हुजूर ने अर्ज किया : तू उसकी तमन्ना रखता था कि हुसैन कत्ल हो। फिर आप ने मेरी तरफ अपनी उंगली से इशारा किया तो मैं अंधा हो गया। (सवाइके मुहर्रका सफा ६५०)

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमः नक़ल फ़रमाते हैं कि एक शख्स ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को सब्ब व शतम किया तो बहुक्मे इलाही आसमान से तारे टूटे और वह अंधा हो गया।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा ३०४)

अल्लामा बारज़ी हज़रत मंसूर से रिवायत करते हैं कि उन्होंने मुल्के शाम में एक ऐसे शख्स को देखा जिसका मुंह सूअर जैसा था। उन्होंने उस से उसकी वजह पूछी तो उसने बताया कि वह रोज़ाना हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर एक हज़ार मर्तबा और जुमा के दिन चार हज़ार मर्तबा उनकी औलाद पर लानत भेजा करता था। तो एक रात उसने ख्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा। और एक लम्बा ख्वाब बताया। जिसमें एक बात यह भी थी कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके लानत भेजने की हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत अक़दस में शिकायत की तो आपने उस पर लानत फ़रमाई और उसके मुंह पर थूक दिया तो उसका मुंह सूअर जैसा हो गया। और लोगों के लिए एक निशान हो गया। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६५०)

ग़र्ज़ कि मुख़्तार ने बहुत-से लोगों को हलाक किया और बेशुमार लोग तरह-तरह के अज़ाब में मुब्तला हो गए। इस तरह वादा-ए-इलाही पूरा हुआ। कुल एक लाख चालीस हज़ार लोग क़त्ले इमाम के इवज़ मारे गए।

मुख़्तार सक़फी का हशार

मुख़्तार ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिलान के बारे में बड़ा शानदार कारनामा अंजाम दिया। लेकिन आख़िर में नुबूव्वत का दावा कर के मुर्तद हो गया। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को जब मालूम हुआ तो आपने उस पर लशकर-क़शी की और सन् ६७ हिजरी में मुख़्तार पर ग़ल्बा पाकर उस मलऊन को क़त्ल कर दिया।



फज्जाले आशूरह

खुदावन्दे कुदूस अपने मुकदस कलाम पाक में इरशाद फरमाता है : इन्न
न इदताशुहूरि इन्दल्लाहिराना अशर शहरन फी किताबिल्लाहि इला
कौलिही अरबअ त हुरम (पारा १० सूरह तौबा)

बेशक महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक बारह महीने हैं। अल्लाह
की किताब में जबसे उसने आसमान और ज़मीन बनाए उनमें से चार हुरमत
वाले हैं। (कंज़ुल-ईमान सफ़ा २७८)

उन ही हुरमत वाले महीनों में माहे मुहर्रम भी शामिल है। इस महीने की
दसवीं तारीख़ जिसे आशूरह के नाम से याद किया जाता है दुनिया की
तारीख़ में इतनी अज़मत व बरकत वाला दिन है कि जिसमें खुदावन्द कुदूस
की कुदरतों और नेमतों की बड़ी-बड़ी निशानियां ज़ाहिर हुईं। उसी दिन
हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कुबूल हुई; उसी दिन हज़रत इदरीस
व हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर उठाए गए; उसी दिन हज़रत
नूह अलैहिस्सलाम की कशती तूफ़ाने नूह में सलामती के साथ जूदी पहाड़
पर पहुंची; उसी दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की विलादत हुई; उसी
दिन हज़रत यूनस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से ज़िन्दा सलामत बाहर
आए। उसी दिन अर्श व कुर्सी, लौह व कलम, आसमान व ज़मीन, चाँद व
सूरज, सितारे व जन्नत बनाए गए। उसी दिन हज़रत ऐय्यूब अलैहिस्सलाम
की तकलीफ़ दूर की गई; उसी दिन हज़रत यूसूफ़ गहरे कुँए से निकाले
गए; उसी दिन याकूब की अपने बेटे यूसूफ़ से मुलाकात हुई। उसी दिन
हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की लगज़िश माफ़ हुई, उसी दिन हज़रत
सुलैमान अलैहिस्सलाम को ज़िन्न व इन्स पर हुकूमत अता हुई। उसी दिन
हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फिरौन से नजात मिली और फिरौन
अपने लशकर समेत दरिया में ग़र्क़ हो गया; उसी दिन आसमान से ज़मीन
पर सब से पहली बारिश हुई; उसी दिन क़्यामत आएगी और उसी दिन
हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और आपके रुफ़काए किराम ने
मैदाने करबला में तीन दिन के भूखे प्यासे रह कर इस्लाम की बका व
तहफ़फ़ुज़ के लिए जामे शहादत नोश फ़रमा कर हक़ के परचम को
सरबुलन्द फ़रमाया।

शबे आशूरह

हज़रत मौला अली मुश्किल-कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने आशूरह की शब (६ मुहर्रम का दिन गुज़र कर आने वाली रात)को इबादत की तो अल्लाह तआला जब तक चाहेगा उसको ज़िन्दा रखेगा।

(गुनीयतुत्तालिबीन सफ़ा ४२८)

हज़रत सैयदना गौसे आजम दस्तगीर अल-हसनी वल-हुसैनी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख्स शबे आशूरह में रात भर इबादत में मशगूल रहे और सुबह को रोज़ा रखे तो उसको इस तरह मौत आएगी कि उसको मरने का एहसास भी न होगा (गुनीयतुत्तालिबीन सफ़ा ४२७)। इसीलिए उलमाए किराम ने इस बर्कत वाली रात में बहुत-सी नमाज़ें ब्यान फ़रमाई हैं। उनमें से चन्द क़रिईने किराम की ख़िदमत में पेश की जा रही हैं—

(१) दो रकअत नमाज़ नफ़ल उस रात में रौशनी-ए-क़ब्र के लिए पढ़ें। उसकी तरकीब यह है कि दोनों रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इख़्लास (कुल हुवल्लाहु अहद) तीन-तीन बार पढ़ें। हक़ तआला क़्यामत तक उस नमाज़ पढ़ने वाले की क़ब्र को रौशन फ़रमा देगा।

(२) चार रकअत नमाज़ नफ़ल एक सलाम से पढ़ें। चारों रकअतों में अलहमद के बाद सूरः इख़्लास पचास-पचास मर्तबा पढ़ें। अल्लाह तआला उस नमाज़ पढ़ने वाले के पिछले पचास साल के गुनाह और आइन्दा पचास साल के गुनाह बख़्श देगा। (जवाहरे ग़ैबी)

(३) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया : शबे आशूरह में चार रकआत नफ़ल इस तरतीब से पढ़ें कि हर रकअत में अल्हमदुलिल्लाह के बाद आयतुल-कुर्सी एक बार और सूरः इख़्लास तीन बार पढ़ें। नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद सूरह इख़्लास सौ (१००) बार पढ़ें तो उसकी बरकत से गुनाहों से पाक हो जाएंगे और जन्नत में बे-इन्तिहा नेमतें हासिल होंगी। राहतुल-कुलूब में आयतुल-कुर्सी ३ बार और सूरः इख़्लास दस (१०) बार लिखा है। और नमाज़ से फ़ारिग हो कर सूरः इख़्लास सौ (१००) बार पढ़ें। (राहतुल-कुलूब सफ़ा २२५)

(४) चार रकआत एक सलाम से पढ़ें। चारों में अल्हमदुलिल्लाह के बाद सूरः इख़्लास ५ बार पढ़ें। अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल होगी।

आशूरह का रोजा

नवीं और दसवीं मुहर्रम दोनों दिन का रोजा रखना चाहिए। इसकी बहुत फजीलत है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो यहूदियों को आशूरह के दिन रोजा रखे हुए देखा। आप ने उनसे फ़रमाया : यह कैसा दिन है कि जिसमें तुम लोग रोजा रखते हो? उन्होंने कहा : यह वह अज़मत वाला दिन है जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी कौम को फ़िरऔन के जुल्म से नजात दी और उसको उसकी कौम के साथ डुबो दिया। मूसा अलैहिस्सलाम ने उसी के शुक्रिया में रोजा रखा। इसलिए हम भी रोजा रखते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मूसा अलैहिस्सलाम की मुवाफ़िक़त करने में तो तुम्हारी बनिस्वत हम ज़्यादा हक़दार हैं। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भी आशूरह का रोजा रखा और सारी उम्मत को उस दिन रोजा रखने का हुक्म दिया। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा ७१४)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मर्वी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आशूरह (मुहर्रम) के दसवीं दिन का रोजा रखने का हुक्म दिया। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा २६१)

हज़रत अबू-क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझे अल्लाह से उन्नीद है कि आशूरह का रोजा एक साल क़बल का गुनाह मिटा देता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा २६०)

मुसनद इमाम अहमद और बज़्ज़ाज़ में हज़रत इब्न-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यौमे आशूरह का रोजा रखो और उसमें यहूद की मुखा़लफ़त करो। यानी नवीं और दसवीं मुहर्रम दोनों दिन रोजा रखो। (मदारिजुल्लुबुव्व जिल्द २ सफ़ा १२४)

अशअतुलल्लाम आल शरह मिशक़ात जिल्द-सौम सफ़ा २१७ पर है कि जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने आशूरह-ए-मुहर्रम का रोजा रखने का हुक्म दिया तो लोगों ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! यह तो यहूदियों की ताज़ीम ग्रहण करने का दिन है। उस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अगर मैं अगले साल तक दुनिया में जिन्दा रहा तो मैं जरूर नवीं मुहर्रम का रोज़ा रखूंगा।

कुतबुल—अक़ताब हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज—शकर रहमतुल्लाह अलैह ने आशूरह के रोज़े की फज़ीलत के बारे में फरमाया कि : आशूरह के दिन जंगल की हिरनियां भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ानदान की दोस्ती के सबब अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती थीं। आदमियों के हाल पर अफ़सोस व तअज्जुब है कि वह रोज़ा नहीं रखते।

(राहतुल—कुलूब सफ़ा २२३)

उम्मुल—मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि चार अमल ऐसे हैं जिनको हुज़ूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने कभी नहीं छोड़ा। आशूरह का रोज़ा, अशरा—ए—ज़िल—हिज्जः का रोज़ा, हर माह का तीन रोज़ा (ऐय्यामे बीज का रोज़ा) और फ़ज्र से पहले दो रकआत सुन्नते मुवक्क़दा।

(मासब्त—बिस्सुन्न : सफ़ा १६)

आशूरह और साले नौ की नफ़ल नमाज़ें

(१) सरकार कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया : कि हुज़ूर ग़रीबनवाज़ अलैहिर्रहमः वरिज़वान के औराद में मैं ने लिखा देखा है कि जो कोई मुहर्रमुल हराम की चाँद रात में दो रकअत पढ़े। दोनों रकअतों में अलहम्दु के बाद सूरः इख़्लास दस (१०) मर्तबा पढ़े तो उस नमाज़ पढ़ने वाले को अल्लाह तआला बहिशत में दो हज़ार महल अता फ़रमाएगा। हर महल में हज़ार दरवाज़े याक़ूत के होंगे। हर दरवाज़े पर एक तख़्त ज़बरजद का होगा और उस पर हूर बैठी होगी। और छः हज़ार बुराइयां उस नमाज़ी की दूर हो जाएंगी और छः हज़ार नेकियां उसके नामा—ए—आमाल में लिखी जायेंगी।

(२) मुहर्रम की पहली तारीख़ को दो रकअत नफ़ल पढ़े यानी दिन में। हर रकअत में सूरः फ़ातिहा के बाद सूरः इख़्लास तीन बार पढ़े। बाद सलाम के हाथ उठा कर इस दुआ को पढ़े: अल्लाहुम्म अन्तल्लाहुल फ़र्दुल अबदुल क़दीमु हाज़िही सु न तुन जदीदतुन असअलुक फ़ीहिल असमते मिनश्शैतानिर्ज़ीम वल-अमाने मिनस्सुल्तानिल जाबिरे व मिन शरि कुल्लि जी शरिभ मिनल बलाया वल-आफ़ाति व असअलुकल औनु वल-अदलु अला हाज़िहिन्नफ़सिल अम्मारति बिस्सूए वल-इशतिग़ालि

बिमा लम यकरिबुनी इलै क या बरु या रुफु या रहीमु या जुल्जलालि वल-इकराम। बि-रहमति क या अरहमरहिमीन साहिवे जवाहरे गैबी फरमाते हैं : जो शख्स इस नमाज और दुआ को पढ़ेगा। अल्लाह तआला उसके ऊपर दो फरिश्ते मक्कल करेगा ताकि वह मदद करें उसके कारोबार में। शैतान लईन कहता है कि अफसोस मैं नाउम्मीद हुआ उस शख्स से तमाम साल तक। (राहतुल-कुलूब सफा २२३ जवाहरे ऐनी)

(३) छः रकअत दो-दो रकअत करके पढ़ें। हर रकअत में अलहम्दु के बाद आयतुल-कुरसी एक बार और सूरः इखलास पंद्रह बार पढ़ें। अल्लाह तआला इस नमाज पढ़ने वाले को बेहद सवाब अता फरमाएगा।

आशूरह के दिन की नफ़ल नमाज़ें

आशूरह के दिन चार रकआत नफ़ल इस तरह पढ़ें कि हर रकअत में सूरः फातिहा के बाद सूरः इखलास पचास मर्तबा पढ़ें। अल्लाह तआला इस नमाज पढ़ने वाले के पचास बरस गुज़िश्ता के और पचास बरस आइन्दा के गुनाह माफ़ फरमाएगा और जन्नत में उसके लिए नूर के हजार महल तामीर कराएगा। (गुनीयतुत्तलिबीन सफा ४२७)

(२) चार रकअतें दो सलाम से पढ़ें। हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह इज़ा-जुलजिलतिल अर्ज, सूरः कुल या-ऐयुहल काफिरून, और सूरह इखलास एक-एक बार पढ़ें। नमाज से फारिग होने के बाद सत्तर मर्तबा दुरुद शरीफ़ पढ़ें। यह रिवायत हज़रत अबू-हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है। (गुनीयतुत्तलिबीन सफा ४२७)

(३) आशूरह के दिन छः रकआत दो-दो रकअत करके पढ़ें। हर रकअत में सूरः फातिहा के बाद सूरः वश्शमस, इन्ना अनजलनाहु, इज़ा-जुलजिलतिल अर्जो, कुल हुवल्लाहु अहद, कुल अऊजु बिरब्बिल-फलक और कुल अऊजु बिरब्बिन्नास एक-एक बार पढ़ें। इस तरह छः रकआत पूरी करें। नमाज से फारिग होने के बाद सज्दे में सर रख कर कुल या ऐयुहल-काफिरून एक बार पढ़कर अपनी हाजत तलब करें। (राहतुल-कुलूब)

(४) आशूरह-ए-मुहर्रम को सूरज बुलन्द होने के बाद (तकरीबन नौ बजे सुबह) दो रकअत नमाज नफ़ल अदा फरमाएं। हर रकअत में अलहम्द के बाद जो भी सूरह याद हो, पढ़ें। बेहद व बे-अन्दाज़ा सवाब पाएंगे। (राहतुल-कुलूब)

(५) आशूरह को गुरूल करके दो रकअत नमाज नफल इस तरह पढ़ें कि हर रकअत में अल्हमदु के बाद सूर : इखलास दस बार पढ़ें और सलाम के बाद एक मर्तबा आयतुल-कुरसी और नौ मर्तबा दुरुद इब्राहीमी पढ़ें, उग्र में खैर व बरकत और जिन्दगी में फ़लाह व नेमत हासिल होगी।

(६) यकुम मुहर्रम ता दस मुहर्रम रोज़ाना चार रकआत पढ़ें। हर रकआत में अलहम्द के बाद सूर: इखलास पंद्रह मर्तबा पढ़ें। नमाज पूरी करने के बाद उसका सवाब हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अरवाहे मुबारका के हुज़ूर पेश करें। साहबज़ादगाने सैयदुल-कौनैन इस नमाज पढ़ने वाले की क्यामत के दिन शफ़ाअत करेंगे। हज़रत शिबली, जो इस वाकिए के रावी हैं वह, फ़रमाते हैं कि मैं रोज़ाना इस नमाज को पढ़कर हज़रात हसनैन करीमैन को बख़्शा करता था। एक दिन मैं ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत इमाम हुसैन शहीदे करबला ने मेरी तरफ़ से मुंह फेर लिया। तो मैंने अर्ज किया : हुज़ूर! मुझसे क्या ख़ता सरज़द हुई। फ़रमाया : ख़ता नहीं। हमारी आंखें तुम्हारे एहसान से शर्मिन्दा हैं। जब तक हम क्यामत के दिन उसका बदला न दिलवा देंगे उस वक़्त तक हमारी आंख मिलाने के काबिल नहीं है। (यह उनका करम है) (जवाहरे ग़ैबी)

(७) आशूरह के रोज़ सत्तर मर्तबा हसबियल्लाहु व नेमल-वकील पढ़ें। अल्लाह तआला उसको बख़्श देगा और उसका नाम जुमरण मशाइख़ व औलियाए किबार में तहरीर फ़रमाएगा।

खिचड़ा और सबीले इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज किया : या रसूलुल्लाह! मेरी माँ का इन्तिकाल हो गया है तो उनके लिए कौन-सा सदका अफ़ज़ल है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अलमाउ फ़ ह फ़ र बिअरौ वका ल हाजिही लिउम्मि सअद तो हज़रत साद ने कुंआ खुदवाया और कहा यह कुआं साद की माँ के लिए है। (यानी उसका सवाब साद की माँ के लिए है।)

(अशअतुल-लम्आत जिल्द ३ सफ़ा १२३)

इस हदीस पाक में यह अल्फ़ाज़ 'हाजिही लिउम्मि सअद' कि यह कुआं साद की माँ के लिए है। यानी यह साद की माँ के ईसाले सवाब के लिए

वक्फ है। इससे वाजेह तौर से यह साबित होता है कि जिसकी रुह को सवाब पहुंचाने की गरज से कोई सदका व खैरात की जाए और उस सदका व खैरात और न्याज पर मजाजी तौर पर उसका नाम लिया जाए यानी यूँ कहा जाए कि यह सबील या खिचड़ा हज़रत इमाम हुसैन व शुहदाए करबला रिज़वानुल्लाह अलैहिम के लिए है तो हरगिज़—हरगिज़ उस सबील का पानी या दूध और खिचड़ा हराम न होगा। वरना फिर यह भी कहना पड़ेगा कि उस कुएं का पानी भी हराम था जिसकी निस्बत गैरुल्लाह यानी साद की माँ की तरफ थी। हालांकि उस कुएं का पानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व दीगर सहाबए किराम व अहले मदीना ने पिया है। अगर सिर्फ निस्बत कर देने से कोई चीज़ हराम हो जाती तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्यों उस कुएं का पानी पीते? इससे बिल्कुल ज़ाहिर हो गया कि जिस तरह कुएं का पानी गैरुल्लाह की तरफ निस्बत कर देने से हराम नहीं होता है। इसी तरह हज़रत इमाम हुसैन की न्याज शर्बत व खिचड़ा उनकी तरफ निस्बत कर देने से हराम नहीं होगा। खिचड़े के मुतअल्लिक तो एक रिवायत में आता है कि खास मुहर्रम के दिन खिचड़ा पकाना हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की सुन्नत है। चुनांचे मंकूल है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती तूफ़ान से नजात पाकर जूदी पहाड़ पर ठहरी हो वह दिन आशूरए मुहर्रम था। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कश्ती के तमाम अनाजों को बाहर निकाला तो फोल (बड़ी मटर), गेंहूँ, जौ, मसूर, चना, चावल, प्याज़ यह सात किरम के गल्ले मौजूद थे। आप ने उन सातों को एक हांडी में लाकर पकाया। चुनांचे अल्लामा शहाबुद्दीन कल्पूबी ने फरमाया कि मिस्र में जो खाना आशूरह के दिन तबीखुल—हुबूब (खिचड़ा) के नाम से मशहूर है उसकी असल व दलील यही हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का अमल है। और हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया अलैहिर्रहमः राहतुल—मुहिब्बीन में फरमाते हैं कि जो शख्स आशूरह के दिन सात किरम के दाने पकाए तो हर दाने के बदले उसके नामए आमाल में नेकी लिखी जाएगी और उसी मिकदार से गुनाह महव (मिटाने) किए जाएंगे। (तफ़सीर रुहुल—ब्यान प, १२ आयाते किरसा—ए—नूह)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मन वरसअ अला अयालिही फिन्नफ़क़ति यौ म आशूरा अ वरसअल्लाहु अलैहि साइ र

स न तिही यानी जो शख्स आशूरह के दिन अपने बाल-बच्चों के खाने पीने में खूब ज्यादा फराखी व कुशादगी करेगा (यानी ज्यादा खाना तैयार कराकर खूब पेट भर कर खिलाएगा) अल्लाह तआला साल भर तक उसके रिज्क में वुरअत और खैर व बरकत अता फरमाएगा।

(मासबत बिरसुन्नः सफ़ा १६, अशअतुल-लम्भात जिल्द ३ सफ़ा १३५, मुकाशिफतुल-कुलूब सफ़ा ६५८, मज़ाहिरे हक जिल्द २ सफ़ा १४२)

हज़रत शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहदिस देहलवी अलैहिर्हमा : फरमाते हैं कि जो खाना हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की न्याज़ के लिए पकाया जाए और उस पर फ़ातिहा, कुल शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए वह तबरूक हो जाता है और उसका खाना बहुत ही अच्छा है।

(फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा १८८)

दूसरी जगह इरशाद फरमाते हैं कि अगर कोई शख्स मलीदा और खीर किसी बुजुर्ग के फ़ातिहा के लिए ईसाले सवाब की नीयत से पका कर खिलाए तो कोई मुज़ाइका नहीं है, यह जायज़ है (फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा ६७) फिर चन्द सतर के बाद तहरीर फरमाते हैं कि अगर किसी बुजुर्ग के नाम की हो तो मालदारों को भी उसमें से खाना जायज़ है।

(फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा ६८)

इमाम अहले सुन्नत मुजदिदे दीन व मिल्लत हज़रत सैयदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्हमः वरिज़वान से किसी ने मुहर्रम शरीफ़ के खिचड़े और सबील के मुतअल्लिक़ सवाल किया तो आपने सबील के मुतअल्लिक़ अपने फ़तावे में इरशाद फरमाया कि पानी या शरबत की सबील लगाना जबकि बनीयते महमूद और ख़ालिसन लिवजहिल्लाह सवाब रसानीए अरवाहे तैयबा अइम्मा-ए-अतहार मकसूद हो तो बिला-शुब्हा बेहतर व मुस्तहब और कारे सवाब है। हदीस पाक में है : रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं इज़ा कसुरत जुनूबुक़ फ़रिक्ल-माअ अलल-माए ततनासिरुल वरकु मिनशशजरे फ़िरीहिल आसिफ़ जब तेरे गुनाह ज्यादा हो जाएं तो पानी पर पानी पिला, गुनाह झड़ जाएंगे जैसे सख्त आंधी में पेड़ के पत्ते। इसी तरह खाना खिलाना, लंगर बांटना भी मन्दूब व बाइसे अज़ है। हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं : इन्नल्लाह अज़्ज़ व जल्ल युबाही मलाइकतहू बिल्लज़ी न युतइमूनतआ म मिन ओबैदिही अल्लाह तआला

आपने उन बन्दों से जो लोगों को खाना खिलाते हैं फ़रिशतों के साथ मुबाहात फ़रमाता है (कि देखो यह कैसा अच्छा काम कर रहे हैं)।

(फ़तावा रज़विया जिल्द १०, निरफ़ अव्वल सफ़ा ८८)

मुहतरम कारिर्इन! अभी आपने मुहदिस देहलवी हज़रत अल्लामा शाह अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रहम : का फ़तवा न्याज़े इमाम आली मक़ाम के मुतअल्लिक पढ़ा। जिसमें आपने जवाज़ का फ़तवा सादिर फ़रमाया जो सैयदना आला हज़रत से बहुत पहले के बुजुर्ग हैं। बादहू आशिके रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी का फ़तवा मुलाहज़ा फ़रमाया। अब आपके सामने वहहाबियत, नजदीयत, तबलीगी जमाअत के गुरुघंटाल मौलाना रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा पेश किया जा रहा है। यह वही रशीद अहमद गंगोही है जिसने कौआ खाने को कारे सवाब बताया है। पढ़िए और हज़रत इमाम आली मक़ाम से उनकी दुशमनी मुलाहज़ा फ़रमाइएँ :-

रशीद अहमद गंगोही और तमाम देवबंदियों का अक़ीदा यह है कि मुहर्रम में सबील लगाना, शरबत पिलाना, या चन्दा सबील और शरबत में देना या दूध पिलाना सब ना-दुरुस्त और तशब्बहे रवाफ़िज़ की वजह से हराम हैं।

(फ़तावा रशीदिया जिल्द ३ सफ़ा ११३)

दूसरी जगह सवाल किया गया कि हिन्दुओं के तेहवार दीपावली और होली की पूरियां खाना मुसलमानों के लिए जायज़ है या नाजायज़? तो मौलाना रशीद अहमद गंगोही जवाब देता है : दुरुस्त है।

(फ़तावा रशीदिया हिस्सा दोम सफ़ा १२३)

एक और सवाल किया गया कि हिन्दु जो पियाऊ पानी की लगाते हैं सूदी रुपया सर्फ़ करके। मुसलमानों को उसका पानी पीना दुरुस्त है या नहीं? उसका जवाब रशीद अहमद गंगोही देता है - उस पियाऊ से पानी पीने में मुज़ायका नहीं।

(फ़तावा रशीदिया हिस्सा सोम सफ़ा ११४)

मुसलमानो! हैरत का मक़ाम है कि देवबन्द का गुरुघंटाल औलिया-ए-किराम के नाम का शरबत तो हराम बता रहा है और बुतों के नाम पर एक काफ़िर नापाक के हाथ की बनी हुई पूरी कचौरी और सूदी रुपया के पियाऊ से पानी पीने को जायज़ बता रहा है। उससे उनके अक़ीदे का अन्दाज़ा बहुत आसानी से लग जाता है कि उस गुरुप का तअल्लुक औलियाए किराम से है या गिरोह शैतान से है। अल्लाह तआला मुसलमानाने आलम को उनके नापाक और गंदे अक़ीदों से महफूज़ फ़रमाए।

आमीन बजाह-सैयदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

मजालिसे मुहर्रम

मुहर्रमुल-हराम के दसों दिन खुरसून आशूरह के दिन मजलिस मुनअकिद करना और सही रिवायतों के साथ हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन व शोहदाए करबला रज़ियल्लाहु अन्हुम के फ़जाइल और वाकिआत करबला ब्यान करना जायज़ व बाइसे सवाब है। हदीस शरीफ़ में है कि 'जिस मजलिस में सालिहीन का जिक्र हो, वहां रहमत का नुज़ूल होता है'। हज़रत अल्लामा शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहदिस देहलवी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं कि बिलफ़ेल जो कुछ मामूल इस फ़कीर का है, लिखता है। उससे क्यास कर लेना चाहिए कि साल भर में दो मजलिसें फ़कीर के मकान में मुनअकिद हुआ करती हैं। एक मजलिसे जिक्रे वफ़ात शरीफ़ (मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), दूसरी मजलिसे शहादते हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा। यह मजलिस बरोजे आशूरह या उस से दो एक दिन कबल होती है। चार पांच आदमी बल्कि हज़ार आदमी जमा होते हैं। दुरुद शरीफ़ पढ़ते हैं। उसके बाद जब फ़कीर आता है तो लोग बैठते हैं और जिक्र फ़जाइल हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का जो हदीस शरीफ़ में वारिद है ब्यान किया जाता है। जो कुछ अहादीस में उन बुजुर्गों की शहादत की ख़बर है और रिवायते सहीहा में जो कुछ तफ़सील बाज़ हालात की है और उन हज़रात के कातिलों की बद-उनवानी का ब्यान है, वह जिक्र किया जाता है। और उस ज़िम्न में बाज़ मरसिए जो जिन व परी से हज़रत उम्मे सलमा व दीगर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सुने हैं वह भी जिक्र किए जाते हैं। और वह ख़्वाबे वहशतनाक जिक्र किए जाते हैं जो हज़रत अब्बास व दीगर सहाबा ने देखे थे कि उससे मालूम होता है कि जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस वाकिआ से निहायत रंज व अलम हुआ। फिर ख़त्मे कुरआन किया जाता है और पंज आयत पढ़कर खाने की जो चीज़ मौजूद होती है उस पर फ़ातिहा किया जाता है। और इस असना में अगर कोई शख्स खुश-अलहान संलाम पढ़ता है या मरसिया मशरू पढ़ने का इत्तिफ़ाक़ होता है तो अकसर हाज़िरीने मजलिस और उस फ़कीर को भी हालते रिक्कत व गिरया व बुका लाहिक़ होती है। इस क़दर अमल में आता है। तो अगर यह सब फ़कीर के नज़दीक, इस तरीक़ा से जिसका जिक्र किया गया है,

जायज न होता तो हरगिज फकीर इन चीजों पर अकदाम न करता।

(फतावा अजीजी २६५)

आला हजरत इमाम अहले सुन्नत अल्लामा शाह अहमद रजा खान फाजिले बरैलवी अलैहिर्रहमः वरिजवान फरमाते हैं — जो मजलिसे जिक्र शरीफ सैय्यदना इमाम हुसैन व अहले-बैत किराम रजियल्लाहु अन्हुम की हो जिसमें रिवायाते सहीहा मोतबरा से उनके फजाइल व मकामात व मदरिज ब्यान किए जाएं। और मातम व तजदीदे ग़म वगैरह उमूरे मुखालिफ़ए शरा से यकसर पाक हो फी-नफ़सिही हसन व महमूद है। ख्वाह उसमें नस्र पढ़ें या नज़म। अगरचे वह नज़म बवजहे एक मुसदस होने के जिसमें जिक्रे हजरत सैयदुश्शोहदा है। उर्फ़ हाल में बनामे मरसिया हो कि अब वह मरसिया नहीं जिसकी निसबत से नहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनिल मरासी वल्लाहु सुब्हानहू तआला।

(इआलीयुल इफ़ादतः फी ताज़ीयतिल हिन्द व ब्यानिश्शहादः सफ़ा १६) इसी रिसाले में दूसरी जगह इरशाद फरमाते हैं : जिक्रे शहादत शरीफ़ जबकि रिवायते मौजूआ व कलिमाते मन्नूआ व नीयते नामशरूआ से ख़ाली हो ऐन सआदत है। इन द जिकरिस्सालिहीन तंज़ीलुर्रहमः (अल-हदीस) यानी सालिहीन के जिक्र के वक़्त रहमत नाज़िल होती है। (सफ़ा ६)

उसके बरख़िलाफ़ देवबन्दी जमाअत के गुरुघंटाल मौलाना रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि मुहर्रम में जिक्रे शहादते हसनैन अलैहिनुस्सलाम करना अगरचे बरिवायात सहीहा हो तब भी नादुरुस्त और तशब्बुहे रवाफ़िज़ की वजह से हराम है। (फतावा रशीदिया हिस्सा सोम सफ़ा ११३)

कारिईने किराम! मजालिसे मुहर्रम के सिलसिले में अहले सुन्नत व जमाअत का मौक़फ़ और देवबन्दी जमाअत का फ़तवा आपकी नज़र के सामने है। अब फ़ैसला आपको करना है कि मुहिब्बे इमाम हुसैन कौन है और कौन दुशमने इमाम हुसैन ?

नोट:- आजकल जो मरसिए पढ़े जाते हैं उनमें अकसर रिवायतें ग़लत तौर से लिखी होती हैं इसलिए उनका पढ़ना जायज नहीं है। हां! अगर रिवायात सहीहा हों तो पढ़ने में कोई हर्ज नहीं। नाचीज़ ने मुस्तनद व मोतबर रिवायात की रौशनी में वाकिआते करबला ब्यान किया है उसको अगर मजालिसे मुहर्रम में पढ़ा जाए तो इन्शाअल्लाह हजरत इमाम हुसैन की रूह खुश होगी।

ताज़ियादारी और खुराफ़ाते मुहर्रम

हज़रत शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः वरिज़वान ताज़ियादारी के बारे में फ़रमाते हैं कि अशरए मुहर्रम में ताज़ियादारी और कब्र व सूरत वगैरह बनाना जायज़ नहीं है। (फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा १८२)

इसी फ़तावा अज़ीज़ी के सफ़ा १८२ पर तहरीर फ़रमाते हैं : ताज़ियादारी जैसा कि बद-मज़हब करते हैं, बिदअत है। और ऐसे ही ताबूत, कब्रों की सूरत, और अलम वगैरह यह भी बिदअत है। और ज़ाहिर है कि बिदअते सैईआ है।

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाते हैं कि ताज़िया जो कि बनाया जाता है ज़्यारत के काबिल नहीं। बल्कि इस काबिल है कि उसे नीस्त व नाबूद किया जाए। जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि मन रआ मिन्कुम मुन्किरन फ़ल युगैयेरहु बियदिही फ़इल्लम यस्तति फ़बिलिसानिही फ़इल्लम यस्तति फ़बिकबलिही व ज़ालि क अज़अफुल ईमान (रवाहु मुस्लिम)। तुममें से जो शख्स कोई बात ख़िलाफ़े शरा देखे तो उसे अपने हाथ से ख़त्म करे; और अगर हाथ से ख़त्म करने की कुदरत न हो तो जुबान से मना करे; और अगर जुबान से भी मना करने की कुदरत न हो तो दिल से बुरा जाने और यह सबसे कमज़ोर ईमान है। (सफ़ा १८४)

ताज़ियादारी में किसी तरह की इमदाद करना चाहिए या नहीं ? इस सवाल का जवाब देते हुए तहरीर फ़रमाते हैं कि यह भी जायज़ नहीं है। इसलिए कि गुनाह पर मदद नाजायज़ है। (फ़तावा रज़वीया सफ़ा १८६)

आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत सैयदना इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहमः वरिज़वान फ़रमाते हैं : ताज़िया की असल इस कद्र थी। रौज़ए पुरनूर हुज़ूर शहज़ादए गुलगूं क़बा, हुसैन शहीदे जुल्म व जफ़ा सलातुल्लाहि तआला व सलामहु अला जदिहिल करीम व अलैह की सही नक़ल बना कर ब-नीयते तबरूक मकान में रखना। इसमें शरअन

कोई हर्ज न था कि तसवीर मकानात वगैरह हर गैर जानदार की बनाकर रखना सब जायज और ऐसी चीजें कि मुअज्जमाने दीन की तरफ मन्सूब होकर अजमत पैदा करें। उनकी तिमसाल ब-नीयते तवरुक पास रखना कतअन जायज जैसे : सदहा साल से तब्कतन फितब्कतन अइम्म-ए-दीन व उलमाए मोतमिदीन नालैन शरीफैन हुजूर सैयदुल-कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक्शे बनाते और उनके फवाइदे जलीला व मनाफ़ए जज़ीला में मुस्तक़िल रिसाले तसनीफ़ फरमाते हैं। जिसे इशतिबाह हो अल्लामा इमाम तिलसिमानी की फत्हुल-मुतआल वगैरह का मुताला करे। मगर जहां बेख़िर्द ने उस असल जायज को बिल्कुल निस्त व नाबूद करके सदहा खुराफ़ात तराशीं कि शरीअते मुत्तहरा से अल-अमान अल-अमान की सदायें आए। अब्बल तो नफ़से ताज़िया में रौज़ए मुबारक की नक़ल महफूज़ न रही। हर जगह नई तराश, नई गढ़त है जिसे उस नक़ल से कुछ इलाका, न निसबत। फिर किसी में परियां, किसी में बुराक, किसी में और बेहूदा तमतराक़। फिर कूचा-ब-कूचा व दस्त-बदस्त इशाअते ग़म के लिए उनका ग़श्त। और उनके गिर्द सीना-ज़नी और मातम-साज़ी की शोर अफ़ग़नी। कोई उन तसवीरों को झुक-झुक कर सलाम कर रहा है, कोई मशगूले तवाफ़, कोई सज्दे में गिरा है, कोई उन मायए बिदआत को मआज़ल्लाह जलवागाहे हज़रते इमाम अला जद्विही व अलैहिस्सलाम वस्सलाम समझ कर उस अबरक पन्नी से मुरादे मांगता, मिन्नते मानता है, हाजत-रवा जानता है। फिर बाकी तमाशे, बाजे ताशे, मर्दों औरतों का रातों को मेल और तरह-तरह के बेहूदा खेल उन सब पर तुरह हैं। गर्ज अशरए मुहर्रमुल-हराम कि अगली शरीअतों से इस शरीअते पाक तक निहायत बाबरकत व महल्ल इबादत ठहरा हुआ था। उन बेहूदा रूसूम ने जाहिलाना व फासिकाना मेलों का ज़माना कर दिया। फिर वबाले इब्तिदा का वह जोश हुआ कि खैरात को भी बतौरे खैरात न रखा। रिया व तफ़ाख़ुर एलानिया होता है। फिर वह भी यह नहीं कि सीधी तरह मुहताजों को दें बल्कि छतों पर बैठ कर (या स्टेज लगाकर) फेंकेगे। रोटियां ज़मीन पर गिरती हैं, रिज़्के इलाही की बेअदबी होती है। पैसे इस तरह से फेंक देने में गिर कर ग़ायब होते हैं, माल की इज़ाअत होती है। मगर नाम तो हो गया कि फ़लां साहब लंगर लुटा रहे हैं। अब बहारे अशरा के फूल खिले। ताशे बाजे बजते चले। तरह-तरह के खेलों की धूम, बाज़ारी औरतों की हर

तरफ हुजूम, शहवानी मेलों की पूरी रसूमे जशन। यह कुछ, और उसके साथ ख्याल वह कुछ कि गोया यह साख्ता तसवीरें बिएनिही हजरात शोहदा रिजवानुल्लाह अलैहिम अजमईन के जनाजे हैं। कुछ नोच उतार, बाकी तोड़-ताड़ कर दफन कर दिए। यह हर साल इजाअते माल के जुर्म व बवाल जुदागाना रहे। अल्लाह तआला सदकए हजरात शोहदाए करबला अलैहिमुरिजवान वरसना का हमारे भाईयों को नेकी की तौफीक वख्शे और बुरी बातों से तौबा अता फरमाए। आमीन। अब कि ताजियादारी उसी तरीका-ए-नामर्जीया का नाम है, क़तअन बिदअत व हराम है। हां, अगर अहले इस्लाम जायज़ तौर पर हजरात शोहदाए किराम अलैहिमुरिजवान की अरवाहे तैयबा को ईसाले सवाब की सआदत पर इन्हसार करते तो किस क़दर खूब व महबूब था। अगर नज़्जे शौक व मोहब्बत में नक़ले रौज़ा-ए-अनवर की भी हाजत थी तो ईस क़दर जायज़ पर क़नाअत करते कि सही नक़ल बग़र्ज़ तबरूक व ज़्यारत अपने मकानों में रखते। इशाअते ग़म व तसन्नूए अलम व नौहाख्वानी वे मातमकुनी व दीगर उमूरे शनीआ व बिदआते क़तईया से बचते। इस क़दर में कोई हर्ज न था। मगर अब उस नक़ल में भी अहले बिदअत से एक मुशाबहत और ताजियादारी की तोहमत का ख़दशा और आइन्दा अपनी औलाद अहले एतकाद के लिए इब्तलाए बिदआत का अन्देशा है। हदीस में आया है इत्तकू मवाज़िअत्तुहमि और वारिद हुआ मन का न यूमिम बिल्लाहि वल-यौमिल आखिरि फ़ला यक़ेज्फ़फ़न्न मवाकिफ़ुत्तुहमि। लिहाज़ा रौज़ा-ए-अक़दस हुज़ूर सैयदुशोहदा की ऐसी तसवीरें भी न बनाए बल्कि सिर्फ़ कागज़ के सही नक़शे पर क़नाअत करे। उसे बक़सदे तबरूक बेआमेज़िशे मन्हीयात अपने पास रखे। जिस तरह हरमैन मुहतरमैन से काबा-ए-मुअज़्ज़मा और रौज़ए आलिया के नक़शे आते हैं या दलाइलुल-ख़ैरात शरीफ़ में कुबूर पुरनूर के नक़शे लिखे हैं। वरसलाम अला मनित्तबअल-हुदा वल्लाहु तआला व सुब्हानुहु आलम।

(इआलीयुल इफ़ादतः फ़ी ताजियतिलहिंद व ब्यानिशहादतः सफ़ा २)

ताजिया पर जो खाना या मिठाई चढ़ाई जाती है उसको नहीं खाना चाहिए। आला हजरात तहरीर फ़रमाते हैं : हजरात इमाम के नाम की न्याज़ खानी चाहिए और ताजिया का चढ़ा हुआ खाना न खाना चाहिए। फिर दो सतर बाद तहरीर फ़रमाते हैं — ताजिया पर चढ़ाने से हजरात इमाम

रज़ियल्लाहु अन्हु की न्याज़ नहीं हो जाती है। अगर न्याज़ देकर चढ़ाएं या चढ़ाकर न्याज़ दिलाएं तो उसके खाने से एहतराज़ करना चाहिए।

(रिसाला-ए-ताज़ियादारी सफ़ा १८)

एक जगह इरशाद फ़रमाते हैं : ताज़िया पर जो मिठाई चढ़ाई जाती है वह अगरचे हराम नहीं हो जाती मगर उसके खाने में जाहिलों की नज़र में एक अग्रे नाजायज़ की वक़अत बढ़ाने और उसके तर्क में उससे नफ़रत दिलानी है, लिहाज़ा न खाई जाए। ढोल बजाना हराम है।

(फ़तावा रज़वीया जिल्द १० सफ़ा १८६)

ताज़िया राइजा यानी आजकल जो ताज़िया बनाया जाता है जिसमें हजारों रुपए खर्च किए जाते हैं। कोई ताजमहल बनाता है। कोई कुतुब मीनार बनाता है, तो कोई कुछ, तो कोई कुछ। गर्ज कि तमाम खुराफ़ात किए जाते हैं। असली रौज़ा नहीं बनाया जाता है। इसी के मुतअल्लिक आला हज़रत ने फ़रमाया है कि यह ताज़िया देखना, बनाना नाजायज़ है।

(फ़तावा रज़वीया जिल्द १० सफ़ा १८६)

खुराफ़ाते मुहर्रम

इस्लामी नया साल मुहर्रमुल-हराम से शुरू होता है और ज़िल-हिज्जतिल-हराम पर ख़त्म होता है। इस माहे मुबारक में बहुत-से खुराफ़ात और बिदआत राइज हैं। हम कदरे तफ़सील से इस पर रौशनी डालने की कोशिश कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए -

मुहर्रमुल-हराम का महीना शुरू हुआ कि बाज़ मुसलमान सैंकड़ों-हजारों रुपए खर्च करके नक़ली रौज़ा व दीगर खुराफ़ात बनाते हैं। और उसको हज़रत इमाम हुसैन के रौज़ा-ए-मुक़द़सा की तरफ़ मन्सूब करते हैं। और उसका नाम ताज़िया रखते हैं। और उसमें दो मसनूई कब्रें बनाते हैं : एक पर सब्ज़ ग़िलाफ़ और दूसरी पर सुख़ ग़िलाफ़ डालते हैं। सब्ज़ ग़िलाफ़ वाली को हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लहु अन्हु की कब्र और सुख़ ग़िलाफ़ वाली को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की कब्र बताते हैं। और वहां शरबत या मलीदा वगैरह पर फ़ातिहा दिलाते हैं। नारियल चढ़ाते हैं। उससे मिन्नतें मांगते हैं, मरसिए पढ़े जाते हैं, नौहा और मातम भी करते हैं और सीना कोबी होती है। इतने जोर-जोर से सीना कूटते हैं कि वर्म हो जाता है। जंजीरों और छुरियों से मातम करते हैं। फिर दसवीं मुहर्रम को अलम

और शुद्धे और ताजिया का जुलूस निकालते हैं। उसके लिए आगे ढोल ताशे बजाते, कूदते नाचते हुए मसनूई करबला की तरफ जाते हैं और वहां उसको ले जाकर दफन कर देते हैं। कहीं-कहीं हमने खुद देखा है, खास तौर से सूरत में। (खास हुज्जत के लिए) उन खुराफात को देखा कि लोग ताजिया के ऊपर चढ़ते हैं। जो औरतें बे-पर्दा घरों से निकल कर उन ताजियों को देखने सड़कों पर निकल पड़ती हैं उनको छेड़-छाड़ करते हैं। फिर उसको मसनूई करबला में ले जाकर ठंडा करते हैं। कहीं पर उसको दफन करते हैं। उसके बाद ताजिया या इमाम हुसैन का तीजा, दसवां, बीसवां और चालीसवां करते हैं कि इमाम हुसैन (मआज़ल्लाह!) इन्तिकाल कर गए। हालांकि आप शहीद हैं। और शहीद के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है : वह जिन्दा हैं, मरते नहीं हैं।

कहीं सवारियां बिठाई जाती हैं और उनसे मिन्नतें मांगते और चढ़ावे चढ़ाते हैं। कहीं बाग बनाए जाते हैं और सिर्फ लंगोट पहन कर कूदते उछलते हैं और शैतानी हरकत करते हुए गुजरते हैं जिससे सतरे औरत का बिल्कुल ख्याल नहीं करते। हदीस पाक में है कि लानल्लाहुन्नाज़िर बल-मंज़ूर इलैह यानी अल्लाह तआला की लानत है ऐसा मंज़ूर करने और देखने वाले पर। यह सब खुराफात व नाजायज़ हैं। मुसलमानों को उससे इहतराज़ करना चाहिए।^(१) बाज़ सुन्नत जमाअत अशरा-ए-मुहर्रम में न तो दिन भर रोटी पकाते हैं और न झाड़ू देते हैं।

मुहर्रम में शादी-ब्याह करना नाजायज़ बताते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। कहीं सवारियां निकाली जाती है और नाचते-कूदते सड़कों का गश्त करते हैं। ऐसे अकसर लोग बेनमाजी और फ़ासिक व फ़ाजिर होते हैं। लोग उनसे सवालात करते हैं। और बाज़ अहले-सुन्नत व जमाअत कहते हैं कि हम जो भी सवाल उनसे करते हैं वह सही-सही जवाब देते हैं। उनका गुमान यह होता है कि उसके (सवारी के) आग में हज़रत इमाम हुसैन तशरीफ़ ले आते हैं, वही उसका जवाब देते हैं। मआज़ल्लाह ! अल्लाह तआला मुसलमानों को ऐसे खुराफात और गंदे अकाइद से महफूज़ व मामून फ़रमाए। आमीन बजाह सैयदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

(१) फतावा रजविया जिल्द १० सफ़ा ८७

आशूरह के दिन हमें क्या करना चाहिए?

आशूरह के दिन दस चीजों को उलमाए किराम ने मुस्तहब लिखा है। बाज़ उलमा ने उसे इरशादे-नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और बाज़ ने उसे हज़रत सैय्यदना मौला अली मुश्किल-कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल बताया है। बहरहाल! यह सब अच्छे काम हैं, उनको करना चाहिए।

(१) रोज़ा रखना (२) सदका करना (३) नवाफ़िल पढ़ना (४) एक हज़ार मर्तबा सूर : इख़्लास पढ़ना (५) उलमा और औलिया की ज़यारत करना (६) यतीमों के सर पर हाथ रखना (७) अपने घर वालों पर खाने में वुस्अत व फ़राखी करना (८) सुरमा लगाना (९) गुस्ल करना (१०) नाखुन तराशना और मरीजों की बीमार-पुर्सी करना। इमाम आली मक़ाम व दीगर के नाम की फ़ातिहा करना।

गुस्ल

मुहर्रम की दस तारीख़ को गुस्ल ज़रूर करें। क्योंकि उस रोज़ ज़मज़म का पानी तमाम पानियों में पहुंचता है। मुसन्निफ़े तफ़सीर नईमी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं : आशूरह के दिन गुस्ल करने वाला साल भर बीमारियों से महफूज़ रहेगा। (बहवाला तफ़सीर रूहुल-ब्यान प-१२)

सुरमा लगाना

मुहर्रम की दस तारीख़ को जो शख्स सुरमा लगाए तो इन्शाअल्लाह साल भर उसकी आंख नहीं दुखेगी।

(दुर्रे मुख़्तार किताबुरसौम, मासबत बिस्सुन्नः सफ़ा २३)

अल्लाह तआला की बारगाह में दस्ते दुआ हूँ कि मौलाए करीम अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल मुसलमानों को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की सच्ची मुहब्बत अता फ़रमाए। और जिस मक़सद के लिए आपने अपनी जान कुरबान फ़रमाई उसको समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। और मुहर्रमुल-हराम की जुमला ख़ुराफ़ात व बिदआत से महफूज़ व मामून फ़रमाए। आमीन।

व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही व असहाबिही व अज़वाजिही व अहले-बैतिही अजमईन। बिरहमतिक या अरहमर्राहिमीन।

इब्ने यजीद, नज्दी, खारजी, मलऊन, मतऊन

जुहूर अहमद करशी औरंगाबादी

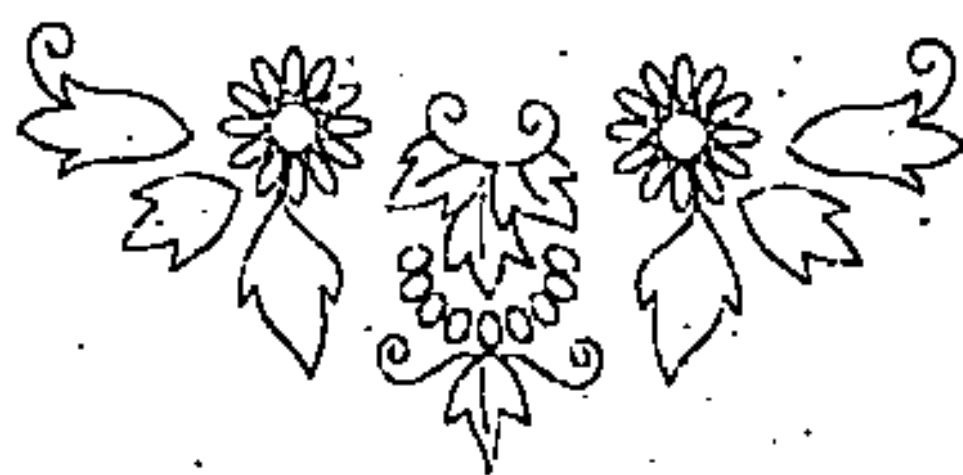
की

रुसवाए जमाना किताब

आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें

का

दन्दाँ शिकन जवाब



अहादीसे करीमा और मोतबर
तारीखी किताबों की रौशनी में

। निम्नलिखित

इ हिजीरत १३४८ इ हिजीरत १३४९ इ हिजीरत १३५०

। निम्नलिखित १३५१ इ हिजीरत १३५२ इ हिजीरत १३५३ इ हिजीरत १३५४ इ हिजीरत १३५५

कहता है कौन जिक्रे शहादत हराम है?

जिस दिल में हुब्बे आले नबी का असर नहीं
तारीक है वह, नूर का उसमें गुजर नहीं

जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं हुसैन
उनके अदू का बागे जिना में गुजर नहीं

पानी जो बन्द करता है आले रसूल पर
क्या वह गिरोहे उम्मत खैरुल-बशर नहीं?

मुँकिर है जो मुहब्बते आले रसूल का
मोमिन है क्या? तुम्हीं कहो! काफिर अगर नहीं

कहता है कौन जिक्रे शहादत हराम है?
क्या खुद यह जिक्र करते थे खैरुल-बशर नहीं

शाने नुज़ूले आयते ततहीर देख लो !
गर पंजतन के वस्फ की तुम को खबर नहीं

जितने पड़े हैं नूर के टुकड़े यह खाक पर
उन में से कौन गैरते शम्स व कमर नहीं

ब-वक्ते जबह लब पे दुआ थी हुसैन के
जब तक है दम, उठे तेरे सज्दे से सर नहीं

मुँकिर मकामे हैदर व हसनैन का है क्यों ?
हजरत ने क्या उठाया उन्हें दोश पर नहीं ?

काफिर, जो मोमिनो को कहे खुद वह कौन है?
सब की खबर है, पर तुम्हें अपनी खबर नहीं!

कैसर जिसे है दुशमनी आले रसूल से
ईमां नसीब होगा उसे उम्र भर नहीं

(जनाब सैयद कैसरुल-वारसी साहब)

मक़ामे इमाम हुसैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

और वाकिआते करबला

खारजी जुहूर अहमद औरंगाबादी की नज़र में
ख़बासत व बेहयाई की मुंह बोलती तरवीर

मुख़ालिफ़ीने इस्लाम की हमेशा से यह कोशिश रही है कि वह मुसलमानों के दिलों से पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलाम वस्सलाम, अहले-बैते अतहार, उम्माहातुल-मोमिनीन, सहाबए किराम और औलियाए इज़ाम की मुहब्बत व अकीदत को निकाल कर उनके दिलों को वीरान करके उन पर दुशमनाने इस्लाम को हावी कर दें। क्योंकि वह अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हीं मज़कूरा बाला हज़रात की मुहब्बत व अकीदत उनके ईमान की रूह है। जब यही कमज़ोर हो जाएगी तो उनको ख़त्म करना बिल्कुल आसान हो जाएगा। इसी लिए दुशमनाने दीन व मिल्लत ने सबसे पहले अपनी तनकीद का निशाना इन्हीं ज़वाते आलिया को बनाया। इस सिलसिले में बाज़ नाम निहाद मुस्लिम मुहक्किन ने अपनी बेजा तहकीक के पर्दे में दुशमनाने इस्लाम का हाथ मज़बूत किया और उनके नापाक और ख़तरनाक मिशन को आगे बढ़ाने में एक अहम रोल अदा किया। इसी किस्म की एक बेजा तहकीक सरजमीने औरंगाबाद (महाराष्ट्र) के एक नासिबी, खारजी, जुहूर अहमद औरंगाबादी ने पेश की है। जिसमें उसने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को बागी और यज़ीद पलीद को बरहक ख़लीफ़तुल-मुसलिमीन साबित करने की नाकाम कोशिश की है। जुहूर अहमद की तहकीक से मुज़्तरिब ज़ेहनों में जो सवालात उठे हैं। हम एक-एक करके उसे ज़िक्र कर रहे हैं। और इन्शाअल्लाह व इन्शाअ रसूलिही हर एक सवाल का मुस्बत व मुस्कित जवाब देने की कोशिश कर रहे हैं। मुलाहिज़ा फ़रमाइए :



सवालात

१. क्या जुहूर अहमद ने अपनी किताब में ख्यानत से काम लिया है?
२. क्या यजीद की हुकूमत व खिलाफत कवानीने शरईया के ऐन मुताबिक थी, और क्या उस पर तमाम सहाबा और जमहूर मुसलिमीन का इत्तिफाक था ?
३. क्या यजीद को अमीरुल-मोमिनीन कह सकते हैं और क्या उसके नाम के आगे रहमतुल्लाह लिखना अजरुए शरा जायज है ?
४. क्या हुसैनी काफिले पर ७/मुहर्रम से दरियाए फुरात का पानी बन्द किया जाना झूठ और इफतरा पर मबनी है ?
५. क्या इमामे आली मकाम १० मुहर्रम को करबलाए मुअल्ला पहुंचे?
६. क्या इमाम आली मकाम और दीगर शोहदाए करबला को शहीद करने के बाद उनके सरो को लाशों से जुदा करना, फिर उन्हें नेजों पर चढ़ा कर उनकी तशहीर करना और लाशों पर घोड़े दौड़ाकर उनको रौंद डालना — यह तमाम बातें भी झूठ, गलत और बे-बुनियाद हैं ?
७. क्या करबला में पहला हमला हुसैनी खेमा से क्या गया था?
८. क्या यजीद ने हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु के कत्ल का हुक्म नहीं दिया था ? और क्या वह उस काम से राजी नहीं था?
९. क्या यजीद कुसतुन्तुनिया के अव्वल हमले में शरीक हुआ था और क्या वह जन्नती है ?

जवाबात

सवाल १: क्या जुहूर अहमद औरंगाबादी ने अपनी किताब (आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें) में ख्यानत से काम लिया है ?

जवाब: जी हां! जुहूर अहमद औरंगाबादी ने अपनी किताब की तरतीब में पहले से बने बनाए प्रोगराम के तहत ख्यानत व बद-दियानती की तसे इत्तिहा कर दी है। बल्कि अगर यह कहा जाए कि यह मुकम्मल किताब ही ख्यानत, बद-दियानती, किज्ब व इफतरा और दज्जल व फरेब से भरी हुई है तो बेजा न होगा। इससे पहले कि हम खाइन जुहूर अहमद की बद-दियानती और कलमी चोरी का पर्दा फाश करें, अपने कारिड़न को यही

बता देना जरूरी समझते हैं कि मजकूरा वाला किताब जुहूर अहमद की कोई अपनी कलमी काविश या इल्मी काबलीयत का नमूना नहीं है। बल्कि एक ऐसी गैर-मुस्तनद और दिल-आज़ार किताब के मवाद को चोरी करके तरतीब दी गई है जिसे हुकूमते पाकिस्तान ने दुश्मनीए इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की वजह से अपने मुल्क में पाबन्दी आइद कर दी थी और हिन्द व पाकिस्तान के उलमाए हक ने उस किताब की सतर-सतर की धज्जियां उड़ा दी थीं। किताब का नाम है : "खिलाफते मुआविया व यजीद"। हमने इस किताब को बहुत कोशिश कर के हासिल किया। और जब उसका मुताला किया तो जुहूर अहमद की इल्मी काबलीयत का भांडा फूटा। नासबी जुहूर अहमद ने अपनी किताब का मुकम्मल मवाद इसी किताब से चोरी कर के निकल किया है। लेकिन अवामुन्नास के सामने अपनी इल्मी काबलीयत को साबित करने के लिए मुरत्तिबे किताब के भाई नासबी दुश्मने अल्लाह व रसूल निसार अहमद औरंगाबादी ने अपने भाई की किताब को उसकी अपनी इल्मी काविश और अमानते इल्मीया के रूप में पेश करते हुए लिखा कि -

"मौसूफ ने मुहर्रम और उसकी फज़ीलत, इस माह में होने वाले वाकिआत, हादिसात और हकाइक को जिक्र करने में कुरआन व हदीस से दलाइल अख़ज करके, साथ ही साथ कुतुबे सियर व तारीख के असमा व सफ़हात का भी हवाला दिया है जिससे मौसूफ की दिक्कते नज़री और अमानते इल्मीया का सुबूत मिलता है।"

("आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें" सफ़ा १)

यानी चोरी तो चोरी ऊपर से सीनाजोरी। अहले इल्म या जिनके पास 'खिलाफते मुआविया व यजीद' नामी किताब होगी वह मजकूरा बाला इबारत को देखकर यकीनी तौर पर कह उठेंगे कि देखो किस तरह अवाम को धोखा और फरेब दिया जा रहा है। और हकाइक को छुपा कर अपनी इल्मी काबलीयत का ढींडोरा पीटा जा रहा है। अब हम जुहूर अहमद की बद-दियानती और मक्र व फरेब के चन्द नमूने पेश कर रहे हैं। मुलाहिजा फरमाइए :

जुहूर अहमद की किताब में जो बात सब से ज्यादा दिल-ख़राश और दुश्मनीए इमाम हुसैन का खुला हुआ नमूना है, वह यह है कि मुरत्तिबे किताब हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के

वाकिया ही को सिर से सफहए हरती से भिटाने और अपने लाडले यजीद की पोजीशन को दागदार न होने की कोशिश में लगा हुआ है। चुनांचे इतिहाई शर्मनाक जसूरत करते हुए शहजादए रसूल हजरत सैयदना इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु की शहादत के मुतअल्लिक लिखता है कि :

"हुसैन इब्ने अली रजियल्लाहु अन्हु माहे सफर को कत्ल हुए। उस वक्त उनका सन् पचपन साल था।"

(‘आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें’ सफा १० बहवाला तबरी)

मजकूरा बाला इबारत तारीखे तबरी की एक नातमाम इबारत है जिसे इस तरह पेश करके उम्मत मुसलिमा को एक बड़ा फरेब दे कर इमाम आली मकाम की शहादत को सिर से खत्म करने की एक सोचे समझे प्लान के तहत कोशिश की जा रही है। अब आइए हम आपके सामने असल इबारत, जिसका हवला जुहूर अहमद ने अपनी किताब में दिया है, उसी तारीखे तबरी से सही हवाले के साथ नकल कर रहे हैं।

"आप इराक में आए और रोजा आशूरह सन् ६१ हिजरी नैनवा में कत्ल किए गए। यह भी रिवायत है कि हुसैन इब्ने अली रजियल्लाहु अन्हु सफर सन् ६१ हिजरी में कत्ल किए गए और सन् आप का पचपन बरस का था। साबित यही होता है कि मुहर्रम की दसवीं को कत्ल हुए।"

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफा २२०)

मुहतरम कारिईन! अन्दाजा लगाएं कि मुरत्तिबे किताब ने असल हकीकत के ब्यात में किस कदर ख्यानत और बद-दियानती से काम लिया है कि तबरी की असल और सही साबित हुई रिवायत को हड़प कर दिया और अपने मतलब के लिए अधूरी इबारत पेश कर के उम्मत मुसलिमा को धोखा देने और इतिहाद बैनल-मुसलिमीन को पारह-पारह करने की एक शर्मनाक जसूरत की है। क्या है कोई मर्दे मूजाहिद जो ऐसे खाइन को उसके करतूत की सजा दे ?

जुहूर अहमद की तीसरी सबसे बड़ी ख्यानत यह है कि वह हजरत सैय्यदना इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु की न्याज और सबील को हराम करार देते हुए लिखता है कि —

"मुहर्रम में जो भी चीजें बनाई जाती हैं — शरबत, नज़ व न्याज के मलीवे, मिठाईयां और खिचड़ा वगैरह। यह सब गैरुल्लाह के नाम की चीजें होती हैं जिनका खाना अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हराम करार दिया।"

है। अल्लाह तआला अपने कलाम में फरमाता है : "वह हर चीज जो अल्लाह के नाम के सिवा दूसरों के नाम पर मशहूर की जाए हराम है।"

(आओ मुहर्रम..... सफा १८)

खाइन जुहूर अहमद ने जिस आयते करीमा का तर्जुमा पेश किया है, वह तर्जुमा सही नहीं है और आयते करीमा से जो मतलब निकाला है वह भी सही नहीं है। आइए! सबसे पहले हम असल हकीकत आपके सामने पेश करें। सबसे पहले आयते करीमा का सही तर्जुमा और उसके बाद चन्द मुफस्सरीने किराम का इस आयते करीमा के तहत तफसीर पेश की जायेंगी। इमाम अहले सुन्नत अहमद रजा खान फाजिले बरैलवी इस आयत का तर्जुमा करते हैं कि : और वह जानवर जो गैरे खुदा का नाम लेकर जबह किया गया है, वह हराम है। (कंजुल-ईमान) यहां उन जानवरों को हराम करार दिया गया है जो वक़्त जबह गैरे खुदा का नाम लेकर जबह किए गए हों। चुनावे तफसीर खजाइनूल-इरफान में इस आयत के तहत लिखा है कि जमानए जाहिलीयत के लोग बुतों के नाम पर जानवर जबह करते थे। जिस जानवर को जबह तो सिर्फ अल्लाह के नाम पर किया गया मगर दूसरे औकात में वह गैरे खुदा की तरफ मंसूब रहा, वह हराम नहीं। जैसे कि अब्दुल्लाह की गाय अंकीके का बकस, वलीमे का जानवर, या वह जानवर जिससे औलिया के अरवाह को सवाब पहुंचाना मंजूर हो। उनको गैर वक़्त में औलिया के नामों के साथ नामजद किया जाए मगर जबह उनका फकत अल्लाह के नाम पर हो, उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाए, वह हलाल व तैयब है। इस आयते करीमा में सिर्फ उसी को हराम फरमाया गया है जिस पर जबह करते वक़्त गैरे खुदा का नाम लिया जाए। (तफसीर खजाइनूल-इरफान सफा ३६)

तफसीर मवज्जेहुल-कुरआन में इसी आयत के मातहत है : "वह जानवर हराम है तुम पर जो आवाज उठाएं यांनी कहें उसको जबह करने के वक़्त नाम सिवाए खुदा तआला के।" (सफा २६)

तफसीर हुसैनी कादरी में इसी आयत के मातहत है : "और हराम की वह चीज जिस पर जबह के वक़्त आवाज बुलन्द करें लीगैरिल्लाह वास्ते गैरे खुदा के बुतों के नाम पर।" (जिल्द १ सफा ४२)

तफसीर अहमदिया में इसी आयत के मातहत है **मानाहु जबहे बिही लिइस्मे गैरिल्लाहे मिसलु लात व उज्जा व असमाउल-अंबिया।** आयत

के माना यह है कि उसको गैरे खुदा के नाम पर जबह किया गया हो और वह वह है जो लात व उज्जा के लिए जबह किया जाता था।

(सफा ४१ मतबा रहीमिया, देवबन्द)

इन तमाम तफासीर से मालूम हुआ कि इस आयत 'उहिल ल में 'मा उहिल ल' से मुराद है जबह के वक्त गैरे खुदा का नाम पुकारना। लिहाजा अगर कोई जानवर या कोई चीज किसी तरफ मंसूब कर दी जाए तो वह हराम नहीं होती। जुहूर अहमद समझे आप। आयते करीमा में जानवरों के मुतअल्लिक ब्यान किया गया है और आप उससे औलियाए किराम और हजरत सैय्यदना इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु की नियाज मुराद ले कर हराम करार दे रहे हो। क्या यह ख्यानत नहीं है? जो माना आप ने निकाला है अगर वही मुराद लिया जाए तो फिर दुनिया की कोई चीज भी बाकी नहीं रह जाएगी जो हरमत के दायरे में न आ जाए। इस लिए आप जरा ठंडे दिल से गौर फरमाइए और अपने गंदे अकीदे से तौबा कर लीजिए।

अल्लामा अहमद जीवन अलैहिर्रहम जो अरब व अजम के उलमा के उस्ताद हैं और तमाम देवबन्दी भी उनको मानते हैं, अपनी किताब तफसीराते अहमदिया में इसी आयत 'मा उहिल ल बिही लिगैरिल्लाह' के मातेहत फरमाते है व मिन हाहुना ओलि म इन्नल बकरतल मंजूर त लिल औलियाए कमा हुवरस्सु फी जमानिना हलालुन तैयबुन लिअन्नहु लम यजकुरी स म गैरुललाहि अलैहा वक्तुज्जबहे व इन कानू यन्जुरुनहा

(सफा ४२)

इस से मालूम हुआ कि जिस गाय की औलियाअल्लाह के लिए नजर मानी गई जैसा कि हमारे जमाने में रिवाज है, यह हलाल तैयब है क्योंकि उस पर जबह के वक्त गैरे खुदा का नाम नहीं लिया गया अगरचे उस गाय की नजर मानते हैं।

लीजिए जुहूर अहमद औरंगाबादी, आप के शहर के बानी हजरत औरंगजैब आलमगीर अलैहिर्रहम के उस्ताद गिरामी ने औलियाए किराम के जानवरों को जायज फरमा दिया। क्या अब अपने घर की गवाही को भी तसलीम नहीं की जाएगी?

उसके अलावा जुहूर अहमद ने जो सबील और खिचड़े को नाजायज और हराम बताया है उसका मुकम्मल जवाब नाचीज की उसी किताब के हिस्सा अव्वल में बहुत तफसील से ब्यान किया गया है, वहां मुताला किया जाए।

सवाल २ : क्या यजीद की हुकूमत व खिलाफत कवालीने शरईया के ऐन मुताबिक थी और क्या उस पर तमाम सहाबा और जमहूर मुसलिमीन का इत्तिफाक था?

जवाब : हरगिज नहीं! बिल्कुल गलत, झूठ और खुला हुआ फरेब और तारीखी वाकिआत के बिल्कुल खिलाफ है। बल्कि अगर तारीखी किताबों का मुताला किया जाए तो मामला उसके बिल्कुल बर-अक्स नजर आता है। इससे पहले कि हम सहाबा किराम, ताबईने इजाम के अकवाल और तारीखी शवाहिद पेश करें, सबसे पहले जुहूर अहमद औरंगाबादी की उस इबारत को पेश कर रहे हैं जिसमें यजीद को बिल-इत्तिफाक मुसलमानों का खलीफा (बादशाह) पेश किया गया है। मुलाहिजा फरमाइए। नासबी जुहूर इब्ने यजीद लिखता है कि—

“अमीर यजीद का वली-अहद और उसके बाद खलीफा मुन्तखब होना पूरी उम्मत की रजामन्दी से हुआ था..... और यह सब बड़े-बड़े सहाबा-ए-किराम रजियल्लाहु अन्हु की तहरीक व ताईद से हुआ था।”

(आओ मुहर्रम..... सफा २७)

कारिईने किराम ! नासबी जुहूर इब्ने यजीद मजकूरा बाला इबारत से यह तअस्सुर देने की नापाक कोशिश कर रहा है कि यजीद बड़े-बड़े सहाबा-ए-किराम की तहरीक व ताईद से खलीफा मुन्तखब हुआ था। हालांकि तारीखी हकीकत बिल्कुल उसके बरअक्स है। आइए, सबसे पहले हम इस बात का जायजा लें कि यजीद की वली-अहदी के लिए सब से पहले किस ने तहरीक शुरू की थी ? तो तारीखे इस्लाम का मुताला करने के बाद यह बात बिल्कुल वाजेह हो जाती है कि तमाम सहाबा-ए-किराम नहीं बल्कि सिर्फ एक शख्स हजरत मुगीरा बिन शोबा ही उस तहरीक के बानी थे। उन्होंने भी यह तहरीक सिर्फ अपनी गवर्नरी बाकी रखने के लिए हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु के सामने यह तजवीज पेश की कि यजीद को वली-अहद बनाया जाए। साहिबे तारीखे तबरी व तारीखुल-खुलफा यजीद की वली-अहदी की हकीकत ब्यान फरमाते हुए लिखते हैं कि हजरत मुगीरा बिन शोबा जो हजरत अमीर मुआविया की तरफ से गवर्नर थे उनको जब अमीर मुआविया ने माजूली का फरमान लिख कर भेजा तो उन्होंने उसको मानने से साफ इन्कार कर दिया। और चन्द रोज के बाद खुद हजरत अमीर मुआविया के पास पहुंचे। हजरत अमीर

मुआविया ने देर से हाजिर होने की वजह दरयाफ्त फरमाई तो मुगीरा बिन शोबा ने कहा कि मैं एक अहम काम की तकमील में मसरूफ था। जिसके बाइस तागीले हुक्म में इतनी ताखीर हुई। हजरत अमीर मुआविया ने पूछा : वह अहम काम कौन-सा था? मुगीरा बिन शोबा ने जवाब दिया कि मैं लोगों से यजीद के लिए खिलाफत की बैअत ले रहा था। यह सुन कर हजरत अमीर मुआविया ने दरयाफ्त फरमाया : फिर तुमने इस काम की तकमील कर दी। मुगीरा ने कहा : हां! मैं उस काम को पूरा कर चुका हूँ। इस पर हजरत अमीर मुआविया ने मुगीरा को कूफा की गवर्नरी के लिए बहाल कर दिया। हुक्म दिया कि यजीद की बैअत के लिए कुछ फिक्र करिए। उसके बाद हजरत अमीर मुआविया ने ज्यादा (गवर्नर बसरा) से यजीद की वली-अहदी के लिए मशवरा तलब किया तो ज्यादा ने अपने मोतमद खुसूसी उबैद बिन काब नुमैरी को यजीद की वली-अहदी से अपनी बेजारी और नफरत का मुन्दर्जा जैल पैगाम देकर हजरत अमीर मुआविया के पास रवाना किया कि इस्लाम का तअल्लुक और जिम्मेदारी बहुत बड़ी चीज है और मैं देखता हूँ कि यजीद की तबीयत में काहिली और सहल-अगारी बहुत है। इसपर तुरह यह कि वह शिकार का गरवीदा है। इसलिए आप अभी तअम्मुल कीजिए।

(तारीखुल-खुलफा सफा ३०१ तारीखे तबरी जिल्द ५ सफा १३३)

यजीद की वली-अहदी के लिए मशवरे जारी कि कुछ नौ-मुस्लिम और सरकारी मुसलमानों ने मुगीरा बिन शोबा की जानिब से नजराने मिलने और उसके हुक्म से यजीद की वली-अहदी की ताईद करने के लिए हजरत अमीर मुआविया के पास पहुंच गए। यह तादाद में थोड़े थे। इस लिए उनकी बात पर कुछ तवज्जह नहीं दी गई। इधर अकसरीयत उस मामले को अहलियाने मदीना मुनव्वरह के मशवरे और राय पर चलने की ताईद की। तो हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु अन्हु बजाते खुद मदीना मुनव्वरह तशरीफ ले गए और यजीद की वली-अहदी के लिए मदीना वालों बिलखुसूस सहाबा किराम से मशवरा तलब किया। लेकिन उसमें भी उनको कोई खातिर-ख्वाह कामयाबी नहीं मिली। उसकी पूरी तफसील नाघीज की किताब के हिस्सा अव्वल में मुलाहिजा फरमाइए। इमामुल-मुहद्दीसीन हजरत सैयदना शैख अब्दुल-हक मुहद्दीस देहलवी अलैहिर्रहमः इब्न-जौजी से नकल फरमाते हैं कि जब सन् ६० हिजरी

शुरू हुआ तो यजीद पलीद ने उसमान बिन मुहम्मद बिन अबू-सुफियान को जो उसका चचाजाद भाई था मदीना मुनव्वरह रवाना किया ताकि बाशिन्दगाने मदीना से यजीद की बैअत ले। उसमान ने अहले मदीना की एक जमाअत को यजीद के पास भेजा। जब यह जमाअत यजीद के पास से मदीना मुनव्वरह लौटी तो उसने यजीद की बुराईयां खुले आम ब्यान करना शुरू कर दीं। और उसकी बेदीनी, शराबनोशी और मन्नुआत के इरतिकाब और कुत्तों से खेलने का जिक्र किया। नीज दूसरी और उसकी बुराईयां मंजरे आम पर ले आए तो अहलियाने मदीना ने उस जमाअत से यह हालात सुन कर यजीद की बैअत व खिलाफत से बेजार हो गए। उसी जमाअत में मुजिर नामी एक शख्स थे। उन्होंने खुदा की कसम खाकर फरमाया कि यजीद ने मुझको एक लाख दिरहम दिए हैं लेकिन मैं सच्चाई को हाथ से जाने न दूंगा। सुनिए। यजीद शराबनोश और तारिके सौम व सलात है। नीज यही शख्स इब्न-जौजी अबुल-हसन बदाहिनी से, जो सिका रावी हैं, नकल करते हैं कि अहलियाने मदीना ने यजीद की अलामात फिस्क व फुजूर के जाहिर होने के बाद मिम्बर पर चढ़कर उसकी बैअत तोड़ दी। अब्दुल्लाह इब्न-उमरु बिन हफस मखजूमी ने अपना अमामा सर से उतार कर कहा अगरचे यजीद ने मुझको सिला और इनाम दिया है। लेकिन वह खुदा का दुशमन और दायमुस्सुकर है। मैंने उसकी बैअत तोड़ दी है, जैसे अपनी दस्तार सर से उतार ली है। फिर दूसरे उठे और उन्होंने अपनी जूती पांव से निकाल कर फेंक दी और कहा : मैंने यजीद की बैअत तोड़ दी है। यहां तक कि अमामों और जूतियों से मजलिस भर गई।

(जब्बुल-कुलूब सफा ३७)

ऐ यजीद के हमनवा जुहूर अहमद औरंगाबादी! देखिए यह हैं वह हजरात जो यजीद के हम-जमाना और उसके तमाम फासिकाना हालात के चश्मेदीद गवाह। जो यजीद के बारे में अहलीयाने मदीना के सामने गवाही दे रहे हैं। क्या अब भी आप यजीद को बिल-इत्तिफाक खलीफा तस्लीम करने की अपनी हठधर्मी पर कायम रहेंगे ?

मुहदिसे जलील हजरात अल्लामा इब्न-हजर मक्की अलैहिर्रहमः फरमाते हैं कि — यजीद के गुनाहों में हद दर्जा बढ़ जाने की वजह से अहलियाने मदीना ने उसकी बैअत तोड़ दी थी। (सवाइके मुहर्रका सफा ३३२)

मुहतरम कारिईन! अब आइए हम खाइन जुहूर अहमद औरंगाबादी की

उस बंद-दियानती का पोस्ट मार्टम करें जो उन्होंने यजीद की वली-अहदी के लिए मुकद्दमा इब्ने खल्लदून की नातमाम इबारत पेश करके अवामुन्नास की वली-अहदी पर जमहूर सहाबा का इत्तिफाक था। हालांकि हकीकत यह है कि जब हजरत अमीर मुआविया रजियल्लहु अन्हु ने यजीद को अपना वलीए अहद बनाने की तहरीक शुरू की तो बकौले इब्ने-खलदून यजीद फासिक व फाजिर नहीं था। लेकिन जब यजीद का फिस्क व फुजूर जाहिर हो गया तो सहाबा किराम उसके बारे में मुख्तलिफुर्राय हो गए। किसी ने यजीद की बैअत तोड़कर उससे जंग करने का इरादा फरमा लिया और कुछ लोगों ने अपने आप को जंग से रोक कर खामोशी इख्तियार करने पर इकतिफा किया ताकि आपस में झगड़ा फसाद और खून खराबा न हो। वह इसलिए खामोश नहीं थे कि उनको यजीद की खिलाफत व हुकूमत तस्लीम थी। इब्ने खलदून लिखते हैं कि —

“और जब यजीद में फिस्क व फुजूर की वह बातें पैदा हो गई जो होनी थीं तो सहाबा में उसके बारे में इख्तिलाफे राय हो गया। बाज ने उसके फिस्क व फुजूर की वजह से उसके खिलाफ खड़े हो जाने और उसकी बैअत तोड़ देने को जरूरी समझा। जैसा कि हजरत इमाम हुसैन और अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजियल्लाहु अन्हुमा और उनके मानने वालों ने किया। और बाज ने फित्ना और बहुत ज्यादा कत्ल व गारत के खतरात और उनकी रोक-थाम से इज्ज महसूस करते हुए इन्कार कर दिया। क्योंकि उस वक्त यजीद की कुव्वत व शौकत बनी उमैया की असबीयत थी।”

इस इबारत से साबित हो गया कि जिन सहाबा ने यजीद की बैअत की और उसके खिलाफ आवाज न उठाई वह उसके खलीफए बरहक होने की वजह से न था बल्कि फित्ना व फसाद और कत्ल व गारतगरी से बचने के लिए था। क्योंकि वह समझते थे कि अगर फित्ना व फसाद बढ़ गया तो उसका रोकना नामुम्किन हो जाएगा। लिहाजा उन्होंने रुख्सत पर अमल किया। और इमाम हुसैन हक के लिए डट गए। और अपनी और अपने अहल व अयाल की जान कुर्बान करके अजीमत पर अमल-पैरा हुए।

इसके इलावा इससे भी ज्यादा साफ दलील हम पेश करने जा रहे हैं जिससे खुले लफ्जों में यह बात साफ और वाजेह हो जाती है कि उस दौर

के तमाम लोगों के नज़दीक यज़ीद का फ़िस्क व फ़ुजूर बिल्कुल मुसल्लम था जिसके मुकाबले के लिए हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो गए। इब्ने ख़लदून लिखते हैं:

“और रहे इमाम हुसैन तो जब यज़ीद का फ़िस्क व फ़ुजूर उसके ज़माना के सब लोगों पर जाहिर हो गया तो कूफ़ा के मुहिब्बीने अहले-वैत ने इमाम हुसैन के पास पैग़ाम भेजा कि वह कूफ़ा तशरीफ़ ले आए वह सब उनकी इताअत में (यज़ीद के मुकाबले में) खड़े हो जायेंगे। पर उस वक़्त इमाम हुसैन ने भी महसूस फ़रमा लिया कि यज़ीद के खिलाफ़ उसके फ़िस्क व फ़ुजूर की वजह से खड़े हो जाना मुतऐयन हो गया है। खास तौर से उस शख्स के लिए जिसे उस पर कुदरत हासिल हो जाए। हज़रत इमाम को अपनी ज़ात में उस कुदरत व कुव्वत और अहलीयत का जन्म ग़ालिब पैदा हो गया था।”

मुहतरम हज़रात ! इन्साफ़ कीजिए। मज़कूरा बाला इबारात से बिल्कुल साफ़ वाज़ेह हो रहा है कि यज़ीद के फ़िस्क व फ़ुजूर में सहाबए किराम की दो रायें न थीं। बल्कि उसके खिलाफ़ खड़े होने में दो राय थी। और वह भी उसकी अहलीयत व ना-अहलीयत की बिना पर नहीं जबकि यज़ीद का फ़िस्क मुसल्लमए कुल था। इसलिए इमाम हुसैन यज़ीद के खिलाफ़ अपने अक़दाम में हक़ पर थे।

अब रहा सवाल कि जो लोग यह कहते हैं कि इमाम हुसैन की ग़लती थी कि एक इमामे आदिल बादशाहे वक़्त के खिलाफ़ आवाज़ उठाई जिस से आप बागी कहलाए। और उसकी सज़ा क़त्ल है। तो ऐसे गंदे ख्यालात की तरदीद फ़रमाते हुए अल्लामा इब्ने ख़लदून तहरीर फ़रमाते हैं -

“काज़ी अबू-बक्र बिन अरबी मालिकी ने अपनी किताब ‘अल-अवासिम बल-क़वासिम’ में यह कह कर सख़्त ग़लती की है कि इमाम हुसैन अपने भ्राता जान की शरीअत के मुताबिक़ क़त्ल किए गए। ग़लती की वजह यह है कि शरीअत ने इमाम के खिलाफ़ खड़े होने वालों के लिये क़त्ल की जो सज़ा तजवीज़ की है वहां शर्त यह है कि वह इमाम आदिल हो। काज़ी साहब ने उस शर्त को नज़र-अन्दाज़ करके सख़्त ठोकर खाई है। हालांकि हुसैन के ज़माने में मिल्लत की इमामत व सरदारी के लिए इमाम हुसैन से ज़्यादा आदिल व कामिल और मुस्तहिक़ और कौन हो सकता है ?

(मुक़द्दमा इब्ने ख़लदून सफ़ा २४९)

मजकूरा बाला इबारत से भी ज्यादा वाजेह तौर पर हजरत अल्लामा मुल्ला अली कारी अलैहिर्रहमः फिक्हे अकबर में फरमाते हैं : व अम्मा मा तफूहु बाजुल जहलते मिन अन्नल हुसै न का न वागियन फवातिलिन इन द अहलिरसुन्नः वल-जमाअः व लअल्ला हा जामिन हिजयानातिल ख्वारिजे अनिल-जादः (शरह फिक्हे अकबर सफा ८७)

और यह जो बाज जाहिलों ने अफवाह उड़ा रखी है कि हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु बागी थे। तो यह अहले सुन्नत व जमाअत के नजदीक बातिल है शायद यह खारजियों की बकवास है जो सिराते मुस्तकीम से हटे हुए हैं।

इमाम मुल्ला अली कारी की इस इबारत से यह बात बिल्कुल ही वाजेह हो रही है कि जो लोग हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु को बागी और यजीद पलीद को इमाम आदिल खलीफतुल-मुसलिमीन समझते हैं, उनका शुमार हरगिज-हरगिज अहले सुन्नत में नहीं है बल्कि वह खारजी यजीदी हैं।

नीज एक सवाल यह उठाया जाता है कि उन तमाम सहाबा-ए-किराम के बारे में क्या कहा जाए जिन्होंने यजीद के खिलाफ हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु का साथ नहीं दिया। तो इस सिलसिले में भी अल्लामा इब्न-खलदून ने अपने मुकद्दमे में निहायत वजाहत के साथ तहरीर फरमा दिया है। पढ़िए अल्लामा इब्न-खलदून फरमाते हैं। व अम्मा गैरल हुसैनि मिनरससहाबतिल्लजी न कानू बिल-हिजाजे वशशामे वल-इराके व मिनत्ताबिर्इ न लहुम फराऊ इन्नल खुरु ज अला यजीदु व इन कान फासिका। ला यजूजु लिमा यन्शा अन्हु मिनल हरजे वदिमाअ फकसिरु अन जालि क वलम युबाएउल हुसैनु वला अनकरु अलैहि वला इस्मूहु लिअन्नहु मुजतहिदु व हु व उसवतुल-मुजतहिदी न वला यजहबु बिकल गलत इन्न तकूलु बितासीमे हाउलाए बिमुखालिफतिल हुसैनु व कुऊदुहुम अन नसरिही लिअन्हु.....अन इजतिहादे मिन्हु।

(मुकद्दमा इब्न-खलदून सफा २४९)

लेकिन इमाम हुसैन के इलावा बाज सहाबा व ताबईन जो हिजाज व शाम व इराक में से थे उनकी राय यह थी कि यजीद अगरचे फासिक व ना-अहल है लेकिन कत्ल व खूरेजी के बाइस उसके खिलाफ किसी तरह का अकदाम सही नहीं है। इसी वजह से अमलन उन्होंने इमाम हुसैन का साथ नहीं दिया। वरना जहां तक इमाम हुसैन के अकदाम का सवाल है

उनके बरहक होने पर कभी उन्होंने ने इन्कार नहीं किया और न उन्होंने इस सिलसिले में इमाम हुसैन को खताकार, गुनहगार ठहराया। क्योंकि वह मुजतहिद थे। मुजतहिद की शान यही होती है। और इस गलती से भी हमेशा-हमेशा के लिए बचना कि इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु का साथ न देने की वजह से सहाबा व ताबईन को गुनहगार कहा, क्योंकि उनका मोकिफ भी इजतिहाद ही के नतीजे में था।

मुहतरम कारिईन! हमारे मजकूरा बाला ब्यानात से यह बात बिल्कुल रोजे रोशन की तरह अयां हो गई कि यजीद फासिक व फाजिर था और उसमें तमाम सहाबा किराम व ताबईने इजाम और अहलियाने हिजाज व शाम व बसरा का इत्तिफाक था। अब उसमें किसी भी किस्म के शक की कोई गुन्जाइश बाकी नहीं रह जाती है। नीज खलीफतुल-मुसलिमीन अपने रसूल का नायब होता है और उसी के हाथ में मुसलमानों का दीन और दुनिया होती है। और जब खलीफा ही फासिक होगा तो कौम का क्या हाल होगा? हर जी-अक्ल शख्स उस बात को अच्छी तरह समझ सकता है। इन ही सब बातों को मद्दे नजर रखते हुए इमाम आली मकाम ने यजीद की फासिकाना आदतों को खतम करने के लिए उसके खिलाफ आवाज उठाई जो उनके लिए फर्ज भी था। अब सवाल यह है कि क्या यजीद के फिस्क व फुजूर और गंदे किरदार के बारे में किसी मोतबर व मुस्तनद तारीखी किताबों में कुछ मिलता है। तो यहाँ हम उसी किताब के हवाले से यजीद के गंदे किरदार को पेश कर रहे हैं जिसका जुहूर अहमद ने अपनी किताब में अकसर जगह हवाला दिया है। अल्लामा इब्ने कसीर अपने किताब अल-बिदाय: वन्निहाय: में लिखते हैं — और बेशक रिवायत से यह बात साबित है कि यजीद आलाते लह्व व लइब, शराबनोशी और सैर व शिकार के लिए अपने जमाने में बहुत ज्यादा मशहूर था। नौ उम्र लड़कों, गाने वाली दोशीजाओं और कुत्तों को अपने पास जमा रखता था। और सींग वाले लड़ाका मैदों, सांडों और बन्दरों के दर्मियान लड़ाई का मुकाबला करवाता था। और हर दिन सुबह के वक्त नशे में मखमूर होता था। और बन्दरों को जीन कसे हुए घोड़ों पर सवार करके दौड़ाता था। और बन्दरों और नौउम्र लड़कों को सोने की टोपियां पहनाता था। घोड़ों की दौड़ का मुकाबला करवाता था। और जब कोई बन्दर मर जाता था तो उसका सोग मनाता था। (अल-बिदाय: जिल्द ८ सफ़ा २३५)

अलावा अजी हजरत अल्लामा इब्ने कसीर यजीद के खसाइले मजमूमा तहरीर करते हैं कि वका न फीहे ऐजन इकवालु अलशशहवाति व तर्क बाजिरसलवाति फी बाजिल औकाति व अमानतिहा फी गालिविल औकाते (अल-बिदाय: जिल्द ८ सफा २३०) यानी यजीद के अन्दर शहवतों और नफसानी ख्वाहिशात का बहुत ज्यादा मैलान था। और बाज औकात बाज नमाज छोड़ देता था। और वक्त गुजार कर पढ़ना तो अकसर औकात रहता था।

मुहतरम कारिईन! इन्साफ से बताइए क्या ऐसे करतूत वाला शख्स मिल्लते इस्लामिया का अमीर व खलीफा हो सकता है? और इमाम हुसैन ने ऐसे शहवत-परस्त, बे-नमाजी, शराबी शख्स के खिलाफ आवाज बुलन्द फरमाई तो क्या वह हक पर नहीं थे? हजरत इमाम हुसैन ने यजीद के खिलाफ जो खुर्रुज किया वह उसी की अपनी फिस्क व फुजूर की गंदी आदतों और शहवाते नफसानी और शराब-नोशी की बिना पर था। जिस का सुबूत अभी आपने एक मोतमद व मुस्तनद मुअरिख के हवाले से पढ़ लिया है। अब आइए हम हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु से खुद दरियाफ्त करें कि आपने यजीद के खिलाफ क्यों आवाज बुलन्द फरमाई? तो आप इरशाद फरमाते हैं:

ऐ लोगो! बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जो शख्स किसी जालिम बादशाह को देखे कि उसने अल्लाह की हराम करदा चीजों को हलाल ठहरा लिया है, अहदे इलाही को तोड़ रहा है, सुन्नते रसूल की मुखालिफत कर रहा है और अल्लाह के बन्दों के साथ जुल्म और उदवान का मामला करता है और देखने वाले को उस पर कौलन या अमलन गैरत नहीं आई। तो खुदा का यह हक है कि उस बादशाह की जगह (दोजख) में उसे डाल दे। मैं तुम्हें आगाह करता हूँ कि उन लोगों (यजीद और यजीदियों) ने शैतान की इताअत की, रहमान की इताअत छोड़ दी। फित्ना व फसाद बरपा कर दिया और हुदूदे इलाही को बेकार कर दिया, माले गनीमत में अपना हिस्सा ज्यादा लिया। अल्लाह की हराम करदा बातों को हलाल और हलाल को हराम किया। लिहाजा मैं बतिसबत किसी और शख्स के (यजीद और यजीदियों के खिलाफ जिहाद करने में) ज्यादा हकदार हूँ। (तारीखे कामिल जिल्द ४ सफा ४८)

मुहतरम कारिईन! हजरत इमाम आली मकाम के खुतबे में गौर फरमाइए।

आपने उस अजीम खुतबा में यजीद के एक-एक करतूत को जमा फरमा दिया है मगर किसी यजीदी ने उन बातों की तरदीद नहीं कि जिससे साबित होता है कि यजीद और यजीदी उन तमाम बातों में मुलव्विस थे। ऐसी सूरत में क्या एक इमाम आदिल, मुत्तकी, परहेजगार, नवासए रसूल, जन्नती नौजवानों का सरदार अपना मुकद्दस हाथ यजीदियों के हाथ में दे सकता था ? यही वह रम्ज है जिसे हुजूर गरीब नवाज ने अपनी मशहूर रुबाई में जाहिर फरमा दिया —

शाह अस्त हुसैन, बादशाह अस्त हुसैन

दीन अस्त हुसैन, दी पनाह अस्त हुसैन

सरे दाद न दादे दस्त, दर दस्ते यजीद

हक्का कि बिनाए ला इला ह अस्त हुसैन

अब आइए आपके सामने उलमाए माबाद के फैसलें पेश करूं जो यजीद के बारे में हैं। सुनिए और गौर फरमाइए कि बाप के हालात को बेटे से ज्यादा कौन जान सकता है। जब यजीद के लड़के मुआविया को यजीद के तख्त पर बिठाया गया तो उन्होंने जो खुतबा दिया वह मशहूर मुहदिस हजरत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह ने सवाइके मुहर्रका में बगीर अबू मुखन्नफ के हवाले के यूँ तहरीर किया है :

यानी फिर मेरे बाप को हुकूमत दी गई, वह नालायक था। नवासए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लड़ा। उसकी उम्र कम कर दी गई और उसकी नस्ल तबाह कर दी गई। और वह कब्र में गुनाहों के वबाल में गिरफ्तार हो गया। फिर रोया और कहा : हम पर सब से ज्यादा गिरा उसकी बुरी मौत और बुरा ठिकाना है। उसने इतरते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कत्ल किया। शराब हलाल की और काबा को बरबाद किया। (सवाइके मुहर्रका सफा ३३६)

मुहक्कि अलल-इतलाक हजरत शैख अब्दुल-हक मुहदिस देहलवी अलैहिर्रहम: 'तकमीलुल-ईमान' में फरमाते हैं —

यजीद इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु के होते हुए अमीर कैसे हो सकता है? और मुसलमानों का इज्मा उस पर किस तरह वाजिब आता है ? जबकि उस वक्त सहाबए किराम और सहाबा की औलाद जो भी मौजूद थी उसकी इलाअत से बेजारी का एलान कर चुके थे। मदीना मनव्वरह से चन्द लोग

उसके पास शाम में जब व इकराह से पहुंचाए गए। मगर यजीद के नापसंदीदा आमाल को देखकर वापस मदीना चले आए और आरजी बैअत को फरख कर दिया और उन लोगों ने बरमला कहा कि वह (यजीद) खुदा का दुशमन है, शराबनोशी करता है और तारिकुरसालात है, जानी और फासिक है, महारिम से सोहबत करने से भी बाज नहीं आता।

(तकमीलुल-ईमान सफा २६२)

मुहतरम हजरात! मजकूरा बाला तमाम हकाइक मुस्तनद व मोतमद मुअरिखीन व मुसन्निफीन के हवालों से पेश किए गए हैं। उसके बावजूद नासबी जुहूर अहमद औरंगाबादी अपने पेशवा यजीद की सफाई ब्यान करते हुए लिखता है कि —

“खलीफा यजीद के किरदार में कोई खामी या बुराई ऐसी न थी कि उसके खिलाफ खुरुज का कोई जवाज निकाला जा सकता।

(आओ मुहर्रम की..... सफा २८)

इस इबारत को पेश करके जुहूर अहमद इस बात की नाकाम कोशिश कर रहा है कि जब यजीद में किसी किस्म की कोई खामी या बुराई नहीं थी तो इमाम हुसैन ने जो यजीद के खिलाफ खुरुज किया वह बिल्कुल गलत और बगावत पर मबनी था।

हालांकि ऐसा नहीं है बल्कि हकाइक हमने पीछे ब्यान किए हैं और यहां ब्यान करने जा रहे हैं। इन तमाम से यह साबित है कि इमाम हुसैन का यजीद की बैअत से इन्कार उसके फिस्क व फुजूर की वजह से था और जालिम यजीद की हुकूमत का जो तसल्लुत हो गया था, उसको दफा करने और मुसलमानों को यजीद के जुल्म व सितम से बचाने के लिए था। चुनांचे हजरत शाह अब्दुल-अजीज मुहदिस देहलवी जो हर मक्ताबा-ए-फिक्र के लिए मुसल्लिम शख्सीयत हैं, फरमाते हैं कि हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु का खुरुज (यजीद के खिलाफ) खिलाफते राशिदा के दावे की बिना पर न था। क्योंकि वह तीस साल गुजरने पर खत्म हो चुकी थी। बल्कि आप की गर्ज रियाया को एक जालिम (यजीद) के हाथ से निजात दिलाने की बिना पर था। जालिम के मुकाबले में मजलूम की मदद करना वाजिब है। और यह जो मिशकात शरीफ में है कि जुहूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बादशाहे वक्त और उसके खिलाफ खड़े होने से मना फरमाया

है; ख्वाह वह जालिम ही क्यों न हो, यह उस वक्त के लिए कि वह जालिम बादशाह बिला किसी झगड़े और मुजाहमत के पूरा-पूरा तसल्लुत हासिल करे और उसके तसल्लुत में किसी को झगड़ा न हो और कोई उसका मुजाहिम न हो। और यहां अभी तक अहले मदीना व अहले मक्का व अहले कूफा यजीद पलीद के तसल्लुत से राजी न थे। हज़रत इमाम हुसैन व अब्दुल्लाह इब्न-अब्बास और अब्दुल्लाह इब्न-उमर और अब्दुल्लाह इब्न-जुवैर रज़ियल्लाहु अन्हुम जैसे हज़रात ने उसकी बैअत ही नहीं की थी। हासिले कलाम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ुरूज यजीद के जालिमाना तसल्लुत के दफ़ा करने के लिए था, न उसका तसल्लुत रफ़ा करने के लिए। यानी यह अम्र न था कि यजीद का कामिल तसल्लुत हो गया था। और आपका यह मकसूद था कि उसका तसल्लुत उठा दें। वह ख़ुरूज जो हदीस में मन्नु है वह वही है जो जालिम बादशाह का तसल्लुत रफ़ा करने के लिए हो। और दफ़ा और रफ़ा में जो फ़र्क है वह मसाइले फ़िक्हीया में ज़ाहिर व मशहूर है। (फ़तावा अजीजी सफ़ा ४३)

इसी तअल्लुक से अब हम आपके सामने देवबन्दी जमाअत के बड़े-बड़े मौलवी हज़रात के फ़तवे पेश कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए -

देवबन्दी जमाअत के हकीमुल-उम्मत अशरफ़ अली थानवी अपने फ़तावे में तहरीर करते हैं : यजीद फ़ासिक था और फ़ासिक की विलायत मुख़्तलफ़-फ़ीह है। दूसरे सहाबा ने जायज़ समझा। हज़रत इमाम ने नाजायज़ समझा, और गो इकराह में इनक़ियाद जायज़ था मगर वाजिब न था; और मुतमस्सिक बिल-हक़ (हक़ के साथ) होने के सबब यह मज़लूम थे और मक़तूल मज़लूम शहीद होता है। शहादत ग़ज़वा के साथ मख़सूस नहीं। बस हम उसी बिनाए मज़लूमियत पर उनको (हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु) शहीद मानेंगे। बाकी यजीद को उस क़िताल में इस लिए माज़ूर नहीं कह सकते कि वह मुज्ताहिद से अपनी तक़लीद क्यों कराता था? ख़ुसूसन जबकि हज़रत इमाम आख़िर में फ़रमाने भी लगे थे कि मैं कुछ नहीं कहता। उसको अदावत ही थी। चुनांचे इमाम हुसैन के क़त्ल की बिना यही थी। और मुसल्लत की इताअत का जवाज़ अलग बात है मगर मुसल्लत होना कब जायज़? ख़ुसूस ना-अहल को। इस पर खुद वाजिब था कि माज़ूल हो जाता। फिर अहले हल्ल व अक़द किसी को ख़लीफ़ा बनाते। (इमदादुल-फ़तावा ज़िल्द ४ सफ़ा ४६५ मतबा देवबन्द)

मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि यजीद फारसिक था।

(फतावा रशीदिया जिल्द १ सफा ७)

मौलवी कारी तैयब साहब मुहम्मिम दारुल-उलूम देवबन्द, लिखते हैं :
बहरहाल यजीद के फिस्क व फुजूर पर जबकि सहावा किराम सब के सब ही मुत्तफिक हैं। ख्वाह मुबाएईन हों या मुखालिफीन। फिर अइम्मा मुज्ताहिदीन भी मुत्तफिक हैं; और उनके बाद उलमाए रासिखीन, मुहद्दीसीन, फुकहा मिरल अल्लामा कुरस्तलानी, अल्लामा बद्रुद्दीन ऐनी, अल्लामा हैतमी, अल्लामा इब्ने-जौजी, अल्लामा सादुद्दीन, तफताजानी, मुहक्कि इब्न -हमाम, हाफिज इब्न-कसीर, अल्लामा अलकियल हरासी जैसे मुहक्किनीन यजीद के फिस्क पर उलमाए सलफ का इत्तिफाक नकल कर रहे हैं और खुद भी उसके कायल हैं तो उस से ज्यादा यजीद के फिस्क के मुत्तफिक होने की शहादत और क्या हो सकती है ?

(‘शहीदे करबला और यजीद’ सफा १५२ मतबा दारुल-किताब, देवबन्द)

मुअरिखे तारीखे इस्लाम मौलाना अकबर शाह नजीबाबादी अपनी किताब तारीखे इस्लाम में यजीद की वली-अहदी और उसको खलीफा बनाने के मुतअल्लिक लिखते हैं कि मुगीरा बिन शोबा ने जब यजीद की वली-अहदी के लिए तहरीक पेश की तो उसी वक्त से मदीना मुनव्वरह में मुखालफत शुरू हो गई थी। और यह खिलाफते राशिदा की सुन्नत के खिलाफ और इस्लामी जमहूरियत के मनाफी था। फिर चन्द सतर के बाद लिखते हैं कि जब अमीर मुआविया ने यजीद की वली-अहदी के लिए अपने गवर्नरों के नाम एक हुक्म जारी किया तो सभी ने उसकी मुखालफत की। मुहम्मद बिन अमरु बिन हजम ने खड़े होकर कहा अमीरुल-मोमिनीन! आप यजीद को खलीफा तो बना रहे हैं, लेकिन जरा उस पर भी ख्याल फरमा लें कि क़यामत के दिन आपको इस फैल का खुदा तआला के सामने जवाब देह होना पड़ेगा।

मुहम्मद बिन अमरु बिन हजम के इन अल्फाज से अन्दाज़ा होता है कि अवाम भी यजीद की वली-अहदी से खुश नहीं थे। मजीद लिखते हैं कि यजीद ने इस मन्सब को हासिल करने के बाद अपने आपको खिलाफत का अहल साबित नहीं किया। और जब हजरत इमाम को उसकी वली-अहदी की खबर मिली तो ऐसी मुकद्दस हस्ती उसके हाथ पर कैसे बैअत कर

सकती थी। क्योंकि अब्बल तो उसका इन्तिखाव ही गैर-शरई तरीके पर हुआ और उसकी हुकूमत गैर शरई थी। दूसरे यह कि वह अपने आमाल व किरदार से भी इस कदर गिरा हुआ था कि हमेशा लहव व लइव, सैर व शिकार में मसरूफ रहता। ख्वाजा-सराओं को उसने अपनी खिदमत पर मामूर किया था। रक्स व सुरूर की महफिलों में बेमहावा शरीक होता था। यह और इस किस्म के बहुत से उयूब उसमें थे। वह किसी भी तरह इस काबिल नहीं था कि उसे एक मिनट के लिए मुसलमानों का खलीफा या सरदार तसलीम किया जाए। (तारीखे इस्लाम किस्त ५ सफ़ा १७३ ता सफ़ा १७६)

दारुल-उलूम नदवतुल-उलमा के फारिगुत्तहसील आलिम मौलाना शाहि मुईनुद्दीन नदवी अपनी किताब 'तारीखे इस्लाम' में लिखते हैं कि यजीद एक लाउबाली शख्स था और मदीना मुनव्वरह, बसरा और मुख्तलिफ़ मकामात के वफूद ने हज़रत अमीर मुआविया के सामने यजीद को वली-अहद बनाने की राय न दी थी। लेकिन उसके बावजूद कुछ लोगों को डरा धमका और रुपयों का लालच देकर यजीद की बैअत ली गई। यजीद की वली-अहदी ने खिलाफ़त की रूह और इसलामी हुर्रीयत व आज़ादी का खातमा कर दिया।

(‘तारीखे इस्लाम’ जिल्द दोम सफ़ा २० ता ३४)

बानीए जमाअते इस्लामी मौलाना अबुल-आला मौदूदी लिखते हैं कि यजीद की वली-अहदी और फिर उसकी तख़्तनशीनी से दरअसल जिस ख़राबी की इब्तिदा हो रही थी वह इसलामी रियासत के दस्तूर और उसके मिज़ाज और उसके मक़सद की तबदीली थी। इसी तबदीली को इमाम हुसैन की दूर-रस निगाहों ने देख लिया था। उसको सही इसलामी उसूल पर लाने के लिए ही इमाम ने अपनी जान तक दे देने का फैसला किया।

(खिलाफ़त व मुलूकियत)

नोट : इन फ़तावे और इबारात को नक़ल करने का असल मक़सद यह है कि मालूम हो जाए कि थानवी साहब, गंगोही, क़ारी तैयब और मौदूदी साहिबान के नज़दीक यजीद की क्या हैसियत है ? और आज बाज़ देवबन्दी तब्लीगी कहलाने वाले यजीद को क्या समझ रहे हैं और उसको जन्नती, मग़ि़रत-याफ़ता और न जाने क्या-क्या लिख रहे हैं ताकि वह अपने अक़दाम से तौबा करें।

मुहतरम कारिईन! यह था यजीद की खिलाफत व इमारत का इस्तसवाव और इन्तिखाब। इस पर किसी तबसिरा व नतीजा के पेश करने की जरूरत नहीं है। अहले इल्म इन्साफ पसंद हज़रात खुद ही फैसला कर लेंगे कि जुहूर अहमद का यह कहना कि यजीद की खिलाफत पर कवानीने शरईया के मुताबिक तमाम सहाबा और जमहूर मुसलिमीन का ऐसा इत्तिफाक था कि कोई उसके खिलाफ न था, कहां तक दुरुस्त है?

शिद्दते ग़म से छलक आए हैं आंसू वरना

मुद्दआ मेरा नहीं आप से शिकवा करना

सवाल ३ : क्या यजीद को अमीरुल-मोमिनीन कह सकते हैं ? और क्या उसके नाम के आगे रहमतुल्लाह लिखना अज़रूए शरा जायज़ है?

जवाब : यजीद एक शराबी, ज़ानी और बद-किरदार शख्स था उस को अमीरुल-मोमिनीन कहना जायज़ नहीं है। लेकिन फिर भी खाइन जुहूर अहमद और खाबादी अपनी किताब में जगह-जगह यजीद को अमीरुल मामिनीन और उसके नाम के आगे रहमतुल्लाह लिखने की नापाक ज़सारत की है। हालांकि तारीख की मोतबर किताबों में दर्ज है कि मुजदिदे अब्वल हज़रत सैयदना उमर बिन अब्दुल-अजीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने किसी शख्स ने यजीद को अमीरुल-मोमिनीन कह दिया तो आपने उसे बीस कोड़े मारने का हुक्म दिया।

असल इबारत मुलाहिज़ा फ़रमाइए : वका ल नौफल बिन अबिल फुरात कुन्तु इन द उमर बिन अब्दुल-अजीज़ फ़ज़कुरु रज़ुलिन यजीद फ़काल का ल अमीरुल-मोमिनीन यजीद बिन मुआविया फ़का ल तकूलु-अमीरुल मोमिनीन? फ़अम र बिही फ़ज़ुरिब इशरीन सौतन

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ३३२)

हज़रत नौफल बिन फुरात फ़रमाते हैं कि मैं उमर बिन अब्दुल-अजीज़ की बारगाह में हाज़िर था। बस एक शख्स ने यजीद का ज़िक्र किया। उसे अमीरुल-मोमिनीन कह दिया। हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने उसे डांटा और फ़रमाया कि तू यजीद को अमीरुल-मोमिनीन कहता है। फिर आप के हुक्म से उसको बीस कोड़े मारे गए।

मुहतरम कारिईन! हज़रत उमर बिन अब्दुल-अजीज़ बनी-उमैया यानी उमवी ख़ानदाने के चश्म व चिराग़ हैं। मगर तबीयत पर दीन ग़ालिब है तो

यजीद को अमीरुल-मोमिनीन कहना भी बर्दाशत न कर सकें और यतीरे सजा काइल को बीस कोड़े लगवाए। आज के इस पुर फितन दौर में यजीद को अमीरुल-मोमिनीन, मुत्तकी व परहेजगार कहने वाले को कौन कोड़े मारे? काश! हजरत सैयदना उमर बिन अब्दुल-अजीज जैसा कोई मुत्तकी, परहेजगार मुजद्दिद होता जो जुहूर अहमद कर्शी को कोड़े लगवाता तो उसके होश ठिकाने आ जाते।

मुहतरम कारिईन! आप ज़रा ठंडे दिल से गौर फ़रमाइए कि यजीद को सिर्फ अमीरुल-मोमिनीन कहने पर हजरत उमर बिन अब्दुल-अजीज ने बीस कोड़े लगवाए। अगर वह यजीद को रहमतुल्लाह अलैह कहता तो कितनी बड़ी सजा का मुस्तहिक होता। अलावा अज़ी यजीद बिन मुआविया ही वह शख्स है जिसके बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेशीनगोई फ़रमाई कि अब्बलु मैय युबदिलु सुन्नती रजुलुममिम बनी उमै य त युकालु लहू यजीद (सवाइके मुहर्रका सफ़ा ३३९)

यानी मेरी सुन्नत को बदलने वाला पहला शख्स बनी—उमैय्या से होगा जिसको लोग 'यजीद' कहा करेंगे। गौर फ़रमायें जिसके मुतअल्लिक खुद पैगम्बरे इसलाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़बर दे दें कि यह मेरी सुन्नत को बदलने वाला है वह मुत्तकी परहेजगार और अमीरुल-मोमिनीन कैसे हो सकता है? नीज़ यजीद के सर पर नवासए रसूल को शहीद करने, मदीना पर लशकर-कुशी करके वहां के बाशिन्दों की बेइज़्जती और तौहीन करने, मक्का मुकर्रमा पर लशकर-कुशी करके ख़ाना काबा पर पत्थरों की बारिश और ग़िलाफ़े काबा को जलाने, शरीअत की हराम करदा चीज़ों को जायज़ करने और खुद भी हराम का इर्तिकाब करने, शराब नोशी, जिना जैसे घिनावने जुर्म का इरतिकाब गुनाह नहीं है? इतना सब कुछ होने के बावजूद अब आप खुद फैसला कर लीजिए कि क्या ऐसे किरदार का इन्सान मुत्तकी, आदिल, और ख़लीफ़ए बरहक अमीरुल-मोमिनीन हो सकता है? और क्या ऐसे शख्स के आगे रहमतुल्लाह अलैह लिख सकते हैं?

आओ, अब इन तमाम बातों को मद्दे नज़र रखते हुए अपने गुमराह—कुन अकायद और तहरीर से तौबा कर लो। अल्लाह तआला अपने महबूबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले से माफ़ फ़रमाएगा। वरना कल क़्यामत के दिन प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुज़ूर क्या जवाब देंगे?

सवाल ४ : क्या हुसैनी काफिले पर सात मुहर्रम से दरियाए फुरात का पानी बन्द किया जाना झूठ और इफ़तरा पर मबनी है ?

जवाब : नहीं हरगिज़ नहीं। बल्कि तारीखी किताबों में बड़ी ही तफ़सील के साथ यह लिखा हुआ है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और आपके साथ आने वाले हर मर्द व औरत और मासूम बच्चों पर यज़ीदियों ने सात मुहर्रम से पानी बन्द कर दिया था और यह सिलसिला दस मुहर्रम तक कायम रहा। उसके बावजूद इब्न-यज़ीद खाइन मुअल्लिफ़ जुहूर अहमद औरंगाबादी अपनी किताब में लिखता है कि —

“यह बात अकसर शहादत-नामों और करबला की दास्तानों का खासुल-खास मौज़ू है कि हुसैनी काफ़िला पर तीन दिन तक पानी बन्द कर दिया गया; औरतें और मासूम बच्चें एक-एक बूंद पानी को तरस्ते रहे; यह बात भी सिरे से ग़लत है।” (आओ मुहर्रम.....सफ़ा ४६)

मुज़कूरा बाला इबारत को बग़ौर पढ़ें जिसमें कहा गया कि इमाम आली मक़ाम पर तीन दिन तक पानी बन्द किया जाना यह शहादत-नामों का मौज़ू है जो सिरे से ग़लत है। हालांकि ऐसा नहीं है बल्कि इस बात को मुहब्बके मुहद्दीसीन किराम, मोतबर मुअरिख़ीन और मुअज़्ज़ उलमाए किराम व औलियाए इज़ाम ने इस बात को तहरीर किया है। उलमाए देवबन्द व नदवा ने भी उस बात को तहरीर किया है। हम क़दरे तफ़सील के साथ हवालजात की रौशनी में इस बात को साबित कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए और यज़ीदी खाइन मुअल्लिफ़ की बद-दियानती का पर्दा चाक फ़रमाइए। जलीलुल-क़द्र मुहद्दीस हज़रत अल्लामा इब्ने हज़र मक्की अलैहिर्रहमः सवाइके मुहर्रका में फ़रमाते हैं।

अगर वह लोग तदबीर के ज़रिए आपके और पानी के दरमियान हायल न हो जाते तो आप पर बिल्कुल काबू न पा सकते। क्योंकि आप ऐसे बहादुर सरदार हैं जो न अपनी जगह से हटाए जा सकते हैं और न हिलाए जा सकते हैं। जब आपको और आप के साथियों को तीन दिन तक पानी से रोके रखा गया तो आपसे बाज़ यज़ीदियों ने कहा : गोया कि पानी आसमान के बीच में है। उससे एक क़तरा भी न चखोगे, यहां तक कि प्यासे ही मर जाओगे।

(अरसवाइकुल मुहर्रका सफ़ा २६६)

ऐ इब्न-यज़ीद! यह है एक मुहद्दीस की रिवायत जो ऊपर तहरीर की

गई। अब मत कहना कि हज़रत इमाम हुसैन और आपके साथियों पर पानी बंद करने की फ़र्जी रिवायतें शहादत-नागों में गढ़ ली गई हैं। अगर उसके बावजूद तुम्हारा इन्तिकाम और दुशमनिए इमाम हुसैन कम नहीं हुई तो लीजिए चन्द और मज़ीद हवाले जो तारीखे इस्लाम के सफ़हात पर रोज़े रौशन की तरह बिल्कुल अयां और साफ़ नज़र आ रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए —

मशहूर मुअरिख़ हज़रत अल्लामा इब्ने असीर 'तारीखे कामिल' में फ़रमाते हैं कि तुम हुसैन और उनके साथियों से यज़ीद की बैअत लो और अगर वह बैअत कर लें तो फिर देखा जाएगा कि क्या करें ? और हुसैन और उनके साथियों पर पानी भी बन्द कर दो। चुनांचे अमरू बिन साद ने अमरू बिन हज्जाज की हमराही में पांच सौ सवारों को नहरे फुरात पर मुतय्यन कर दिया। चुनांचे यह लोग फुरात और इमाम हुसैन के दरम्यान हाइल हो गए। और यह वाकिआ इमाम की शहादत से तीन रोज़ पहले का है। यानी सात मुहर्रम को पानी बन्द किया गया। (तारीखे कामिल सफ़ा ५३)

रईसुल-मुअरिख़ीन अल्लामा अब्दुरहमान इब्ने-ख़लदून फ़रमाते हैं कि इब्ने-ज्याद ने लिखा कि हुसैन से यज़ीद की बैअत लो। अगर वह बैअत कर लें तो जो मुनासिब होगा, किया जाएगा। अगर इन्कारे बैअत करें तो बेतअम्मुल जंग करो और उन पर और उनके हमराहियों पर पानी बन्द कर दो। पस उमरू बिन साद उमरू बिन हज्जाज को बसर गिरोही पांच सौ सवारों के नहरे फुरात पर मुतय्यन किया। चुनांचे यह लोग फुरात और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के दरम्यान हाइल हो गए। यह वाकिआ आप की शहादत से तीन रोज़ कबल का है।

(तारीखे इब्ने ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा १०२)

अल्लामा इब्ने ज़रीर तबरी फ़रमाते हैं कि इब्ने-ज्याद ने उमरू बिन साद को ख़त लिखा कि नहरे फुरात और हुसैन के दरम्यान हाइल हो जा। और एक बूंद पानी भी वह पी न सकें। जो सुलूक कि तकी ज़की मज़लूम अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ किया गया था। उस ख़त को देखकर उमरू बिन साद ने फौरन उमरू बिन हज्जाज को पांच सौ सवारों का सरदार करके ख़ाना किया। यह लोग नहर पर जाकर ठहरे। नहरे फुरात और इमाम हुसैन और आपके असहाब

के दरम्यान हाइल हो गए कि वह बूंद गर पानी इससे न पीने पायें। यह वाकिआ आपके कत्ल से तीन दिन पहले का है। आपके सामने अब्दुल्लाह इब्न-हुसैन आया और पुकार कर कहा : ऐ हुसैन! (रज़ियल्लाहु अन्हु) ज़रा पानी की तरफ़ देखो कैसा आसमानी रंग उसका भला मालूम होता है। वल्लाह! तुम प्यासे मर जाओगे। एक कतरा भी तुमको न मिलेगा।

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३८ मतबा इदारतुत्तबलीगे दीन, देवबन्द)

हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की सीरत व शहादत का सबसे मुस्तनद तज़क़िरा यह जुमला इस अरबी किताब के लिए लिखा हुआ है जिस का नाम "अल-हुसैन" है। इस किताब के मुअल्लिफ़ जनाब अबुन्नसर लेबनान के एक नामवर फ़ाज़िल हैं। अपनी किताब को मुस्तनद बनाने के लिए आप लिखते हैं कि मैंने इस अम्र की पूरी कोशिश की है कि वही वाकिआत दर्ज करूं जिनकी ताईद सिफ़ा मुवर्रिख़ीन और मशहूर व मारुफ़ मुअल्लिफ़ीन ने की है। इसी 'अल-हुसैन' नामी किताब में तहरीर है कि उमरु बिन साद ने ७ मुहर्रम को पांच सौ सवार दरियाए फ़ुरात पर भेज दिए और उन्हें ताकीद कर दी कि हज़रत हुसैन और उनके साथियों तक पानी का एक कतरा भी न पहुंचने पाए। (अल-हुसैन सफ़ा ११६)

कारिईने किराम! अब हम आपके सामने एक ऐसी किताब का हवाला दर्ज करने जा रहे हैं जो इब्न-यज़ीद जुहूर अहमद औरंगाबादी का हमअकीदा यानी नदवी, देवबन्दी है जिनका न है मौलाना शाह मुईनुद्दीन नदवी यह अपनी किताब 'सियरुस्सहाबा' जिल्द शशुम में तहरीर करते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और आपके साथियों पर यज़ीदियों ने सात (७) मुहर्रम से पानी रोक दिया।

(सियरुस्सहाबा जिल्द ६ सफ़ा १४६)

मुहतरम कारिईन ! इमाम आली मक़ाम और आपके तमाम साथियों पर सात (७) मुहर्रम ता दस (१०) मुहर्रम पानी बन्द किए जाने की रिवायत को हमने मुहदिस जलील अल्लामा इब्न-हज़र अस्क़लानी और मोतबर व मुस्तनद मुअर्रिख़ीन के हवाले से नक़ल कर दी है जिसे हर मक़तबए फ़िक्र के उलमा तसलीम करते हैं। इसके बावजूद यह लिखना की इमाम पर पानी बन्द करने की रिवायत बिल्कुल ग़लत है। यह कितनी बड़ी जिहालत, हठधर्मी और यज़ीद नवाज़ी है। क्या मैदाने महशर में जब साकिए कौसर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने उन तमाम यजीदियों को पेश किया जाएगा जिन्होंने आपके लाडले नवासे पर तीन रोज तक लगातार पानी बन्द किया था तो उस वक्त रसूलें करीम के इस्तिफ़सार पर उनके पास क्या जवाब होगा? अब अगर सच्चे दिल से तौबा करके अपनी मनगढ़त तहरीरों से रुजू कर लें तो इन्शाअल्लाह तआला अल्लाह तआला जरूर माफ़ फ़रमा देगा। अल्लाह तआला अपने हबीब पाक साकिए कौसर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल उन यजीद-नवाज़ों को अक्ले सलीम और सही इल्म अता फ़रमाए कि यह हमेशा-हमेशा के लिए हिमायते यजीद के अपने गंदे अकीदे से महफूज़ व मामून हो जाएं।

सवाल ५ क्या इमामे आली मक़ाम दस मुहर्रम् को करबलाए मुअल्ला पहुंचे ?

जवाब : यह बिल्कुल ग़लत और झूठ है कि हज़रत इमाम आली मक़ाम दस मुहर्रम् को करबला पहुंचे। बल्कि अगर तारीखी किताबों का बग़ौर मुताला किया जाए तो यह हकीक़त बिल्कुल अयां हो जाएगी कि इमाम आली मक़ाम दो (२) मुहर्रमुल हराम को करबला पहुंचे। जैसा कि तारीखे तबरी, इब्न-ख़लदून, इब्न-असीर और इब्न-कसीर—जैसे मोतबर व मुस्तनद मुअरिखीन की तारीखी किताबों से ज़ाहिर है।

लेकिन इब्न-यजीद जुहूर अहमद औरंगाबादी अपनी किताब में एक उनवान "क्या हुसैनी काफ़िला सात दिन करबला में ठहरा ?" कायम करके इस बात को बड़ी ही होशियारी और चालाकी से करबला की तारीखी हैसियत को ख़तम करने की एक मज़मूम कोशिश की है। और इन्तिहाई चालाकी से इस बात को पेश करने की सई की है कि क्या इमाम आली मक़ाम हज जैसा अहम फ़रीज़ा छोड़कर सिर्फ़ ख़िलाफ़त के लिए कूफ़ा चले गए ? तो हज़रत इमाम हुसैन जैसे जी-मरतबत शख्स से कैसे तवक्को की जा सकती है कि वह बग़ैर हज किए ही एक दिन कबल कूफ़ा रवाना हो गए होंगे? दूसरी बात यह कि कूफ़ा और मक्का की मसाफ़त को देखते हुए १० मुहर्रम् तक हुसैनी काफ़िले का इतना तवील फ़ासला दूर-दराज़ मनाज़िल और मराहिल को तय करके पहुंच जाना बिल्कुल लगव और ग़लत है। ('आओ मुहर्रम् की हकीक़त तलाश करें' सफ़ा ४२)

मुहतरम कारिर्इन! जुहूर अहमद औरंगाबादी ने यह कोई नई तहकीक़

और एतराज पेश नहीं किया है कि हजरत इमाम रजियल्लाहु अन्हु हज किए बगैर ही मक्का मुकर्रमा से रवाना हो गए। बल्कि यह महमूद अब्बासी जैसे दुशमने रसूल व अहल-बैत अतहार की जेहनी इखतिरा है जिसे उसने किताब 'खिलाफते मुआविया व यजीद' में पेश किया था। जुहूर अहमद ने इसी किताब से चोरी करके अपने नाम से शाए कर दिया।

बिला शुब्हः अवाम जज्बात से मगलूब होकर यह बात बड़ी आसानी से तसलीम कर लेंगे कि ऐय्यामे हज के बिल्कुल करीब ही इमाम हुसैन बगैर हज किए रवाना हो गए तो आखिर इतनी जल्दी क्या थी ? मगर अहले इल्म उस बात को खूब अच्छी तरह जानते और समझते हैं कि फर्ज की अहमीयत नफ़ल की बनिसबत ज़्यादा होती है। इमाम आली मक़ाम इससे पहले २५ हज कर चुके थे।

(‘सियरुरस्सहाबा’ मुईनुद्दीन नदवी जिल्द ६ सफ़ा १६१)

इसलिए हजरत इमाम के लिए यह हज नफ़ल हो रहा था। दूसरी तरफ़ अहले कूफ़ा का इसरार शदीद और यजीद के फिस्क व फुजूर से जल्द-अज़-जल्द नजात के लिए हजरत इमाम की पूरी-पूरी इमदाद व तआवुन की यकीन दहानी — यह सब बातें ऐसी थीं कि हजरत इमाम के लिए यह लाज़िम बल्कि वाजिब हो गया था कि मख़्लूक़े खुदा को एक ज़ालिम व जाबिर के जुल्म व इस्तबदाद से छुड़ाएं। अगर हजरत इमाम ऐसा न करते तो इन्दल्लाह माखूज़ होते।

किसी तारीख़ी बात के लिए यह कहना कि ऐसा हुआ होगा। ऐसा होना चाहिए। यह तहकीक़ नहीं है और न ही तारीख़ दानी है बल्कि तारीख़ गढ़ना है। और जुहूर अहमद औरंगाबादी ने किसी मोतबर व मुस्तनद तारीख़ से यह बात साबित भी नहीं कि इमाम आली मक़ाम हज से फ़ारिग़ हो कर मक्का मुकर्रमा छोड़ कर रवाना हुए। इसके बरख़िलाफ़ यह मोतबर रिवायत है कि इमाम आली मक़ाम ३ या ८ ज़िल-हिज्जा को मक्का मुकर्रमा से रवाना हुए।

बिलफ़र्ज अगर जुहूर अहमद की इस मन्तिक़ को मान लिया जाए कि इमाम हुसैन दस (१०) ज़िलहिज्जा को हज करके रवाना हुए तो फिर दूसरे दिन ग्यारह बारह ज़िलहिज्जा को कंकरियां मारना हज के वाजिबात में से है, अगरचे हज नफ़ल हो, ग्यारह बारह की रमी वाजिब है। इमाम आली

मक़ाम अगर हज करते तो सिर्फ़ नफ़ल का तर्क लाज़िम आता। और हज शुरू कर के ग्यारह—बारह की रमी छोड़ने में तर्क वाजिब लाज़िम आएगा। यह कहां की अक़लमंदी है कि तर्क नफ़ल से बचने के लिए तर्क वाजिब के बाल में मुत्तला हों। लिहाज़ा आपकी जुगराफ़ियाई रीसर्च और मक्का से करबला तक की मसाफ़त तीस मन्ज़िलों तक होने वाली मन्तिक से इमाम आली मक़ाम को १२ ज़िलहिज्जा को मक्का से रवाना होकर १२ मुहर्रम को यानी हादसा करबला गुज़र जाने के २ रोज़ बाद करबला पहुंचना चाहिए था। चलिए छुट्टी हो गई कि हादसा करबला से इमाम हुसैन और आपके रुफ़का—ए—किराम का वुजूद ही ग़ायब हो गया। तो फिर करबला में किसकी शहादत हुई और कब हुई? यह साबित करना पड़ेगा। क्या जुहूर अहमद आप बता सकते हैं?

कारिईने किराम! अब आइए हम खुद इमाम आली मक़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु ही से पूछ लें कि ऐ इब्न—रसूल! आपने हज से चन्द यौम पहले ही मक्का मुकर्रमा से क्यों कूच फ़रमा लिया और हज़ जैसे अहम फ़रीजे को छोड़ दिया। तारीख़ की अहम किताब जिसका हवाला जुहूर अहमद ने अपनी किताब में अकसर जगह दिया है उसमें यह सवाल और उसका जवाब दोनों मौजूद है। मुलाहिज़ा फ़रमाइए —

फ़रज़ूक़ शायर ने कहा — सन् ६० हिजरी में अपनी वालिदा को लेकर हज के लिए मक्का आया। हज का वक़्त करीब था। मैं हरम में दाख़िल हुआ तो क्या देखा कि एक काफ़िला हथियारों और सवारियों के साथ बाहर जा रहा था। मैंने लोगों से पूछा यह काफ़िला किसका है तो मुझे बताया गया कि हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु का। मैंने बढ़कर उनसे मुलाक़ात की और अर्ज किया : मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान! ऐ इब्न—रसूलुल्लाह! आप ने इतनी जल्दी क्यों फ़रमाई कि हज छोड़कर ही जा रहे हैं। आपने फ़रमाया : फ़रज़ूक़! मैं जल्दी न करता तो गिरफ़्तार कर लिया जाता।

(‘तारीख़े तबरी’ जिल्द ५ सफ़ा २१२)

एक दूसरी रिवायत इससे ज़्यादा वाज़ेह और साफ़ है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न—जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब हज़रत इमाम से मक्का ही में रहने की गुज़ारिश की तो आपने फ़रमाया : वल्लाहिल अज़ीम ! हरम में क़त्ल किए जाने से ज़्यादा बेहतर मेरे नज़दीक यह अम्र है कि मैं हरम से दूर मारा

जाऊं। अगरचे एक बालिशत दूर ही सही। खुदा की कसम! अगर मैं किसी कीड़े-मकोड़े की सुराख में भी छुपा रहूँ तो लोग मुझे उस में से भी खींच कर बाहर निकाल लेंगे और मुझसे अपनी गर्ज पूरी कर लेंगे। और वल्लाह! वह मेरे मामले में यूँ ही हुंदूदुल्लाह को पाश-पाश कर देंगे जैसे यहूद ने रोजे सनीचर किया था। ('तारीखे तबरी' जिल्द ५ सफ़ा २११)

मशहूर मुहद्दिस फकीहे मिल्लत अल्लामा इब्न-हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह सवाइके मुहर्रका में फरमाते हैं कि जब इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु मक्का से कूफ़ा रवाना होने की मुकम्मल तैयारी फरमा ली तो सहाबा किराम ने आपको बहुत रोका। उस पर आपने फरमाया कि हद्दसनी अबी इन्न लिमक्क त कबशा बिही युसतहिल्लु हुमतुहा फमा अहब्बु अन अकू न अ ना जालिकल कब्श। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा २६८)

"मेरे वालिद गिरामी ने मुझसे ब्यान फरमाया है कि मक्का में एक मेंढा है जिससे मक्का की हुमत पामाल होगी। मैं नहीं चाहता मैं वह मेंढा बनूँ।"

क्या मज़कूरा बाला तीनों रिवायतें चीख-चीख कर यह एलान नहीं कर रही हैं कि इमाम आली मक़ाम अपनी खुली आंखों से देख रहे थे कि मेरे खून की प्यासी तलवारें म्यान में तड़प रही हैं और मुझे हलाक करने वाली पूरी ताकतें मैदान में आ चुकी हैं। तो अगर मैं हरम में रहूँगा तो बहुत मुम्किन है कि हज के दौरान यज़ीदी मौका पाकर मुझे क़त्ल कर देंगे जिससे हरम काबा की बेहुरमती होगी। फिर यज़ीदी अज़मते इस्लाम को ख़त्म करने के लिए बिल्कुल आज़ाद हो जाएंगे। तो अज़मते इस्लाम और अपने नाना जान के मज़हब को बचाने के लिए इमाम हुसैन ने हज्जे नफ़ल को छोड़ कर एक अहम फरीज़ा को अदा फरमाया जिससे आज इस्लाम की अज़मत व शौकत बाकी है।

अलगर्ज ! जुहूर अहमद के इस मफ़रूजे में जो नक़शा पेश किया गया है इसमें कुछ भी दम-ख़म नहीं है। यह सिर्फ़ अवामुन्नास को बेवकूफ़ बनाने और अज़मते हुसैन को उनके दिलों से ख़त्म करने की एक सोची समझी स्कीम है। अल्लाह तआला अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल ग़दराने इस्लाम को नीस्त व नाबूद फरमाए और अज़मते अहले-बैत व सहाबा को बुलन्द-तर फरमाए। आमीन।

सवाल ६ : क्या इमाम आली मक़ाम और दीगर शोहदाए किराम को

शहीद करने के बाद उनके सरों को जुदा करना, फिर उन्हें नेजों पर चढ़ाना और उनकी तशहीर करना और उनकी लाशों पर घोड़े दौड़ा कर उनके रौंदना और उन सरों को इब्न-ज्याद और यजीद के पास रवाना करना यह तमाम बातें भी झूठ ग़लत और बे-बुनियाद हैं?

जवाब : नहीं, हरगिज़ नहीं ! यह सब झूठ और बे-बुनियाद नहीं बल्कि एक न मिटने वाली हकीकत और सच्चाई है कि इमाम आली मक़ाम और दीगर शोहदा को तीन दिन भूखा प्यासा रख कर शहीद किया गया। उसके बाद उनके सरों को जिस्म से जुदा किया गया। उसके बावजूद भी यजीदियों का ज़ब्रए इन्तिक़ाम ठंडा नहीं हुआ तो उनकी लाशों पर घोड़े दौड़ाए गए और जिस्में मुबारक को रेज़ा-रेज़ा करके उनके सरों को नेजों पर चढ़ाकर गली-गली, कूचा-कूचा उनकी तशहीर की गई। अल अयाज़ु बिल्लाह! इतना सब कुछ करने के बाद भी आज के यजीदी अपने गिरोह की सफ़ाई ब्यान करते हुए मज़कूरा बाला तमाम बातों को ग़लत और झूठ साबित करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं। चुनांचे नासबी जुहूर अहमद औरंगाबादी अपनी किताब में लिखता है कि -

“यह बात हर ख़ास व आम में मशहूर है कि हज़रत हुसैन और दूसरे मक़तूलीन अहले-बैत के सर उनकी लाशों से जुदा किए गए और उन्हें नेजों पर चढ़ाया गया। उसके बाद वह सर हज़रत यजीद के पास दमिशक़ रवाना किए गए और उन मक़तूलीन की लाशों को घोड़ों के ज़रिए कुचला गया और बेग़ोर व कफ़न रहने दिया गया। इन तमाम बातों के मुतअल्लिक़ भी हालात व शवाहिद बतलाते हैं कि यह रिवायतें भी और रिवायतों की तरह महज़ ग़लत और बे-बुनियाद और इफ़तरा पर मबनी हैं। जबकि न तो कोई बाक़ायदा जंग हुई और न मक़तूलों के सर जिस्म से जुदा हुए और न उनकी तशहीर की गई। इस सिलसिले में तमाम तवारीख़ ख़ामोश हैं।

(‘आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें’ सफ़ा ५०)

मुहतरम कारिर्इन! इब्ने यजीद जुहूर अहमद औरंगाबादी के फ़रेब और झूठ की इन्तिहा हो गई। दुश्मनिए हुसैन में क्या वह इस बात को भी भूल गए कि एक-न-एक दिन उन्हें मरना है और अल्लाह के हुज़ूर जवाबदेह होना है। उस वक़्त यह अपने झूठ और फ़रेब का क्या जवाब देंगे? ख़ैर! अब हम इन तमाम मज़कूरा बाला बातों की हकीकत और सच्चाई को

मुहद्दीसीने किराम व मुस्तनद मुअरिखीन व मुअल्लिफीन की किताबों से पेश कर रहे हैं -

मुहद्दीसे जलील इमाम अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिजी रहमतुल्लाह अलैहि 'तिर्मिजी शरीफ' बाब अब्बाबुल-मनाकिब में हजरत अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत फरमाते हैं कि का ल कुन्तु इन द इब्ने जियादिन फबजिय बिरासिल हुसैनु फ ज अ ल यजरिबु विकजीविन की अनफिही व यकूलु मा रऐतु मिसलु हा जा हसना। (तिर्मिजी जिल्द २ सफा ७३३, बुखारी जिल्द १ किताबुल-मनाकिब, सवाइके मुहरका सफा ३००) में इब्न-ज्याद के पास था कि हजरत इमाम हुसैन का सर लाया गया तो वह आपकी नाक में छड़ी मारने लगा और कहने लगा कि मैंने इस जैसा हसीन न देखा।

मजकूरा बाला हदीसे पाक जिसे इमाम बुखारी ने भी किताबुल-मनाकिब में तहरीर फरमाया है। इस हदीस पाक से यह बात बिल्कुल साफ और अयां हो जाती है कि हजरत इमाम हुसैन का सर जिस्म से जुदा किया गया। और उसके बाद करबला से कूफा तक उसकी तशहीर की गई। बादहू वह सर मुबारक इब्न-ज्याद के सामने पेश किया गया। इतनी वाजेह दलील मिलने के बाद भी अगर जुहूर अहमद न माने तो उसकी अक्ल पर मातम करना चाहिए।

उसके अलावा मशहूर मुहद्दीस और फकीह हजरत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह 'सवाइके मुहरका' में फरमाते हैं फखरु रासिहि यौम आशूरा आमिन अ ह दुं व सित्ती न व लम्मा व जअ्त बै न यदैया उबैदुल्लाह बिन-ज्याद (सवाइके मुहरका सफा २६६) पस इमाम आली मकाम को आशूरह सन् ६१ हिजरी के रोज शहीद करके आपका सर काट लिया और उसे उबैदुल्लाह इब्न-ज्याद के पास रखा गया। एक और जगह अल्लामा इब्ने हजर मक्की फरमाते हैं कि जब हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक उबैदुल्लाह इब्न-ज्याद के सामने पेश किया गया तो वहां हजरत जैद बिन अरकम रजियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे। जब उबैदुल्लाह इब्न-ज्याद ने आपके होंठ शरीफ को छड़ी मारी तो आपने फरमाया : ऐ उबैदुल्लाह! अपनी छड़ी को उठा लो। मैंने बहुत दफा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके दोनों होंठों के दरम्यान

बोसा देते देखा है। फिर उसके बाद आप रोने लगे। तो इब्ने ज़्याद ने कहा : अल्लाह तेरी आंखों को रुलाए! अगर तू बूढ़ा न होता तो तेरी इस बकवास पर मैं तुझे जरूर कत्ल कर डालता। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा ३००)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की मज़ीद फ़रमाते हैं कि कूफी जब सरे इमाम को लेकर कूफ़ा की तरफ़ रवाना हुए तो जहाँ कहीं पड़ाव करना होता तो सरे इमाम को नेजे पर रख देते थे। अल्फ़ाज़ यह हैं : कुल्लमा नज़लू मनज़िलन वज़ऊहु अला रमहिन। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा ३०२)

रईसुल-मुअर्रिख़ीन अल्लामा अब्दुर्रहमान बिन ख़लदून फ़रमाते हैं कि जब इमाम हुसैन सदमए ज़ख़्म से संभलने न पाए तो सनान बिन अनस ने सरे मुबारक को तन शरीफ़ से जुदा कर दिया। और यह वाकिआ १० मुहर्रम सन् ६१ हि० यौमे जुमा का है। बादहू अमरू बिन साद के हुक्म से दस सवारों ने आपकी लाश (जिस्मे मुबारक) को घोड़ों के सुमों से पामाल किया। और अमरू बिन साद ने अपने मकतूलों को जमा करके उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़न करके राहीए कूफ़ा हुआ। दूसरे दिन बनू-असद ग़ाज़िरया के लोग आए और उन्होंने इमाम हुसैन और उनके हमराहियों को दफ़न किया। इस इबारत से यह बात भी ज़ाहिर और वाज़ेह हो रही है कि अमरू बिन साद ने इमाम आली मक़ाम और आपके साथियों की नमाज़ जनाज़ा नहीं पढ़ी। और उनको वैसे ही रहने दिया। फिर दूसरे दिन कबीलए बनू-असद के लोगों ने आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़न किया। (इब्ने-ख़लदून जिल्द २ सफ़ा १२४/२५)

इस रिवायत से झूठे जुहूर अहमद को सबक़ हासिल करना चाहिए जो यह कहते हैं कि उमरू बिन साद ने इमाम और आपके साथियों की भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी। इब्ने-ख़लदून मज़ीद फ़रमाते हैं कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर नेज़ा पर रख कर कूफ़ा की तमाम गलियों और कूचों में तशहीर कराके अगले दिन मअ उनके हमराहियों के सरों के शाम की तरफ़ रवाना किया। (इब्ने-ख़लदून जिल्द २ सफ़ा १२७)

मशहूर मुअर्रिख़ अल्लामा तबरी जिनकी किताब के मुतअल्लिक कहा गया है कि इब्ने जरीर की तारीख़ 'तारीख़े तबरी' को एक ऐसा बुलन्द मक़ाम हासिल है जहाँ उसका कोई मसील नहीं। यही साहबे तबरी लिखते हैं : "इमाम आली मक़ाम मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को कत्ल हुए और सब

से पहले जो सर नेजा पर बुलन्द किया गया वह हुसैन रजियल्लाहु अन्हु का सर था। (तारीखे तबरी जिल्द ५ सफा २२०)

साहिबे तबरी ही लिखते हैं कि सनान बिन अनस नखई ने इमाम को बरछी मारी तो आप जमीन पर आ गए। तो उसने खौली से कहा कि सर काट ले। जब खौली से यह काम न हो सका तो खुद आगे बढ़ा और आपको ज़ब्ह करके आपका सर काटा। बादहू आपने जो लिबास जैबे तन फरमाया था, यज़ीदियों ने वह भी लूट लिया। और खेमा-ए-इमाम में घुसकर मुकद्दस ख्वातीन अहले-बैत के साथ गुस्ताखियां कीं। और तमाम सामान व असबाब लूट लिया। जब इब्न-साद को मालूम हुआ तो उसने हुक्म दिया कि तमाम असबाब वापस कर दिए जाएं। लेकिन किसी ने कोई चीज़ भी वापस न की।

चन्द सतरों बाद फिर फरमाते हैं कि इब्न-साद ने अपने साथ वालों में यह मुनादी करा दी कि कौन-कौन लोग अपने घोड़ों से हुसैन को पामाल करेंगे। यह सुन कर दस शख्स निकले। उनमें इस्हाक बिन हैवा हज़रमी भी था जिसने आपका कमीज़ उतार लिया था और आखिर मबरूस हो गया था। उन लोगों में अहबश बिन मरकद हज़रमी भी था। यह दसों सवार आए और अपने घोड़ों से हुसैन को पामाल किया इस तरह कि उनके सीने व पुश्त को चूर-चूर कर दिया। बादहू इब्न-साद ने अपने असहाब की नमाज़ पढ़ी और असहाबे हुसैन को वैसे ही छोड़ दिया। फिर दूसरे दिन बनी-असद के लोग आए और उन लोगों ने असहाबे हुसैन की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और उनको दफन किया।

चन्द सतरों के बाद लिखते हैं कि इब्न-साद कूफा खाना होने से पहले बकिया लाशों से सर को जुदा किया और शिमर वगैरह के साथ बहत्तर (७२) सर इब्न-ज्याद के पास खाना किया। जब यह तमाम सर इब्न-ज्याद के सामने पेश किए गए तो उसने सरे इमाम को छड़ी मारी।

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफा २७८ ता २८१ मतबूआ इदारा तबलीगे दीन, देवबन्द)

मशहूर मुस्तनद व मोतमद मुअर्रिखं कामिल इब्न-असीर फरमाते हैं —

इब्न-साद की आवाज़ गूंजती है कि हुसैन को घोड़ों से रौंदने के लिए कौन तैयार होता है ? तो यह सुन कर यज़ीदी फौज के दस सूरमा सामने आए और इमाम आली मक़ाम की नाशे मुबारक के पास पहुंच कर इमाम

हुसैन की नाश को रौंद डाला। और उनके सीना व पुश्त को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। (तारीखे कामिल जिल्द ४ सफा ८०)

मज़ीद फ़रमाते हैं कि जब इमाम क़त्ल कर दिए गए तो आप का सर और आपके असहाब के सरों को इब्न-ज़्याद के पास भेज दिया गया।

(तारीखे कामिल सफा ८०)

जब हज़रत इमाम आली मक़ाम का सर यज़ीद के सामने रखा गया तो वह खुश हुआ और इब्न-ज़्याद का मरतबा और उसकी इज़्ज़त यज़ीद के पास बढ़ गई। और इब्न-ज़्याद ने जो कुछ भी किया उससे यज़ीद खुश हो गया। लेकिन यह खुशी बहुत देर कायम नहीं रह सकी। यहां तक कि लोगों का खौफ़ व डर और लानत मलामत उसको पहुंच गई।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर मुहद्दिस अबीदुनिया से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत हुसैन का सर यज़ीद के सामने रखा गया तो उसके पास अबू-बुरज़ा असलमी (सहाबी) भी थे। और यज़ीद ने छड़ी से हज़रत हुसैन के मुंह पर छड़ी मारनी शुरू की तो अबू-बुरज़ा ने फ़रमाया कि अपनी छड़ी हटा। मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस जगह का बोसा लेते हुए देखा है। (अल-बिदाय: जिल्द ८ सफा १६२)

बताइए जुहूर अहमद! तारीख़ कहती है कि इमाम हुसैन का सर यज़ीद के सामने पेश किया गया और उसने आपके होंठ को छड़ी मारी। तो एक सहाबी की गवाही के सामने आपका झूठ क्या चल सकता है? हरगिज़ हरगिज़ नहीं।

मुहतरम कारिईन! हम आप के सामने देवबन्दी जमाअत के अहम उलमा के ब्यानात को पेश कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए —

मौलवी कारी तैयब साहब मुहत्तमिम दारुल-उलूम, देवबन्द अपनी तसनीफ़ "शहीदे करबला और यज़ीद" में तहरीर करते हैं कि —

"बहरहाल हज़रत हुसैन के सर को तश्त में इब्ने ज़्याद के सामने लाए जाने और इब्ने ज़्याद के उसकी बेहुरमती करने और अपने अन्दुरुनी खुब्स को नुमाया करने की यह तफ़सीलात जिनको मुहद्दिसीने किबार, बुख़ारी, बज़्ज़ार, तबरानी, इब्ने हज़र अस्कलानी वगैरह ने मुहद्दिसाना तरीक़े से पेश किया। अनस बिन मालिक और ज़ैद बिन अरकम जैसे जलीलुल-क़द्र सहाबा से रिवायत किया, तो क्या यह हज़रत हुसैन के सर को तन से जुदा

किए जाने के खुले-खुले दलाइल नहीं हैं ? उनके मुकाबले में क्या चन्द तारीखी टुकड़े और वह भी मुस्तशरिकीने यूरोप की इआनत से और उनसे अखज करदा इकतिबासात किसी भी वुकअत व अहमीयत देने के मुस्तहिक हैं ? अब जबकि हजरत हुसैन के पाक और मकबूल इन्दल्लाह सर को जिस्म से जुदा किए जाने का सुबूत मु त वातिर साबित होता है तो फिर यह क्यों मुम्किन नहीं कि यह सर यजीद के दरबार में भी पहुंचाया गया हो ?

आखिर इस वाकिआ की रिवायत से क्या वजह इन्कार की हो सकती है। (‘शहीदे करबला और यजीद’ सफा १३३)

फाजिले नदवा मुअल्लिफ ‘तारीखे इस्लाम’ मौलाना मुईनुद्दीन नदवी अपनी किताब सियरुस्सहाबा में लिखते हैं कि जब इमाम जख्मों से बिल्कुल निढाल हो गए तो शकीए अजली सनान बिन अनस ने उस सर को जो बोसा गाहे सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम था जिस्मे अतहर से जुदा कर लिया। १० मुहर्रमुल-हराम सन् ६१ हिजरी मुताबिक सितम्बर सन् ६८१ ई० में खानवादे नब्बी का आफताबे हिदायत हमेशा हमेशा के लिए रूपोश हो गया। इमाम को शहीद करने के बाद भी संगदिल और खूनी शामियों का जज्बए इनाद फरू न हुआ! शहादत के बाद वहशी शामियों ने उस जसदे अतहर को जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जसद का टुकड़ा फरमाया था, घोड़ों की टापों से पामाल किया। इस बहीमाना शकावत के बाद लुटेरे पर्दा नशीनाने अपफाफ के खेमों की तरफ बढ़े और अहले-बैत का कुल सामान लूट लिया और शोहदा के सर यजीद के पास भेज दिए गए। (सियरुस्सहाबा जिल्द ६ सफा १७२ ता १७४)

मुअरिखे इस्लाम मौलाना अकबर नजीबाबादी अपनी किताब ‘तारीखे इस्लाम’ में लिखे हैं कि शिमर या शिमर के हुक्म से किसी दूसरे ने हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु का सर जिस्म से जुदा किया और अपने घोड़ों की टापों से आप के जिस्मे मुबारक को खूब कुचलवाया। फिर खेमा को लूटा। हजरत हुसैन का सरे मुबारक और आपके अहले-बैत कूफा में इब्ने ज्यादा के पास भेजे गए। कूफा में उनको तशहीर किया गया। उसके बाद इमाम का सर एक तश्त में रख कर इब्ने ज्यादा के सामने पेश किया गया। उसने सर को देखकर गुस्ताखाना कलिमात कहेगागा तंगरह

(तारीखे इस्लाम किस्त ५ सफा १६२)

जमाअत इस्लामी के बानी अबुल-आला मौदूदी लिखते हैं : हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर काट कर करबला से कूफ़ा और कूफ़ा से दमिश्क ले जाया गया और उनकी लाश पर घोड़े दौड़ा कर उसे रौंदा गया। एक वरक के बाद लिखते हैं— कि सरे इमाम और तमाम शुहदाए करबला के सर काट कर कूफ़ा खाना किए गए और वरसरे आम नुमाइश की गई। (ख़िलाफ़त व मुलूकियत सफ़ा १६६ ता १६८)

मुहतरम कारिर्इन! हमने इन्तिहाई मुस्तनद व मोतमद उन्हीं किताबों से, जिनके हवाले जुहूर अहमद ने अपनी किताब में अकसर जगह दिए हैं, यह साबित कर दिया कि इमाम आली मक़ाम को शहीद करने के बाद आपका सरे मुबारक जुदा किया गया और फिर गली-गली, कूचा-कूचा उसकी तशहीर की गई। और इब्न-ज़्याद व यज़ीद के पास भेजे गए। अल्लाह! अल्लाह! मुसलमानों! गौर करो जिस पैगम्बरे इस्लाम ने अपनी उम्मत को दुश्मनों की नाश के मुसला करने से रोका था उसकी नाफ़रमान उम्मत उसी के नवासे को तीन दिन भूखा प्यासा रख कर ज़ब्त कर रही है और उसके सर को जिस्म से जुदा कर के जिस्मे अक़दस को घोड़ों की टाप से रौंद रही है। जिससे यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि मैदाने करबला में यज़ीदियों ने अपने किरदार से यह साबित कर दिया कि यह लोग मुसलमानों के रूप में नंगे इस्लाम हैं।

सवाल ७ : क्या मैदाने करबला में पहला हमला ख़ीमा-ए-हुसैन से किया गया?

जवाब :- नहीं, बिल्कुल नहीं! यह सरासर झूठ, बुहतान और इफ़तरा बाज़ी है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु या आपके किसी साथी ने यज़ीदियों पर हमला करने में पहल की हो। तारीखे इस्लाम का मुताला करने के बाद यह बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है। बल्कि तारीखी किताबों में तो यह मिलता है कि जब नैनवा के मक़ाम पर इमाम हुसैन को बहुक्मे इब्न-ज़्याद ऐसे मैदान में उतारने का हुक्म दिया गया जहां पानी न हो तो इमाम के चन्द फ़िदाइयों ने अर्ज किया : ऐ इब्ने रसूलुल्लाह! आगे जो लश्कर आने वाले हैं वह इनसे बहुत ज़ायद हैं हमें इज़्ज दीजिए कि इनसे लड़ें। फ़रमाया : मा कुन त ला बदाहुम बिल-किताल में उनसे किताल की पहल करने वाला नहीं हूं। (रिसालतुल-महज्जतुल मुतमिनह सफ़ा २०८)

इसके बावजूद नासबी, फ़र्जन्दे यज़ीद जुहूर अहमद औरंगाबादी अपनी रुसवाए ज़माना किताब में लिखता है कि —

इब्न-साद व हुसैन में सुलह हो गई। जो हथियार इमाम के पास थे, उसे नुमाइन्दगाने हुकूमत जमा करने आए तो विरादराने मुस्लिम, जो पहले से मुशतइल थे उस फौजी दरता के सिपाहियों पर अचानक हमला कर दिया। अमरु बिन साद ने कोई जारिहाना अक़दाम मुतलक नहीं किया। उनके फौजी मुदाफिआना पहलू इख्तियार किए हुए थे।

(आओ मुहर्रम.....सफ़ा ४९)

नासबी जुहूर अहमद औरंगाबादी मजकूरा बाला इबारत पेश करके इस बात का तअस्सुर देने की नाकाम कोशिश कर रहा है कि अव्वल हमला यज़ीद ने नहीं बल्कि इमाम हुसैन के साथियों ने किया। लानतुल्लाहि अललकाज़िबीन! जबकि हकीकत उसके बरअक्स है। आइए हम आपके सामने अपनी इस बात की ताईद में मुस्तनद मुअरिखीन और मुसन्निफ़ीन के हवाले से पेश कर रहे हैं। मुलाहिजा फ़रमाइए —

रईसुल-मुअरिखीन अल्लामा अब्दुर्रहमान इब्न-ख़लदून फ़रमाते हैं:— अमरु बिन साद आगे बढ़ा। कमान से तीर जोड़ कर इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मार कर बोला। लोगो! गवाह रहना सब से पहले मैं ने ही तीर चालाया है। (तारीखे इब्न-ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ११२)

मशहूर व मारुफ़ मुअरिख़ अबू-जाफ़र इब्न-जरीर तबरी फ़रमाते हैं कि अमरु बिन साद लड़ने को निकला। पुकार कर कहा : ऐ जुवैद! निशान को बढ़ा। उसके बाद इब्न-साद ने कमान में तीर जोड़ा और सर किया कहने लगा : तुम सब गवाह रहो सब से पहले मैं ने ही तीर मारा।

(अल-हुसैन सफ़ा १३५ तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २५६)

साहिबे तबरी एक और जगह लिखते हैं कि जब हुर् हज़रत इमाम आली मक़ाम और आपके साथियों को ऐसी जगह पर उतरने पर मजबूर कर रहा था कि जहां पानी न था और न बस्ती। तो असहाबे हुसैन ने कहा: हमें नैनवा या गाज़िरीया में उतर जाने दो। लेकिन हुर् ने जब ऐसा करने से भी इन्कार कर दिया तो असहाबे हुसैन ने बारगाहे हुसैनी में हुर् और उनके साथियों से लड़ लेने की दरख्वास्त पेश की तो उस वक़्त भी आप ने यही फ़रमाया : मैं जंग में इब्तिदा नहीं करूंगा।

(अल-हुसैन सफ़ा ११६ तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३५)

मुअरिखे इस्लाम मौलाना अकबर नजीबाबादी लिखते हैं कि शिमर ज़िल जोशन ने उमरु बिन साद से कहा : अब देर क्यों कर रहे हो? अमरु बिन साद ने फौरन एक तीर से कमान जोड़ कर हुसैन अलैहिस्सलाम के

लशकर की तरफ फेंका और कहा कि तुम गवाह रहना कि सबसे पहला तीर मैं ने चलाया है। ('तारीखे इस्लाम' किस्त ५ सफा १६१)

फाजिले नदवा मौलाना मुईनुद्दीन नदवी तहरीर करते हैं कि इब्न-साद अलम लेकर बढा और पहला तीर चला कर एलाने जंग कर दिया।

(सियरुस्सहाबा जिल्द ६ सफा १५८)

मुहतरम कारिईन! यह चन्द हवाले, जिसे हमने इन्तिहाई मुस्तनद व मोतमद व मोतबर उन ही मुअरिखीन व मुसन्निफीन के हवालों से लिखा है जिन पर जुहूर अहमद औरंगाबादी को पूरा-पूरा एतमाद व भरोसा है। अब आप गौर फरमाए कि जुहूर अहमद उमरु बिन साद की तारीफ व तौसीफ में अपनी किताब के सफहात के सफहात सियाह कर दिए हैं। और तारीख उसके क्या करतूत बता रही है? करबला की जंग का आगाज भी उमरु बिन साद कर रहा है और वह भी गवाह बनाकर। क्या ऐसा शख्स जो नवासए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तीरों की बारिश करे, और इमाम आली मकाम के जिस्मे अकदस को घोड़ों के टाप से रौंद डाले, वह शख्स इस काबिल है कि इसकी तारीफ व तौसीफ की जाए? यजीद-नवाजी में क्या तुमको अपने ईमान की भी फिक्र नहीं है? अल्लाह तआला कामिल समझ और अकमल मुहब्बत अता फरमाए! आमीन।

सवाल ८:- क्या यजीद ने हजरत इमाम हुसैन के कत्ल का हुक्म नहीं दिया था और क्या वह इसके काम से राजी नहीं था?

जवाब:- यह कहना बिल्कुल गलत और झूठ है कि यजीद ने इमाम हुसैन के कत्ल का हुक्म नहीं दिया था और न वह उससे राजी था। बल्कि सब कुछ उसके हुक्म और उसकी रजा से हुआ। लेकिन फिर भी जुहूर अहमद औरंगाबादी और उसका यजीदी भाई निसार औरंगाबादी अपने लाडले यजीद की वकालत करते हुए लिखता है कि:

“जहां तक हजरत हुसैन के वाकिआ का तअल्लुक है सो इस बारे में कोई सही सुबूत मौजूद नहीं कि उनका कातिल इब्न-मुआविया ही है और न ही यह सुबूत मिलता है कि यह सानेहा उनके हुक्म पर पेश आया और न ही उसपर उनकी रजामन्दी के दलाइल मिलते हैं।”

(‘आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें’ सफा १)

मुहतरम हजरात! मजकूर बाला इबारत से अवामुन्नास को यह धोखा देने की नापाक कोशिश की जा रही है कि यजीद इन्तिहाई शरीफ और नेक तबीयत का मालिक था वह इमाम हुसैन को कत्ल करने या उनके

शहीद होने पर कभी भी खुश नहीं हुआ। और यह सब कुछ इब्न-ज्याद की जानिब से हुआ। हालांकि ऐसा नहीं है। आइए, हम चन्द मोतबर व मुस्तनद मुअरिखीन व मुसन्निफीन की किताबों से यह साबित करते हैं कि इमाम हुसैन को शहीद करने या उसका हुक्म देने में यजीद शामिल था और उससे खुश भी हुआ था। चुनांचे अल्लामा सअदुद्दीन तफताजानी रहमतुल्लाह अलैह 'शरह अकाइद' में फरमाते हैं। वल हक्कु इन्न रजा यजीदु बिकतलिल हुसैने व इस्तबशारहू व इहानतु अहले बैतिन्नबीय अलैहिस्सलामु मिम्मा तवातुर मअ्नाहू व इन का न तफासीलहू अहादा (शरह अकाइदे निस्फी सफा १६२)

और हक यह है कि यजीद का हजरत हुसैन के कत्ल पर राजी और खुश होना और अहले-बैते नुबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इहानत करना -- उन उमूर में से है जो तवातुरे मानवी के साथ साबित हैं अगरचे उनकी तफासील अहाद हैं।

हजरत अल्लामा शैख अब्दुल-हक मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः फरमाते हैं। और बाज यह कहते हैं कि यजीद ने इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु को कत्ल का हुक्म नहीं दिया था और न ही वह शहादते हुसैन पर रजामन्द था। हजरत हुसैन और अहले-बैत रजियल्लाहु अन्हुम की शहादत से वह कभी खुश और मसरूर नहीं हुआ। हमारे नजदीक यह बात मरदूद और बातिल है। क्योंकि उस शकी का अहले-बैत नुबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अदावत रखना और उनके कत्ल से खुश होना और उनकी इहानत करना मानवी तौर पर दरजए तवातुर को पहुंच चुका है। उसका इंकार तकल्लुफ व मकाबिरा यानी ख्वाह-मख्वाह का झगडा है।

(तकमीलुल-ईमान सफा २६२)

तारीखे कामिल में है कि हजरत सैयदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा ने भी यजीद को कातिले हुसैन करार दिया।

(तारीखे कामिल जिल्द ८ सफा १२८)

कारिईने किराम! हजरत अल्लामा तफताजानी साहब और हजरत मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः जैसे मुहक्किक बुजुर्गों के फैसले के बाद अगरचे मजीद किसी हवाले की जरूरत नहीं रहती। लेकिन हम खुद यजीद के दस्ते रास्त और करबला की मुहिम के लिए मुकरर करदा अमीरे कूफा इब्न-ज्याद बद-निहाद की गवाही पेश करते हैं।

यजीद की मौत के बाद इब्न-ज्याद ने अपने रफीके खास के साथ शाम

का सफ़र किया तो रास्ते में अपनी सवारी पर किसी गहरी सोच में था कि उसके रफ़ीके सफ़र मुसाफ़िर बिन शुरैह ने कहा : क्या आप बहुत गहरी सोच में मुत्तला होकर कोई खास बात सोच रहे हैं ? क्या मैं खुद बताऊं कि आप क्या सोच रहे हैं ? इब्न-ज़्याद ने कहा बताओ : रफ़ीके सफ़र ने कहा कुन्त तकूल लैतनी कुन्तु लम अक़तल हुसैनन। आप अपने दिल में कह रहे हैं कि ऐ काश! मैं ने इमाम हुसैन को क़त्ल न किया होता। इब्न-ज़्याद ने कहा : अम्मा क़तलिल हुसैनु फ़इन्नहु अशारा इला यज़ीदु बिक़तलिही और क़तली फ़ख़तरतु क़तलह जहां तक मेरे इमाम हुसैन को क़त्ल करने का तअल्लुक है तो वह इसलिए था कि यज़ीद ने मुझे हुक्म दिया था कि मैं उनको क़त्ल करूं वरना वह मुझे क़त्ल कर देगा। तो मैं ने उनके क़त्ल को इख़तियार किया। (इब्न-असीर जिल्द ४ सफ़ा १४०)

और सुनिए! इमाम आली मक़ाम की शहादत के बाद मदीना मनव्वरह और मक्का मुकर्रमा में यज़ीद के ख़िलाफ़ बगावत आम हो गई —

(कामिल इब्ने असीर जिल्द ४ सफ़ा १११)

यज़ीद ने उबैदुल्लाह इब्न-ज़्याद को मदीना पर चढ़ाई करने और मक्का मुकर्रमा में उबैदुल्लाह इब्न-जुबैर का मुहासरा करने का पैग़ाम भेजा तो उसने कहा : खुदा की क़सम! मैं इस फ़ासिक (यज़ीद) के लिए इब्ने रसूलुल्लाह का क़त्ल (जो पहले कर चुका हूं) और काबा में लड़ाई, दोनों को अपने लिए जमा नहीं करूंगा, तो उसने माज़रत कर दी।

अल्लामा इब्न-कसीर फ़रमाते हैं लम्मा क़ त ल इब्ने ज़्यादिल हुसैन व मम मअहू बअ् स बिरुऊसिहिम इला यज़ी द फ़सर् अ बिक़तलिही अव्वलन व हसनत बिज़ालि क मन्ज़िलतुहू इब्ने ज़्याद इन्दहू सुम्म लम यलबसु इल्ला क़लीला हत्ता नदि म

(अल-बिदाय: वन्निहाय: जिल्द ८ सफ़ा २३२)

जब इब्न-ज़्याद ने हज़रत इमाम हुसैन और उनके साथियों को शहीद कर दिया और उनके मक़तूल सरो को यज़ीद के पास भेजा तो यज़ीद इमाम के क़त्ल से अव्वलन खुश हुआ और उसकी वजह से इब्न-ज़्याद की क़द्र व मन्ज़िलत उसके नज़दीक ज़्यादा हो गई मगर वह इस खुशी पर ज़्यादा देर कायम न रहा हत्ता कि फिर नादिम हुआ।

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहम: फ़रमाते हैं : जब हज़रत हुसैन अपने तमाम साथियों के साथ शहीद हो चुके तो इब्न-ज़्याद ने उन तमाम शुहदा के सरो को यज़ीद के पास दारुस्सलतनत में भेज दिया।

यज़ीद तो पहले तो उन सरहाए बुरीदा को देखकर बहुत खुश हुआ। मगर जब आम्मतुल-मुसलिमीन उसके इस फ़ेल पर उससे नाराज़ हुए और मलामत की तो उसको भी अफ़सोस हुआ और अपने फ़ेल पर नदामत हुई।

(तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०५)

इन रिवायतों से बिल्कुल साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि यज़ीद अव्वलन तो इमाम के क़त्ल से खुश हुआ मगर जब बाद में अपनी ज़िल्लत और रुसवाई का अन्देशा हुआ तो नादिम हो गया। और यह नदामत इमाम के क़त्ल पर न थी बल्कि अपनी रुसवाई पर थी। अल्लामा इब्न-कसीर ने उसके जो अल्फ़ाज़ नक़ल किए हैं, वह यह हैं: फ़अबग़ज़नी बिक़त्लिहि इलल मुसलिमीन वज़रुअ ली फ़ी कुलूबिहिमुल अदावतु फ़अबग़ज़निल बर्रो वल फ़ाजिरु बिमा इस्ताज़मुन्नासु मिन क़त्ली हुसैनन माली वलिईब्ने मरजानतु

(अल-बिदायतिन्नहाया : जिल्द ८ सफ़ा २३२)

उसने हुसैन को क़त्ल करके मुझे मुसलमानों की नज़र में दुश्मन बना दिया। और उनके दिलों में मेरे ख़िलाफ़ नफ़रत व इशतिआल का बीज बो दिया। अब मुझे हर नेक व बद अपने तई मबगूज़ समझेगा क्योंकि आम लोगों की नज़रों में मेरा हुसैन को क़त्ल करना बहुत बड़ी शकावत है। सद हैफ़! मेरे और इब्न-मरजाना (इब्न-ज़्याद) के हाल पर!

इन्साफ़ कीजिए! यज़ीद के इस औसाफ़ व सरीह ऐतराफ़ के बाद भी उसकी बरीयत व सफ़ाई में किसी किस्म की कोई गुंजाइश बाकी रह जाती है? उसके बावजूद यह कहना कि यज़ीद क़त्ले हुसैन से राजी न था, खुद यज़ीद की मन्शा के ख़िलाफ़ है। नीज़ अगर यह मान लिया जाए कि यज़ीद को क़त्ले हुसैन पर ग़म था तो उसने अपने मुक़र्रर कर्दा कमाण्डर इब्न-ज़्याद को माज़ूल क्यों नहीं किया? तो मानना पड़ेगा कि यह ग़म और इब्न-ज़्याद पर लानत सिर्फ़ मसलहते वक़्त या अन्देशा-ए-मलामत की वजह से थी। मगर क़त्ले हुसैन पर रज़ा बहरहाल क़ल्बी थी।

सवाल ६: क्या यज़ीद जंगे कुस्तुनतुनिया के अव्वल हमले में शरीक नहीं था? और क्या वह जन्मती है?

जवाब : यज़ीद जंगे कुस्तुनतुनिया के अव्वल हमले में शरीक नहीं था। जब वह उसमें शरीक ही नहीं था तो फिर जन्मती होने का सवाल ही क्या पैदा होता है? लेकिन कुछ नाम व निहाद मुहक्किनीन ऐसे भी आप को मिल जाएंगे जो यज़ीद को उस ग़ज़वे में शामिल करने के लिए ऐड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं। उनही में से एक बद-निहाद, ख़ाइन जुहूर अहमद

औरंगाबादी है जो अपने पेशवा को गजबए कुस्तुनतुनिया में शरीक करवा के उसे जन्नती बनाने की नाकाम कोशिश में लगा हुआ है। चुनांचे उसने अपनी किताब में लिखा है —

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लल्लम ने हज़रत यज़ीद के लिए मग़फ़िरत की बशारत दी है। जिसका ज़िक्र हदीस में यूँ आता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरी उम्मत की पहली फ़ौज जो कैसर के शहर (कुस्तुनतुनिया) पर जिहाद करेगी उनके लिए मग़फ़िरत है। शारेह बुख़ारी अल्लामा किस्तलानी ने मदीनए कैसर की तशरीह की है कि उससे मुराद रोमी नसरानियत का सद्र मुक़ाम कुस्तुनतुनिया है। फिर इस हदीस के हाशिया पर लिखा है कि मदीना—ए—कैसर (कुस्तुनतुनिया) पर सब से अव्वल जिहाद यज़ीद बिन मुआविया ने किया था और उनके साथ एक कसीर जमाअत सादात की शरीक थी। (सही बुख़ारी जिल्द १ हाशिया ४१०)

(आओ मुहर्रम की हकीकत तलाश करें। सफ़ा ५५)

मुहतरम कारिर्न! मजकूरा बाला इबारत जिस में बुख़ारी शरीफ़ का हवाला दिया गया है यह एक बहुत बड़ो फरेब और धोखादही है। जिस किताब का हवाला दिया गया है उसकी मुकम्मल इबारत को पेश नहीं किया गया बल्कि अधूरी और अपने मतलब की इबारत को पेश करके अवामुन्नास को अंधेरे में रख कर उनके इमान व अकीदे के साथ मजाक किया जा रहा है। आइए हम बुख़ारी शरीफ़ की असल इबारत पेश कर रहे हैं —

मुलाहज़ा फरमाइए। बुख़ारी शरीफ़ की असल इबारत यह है। अव्वलु जैशु मिन उम्मती यग़ौजूना मदीन त कै स र मग़फ़ूरुहुम।

(बुख़ारी शरीफ़ १ सफ़ा ४१०)

मेरी उम्मत का पहला लशकर जो कैसर के शहर में जंग करेगा उनके लिए मग़फ़िरत है। इसका जवाब अल्लामा अलहाज मुबीनुद्दीन साहब अमरोहवी अलैहिर्रम ने इन्तिहाई मुहक़िकाना और फैसला—कुन दिया है। हम उसकी रौशनी में इस बहस का जवाब नाजिरीन की खिदमत में पेश कर रहे हैं।

इस हदीस पाक में बुनियादी तौर पर दो बातें ग़ौर तलब हैं। पहली बात तो यह है कि हदीस में कुस्तुनतुनिया का नाम नहीं है। मदीना—ए—कैसर है यानी कैसर का शहर। मदीना—ए—कैसर का तर्जुमा या मतलब किसी भी लुगत में कुस्तुनतुनिया नहीं है। फिर मुहद्दीसीन ने इससे कुस्तुनतुनिया कैसे मुराद लिया या यह लायन्हल्ल मुअम्मा है। कैसर की सल्तनत में कोई

भी शहर मदीना-ए-कैसर हो सकता है ? दूसरी बात यह है कि कैसर के शहर पर हमला कब हुआ? तो तारीख व सियर का मुताला करने के बाद यह बात बिल्कुल साफ और वाजिह हो जाती है कि कैसर के शहर पर हमला हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में हुआ। उसके बाद हजरत सैयदना उमर फारुक रजियल्लाहु अन्हु के दौरे खिलाफत में हुआ। फिर हजरत खालिद बिन वलीद के साहबजादे हजरत अब्दुर्रहमान की सरकारदगी में हुआ। (अलबिदाय: वन्निहाय: जिल्द ७ सफा १५६)

अब आइए हम जुहूर अहमद की इस नातमाम इबारत की तरफ आप की तवज्जह मबजूल कराएं जिसको उस ने यजीद की मगफिरत के लिए बतौरे दलील पेश किया है। असल इबारत यह है: कद अजबु ऐ फअलू फेलन लहुम बिहिल जन्नत कौलुहू कैसर-ए-मलिकरूम कालल कुस्तलानी काना अव्वलु मन गजा मदीनत कैसरु यजीदु बिन मुआवियता व जमाअतुहू मि सादातिस्सहाबते कइब्ने उमर इब्ने अब्बास व इबनिज्जुबैरे व अबी अय्यूबुल अन्सारी व तुवमिफ बिहा अबू अयूबु सनतिन इसनैने व खमसीना मिनल हिजरते इन्तहा। कजा कालहू फिल खैरिल बारी व फिल फतहे कालल मुहलबु फी हाज हदीसु मन्किबतु लिमुआवियता लिअन्नहु अव्वलु मन गजल बहरा व मुन्किबतु लिवलदिही लिअन्नहु अव्वलु मन गजा मदीनता कैसरु व तअकबहु इबनित्तीने व इबनिल मुनीरु बिमा हासिलहु इन्नहू ला यलजिमु मिन दुखुलिही फी जालिकल उमूमु अल्ला यखरुजू बिदलीलिन खासि इज ला यख्तलिफु अहलुल इल्मे इन्नकौलु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मगफूरु लहुम मशरूतु बिअन्ना यकूनु मिन अहलिल मगफिरते हत्ता लौ इरतदा अहदुन मिम्मन गजाहा बाद जालिका लम यदखुलु फी जालिकल उमूमु इत्तिफाकन फदल्ला अला इन्नल मुरादु मगफूरु लिमन व जद्दा मशरूतुल मगफिरते फीहे मिन्हुम — (बुखारी जिल्द १ हाशिया सफा ४९०)

मजकूरा बाला इबारत में 'व तअकबहु इबनित्तीने व इबनिल मुनीर' पर गौर फरमाया जाए कि जब मोहलिब ने इस से यजीद की मन्कबत मुराद लिया तो उन्हीं हजरत ने उसका तआकुब किया। दूसरी बात यह कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कौल मशरूत है कि जो लोग गजवा-ए-अव्वल में शरीक हुए हों वह मगफिरत के अहल भी हों। अब अगर कोई उनमें मुरतद हो जाता है तो फिर वह उस बशारत से खारिज हो जाएगा। अब सवाल पैदा होता है कि क्या यजीद में इसकी

अहलियत नहीं थी ? तो उसके बारे में हमने पहले ही बहुत तफसील से ब्यान कर दिया है। हमारी बात को मजीद कवी-तर बनाने के लिए हम किस्तलानी शारेह बुखारी की इबारत पेश कर रहे हैं, उससे भी काफी रौशनी मिल जाएगी।

व इस्तदल्ला बिहिल मुहलिबु अला सुबूते खिलाफते यजीदा व इन्नहू मिन अहलिल जन्नते लिदुखूलिही फी उमूमिन कौलिही मगफूरु लहुम व उजीबत बिअन्ना हाज़ा जाआ अला तरीकिल हम्मीयतु लिबनी उमैयतु वला यलज़िमु मिन दुखूलिही फी ज़ालिकल उमूम अन अल्ला ला यखरुज बिदलीलु खास इज़ ला खिलाफ़ा लिक्ौलिही अलैहिस्सलातु वस्सलाम मगफूरु लहुम मशरूतु बिकौनिही मिन अहलिल मगफिरत हत्ता लौ इरतदा वाहिदुन मिम्मन गज़ाहा बाद़ा ज़ालिका लम यदखुलु फी ज़ालिकल उमूम इत्तिफ़ाकन क़ालहू इबनुल मुनीर।

(इरशादुस्सारी शरह बुखारी जिल्द ५ सफ़ा १०१)

इस हदीस से मुहलिब ने यजीद की खिलाफ़त और उसके जन्नती होने का इस्तिदलाल किया है कि वह हदीस के इस जुमला मगफूर लहुम के उमूम में दाखिल है। इसका जवाब यह दिया गया कि यह बात महज़ बनी-उमैय्या की हिमायत में कही गई है। और यजीद के इस उमूम में दाखिल होने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह किसी और खास दलील से उससे ख़ारिज भी नहीं हो सकता। क्योंकि इसमें इख़िलाफ़ नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कौल 'मगफूर लहुम' इस शर्त के साथ मशरूत है कि यह लोग मगफिरत के अहल हों। हत्ता कि अगर कोई शख्स इस ग़ज़वा में मुरतद हो जाए तो वह बिल-इत्तिफ़ाक़ इस बशारत में दाखिल नहीं रहेगा। यह बात इब्न-मुनीर ने कही है। करीब-करीब ऐसा ही फ़तहुल-बारी, अस्कलानी वगैरह में भी लिखा हुआ है।

मज़कूरा बाला इबारत से यह साबित हो गया कि यजीद हरगिज़-हरगिज़ इस हदीस का मिस्दाक़ नहीं है। मोहलिब जैसे लोग जिन्होंने यजीद की फ़ज़ीलत या ख़िलाफ़त वगैरह इस से इस्तिदलाल किया है वह इब्न-मुनीर और किस्तलानी की निगाहों में मुशतबह और मख़दूश हैं कि जिसको उन्होंने बनी-उमैय्या की हिमायते बेजा पर महमूल किया है।

इससे भी ज़्यादा वज़ाहत के साथ ज़ैल की इबारत को मुलाहज़ा फ़रमाइए : कुल्लू अला ज़हर अन्न हाऊलाइस्सादाते मिनस्सहबते कानू मअ् सुफ़ियानु हाज़ा वलम यकूनु मअ् यजीदु बिन मुआविया लिअन्नहु

लम यकुन अहल बे एय्युनु हाऊलाइस्सदातु फी खिदमतिही

(उमदतुल-कारी जिल्द ६ सफा ६४६)

हजरत अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ने 'उमदतुल कारी' में साफ़ फरमाया है कि "मैं कहता हूँ खुली हुई बात यह है कि यह अकाबिर सहाबा सुफियान बिन औफ़ के साथ थे। यज़ीद के साथ न थे। क्योंकि यज़ीद उसका अहल नहीं था। कि बड़े-बड़े सहाबा अकाबिर उसकी खिदमत में (मातेहत की हैसियत से) रहें।

मज़कूरा बाला इबारत से यह साबित हो गया कि सादाते सहाबा सुफियान बिन औफ़ के ग़ज़वा में शरीक हुए थे, न कि यज़ीद की सरकारदगी में। इन तमाम शवाहिद के होने के बाद भी अगर जुहूर अहमद यज़ीद की सफ़ाई और उसको जन्नती साबित करने की कोशिश में लगा रहे तो उसकी जिद्द और हठधर्मी होगी। जिसका कोई इलाज नहीं।

अब आइए! हम आपको तारीखी किताबों की सैर करवाते हैं कि मुस्तनद व मोतबर मुहक्किनी भी इस बारे में फ़रमाते हैं कि यज़ीद अव्वल लशकर में हरगिज़-हरगिज़ शरीक नहीं हुआ था। चुनांचे अल्लामा इब्न-असीर फ़रमाते हैं।

उसी साल सन् ४६ हिजरी में और कहा गया है कि सन् ५० हिजरी में हजरत मुआविया ने एक लशकरे ज़रार बिलादे रोम की तरफ़ भेजा। और उस पर हजरत अबू-सुफियान बिन औफ़ को अमीर बनाया। और अपने बेटे यज़ीद को उनके साथ शरीक होने का हुक्म दिया तो यज़ीद बैठा रहा और हीले बहाने शुरू किए। तो अमीर मुआविया उसके भेजने से रुक गए। उस जंग में लोगों को भूख-प्यास और सख्त बीमारी पहुंची तो यज़ीद ने (खुश होकर) यह अशआर पढ़े:

मुझे परवा नहीं कि उन लशकरों पर बुखार और तंगी व तकलीफ़ की बलायें मुक़ामे फ़रक़दूना में आ पड़ीं। जबकि मैं दैर मरान में ऊंची मस्नद पर तकिया लगाए हुए उम्मे कुलसूम को अपने पास लिए बैठा हूँ। उम्मे कुलसूम बिनत अब्दुल्लाह इब्न-आमिर यज़ीद की बीवी थी। यज़ीद के यह अशआर अमीर मुआविया तक पहुँचे तो उन्होंने कसम खाई कि अब मैं यज़ीद को भी सुफियान बिन औफ़ के पास रोम की ज़मीन में ज़रूर भेजूंगा ताकि उसे भी वह मुसीबतें पहुँचे जो वहाँ लशकर वालों को पहुंची हैं।

(इब्ने असीर जिल्द ३ सफ़ा ४५८) मतबूआ बैरुत

मुन्दर्जा बाला रिवायत से चन्द उमूर साबित होते हैं कि बिलादे रोम की

तरफ जिहाद करने वाला पहला लशकर जिसकी क्यादत हजरत सुफियान बिन औफ को सौंपी गई थी उसमें यजीद हरगिज—हरगिज शरीक नहीं हुआ था। और बशारत पहले लशकर वालों के लिए है। जब यजीद उस में शामिल ही न हुआ तो फिर बशारत और जन्नती होना कैसे साबित हो सकता है? नीज, मुजाहिदीने इस्लाम को तकलीफ का सामना करना पड़ा तो वह अपनी ऐश—परस्ती में मुब्तला था। उसको जरा भी एहसास न हुआ। और अगर मान भी लिया जाए तो यजीद सजा के तौर पर भेजा गया। और मजबूरन बादले नख्वास्ता कहरे दरवेश बर जाने दरवेश के तौर पर कदम उठाना पड़ा। गर्ज ये कि यजीद उसमें शामिल नहीं था।

इमामुल—मुअरिखीन इब्ने खलदून ने भी इस हकीकत को ब्यान फरमाया है कि बिलादे रोम में पहला लशकर हजरत सुफियान बिन औफ की सरकारदगी में रवाना किया गया। यजीद ने इन्कार किया था।

(इब्न—खलदून (अरबी) जिल्द ३ सफा १०)

फाजिले नदवा मौलवी मुईनुद्दीन नदवी अपनी किताब में लिखते हैं कि हजरत अमीर मुआविया ने सन् ४६ हिजरी में एक लशकरे जरार हजरत सुफियान बिन औफ की मातेहती में कुस्तुनतुनिया रवाना किया। उसमें हजरत अबू—ऐय्यूब अन्सारी, अब्दुल्लाह इब्न—उमर, अब्दुल्लाह इब्न—अब्बास जैसे अकाबिर सहाबा शामिल थे। ताकि आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस बशारत के मुताबिक कि कैसी अच्छी वह फौज होगी और क्या अच्छा वह अमीर होगा जो कुस्तुनतुनिया के हमले में शिकस्त की सआदत हासिल करेगा। (सियरुस्सहाबा जिल्द ६ सफा ४८)

देवबन्दी जमाअत के हकीमुल—उम्मत मौलाना अशरफ अली थानवी भी यजीद को जगे कुस्तुनतुनिया में शरीक होने और उसकी मगफिरत का इन्कार अपने फतवा में किया है। मुलाहजा फरमाइए। जो लोग यजीद की मगफिरत के लिए बुखारी शरीफ की हदीस से इस्तिदलाल करते हैं वह बिल्कुल जईफ है। क्योंकि वह मशरूत है शर्ते वफात अलल—ईमान के साथ (यानी ईमान पर मौत वाके हो) और वह अम्र मजहूल है। चुनांचे अल्लामा किरस्तलानी ने नकले कौले मोहलिब के बाद लिखा है कि इब्न—तीन और इब्नुल—मुनीर ने उसको रद्द फरमा दिया है।

(इमदादुल—फतावा जिल्द ५ सफा ४२६)

मुहतसम कारिईन! मजकूरा बाला तमाम बातों को बगौर पढ़ने के बाद यह बात बिल्कुल साफ और वाजिह हो जाती है कि यजीद जगे कुस्तुनतुनिया

में शामिल नहीं था और वह जन्नती भी नहीं है। अफसोस होता है कि जिस के हाथ नवासा-ए-रसूल के खून से लाल हों, जिसने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नाराज किया हो; मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरह पर लशकर-कुशी की हो और मस्जिद नब्वी में तीन रोज तक नमाज बा-जमाअत अदा न की गई हो। इतने तमाम जुर्म होने के बावजूद ऐसे शख्स को जन्नती साबित करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाया जा रहा है। अल अयाजु बिल्लाह! अल्लाह तआला उनको सही समझ अता फरमाए और अल्लाह व रसूल के फरमान पर चलने की तौफीक अता फरमाए।

आमीन। बजाहे सैयदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

मुहम्मद अमीनुल-कादरी अर्रजवी

खतीब व इमाम :

मीठा भाई मस्जिद, मोमिना वारड-गोपीपूरा-सूरत

१६ जिलहिज्ज सन् १४११ हिजरी/२६ जून सन् १९९१ ई०, सनीचर

होम जलालीह मित्र (कलकत्ता) के कार्यालय में मुद्रित कि तमाम को

आप के सम्बन्धित मित्र । ❖❖❖ १९९१ ई० १२/६-१२/६

। ई० १२/६ १९९१ ई० १२/६ १९९१ ई० १२/६

खुसूसी जमीमा

सरजमीने सूस्त (गुजरात) में सिलसिलए कादरीया रिफाईया की एक खानकाह जो "खानकाहे कलां रिफाईया" के नाम से मशहूर व मारुफ है। इसका संगे बुनियाद माहे मुहर्रमुल-हराम में रखा गया। इसी मुनासबत से यह खुसीसी जमीमा पेश किया जा रहा है।

बर्रे सगीर व कबीर एशिया की मशहूर व मारुफ
392 साला कदीम खांकाह कलां रिफाईया सूरत

❖ तारीख के आइने में ❖

मुरतिब : (मौलाना मुहम्मद अमीनुल-कादरी अल-रिजवी अल-रिफाई)
हज़रत अकबर शहीद टेकरा, कादरी मंज़िल, सूरत

सुलतानुल-आरेफीन, कुतुबुल-मुकर्रम, वाकिफ़ असरारे शरीअत, माहिर
रमूजे तरीक़त, हज़रत सैयदना अबुल-अब्बास अल-शैख़ सैयद अहमद
कबीर अल-रिफाई अल-हसनी वल हुसैनी वल-मुसवी रज़ि अल्लाहु
तआला अन्हु जैयद सूफी, वली-ए-कामिल, और मुस्तजाबुद-दावात बुजुर्ग
गुजरे हैं। तसव्वुफ़ में अपना एक आला मुक़ाम रखते हैं। आपका नाम नामी
इस्मे गिरामी सैयद अहमद और कुन्नियत अबुल-अब्बास है।

आपके जद्दे अमजद हज़रत सैय्यद हसन असगर अल-हाशमी अल-मक्की
अरिफाई अलैहिर्रहमः जो रिफाईया के नाम से मशहूर थे इसी वजह से आप
रिफाई मशहूर हुए और हज़रत सैय्यदुश्शोहदा हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन
और हज़रत सैय्यदना इमाम मूसा काज़िम रज़ि. अल्लाहु अन्हुमा की औलाद
में हैं इसीलिए हुसैनी और मुसवी कहे जाने लगे।

आपके वालिद गिरामी का नाम हज़रत सैय्यद सुलतान अली और
वालिदा मोहतरमा का नाम उम्मुल-फज़ल फ़ातमा अंसारिया था।

नसब नामा : आपका सिलसिला-ए-नसब हज़रत अल्लामा अशशैख़
इब्राहीम सामरानी ने अपनी किताब अरस्सैय्यद अहमद अरिफाई में यह
तहरीर फरमाया है।

हुव अबुल-आलमीन अरस्सैय्यद अहमद बिन अरस्सैय्यद सुलतान अली
बिन अरस्सैय्यद यह्या बिन अरस्सैय्यद साबित बिन अरस्सैय्यद
अबुल-फुवारिस अल-हाज़िम अली बिन अरस्सैय्यद अहमद अल-मुर्तज़ा
बिन अरस्सैय्यद अली बिन अरस्सैय्यद अल-हसन-अल-मुल्क़ब बेरिफ़ाआ
बिन अरस्सैय्यद महदी बिन अरस्सैय्यद अबिल-कासिम मुहम्मद बिन

अरसैय्यद हसन बिन अल-मुल्कब बेरिफाआ बिन अरसैय्यद महदी बिन अरसैय्यद अबिल-कासिम मुहम्मद बिन अरसैय्यद हसन बिन अरसैय्यद हुसैन बिन अरसैय्यद अहमद बिन अरसैय्यद मूसा अरसानी बिन अरसैय्यद इब्राहीम मुर्तजा बिन इमाम मूसा काजिम बिन इमाम जाफर सादिक बिन इमाम मुहम्मद बाकर बिन इमाम जैनुल-आबिदीन बिन इमाम हुसैन शहीद करबला बिन अमीरुल-मुमेनीन अरसैय्यदना अली बिन अबी तालिब रजि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन। (अरसैय्यद अहमद अरिफाई स-६)

विलादत बासआदत : सुलतानुल-आरिफीन हजरत सैय्यद अहमद कबीर रिफाई अलैहिर्हमाः वरिजवान बइखितलाफ रिवायात पन्द्रह (१५) या २७ शब रजबुल-मुरज्जब ५१२ हिज. मुताबिक १११८ ई० बरोज जुमेरात को बमुकाम हसन जो इराक में उम्मे उबैदा के करीब शहर वास्ता में वाके है। यहाँ आपकी पैदाइश मुबारका हुई।

अल्लाह तआला की जानिब से आपको खुसूसी फजीलत और शर्फ यह हासिल हुआ कि आपकी पैदाइश मुबारका की खबर हुजूर गैबदाँ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहे व सल्लम ने आपके मामू जान आरिफे कबीर हजरत शैख मंसूर बाजुल-अशहाब बताइही अलैहिर्हमाः वरिजवान को ख्वाब में सुनाई कि ऐ मंसूर तुम्हारी बहन की आगोश में चालीस दिन बाद एक लड़का पैदा होगा उसका नाम अहमद रखना। जिस तरह मैं तमाम पैगम्बरों का सरदार हूँ इसी तरह यह बच्चा तमाम औलिया अल्लाह का सरदार होगा। जब यह सात साल की उम्र को पहुँचे तो उसको शैख कारी अली वास्ती की खिदमत में बगर्ज तहसीले इल्म ले जाना और उसकी तालीम व तरबियत से गाफिल न होना। (तज्किरा रिफाई, स. १३६)

ख्वाब में दी गई बशारत के ऐन मुताबिक चालीस दिन बाद आप मकामे हसन में पैदा होते हैं। आपके वालिद गिरामी आरिफ बिल्लाह हजरत सैय्यद सुलतान अली अपने हमअस्र उलमा-ए-किराम व सूफिया-ए-इजाम में अपना एक आला मकाम रखते थे। वालिदा साहिबा हजरत सैय्यदा सालेहा उम्मुल-फजल फातमा रजि. अल्लाहु तआला अन्हा भी अपने वक्त की बड़ी ही आबिदा और जाहिदा खातून थीं। हजरत रिफाई ने इब्तिदाई तालीम अपने शफीक वालदैन् के जेरे साया रहकर मुकम्मल फरमाई। जब आपकी उम्र शरीफ का सातवां साल था कि आपके वालिद माजिद हजरत सैय्यद

सुलतान अली किंसी अहम ज़रूरत से वग़दाद मुअल्ला तंशरीफ़ ले गए तो वहीं आपका इन्तिक़ाल ५१६ हिज. में हो गया। मालिक बिन मुसैय्यिब अक्लीली के महल में मदफून हुए बाद में मालिक ने क़ब्र पर कुवा तामीर करवाया और साथ ही एक मरिजद भी बनवाई। यह जगह आज भी वग़दाद शरीफ़ में दरगाह सैय्यद सुलतान अली के नाम से मशहूर है। (अस्सैय्यद अहमद अर्रिफ़ाई — स.६)

तालीम व तरबीयत : वालिद बुज़्रुगवार के इन्तिक़ाल फरमाने के बाद आपके मामूँ जान हज़रत शैख़ मंसूर बताइही रहमतुल्लाह अलैहिर्रहमा ने आपको मअ अपने भाईयों, बहन और वालिदा माजिदा के अपने क़स्बे नेहरू क़ली बुला लिया और बंहुक्मे महबूब जुलजलाल सल्लल्लाहु अलैहिर्रहमा व सल्लम अपने भांजे की किफ़ालत और तालीम व तरबियत की तरफ़ खुसूसी तवज्जुह फरमाई। कुरआन पाक नाज़रा व हिफ़ज़ तो आपने बहुत ही छोटी सी उम्र में मुक़ामे हसन ही में हज़रत अब्दुस्समी हरबूनी अलैहिर्रहमा : वरिज़वान के पास मुकम्मल फरमा लिया था। फिर जब ज़रा समझदार हुए तो आपके मामूँ जान ने हुज़ूर मुहसिने इन्सानियत सल्लल्लाहु अलैहिर्रहमा व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ वास्ता जों इराक़ का मदीनतुल—इल्म वलउलमा था। जुब्दतुल—उलमा हज़रत शैख़ अली क़ारी वास्ती की ख़िदमत में तहसीले इल्म के लिए भेज दिया। बशारते नब्बी के मुताबिक़ हज़रत शैख़ अली क़ारी वास्ती ने खुसूसी तवज्जुह और कामिल निगरानी में तालीमी मराहिल से आपको फ़ैज़याब फरमाते रहे। यहाँ तक कि बीस साल की उम्र में आपने तमाम उलूमे नक्लीया व अक्लीया यानी हदीस, तफ़सीर, फ़िक्ह, मअानी फलसफ़ा व मंतिक और दीगर उलूमे ज़ाहरी मुकम्मल फरमा लिया उस्ताज़े मोहतरम ने आपको सनदे हदीस और इजाज़त अता फरमाई। बादहू आपने उस्ताद मोहतरम की ज़ेरे निगरानी दर्स व तदरीस का सिलसिला शुरू फरमा दिया।

ख़िरक़ा—ए—सादगी व तक्मील उलूमे बातनी : हज़रत रिफ़ाई अलैहिर्रहमा वास्ता में मसनदे दर्स व तदरीस पर फाइज़ थे लाखों तिश्नगान उलूम परवाना वार आपके हलक़ा—ए—दर्स में शामिल हो रहे थे कि अचानक आपके मामूँ जान ने आपको अपने पास उम्मे उबैदा बुलवा लिया और बातनी उलूम की तालीम शुरू फरमा दी। आप मादर ज़ाद वली थे। लुत्फ़े खुदावन्दी कि हज़रत रिफ़ाई ने बहुत ही मुख़्तसर सी मुदत में इरफ़ान व

सुलूक और मआरिफत के मदारिजे आलिया तय फरमा कर आरिफे कामिल बन गए तो आपके मामूं जान ने ५३६ हिज. में अपने इन्तिकाल से एक साल पहले ही आपको खिरक-ए-खिलाफत व सज्जादगी से सरफराज फरमा कर खानकाहे उम्मे उबैदा में अपना जानशीन बना दिया। और पूरे इराक में एलान करवा दिया कि आइंदा से मशाइख व सालेकीन वारता व बसरा सैयदा अहमद कबीर माशकुल्लाह रिफाई हुसैनी मुसवी को अपना शैख समझें और उन्हीं से रुजू करके फवाइदे दीनी व दुनियवी हासिल करें उस वक्त आपकी उम्र शरीफ २८ बरस की थी।

(अस्सैयद अहमद अरिफाई-स.१०)

इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीने मिल्लत आला हज़रत सैयदना इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्हमा: अपने रिसाले मक़ालुल-उरफ़ा स.३६ पर चार ऐसे अलकाब का जिक्र फरमाया है जो तमाम अलकाब में आला व मुन्ताज़ शुमार किए जाते हैं। उनमें से एक कुतुब हज़रत सैयद अहमद कबीर रिफाई अलैहिर्हमा: की जाते मुबारका भी शामिल है।

ज़ियारे हरमैन तैय्येबीन और हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दस्ते अतहर का बोसा

शैखुल-इस्लाम वल-मुस्लेमीन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी कुद्देस सिरहुल-अज़ीज़ अबरुल-मक़ाल स. २६ पर और हज़रत मौलाना शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी अल-मिस्त्री ने नसीम रियाज़ फ़ी शरहे शिफ़ा काज़ी अयाज़। जि. सौम स. ४४२ मतबूआ मिस्त्र में और हज़रत शैख़ यूनुस इब्राहीम अस्सामरी ने "अस्सैयद अहमद आरेफ़ीन हज़रत सैयद अहमद कबीर रिफाई अलैहिर्हमा: की यह क़रामत "दस्त बोसी हुज़ूर सरवरे काइनात अलैहिस्सलातु वस्सलाम" को अपनी अपनी किताबों में तहरीर फरमाया है। हज़रत सैयद अहमद कबीर रिफाई रहमतुल्लाह अलैहिर्हमा ने ५५५ हिज. ११६० ई. ४३ साला उम्र में हरमैन तैयबीन की ज़ियारत फरमाई यह आपका पहला हज था। हज की अदाइगी के बाद अपने जदे आला हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम की ज़ियारत के लिए मदीनतुरसूल हाज़िर हुए। जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम की मुक़दस नगरी सरहदे मदीना करीब आ गई। तो अपने जूते उतार लिए औ: इश्क व मुहब्बत में सरशार

इन्तिहाई वालेहाना अन्दाज में अपने जहे आला के मवाजा शरीफ में हाजिर हुए और इश्क व मुहब्बत में डूब कर तुलन्द आवाज से अर्ज किया। "अरस्सलामु अलैक या जद्दी" ऐ मेरे जहे अमजद आपकी वारगाहे आलिया में सलाम पेश है तो फौरन रौज-ए-अनवर से यह जवाब मिला व अलैकरस्सलामु या वालिदी और ऐ मेरे फरजन्दे अजीज तुझ पर भी सलाम हो। जवाब सुनते ही आप पर वज्दानी कैफियत तारी हो गई। और रोते हुए बेसाख्ता वालेहाना अन्दाज में आपने यह रुबाई पढ़ी।

फी हालतिल-बोअ्दे वहिया कुन्ता अरसलोहा
तुकब्बेलुल-अरजे अन्नी वहिय नाइबती
व हाजेही दौलतुल-इश्बाह कद हजरत
फन्दुद यमीनोक कैय तोहज्जी बेहा शीफती

ऐ मेरे आका व मौला! दूरी की हालत में अपनी रूह को रौज-ए-अतहर पर भेज दिया करता था कि वह मेरी नाइब बन कर आस्ताना मुबारका को चूमा करती थी और अब मैं रूह व जिस्म के साथ खुद हाजिरी का शर्फ हासिल किया हूँ तो आप अपना दस्ते मुबारका अता फरमाइये ताकि उसका बोसा लेकर मेरे होंठ लुत्फ अन्दोज हों। बस हजरत रिफाई का इतना फरमाना था कि फौरन हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम का सीधा हाथ शरीफ कबरे अनवर से जाहिर हुआ और हजरत रिफाई ने घुटनों के बल बैठ कर बड़े ही अदब व एहतेराम के साथ दस्ते अतहर को चूमा फिर दस्ते अतहर कब्र शरीफ में वापस हो गया। जिस वक्त आपकी यह करामते उज्मा जाहिर हुई वह दिन जुमेरात का और वक्त बादे नमाजे अस्त्र था। इस करामत को और आवाजे मुस्तफा अलैहिरस्सलातु वस्सलाम को निनवावे हज़ार आशिकाने मुस्तफा व दीवान गान खैरुल-वरा ने मुलाहिजा फरमाया। हाजिरीन में आपके मामू जान हजरत पीराने पीर दस्तगीर सैयदना अब्दुल-कादिर जीलानी गौसे आजम हजरत शैख गदी बिन मुसाफिर शामी व दीगर औलिया-ए-इज़ाम व मशाइख मौजूद थे। (अरसैयद अहमद अर्रिफाई अरबी। स.५६)



कारिईने किराम

हजरत रिफाई की यह अजीमुशान किरामत और पैदाइश से पहले बशारते नबी नीज तसव्वुफ़ में आपका एक आला व मुस्ताज़ मुक़ाम पर फाइज़ होना यह किसी के लि बहलाने के लिए नहीं है बल्कि उन तमाम बातों से सुलतानुल-आरिफीन की अज़मत और मंज़िलत इन्दल्लाह जाहिर होती हैं। वैसे अगर आपके मुकम्मल हालात कलम बन्द किए जाएं तो दफ़्तर के दफ़्तर भी नाकाफ़ी होंगे। यहाँ पर मक्सूद सिर्फ़ यह है कि सरज़मीने सूरत में जो बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए हैं। उनका तआरुफ़ हो जाए कि आपका तअल्लुक ऐसी बाबरकत जाते गिरामी से है जिसके लिए अल्लाह के रसूलुल सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम ने ख़ास तौर से अपना हाथ मुबारक बोसा के लिए वअज़ व नसीहत करने और अपने किरदार व अमल से लोगों की हिदायत व इसलाह फरमाते अचानक दरिया-ए-फ़यूज़ व बरकाते आरिज़ा इस्हाल (दर्दे शिकम) में मब्तून होकर हस्बे इशादे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम के शहादत के दरजे पर फाइज़ होकर २२ / ज़ामदिल-ऊला ५७८ हिज. मुताबिक २३ / सितम्बर १९८२ ई० बरोज़ जुमेरात जुहर के वक़्त ६६ साल की उम्र शरीफ़ पाकर इस दारे फानी से कूच फरमा गए। आपकी नमाज़ जनाज़ा में तक़रीबन नौ लाख मुहिब्बान औलिया ने शिरकत फरमाई। नमाज़ के बाद उम्मे उबैदा की ख़ानकाह में आपके नाना जान हजरत शैख़ यह्या अन्सारी अलैहिर्रहमाः वरिज़वान के पहलू में मदफून किए गए। आज भी आपकी मज़ार अक़दस जाइरीन से आबाद रहती है।

अल्लाह तआला आपके फ़ैज़ व बरकात से ता क़्याम क़्यामत हम सबको फ़ैज़याब फरमाता रहे। (अरसैय्यद अहमद अरिफ़ाई किताब अरबी सफ़ा ७४)



हिन्दुस्तान के सनअती शहर

सूरत में

रिफाई सिलसिला के बुजुर्गों की आमद

सुलतानुल-आरिफीन कसीरुल-औलाद थे। आपके विसाल फरमाने के बाद आपकी आल औलाद खानदानी उलमा व मशाइख और खुलफा मुख्तलिफ शहरों और कस्बों में इस्लाम की तब्लीग व इशाअत और सिलसिला-ए-रिफाईया को फरोग देने में मस्रूफ हो गए। उन्हीं में से एक बुजुर्ग हजरत सैय्यद मुहम्मद हबीब अब्दुरहीम मुहब्बतुल्लाह रिफाई ६०० हिज. में शहर सूरत (बाबुल-मक्का) बमकाम खानकाहे कलां-रिफाईया तशरीफ लाए।

आपके बाद हजरत सैय्यद अहमद कबीर अर्रिफाई के पोते हजरत सैय्यद अब्दुरहीम अल-मारुफ सैय्यद अहमद हबीबुल-कादरी अर्रिफाई अलैहिर्रहमः अपने वालिद गिरामी हजरत सैय्यद मुहम्मद मादनुल-कादरी अर्रिफाई (फरजन्द अरजुमन्द व खलीफा-ए-सैय्यदना अहमद कबीर अर्रिफाई) यक्कुम जिलहिज्जः ६६७ हिज. को सूरत तशरीफ लाए और २० जमादिल-ऊला ७७१ हिज. में १३६ साल की उम्र शरीफ पाकर इन्तिकाल फरमाया। आपको इसी खानकाहे कलां रिफाईया में मदफून किया गया। आपके बाद तशरीफ ला रहे हैं। हजरत सैय्यद हाजिम अनवारुल्लाह इब्ने सैय्यद इब्राहीम कंज अर्रिफाई अलैहिर्रहमः ५ सफर ७३५ हिज.। आपके बाद शहरे सूरत में रौनक अफरोज होते हैं। हजरत सैय्यद मुहम्मद खुजैम अर्रिफाई रहमतुल्लाह तआला अलैह।

खुजैम अर्रिफाई रहमतुल्लाह अलैहि अल-मुतवफ्फ़ी ७६६ हिज. में। बादहू हजरत अस्सैय्यद अब्दुल-हमीद अर्रिफाई अल-मुतवफ्फ़ी ५ / शव्वाल ८४० हिज. उनके बाद हजरत सैय्यद मुहम्मद नूरुल-हसन गालिब रिफाई अल-मुतवफ्फ़ी १२ / रबीउल-अव्वल शरीफ ८५४ हिज. उनके विसाल के बाद हजरत सैय्यद अब्दुल-अजीज रिफाई अल-मुतवफ्फ़ी १४

/ शाबान ८६० हिज. खांकाहे कलाँ रिफाईया में फैज का दरिया बहाते हैं उनके बाद हजरत सैयद मुहम्मद बदरुद्दीन उर्फ बद्र रिफाई अल-मुतवफ्फ़ी २७ / रमज़ानुल-मुबारक १०१५ हिज. अपने खानदानी फ़यूज़ व वरकात से फैज़याब फरमाते हैं। मज़कूरा बाला तमामी बुजुर्गाने दीन ने सीनत और सिलसिला-ए-रिफाई को फ़रोग देने में मररूफ़ रहे लेकिन किसी ने अपना मुस्तक़िल क़याम खानकाही शक़ल में कौम को नहीं दिया। बल्कि एक चटियल मैदान में उनके मज़ारात खानकाहे कलाँ रिफाईया में वाक़े रहे।



खानकाहे कलां रिफाईया की संगे बुनियाद

और

दौरे सज्जादगी का आगाज

खानकाहे रिफाईया में

हिन्दुस्तान में सिलसिला-ए-कादरीया रिफाईया के बुजुर्गाने दीन की आमद का दूसरा दौर शुरू होता है। हजरत अब्दुरहीम महबूबुल्लाह इब्ने सैयद मुहम्मद अल-अमीन मदनी अल-कादरी अर्रिफाई अलैहिर्रहमः सूरत तशरीफ लाते हैं। आपकी विलादते मुबारिका २७ / रमजानुल-मुबारक १००० हिज. मदीना मुनव्वरा में हुई। आपके वालिद गिरामी हजरत सैयद मुहम्मद अल-अमीन मदनी और दादा जान हजरत सैयद मुहम्मद सालेह आफन्दी अपने हमअस्र उलमा व मशाइख में एक मुस्ताज हैसियत के शामिल थे।

हजरत सैयद अब्दुरहीम महबूबुल्लाह अल-कादरी अर्रिफाई को आपके वालिदे गिरामी ने खिरका-ए-खिलाफत व सज्जादगी से सरफराज फरमा कर ज़्यारते हरमैन तैयबैन के लिए मक्का मुकर्रमा रवाना फरमाया। ज़्यारत व उमरा की अदायगी के बाद आप सीधे मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए और अपने जद्दे अमजद हुज़ूर मुहसने इन्सानियत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत बाबरकत से फ़ैजयाब हुए। उसी वक्त सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आपको सूरत जाने का हुक्म फरमाया। हजरत महबूबुल्लाह रिफाई बहुक्मे नब्वी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुख्तलिफ़ मकामात की सैर फरमाते हुए और उलमा, मशाइख व बुजुर्गाने दीन से मुलाकात व फ़ैज हासिल करते हुए १०३५ हिज. में सूरत जलवा अफ़रोज़ हुए। उस वक्त आपकी उम्र शरीफ़ ३५ साल थी। सूरत बमक़ाम बरिया भागल तशरीफ़ लाने के बाद आपने यहीं पर मुस्तक़िल सुकूनत अख़्तियार फरमा ली। कुछ दिनों के बाद एक आली शान मस्जिद और खांकाह शरीफ़ की बुनियाद यक्कुम मुहर्रमुल-हराम १०३५ हिज. में रखी। आप ही की जाते गिरामी से खानकाहे कलां रिफाईया

में सज्जादगी का दौरा शुरू हुआ। अब्बल सज्जादा नशीन होने का शर्फ आपको ही हासिल हुआ। हिन्द व पाक में जितनी भी सिलसिला-ए-रिफाईया की शाखें हैं, उन सबका सिलसिला आप ही की जाते मुबारका से आकर मिलता है। उसी खानकाह शरीफ के दूसरे बुजुर्गवार हजरत शैख सैयद अब्दुरहीम रहम. से पहले काबा शरीफ में आकर मिलता है। हजरत सैयद अब्दुरहीम महबूबुल्लाह अलैहिर्रहम: ६५ साल तक तब्लीगे इस्लाम और सिलसिला-ए-रिफाईया को परवान चढ़ाने में एक अहम किरदार अदा फरमाया है। हजरत की तब्लीगी कोशिशों ही से गुजरात की मशहूर जातें मंसूरी जमाअत, राजपूत, चौहान, पटनी, मुकराने वगैरा ने आपके दस्त हक परस्त पर इस्लाम कुबूल फरमाए। हजरत २१ / जिमादिल-ऊला ११०० हिज. में इस दारेफानी से कूच फरमा गए। आप ही की तामीर करदा खानकाहे कलां रिफाईया में आपको मदफून किया गया। विसाल के बाद उस खानकाह को आपकी तरफ निस्बत फरमाते हुए खानकाहे कलां हजरत अब्दुरहीम महबूबुल्लाह कादरी अर्रिफाई का नाम दे दिया गया।

आपके बाद आपके बड़े फरजन्द हजरत सैयद यूसुफ सैफुल्लाह अल-कादरी अर्रिफाई ११०० हिज. ता ११४० हिज. कुल चालीस बर्स तक मसनदे सज्जादगी पर जलवा अफरोज रहे। आपके विसाल फरमाने के बाद आपके बड़े साहबजादे हजरत सैयद अली मस्तान बुरहानुल्लाह ११४० हिज. ता ११७४ हिज. कुल ३४ बर्स तक सज्जादा की हैसियत से खिदमात अंजाम देते रहे। आपके बाद आपके फरजन्द हजरत सैयद मुहीयुद्दीन अब्दुरहीम इज्जतुल्लाह अल-कादरी अर्रिफाई ११७४ हिज. ता १२११ हिज, ३७ बर्स तक खिदमते सज्जादगी अंजाम दी।

आपके बाद आपके बड़े लड़के हजरत सैयद मुहम्मद हुसैन शम्सुद्दीन सैफुल्लाह अल-कादरी अर्रिफाई १२११ हिज. ता १२४८ हिज. पाँचवें सज्जादा नशीन की हैसियत से ३७ बर्स तक मसनदे सज्जादगी पर फाइज रहे। आपके बाद आपके बड़े फरजन्द हजरत सैयद अली मस्तान सानी अल-कादरी अर्रिफाई १२४८ हिज. छठे सज्जादा की जिम्मेदारी १८ बर्स तक अंजाम देते रहे। आपके विसाल के बाद आपके नवासे हजरत सैयद अमीनुद्दीन अल-मारुफ इरहामुद्दीन अल-हम्दानी अल-कादरी अर्रिफाई १२६६ हिज. ता १३१४ सातवें गद्दीनशीन की हैसियत से ४८ बर्स तक मसनद नशीन रहे। आप ही से सिलसिला-ए-हम्दानी खानकाहे कलां रिफाईया में

शुरू हुआ। आपके विसाल के बाद आपके बड़े फरजन्द हजरत सैयद फ़ैय्याजुद्दीन उर्फ़ शाह सिराजुद्दीन अल-हम्दानी अल-कादरी अर्रिफ़ाई १३१४ हिज. ता १३६६ हिज. आठवें सज्जादा नशीन की हैसियत से ५२ वर्ष तक मसनदे सज्जादगी पर रौनक अफ़रोज़ रहे। आपके बाद आपके फरजन्दे अकबर हजरत सैयद मुहम्मद हुसैन बुरहानुद्दीन अल-हम्दानी अल-कादरी अर्रिफ़ाई अलैहिर्रहमः १३६६ हिज. ता १३७४ हिज. कुल ८ साल तक मसनदे सज्जादगी पर जलवा-अफ़रोज़ रहे। तमामी सज्जादगान ने बड़ी ही जाफ़शानी और लगन से दीन व सुन्नियत और सिलसिला-ए-रिफ़ाईया को फ़रोग दिया।

उन तमाम हज़राते बावकार को ख़ानकाहे कलां रिफ़ाईया, सूरत ही में मदफून् किया गया। हाँ, सिर्फ़ एक बुजुर्ग और साहिबे सज्जादा हजरत सैयद अली मस्तान सानी, हैदराबाद (दकन) बमक़ाम लातूर ज़िला उस्मानाबाद में उनकी वसीयत के मुताबिक़ मदफून् किया गया। दसवें सज्जादा की हैसियत से ताजुल-मशाइख़ हजरत ३^० सैयद मुहीयुद्दीन संलीमुल्लाह शाह अल्हम्दानी अल-कादरी अर्रिफ़ाई दामत बरकातुहुम अल-कुदसीया १३७४ हिज. ख़ानकाहे कलां रिफ़ाईया की मसनदे सज्जादगी पर रौनक अफ़रोज़ हैं। आपकी पैदाइश मुबारक २८/मुहर्रमुल-हराम १३६६ हिज. मुताबिक़ यक्कुम जनवरी १६४६ ई० को बमक़ाम बड़ौदा हुई। आपके वालिद गिरामी हजरत अरसैयद मुहम्मद हुसैन बुरहानुद्दीन अल-हम्दानी-अल-कादरी अलैहिर्रहमः आलिम व आमिल और आरिफ़ उलूमे तरीक़त थे। साहिबे संरवत भी थे। वालिदा मोहतरमा हजरत अफ़ज़लुन्निसा बेगम साहिबा अलैहिर्रहमः जो हजरत ख़ाजा मौदूद चिश्त रहमतुल्लाह अलैहि की औलाद से हैं।

हजरत सैयद सलीम बाबा मद्दा ज़िल्लहुल-आली वालिदैन् के ज़ेरे आतिफ़त बहुत ही कम-उम्र में कुरआन क़रीम नाज़िरा कर लिया और मज़ीद उलूमे ज़ाहरी व बातनी भी मुकम्मल फरमा ली। इल्मे दीन से आपका लगाव और मुहब्बत का आलम देखा तो आठ साल की मुख़्तसर-सी उम्र ही में वालिद गिरामी वक़ार ने ख़िरका-ए-ख़िलाफ़त व जानशीनी अता फरमा दी। इस नेमत को अता फरमाने के बाद आपके वालिद गिरामी का इन्तिक़ाल हो गया। तो आपके हकीकी चचा हजरत पीरज़ादा हकीम सैयद ज़ैनुल-आबिदीन उर्फ़ फ़कीर शाह बाबा ने साहिबे सज्जादा की तालीम व तरबियत और ख़ानकाह शरीफ़ के नज़्म व नस्क़ को अपने ज़िम्मा

ले लिया और बहुत ही खुश-उरलूबी से अंजाम दिया।

खिरका—ए—खिलाफत व सज्जादगी हासिल होने के बाद भी साहिबे सज्जादा ने तालीम जारी रखी। बहुत ही कलील मुदत में सूरत और बड़ौदा के कॉलेजों से इन्टर (कॉमर्स) और बी.ए.बी.कॉम की डिग्रियाँ हासिल कर लीं। साहिबे सज्जादा की शादी अहमदाबाद के मशहूर बुजुर्ग हज़रत पीरज़ादा ख्वाजा काज़ी कमालुद्दीन फ़ारुकी चिश्ती की दुख्तरे नेक अख़्तर सुरैया बेगम साहिबा के हमराह हुई।

हज़रत सलीम बाबा मद्द ज़िल्लहुल—आली मुसलसल ४४ बर्स से बराबर ख़िदमते इस्लाम और सिलसिला—ए—रिफ़ाईया को फ़रोग देने में मसरूफ़ हैं। शहर सूरत की आप वाहिद ख़ानकाही शख़्सियत हैं जिनकी ज़ेरे सरपरस्ती सूरत की बहुत-सी दीनी व दुन्यावी अंजुमनें और समाजी व अदबी इदारे परवान चढ़ रहे हैं। हर वक़्त कौम व मिल्लत की बिला तफ़रीक़ मज़हब व मिल्लत ख़िदमात अंजाम देते हुए नज़र आते हैं। १९६२ ई० के भयानक सूरत फ़साद में आपकी ख़िदमात तारीख़ी औराक़ की जीनत बन चुके हैं। हुज़ूर साहिबे सज्जादा जहाँ हालाते हाज़िरा पर हर वक़्त निगाह रखते हैं वहीं अपने मुरीदीन मुतवस्सिलीन, तालिबीन और खुलफ़ा हज़रात पर भी ख़ास निगाहे करम फरमाते हुए उनकी दुन्यावी तकालीफ़ का सद्देबाब फरमाते हुए उन्हें अकाइदे हक्का अहले सुन्नत व जमाअत पर हमेशा-हमेशा कायम रहने और वहहाबीयत व देवबंदियत से अपने आपको दूर रहने की हिदायत फरमाते हैं और जो तालीमात मुजद्देदीन व मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उम्मत मुहम्मदीया को कुरआने करीम व अहादीसे मुक़द्दसा और बुजुर्गाने दीन के ज़रिए मिलें उस पर अपने को काइम रहने की ताकीद फरमाते हैं। काश! अगर गुजरात की दीगर ख़ानकाहों और दरगाहों के सज्जादा नशीन आपके इस अमल को अपना लें तो इंशाअल्लाह पूरे गुजरात व महाराष्ट्र में अहले सुन्नत व जमाअत का बोलबाला हो और हर तरफ़ सुन्नियत ही सुन्नियत नज़र आने लगेगी।

हुज़ूर साहिबे सज्जादा के चचा साहिबान हज़रत सैयद तकीयुद्दीन और हज़रत सैयद रफीउद्दीन और चचाज़ाद भाई अल—हाज सैय्यद मुईनुद्दीन रिफ़ाई ऐडवोकेट (बड़ौदा) और हज़रत सैय्यद कुतुबुद्दीन रिफ़ाई ऐडवोकेट (सूरत) इस ख़ानकाह के लिए नुमायां ख़िदमात अंजाम देने में मसरूफ़ हैं।

आपके छोटे भाई हजरत सैय्यद अब्दुल लतीफ बाबा रिफाई सूरत में अपने बड़े भाई हुजूर साहबे सज्जादा के साथ रहकर अपने आवाई शिफाखाना रिफाईया को चलाते हैं और बिला तफरीक मजहब व मिल्लत खिदमात अंजाम दे रहे हैं। लाखों अफराद शिफा हासिल कर रहे हैं।

इमसाल हुजूर साहबे सज्जादा ने अपने जानशीन और बड़े फरजन्द सैय्यद अलाउद्दीन उर्फ रिफाई साहब और छोटे फरजन्द और बड़ी बच्ची और छोटी बच्ची और अपने छोटे भाई को एक अजीम नेमत हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का मूए मुबारक जो सिलसिला दर सिलसिला ६६७ हिज. से आपके पास बतौर अमानत चला आ रहा है। इसमें से जो शाखें निकलीं तो मजकूरा बाला हजरात को अता फरमाया। नाचीज मुहम्मद अमीनुल-कादरी अरिजवी अरिफाई (खलीफा-ए-कादरी रिफाई खानकाहे कलां रिफाईया, सूरत) को भी यह शर्फ हासिल हुआ कि हुजूर साहबे सज्जादा ने इस अजीम नेमत से बतारीख २४ / रबीउल-आखिर १४१८ हिज. मुताबिक २६ / अगस्त १९९७ ई० बरोज जुमा बवक्त साढ़े ११ बजे नवाजा।

इस खानकाहे कलां रिफाईया में सालाना ५५ उर्स मनाए जाते हैं लेकिन उनमें दो बड़े उर्स पहला हजरत सैयद अहमद कबीर रिफाई और दूसरा हजरत अब्दुरहीम महबूबुल्लाह और सैय्यद अमीनुद्दीन बाबा रिफाई अलैहिमुर्रहमः का बड़ी ही शान व शौकत के साथ मनाया जाता है। इसी मुबारक मौके पर हुजूर साहबे सज्जादा की मोहतरमा के लिए खुसूसी फातिहाख्वानी और आम न्याज का एहतमाम भी किया जाता है। लाखों मुरीदीन हिन्द व पाक और बैरुनी ममालिक से शिरकत फरमाते हैं।

मुहम्मद अमीनुद्दीन अल-कादरी अरिजवी अरिफाई
(खलीफा कादरी रिफाई)

हजरत अकबर शहीद मस्जिद, सूरत



हजरत सैय्यद अहमद कबीर अरिफाई अकेडमी का क्याम और इग़राज व मक़ासिद

सुलतानुल-आरिफ़ीन हजरत सैय्यद अहमद कबीर अरिफ़ाई अलैहिर्रहमः बानी-ए-सिलसिला रिफ़ाईया की जानिब मंसूब करते हुए एक अकेडमी बनाम हजरत सैय्यद अहमद कबीर अरिफ़ाई अकेडमी का क्याम सरजमीने सूरत बमक़ाम ख़ानकाहे कलां रिफ़ाईया, बरिया—भागल में किया जा चुका है। इस अकेडमी का मक़सद यह है कि आज के इस पुर-फ़ितन दौर में लोगों को अक़ाइद अहलेसुन्नत और बुजुर्ग़ाने दीन की इल्मी ख़िदमात से वाकिफ़ कराना और औलिया-ए-किराम के आरासे मुक़द्दसा के मौक़े पर उनके अक़ाइद व मसलक और हालाते ज़िन्दगी पर मुश्तमिल किताबें शाय करना। ज़ेरे नज़र किताब तारीख़े शहनशाह सूरत, अरिफ़ाई अकेडमी की अव्वलीन पेशकश है। वैसे ख़ानकाहे कलां रिफ़ाईया तक़रीबन ३५ साल से इशाअती काम बहुस्न व ख़ूबी अंजाम दे रहा है। 'तारीख़े करबला', 'फ़ज़ाइले दरुद व सलाम', इस्लामी महीने और नूरानी रातें किताबें और बारह महीनों के फ़ज़ाइल व नवाफ़िल पोस्टर वग़ैरा साहिबे सज्जादा के मुकम्मल तआवुन से शाय हो चुके हैं। अब बाक़ायदा अकेडमी के ज़ेरे एहतमाम इस इशाअती काम को शुरू किया गया है। अकेडमी की सरपरस्ती ख़ानदाने रिफ़ाईया की अजीम शख़्सियत पीरे तरीक़त हजरत अरसैयद मुहीयुद्दीन सलीमुल्लाह शाह बाबा अल—हम्दानी अल—कादरी अरिफ़ाई दामत बरकातुहुम अल—कुदसीया सज्जादा नशीन ख़ानकाह कलां रिफ़ाईया सूरत फरमा रहे हैं। आपके हकीकी भाई हजरत सैय्यद लतीफ़ुद्दीन बाबा अल—हम्दानी अल—कादरी अरिफ़ाई अकेडमी के सद्रे आला हैं। हजरत मौलाना मुहम्मद अमीनुल—कादरी अरिफ़ाई जेनरल सक़््रेट्री हैं।



तारीखे करबला के मआखजात

कुरआने करीम, कन्जुल-ईमान (सुन्नी तर्जुमाए कुरआन), तफसीर खजाइनुल- इरफान, तफसीर नूरुल-इरफान, तफसीरे नईमी, तफसीरे कबीर (अरबी), तफसीर इब्ने कसीर (अरबी), तफसीर मवाहिवुरहमान, तफसीर जियाउल कुरआन, तफसीरे हुसैनी, तफसीरे कश्शाफ (अरबी), तफसीरुरसआलबी (अरबी), तफसीरे मुरादिया, तफसीर मुवज्जेहुल-कुरआन, बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ, तिर्मिजी शरीफ, अबू-दाऊद शरीफ, मिश्कात शरीफ, इब्ने माजा, अशअतुल-लम्आत, मिर्अतुल-मनाजीह, मजाहिरे हक, तर्जुमाए मिश्कात, फत्हुलबारी, इरशादुरसारी, नुजहतुल-कारी, फैजुलबारी, शरह अकाइदे निस्फी, शरह फिक्हे अकबर, खसाइसुल-कुबरा, जब्बुल-कुलूब, तकमीलुल-ईमान, शवाहिदुन्नुबुव्वः, मदरिजुन्नुबुव्वः, शिफा शरीफ, शरहुरसुदूर, मासबता बिस्सुन्नः, मकाशिफतुल-कुलूब, गुन्यतुत्तालिबीन, फतावा रजवीया, फतावा अजीजी (मुतर्जम), फतावा मजहरी, फतावा रशीदिया, कीमयाए सआदत, अल-अम्न वल-उला, मलफूजाते ख्वाजगाने चिश्त, बहारे शरीअत, अहकामे शरीअत, हजरत अमीर मुआविया, तारीखुल-खुलफा, तारीख इब्ने खलदून (अरबी-उर्दू), तारीखे कामिल (अरबी), तारीखे तबरी (अरबी-उर्दू), अल-बिदायः वन्निहायः (अरबी), सवाइके मुहर्रिका, हयातुल-हैवान, मिन्हाजुरसुन्नः (अरबी), सीरते रसूले (अरबी), सवानहे करबला, शामे करबला, नक्शे करबला, रौजतुश्शुहदा, सआदतुल-कौनैन, इश्क की सरफराजी, तारीखे इस्लामःनजीब अकबर आबादी, तारीखे इस्लामः अब्दुरहमान अमृतसरी, सीयरुरसहाबा (नदवी), शहीदे आजम-: आजाद, अल-हुसैन (अरबी-उर्दू), खुतबाते मुहर्रम, हुसैन व यजीद : इब्ने तैमिया, औराके ग़म, शमशीरे सदाकत, इमाम पाक और यजीद, शहीदे करबला और यजीद, शहीदे मुअज्जम, करबला का मुसाफिर, मनाकिब अहले बैत, मकालाते अमजदी, रिसाला ताजियादारी, आले मुस्तफा की कहानी, मुश्किलकुशा, शहीद इब्ने शहीद (जिल्द दोम), सफीना-ए-नूह (अव्वल, दोम), हदाइके बरिश्शाश, ताजीराते कलम, खुलासतुल-अकाइद, मनाकिबुरस्सादात । ❖❖



ISBN 01-89201-30-11

9 780189 201306

Rs. 180/-

RAZAVI KITAB GHAR

423, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Phone : 011-23264524, Mobile. 9350505879

E-mail : razavikitabghar@gmail.com